<Akhiyasl.lp2><Aesthetics>< Literature><1995><Dr. Ramanand Jha>
<Akhiyasal>
❁

मैथिलिक पहिल कथाकार
पं० श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'

मैथिली कथा साहित्यक विकास, संस्कुतक आख्यान, उपाख्यान अथवा आख्यायिकाक प्रभावें, वर्तमान उत्कर्ष धरि पहुंचल अछि। परंच, कथा विकासक मार्ग पर सर्वप्रथम कोन मैथिली सेवी अग्रसर भेलाह, तकर अनुसंधान कएलासँ प्रथम यात्रीक रूप मे पं० श्रीकृषणा ठाकुरक नाम अबैछ तथा 'चन्द्रप्रभा' कें प्रथम रचना होएबाक सौभाग्य प्राप्त छैक।

पं० श्रीकृष्ण ठाकुरक जन्म सन् १२५७ साल (१७५० ई०) मे खण्डवलकुलमे भेल। ओ प्रकाण्ड तान्त्रिक, सर्वसीमा (लोहनारोड, मधुबनी) निवासी पं० महेश्वर ठाकुरक पुत्र तथा म० म० मणिनाथ ठाकुरक पौत्र छलाह। पं० श्रीकृष्ण ठाकुर आठ भाइ-बहीन छलाह। हिनक ज्येष्ठा सहोदराक विवाह म.म. कविवर हर्षनाथ झासँ छल।

पं० श्रीकृष्ण ठाकुर देखबामे पिण्डश्याम छलाह। देह दोहरा एवं नमछर छल। शिक्षा-दीक्षा नदिया (बंगाल) मे भेल। तीन विवाह छलनि। पहिल विवाह भट्टपुरा छल। एहि पक्ष मे एक कन्या भेलथिन्ह। प्रथम पत्नीक देहावसानक उपरान्त दोसर विवाह शारदापुर कएल। द्वितीय पक्ष मे तीन बालक पं० उमाकान्त ठाकुर, पं० चन्द्रकान्त ठाकुर आ पं० गंगाकान्त ठाकुर। तेसर पक्षमे सन्तान नहि भेलनी। पं० ठाकुरक एक मात्र कन्या परमेश्वरी देवीक विवाह मांडर वंशावतंस, उजान ग्राम वास्तव्य पं० गिरिधारी झाक बालक 'शब्द प्रदीपकार' पं० हेमपति झा प्रसिद्ध 'विकल झा' सँ छल। मैथिलीक ख्यातनामा साहित्यकार ओ वैयाकरण पं० श्यामानन्द झा एवं कवियित्री मोदवती (हरिलता) हिनहि दोहित्र एवं दौहित्री छलथिन्ह। प्रो० गंगापति सिंह, पं० लक्ष्मीपति सिंह आदिक पं० श्रीकृष्ण ठाकुर आचार्यगुरु छलाह।

पं० श्रीकृष्ण ठाकुरक दुखमय छल। विचारसँ उदारवादी छलाह, अन्धविश्वासक विरोधी छलाह तथा ओकर विपक्षमे लेखनी चलैत छल। ओ सधिखन एहि चेष्टा मे रहैत छलाह जे समाज अपन कर्त्तव्याकर्त्तव्यसँ परिचित हो, स्त्री-समाजमे कर्त्तव्यशीलताक भाव जागृत हो तथा विद्धत् समाज अपन सामाजिक तथा धार्मिक आचार-विचारक वैज्ञानिक महत्व जानबाक चेष्टा करथि। एहि लेल ओ निरन्तर प्रयत्नशील रहैत छलाह। हिनक एहि प्रयत्नक, मठाधीश लोकनि विरोध करैत छलाह। अपमानित करबाक षड्यंत्र रचल जाइत छल। परंच, पं० श्रीकृष्ण ठाकुर नीडर भए अपन विचार रखैत जाइत छलाह। लोकक धमकीसँ अप्रभावित रही अपन कर्त्तव्यपथ पर ओ अग्रसर होइत रहलाह। मुदा, एकटा विषय ध्यातव्य जे जीवन-यापन कंटकाकीर्ण रहितहु पं० ठाकुर लेखनीसँ विमुख कहियो नहि रहलाह। सन् १३२९ साल (१९२२)मे कतेको अमरग्रंथक रचना कए पं० श्रीकृष्ण ठाकुर सुरपुरक शोभा बढ़ेबाक हेतु विदा भए गेलाह।

पं० श्रीकृष्ण ठाकुरक अमूल्य ग्रंथमे अछि-- (१) मिथिला तीर्थप्रकाश (मिथिला यन्त्रोद्धार सहित), (२) नारी धर्मप्रकाश (हिन्दी टीका सहित) (३) शूद्र विवाह पद्धति (हिन्दी भाषा टीका सहित) (४) वैतरणीदानम् (पिण्डदान पर्यन्त भाषा टीका सहित) (५) गृहोत्सर्ग पद्धति (सटीक), (६) कुलदेवता स्थापना विधि (७) शुद्ध
निर्णय, (८) सामा कथा, (९) गंगापत्तलकम्, (१०) ध्वजारोपण विधि एवं (११) शिवपूजा प्रदीपिका। एहि पोथीक अतिर्कितो किछु अप्रकाशित पोथीक चर्चा अछि, जाहिमे प्रमुख अछि "माला विवेक'। मुदा जहिना कवि कोकिल विद्यापति कें हमरा लोकनि संस्कृत रचनाक आधारपर नहि, पदावलीक आधार पर विशेष रूपें जनैत छी, ओहिना पं० श्रीकृष्ण ठाकुर अपन मैथिली कथा संग्रह 'चन्द्रप्रभाक' हेतु मैथिली साहित्यमे पूज्य छथि।

'चन्द्रप्रभाक' प्रकाशन पं० श्रीकृष्ण ठाकुरक मुत्युपरान्त कतेको वर्षक वाद विक्रम सम्वत् १९९६ (१९३९ ई०) मे भेल। सम्पादन कएल पं० लक्ष्मीपति सिंह तथा पं० रघुनाथ प्रसाद मिश्र 'पुरोहित' मैथिली बन्धु कार्यालय, अजमेर प्रकाशित कएल। प्रथम संस्करण ५०० प्रतिक छल तथा मूल्य छल एक आना।

'चन्द्रप्रभाक' पाण्डुलिपिक प्रसंग सम्पादक पं० सक्ष्मीपति सिंह लिखने छथि जे ई कथावस्तु लेखक महोदयक अमर साहित्यिक कृतिक किछु अंश मात्र कहल जा सकैछ। एकर पाण्डुलिपि बहुतो वर्ष पूर्व हमरा अपन पूज्यपाद पितृव्य प्रो० गंगापति सिंह (१८९४-१९६९) जी साहब सँ अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण कागतपर लिखल प्राप्त भेल छल, जे समुचित समावेशक अभावे गतवर्ष धरि हमरा ओहिठाम अप्रकाशित पड़ल छल। 'चन्द्रप्रभाक' भाषा शैलीक आधारपर रचनाकालक प्रसंग लिखल अछि "कहबाक आवश्यकता नहि कि 'चन्दप्रभा' उन्नैसम शताब्दीक मैथिली गद्य रचनाक एक नमूने थिक"

'चन्द्रप्रभाक' प्रकाशक पं० रघुनाथ मिश्र 'पुरोहित' एकर महत्वक प्रसंग लिखल अछि-- "प्राचीन मैथिल विद्वान लोकनिक पद्यरचनाक अपेक्ष गद्य रचना बहुत कम प्राप्त होइछ, तें एहि कथामाला कें पुस्तकाकारहु प्रकाशित कए देब, प्राचीन साहित्योद्धारक दृष्टिमे अपन इष्ट कर्त्तव्य बुझना गेल। एकर अतिरिक्त 'चन्द्रप्रभाक' रचना कालक प्रसंग सेहो लिखल अछि--'चन्द्रप्रभा' आइसँ (१९३९ ई० सँ) ६०-७० वर्ष पूर्वक लिखल अछि। तें एहिवात पर ध्यान राखिए "चन्द्रप्रभाक" वास्तविक महत्व बोधगम्य भए सकैछ। म.म.उमेश मिश्र (१८९५-१९६७) 'चन्द्रप्रभाक' उपादेयताक प्रसंग लिखल अछि--"एहिमे अनेक कथाक संग्रह अछि। ई सभ रोचक कथा शिक्षाप्रद अछि। ई ग्रंथ साहित्यिक होइतहुँ कथाक साहित्यिक लक्षण सँ आक्रान्त नहि अछि।

मैथिली कथाक विकासक दृष्टिएँ 'चन्द्रप्रभा' पहिल कथा संग्रह थिक। तथापि एकर प्रचार-प्रसार आ व्यापक अध्ययन नहि भए सकल। मिथिलाञ्चल वा मैथिलीक अध्ययन केन्द्रहु

पर प्रकाशित पोथीक प्रचार-प्रसार जखन नहि भए पबैत अछि, तखन मिथिलाञ्चलसँ कोसो दूर प्रकाशित पोथीक प्रचार-प्रसार कोना भए पबैत?

डा० जयकान्त मिश्रक (ज १९ नवम्बर १९२२) परवर्त्ती इतिहासकार लोकनि "चन्द्रप्रभाक" नामक मुद्रणजन्य त्रुटिक परिमार्जन नहि कए सकैत गेलाह। ओहि पोथीक प्रसंग किछुओ लिंखब तँ सर्वथा असम्भवे छल। एकर साफ मतलब भेल, 'चन्द्रप्रभा' पाठक धरि नहि पहुँछि सकल।

'चन्द्रप्रभाक' आरम्भ एक श्लोक सँ होइछ आ तकर वाद कथाक स्त्रोत फूटि पड़ैछ। एक कथासँ दोसर कथा बाहर होइत जाइछ। मुदा सभ अपना मे एक दोसरासँ पृथक् आ स्वतंत्र मुदा रूपमे साम्य अछि रोचकताक। चूँकि, गुरु आ शिष्याक संवादसँ कथा आरम्भ होइछ नें (प्रत्येक कथा शिक्षाप्रद अछि। आजुक दृष्टिसँ अलौकिक सेहो लगैछ। कथा सभ इतिवृत्तात्मक अछि। कथाकारक ध्यान चरित्र चित्रणसँ वेशी महत्वपूर्ण घटनाक विवरण पर छनि। किछु शब्दक प्रयोग ओहि रूपमे अछि जे 'चन्द्रप्रभाक' लेखनशैलीकें गतशताब्दीक प्रमाणित करैछ। जेना लिखल अछि, 'बिगड़ल प्रजा नहि साहित्य करइन्ह।' एहिठाम 'साहित्य' शब्दक प्रयोग सहयोग किंवा सहायताक अर्थमे अछि, ई प्रयोग वेश प्राचीन अछि।

"चन्द्रप्रभाक" प्रसंग डा० जयकान्त मिश्र लिखैत छथि' - Shrikrishna Thakur's Chandraprabhaga is a small work in the old manner of tales found in Sanskrit collection of Fables. It begins with a Sanskrit verse which a princess is tought to understand with the help of several illustrative stories. These stories are imaginary, though they are full of apparent wordly wisdom. They are substantially very much like the Romantic Maithili folk tales--

मैथिली कथाक विकास रेखा कें स्पष्ट करैत प्रो० आनन्द मिश्र (१९२६) लिखल अछि जे पंचतंत्रक शैली विद्यापतिक 'पुरुष परीक्षा' सँ होइत मैथिलीक प्रारम्भिक कथा शैली धरि आएल अछि। उदाहरण- प्रत्यूदाहरणसँ कोनो नीतिवचनक समर्थन एहि कथाशैलीक विशेषता थिक। एहि कोटिक कथा सभ उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे अबैत-अबैत लिखल जाए लागल। श्रीकृष्ण ठाकुरक 'चन्द्रप्रभा' (एकरा श्री जयकान्त बाबू 'चन्द्रभागा' लिखने छथि, परन्तु सत्य एहिसँ भिन्न अछि एवं एहि भ्रमक, कारणें आनो इतिहासक पोथीमे एहि भ्रमक लसरि लागल अछि) ओहि परम्पराक रचना थिक।

मैथिलीक पहिल कथासंग्रह 'चन्द्रप्रभाक' अध्ययन विश्लेषण, नीक जकाँ नहि कएल जा सकल अछि। एकर प्रमुख कारण थिक अनुपलब्धता। आजुक पाठक पुरनो वस्तुकें देखय चाहैत अछि। ओहि पर फेरसँ विचार करए चाहैत अछि। आ से सब सर्वसुलभ भेले पर माथिलीक आरम्भिक कथा आ गद्यपर विशेष प्रकाश पड़ि सकत।

मिथिला मिहिर १८ अगस्त १९८५

❁ ❁ ❁ ❁

मैथिलीक प्रथम उपन्यासकार
पं० जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर

पुस्तक मे प्रकाशित "रामेश्वर" मैथीलीक प्रथम उपन्यास थिक। एकर प्रकाशन मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी द्वारा १९१६ ई० मे भेल। "रामेश्वर" उपन्यासक लेखक छथि ग्राम नवटोल, पत्रालय सरिसब पाही, जिला मधुबनीक निवासी सौदर पुरिएदिगौन मूलक पं० रामदत्त मिश्रक पुत्र पं० जीवछ मिश्र। हिनक जन्म माघ १२७१ साल (फसली) तदनिसार जनवरी १८६३ ई० काशीलाभ भादव १३३० साल, तदनुसार अगस्त १९२३ मे भेल।

पं० जीवछ मिश्रक शिक्षा सखबार (मधुबनी) क पं० जुरौन ढा द्वारा आरंभ कारओल गेल। मुदा जखन मात्र तेरह वर्षक कि पिताक अकस्मात देहान्त भए गेलाक कारणें पारिवारक दायित्व सँ पं० जीवछ मिश्र आक्रान्त भए गेलाह। शिक्षक क्रम टूटि गेलनि। मुदा अध्यवसायी प्रवृत्ति एवं लगनशीलताक कारणें अध्ययन सँ पूर्णतः विरत नहि भए, जेना-तेना लगले रहलाह। संस्कृत, मैथिली आ हिन्दीक अतिरिक्त उर्दूक ज्ञान सेहो प्राप्त कएल। उर्दू भाषा-साहित्यिक ज्ञान नजिरा (सकरी, दरभंगा) क एक मौलवी सँ प्राप्त कएल।

विभिन्न साहित्यक अध्ययन आ मनन सँ साहित्य सर्जनाक सुप्त रुचि जागि गेल। संगहि, अपना
समयक प्रमुख साहित्यकार आ सर्जनात्मक साहित्य मे रुचि रखनिहार व्यक्ति, यथा--महाराज कुमार रामदीन सिंह, अम्बिका दत्त व्यास, देवकीनन्दन खत्री, खेमराज कृष्णदास, महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा जार्ज ग्रियर्सन सँ प्रेरणा आ प्रोत्साहन भेटैत रहल।

पुस्तक मे प्रकाशित "किछु अपन विषय" सँ स्पष्ट होइछ जे पं० जीवछ मिश्र पहिने हिन्दी मे लिखब आरंभ कएल। हिन्दी पत्रिका "सरस्वती" एवं 'माधुरी' मे लेखादि बरमहल छपए लागल। पं० अम्बिकादत्त व्यासक प्रेरणासँ दू पोथीक सर्जना सेहो कएल। मुदा, दुर्भाग्य सँ दूनू पोथीक पाण्डुलिपि ओहिठाम सँ घूमि नहि सकल। अपन दूनू कृति कें बोहाएल देखि आक्रोश भेलनि। एही बीच मिथिलाक्षरकें गीरी, मैथिली कें उदरस्थ कए लेबाक जे षड्यंत्र चलि रहल छल, तकरा बूझि ओ सचेत भए गेलाह। 'हिन्दी साहित्य परिषदक' भागलपुर अधिनेशनमे एक मैथिल पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्र (१८९०-१९८३) द्वारा मैथिली भाषा साहित्यक सभ प्रकारें वहिष्कारक प्रस्ताव पारित कराओल गेला पर ओ अत्यन्त दुःखी भेलाह। आ प्रतिज्ञा कएल-- "एहि प्रकार हिन्दी मध्य किछुओ लिखबा सौं नहि लिखबे श्रेयस्कर बूझल।" म० म० मुरलीधर झाक (१८६९-१९२९) आशीर्वाद भेटलनि। पं० जीवन झाक (१८५६-१९२०) एकान्तनिष्ठा आ सर्जनात्मकता कें परम्परानुरागी पंडितवर्ग द्वारा अवहेलना होइत देखि, मातृभाषाक प्रति अनुराग

और प्रगाढ़ होइत गेल। "मिहिर" आ "मोद" मे मैथिली आन्दोलनक सम्बन्ध मे जखन-तखन विचार छपए लागल।

पं० जीवछ मिश्रक लेखनी सँ श्रीनगरक राजा कमलानन्द सिंह 'सरोज' आकृष्ट भेलाह। सरोज जीक प्रेरणा सँ ओ तीन टा उपन्यास लिखल। परन्तु, एहि उपन्यासक पाण्डुलिपि "सरोज" जी क देहावसानक संग आलोपित भए गेल। एहि घटना सँ "सरोज" जीक अनुज राजा कालिकानन्द सिंह मर्माहत भए पुनः जीवछ मिश्र सँ मैथिली मे उपन्यास लिखबाक आग्रह कएल। एही आग्रहक प्रतिफल थिक 'रामेश्वर'।

'रामेश्वर' पढ़ला सँ अथवा सुनला सँ सेतुबन्ध रामेश्वर अथवा समकालीन मिथिलेशक भ्रम भए जा सकैछ। मुदा, एहि उपन्यासक कथ्य एहि सभ सँ कोसो दूर मिथिला आ नेपालक सामाजिक जीवन मे पसरल विकृति आ विडम्बन, वाह्म आडम्बर, अनाचार, व्यभिचार आ शोषण करबाक प्रवृत्ति कें देखार करब अछि। भूखक आगिमे हेराएल विवेकक चित्रण अछि। स्वार्थी समाजक कुकृत्यक भंडाफोर करब अछि।

"रामेश्वर" क कथा वस्तु भोजखौक समाजक किरदानीसँ जन्म लैत अछि। ई भोजखौक समाज एक सुखी सम्पन्न पिताक परोक्ष होइतहि पुत्र आ पौत्र कें भूखे अहुँछिया कटबा लेल विवश कए दैछ। तीन वर्षक बालकक भूखे आसमर्द सुनबा मे असमर्थ रामेश्वर बापक श्राद्धमे कर्ज देनिहार क्रूर पिशाचक नजरि सँ बचि, घर-घड़ाड़ी कें बेचि,गौरीपुर चल जाइछ। गौरीपुरक थोनेदार रामेश्वरक उपयोग थाना सँ पड़ाएल एक चोरक रूप मे करैछ। ओ अपन अक्षमताक दोष सँ बचि लाभ पएबालेल ओकर उपयोग करैछ। जमीनदारी छीना जएबाक डर सेहो एहि बेर भए गेल छैक--"चोरी क आसामी बनाय नहि पठाओल जायत तँ" संभव जे एहि बेरि दण्डै मात्र जमीन्दार कें नहि भए, कदाच जमीन्दारी छीनि लेल जाइन्हि। "एहि लेल पचास रुपैया रामेश्वरक परिवारक प्रतिपालन लेल, जहल काटि घूमि आएबा धरि देब स्वीकारैछ। थानाक नायब अपन केस कें मजगूत करबा लेल रामेश्वर कें चलान कएलाक बाद निशाभाग राति मे चोरीक एक पनबट्टी गाड़बा लेल रामेश्वरक घर जाइछ। पुत्रक विछोह कें सहबा मे असमर्थ, सिपाही कें चकमा दए भागल, रामेश्वर नायबकें घरमे आनि, केबारी बन्द करैत पत्नी कें कोनटा सँ देखि लैछ तथा अवैध संबंधक अनुमान कए, पत्नीकें जोर सँ लांछित करैत शेष जीवनक प्रति निरश भए, पुलिसक समक्ष पुनः स्वयं उपस्थित भए जाइछ।
सभ अपराध कें कबूलि बीस वर्षक जहल पबैछ। पतिरायणा पार्वती पति द्वारा लांछित भेला पर आत्महत्या करबा लेल कमलामे कूदि जाइछ। मुदा, प्रातः स्नान निमित गेल एक बाबाजी द्वारा छानि अपन कुटी मे राखि
लेल जाइछ। एहि दूनू घटनाक समस्त उत्तरदाइत्व नायब अपना पर लए रामेश्वरक पुत्र आनन्द मोहनक पालन-पोषण आ अध्ययनक व्यवस्था अपन पुत्र जकाँ करैछ। पढ़ि-लिखि आनन्दमोहन डाक्टर बनि जाइछ। बीस वर्ष जहल काटि घूमला पर आनन्दमोहन कें नहि पाबि, रामेश्वर परोपट्टा कें आतंकित करयबला गिरोहक सरदार बनि जाइछ। डकैतीक क्रम मे आहत भेला पर आनन्दमोहने ओकर चिकित्सा करैछ। मुदा ओ चिन्हि नहि सकल। रामेश्वरकें स्वस्थ भए गेल

देखि, गिरोह पुनः उठा कए लए जाइछ आ डकैतीमे लीन भए जाइछ। एक दिन ओही डाकटरक ओहिठाम रामेश्वर अपन दलबलसँ डकैती करबा लेल जाइछ। मुदा डाकटरकें चिन्हि गेला पर गिरोहसँ फराक भए विचार करैछ। रामेश्वरक विगत बीस वर्षक घटनावली डाकटरक समक्ष उपस्थित भेलापर डाकटर आनन्दमोहन पिताक पैर पर खसि, परिचय दैछ। पार्वतीसँ भेंट होइछ। बाबाजीकें सेहो रामेश्वर चिन्हि जाइछ जे पार्वतीक ग्रहकें शान्त करबा लेल विवाहक तुरंत वादे घर आंगन छोड़ि जंगलमे चल गेल छलाह। आ आनन्दमोहनक शाखापातकें देखि रामेश्वर तथा पार्वती काशीबास करबा लेल चलि जाइछ।

एहि उपन्यासक माध्यमसँ उपन्यासकार सामाजिक जीवनमे व्याप्त कुरीति पर प्रकाश देल अछि। परिस्थितक ठेकफेरीमे विवाकीओक विवेक कोना डोलि जाइछ, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्यक विचार छोड़ि कोना कुमार्गक यात्री जाइछ, तकर ज्वलन्त प्रमाण रामेश्वर थिक। ई समाजक प्रपंचक प्रतिफल थिक जे रामेश्वर सन सोझ लोक फंसि जाइछ। रामेश्वरक कथन--"पेट क ज्वाला सँ कातर मनुष्य सँ किछु असाध्य नहि होइत छैक।" एकहि संग मानसिक स्थिति आ कातरता कें व्यक्त करैछ। रामेश्वरक चरित्रकें उपस्थित करबामे उपन्यासकार पूर्ण कुशलता देखाओल अछि। ओकर चरित्र ओहिखन चरमबिन्दु पर पहुँचि जाइछ, जखन परोपट्टारकें आक्रान्त कएनिहार डाकू सरदार रामेश्वर डाक्टरक ओहिठाम डकैती करबा लेल जाइछ आ ओकर समस्त क्रूरता क्षणहि मे निपत्ता भए जाइछ। नायबक चित्रणमे उपन्यासकार अपन पटुता निखारल अछि। नायब, जे किछु गलती करैछ तकर ओ प्रायश्चितो करैछ। प्रायश्चिते स्वरूप आनन्दमोहनक भार उठबैछ आ बाद मे अपन धन सम्पत्ति दैछ। एकर पूर्ण संभावना छलैक जे पुत्र प्रेम मे बताह रामेश्वरआनन्द मोहनकें एहि उच्चता धरि नहि पहुँचा पबैत।

जतय धरि "रामेश्वर" क वर्णन शैलीक प्रश्न अछि, पूर्ण प्रभावक अछि। आरम्भे मे उपन्यासकार वातावरणक निर्माण कए सामाजिक विसंगतिक उद्घाटन करैत छथि, जाहिसँ पाठक स्तब्ध रहि जाइछ। "दरबाजा पर सुखाएल पात सभक ढेरी ओ फूटल माटिक वासन जे श्राद्धक भोजमे बाहर फेंकल गेल छलैक, ओहि मध्य गामक कुकूर सभ अपनामे कटाउझि कए, सड़ल-पचल ऐंठ खाइत छलैक, बालक ओहि दिस टकटकी लगौने देखैत छलैक।" एक सुखी सम्पन्न पितामहक पौत्रक, पितामहक श्राद्धकर्मक प्राते, कर्मक फेंकल सुखाएल-पात आ फूटल माटिक वासन दिस क्षुधार्त भए, टकटकी लगा कए देखब, एक कारुणिक दृश्य उत्पन्न कए दैछ। मासाजिक प्रपंचक उद्घाटन करैछ। सिपाहीक बीचसँ हथकड़ी पहीरने पड़ाएल रामेश्वर जखन अपन घरमे प्रवेश करैत नायब कें देखि लैछ तँ रामेश्वर कें पत्नीक चरित्रक विश्वसनीयता पर शंका होइछ आ उपन्यासक वातावरणमे नाटकीय परिवर्तन भए जाइछ। उपन्यासकार पात्र सभक मानसिक स्थितिक चित्रण रोचक ढंगे कएल अछि।

"रामेश्वर" मे दू प्रकारक भाषाक प्रयोग अछि। वार्तालापक भाषा सरल एवं स्वाभाविक अछि। स्थिति चित्रणक भाषा आलंकारिक अछि। दूनू प्रकारक भाषाक प्रयोग "रामेश्वर" क भाषाकें मैथिली गद्य साहित्यक अमूल्य निधि बनादैत अछि।

म.म. डा० गंगानाथ झा (१८७२-१९४१) "रामेश्वर"क विशेषताक प्रसंग लिखल अछि जे उपन्यास रोचक ओ शिक्षाप्रद, भाषा सरल ओ सरस छैन्हि, पढ़निहार कें सर्वथा उपकारक संभव। एहिना जार्ज ग्रियर्सन
(१८५१-१९४१) कें "रामेश्वर" पढ़ि मैथिली सँ संबंध पुनः नव भए जाइत छनि-'Those of us, who may wish to study Modern Maithili, will be interested to know of a book lately published in that form of speech. It is a short novel called 'Rameshvara' and is an excellent example of the language. Maithili, the principal dialect of 'Bihari' is at present over shadowed by its great neighbour Hindi and rarely attains the honour of print. I am depositing a copy of the book in the library of the society. Those who wish to purchase it, can obtain it from the author.'

डा० जयकान्त मिश्र (१९-११-१९२२), डा० दुर्गानाथ झा, श्रीश (१९२१) प्रभृति मैथिलीक इतिहासकार "रामेश्वर"कें अनुवादक कोटिमे राखल अछि। यद्यपि कोन उपन्यासक अनुवाद थिक तकर नाम केओ नहि लिखैत छथि। हमरा जनैत ई भ्रामक अछि। उपन्यासकार लिखने छथि जे कतेको उपन्यास लिखल आ हेरा गेल। कतेको उपन्यास ओ पढ़ैत छलाह। तें भए सकैछ जे प्रभावित भए "रामेश्वर" लिखने होएताह। कथाक प्रभाव आ अनुवाद दू भिन्न वस्तु थिक। जँ कोनो आन भाषाक उपन्यासक अनुवाद रहितैक, ओ ई नहि लिखतथि जे पूर्व जाहि उपन्यास उल्लेख कएल अछि, ओही कथाक आधार पर जेना भए सकल। सत्य त ई अछि जे कोनो पूर्वलिखित उपन्यासक कथावस्तु, जे बीज रूपमे उपन्यासकारक अन्तरतम मे रहल होएत, समय पाबि पल्लवित ओ पुष्पित भए मैथिली साहित्यक उपवनकें गमगमा देलक।

पं० जीवछ मिश्र मैथिलीमे ओहि समय उपन्यास लिखल आ प्रकाशित कएल जखन आन-आन भाषामे उपन्यास तँ लिखा रहल छल, किन्तु मैथिल लोकनि डेराइत छलाह। उपन्यासक अर्थ, एक विधाक रूपमे नहि, कोनो स्थिति वा घटनाकें लगसँ देखबाक हेतु, लगबैत छलाह। एहि प्रसंग लेखक स्वयं लिखने छथि--"मिथिला भाषामे उपन्यास? मैथिल समाजमे तेहन भयावह छल जे अनेक सुलेखको लोकनि थोड़ेक थोड़ेक लिखि ओकरा समाप्त करब "हौआ" बुझैत छलाह। एहना स्थितिमे हमरा जेना लिखै आएल तहिना "रामेश्वर" नामक उपन्यास लिखि समाजक आगू राखल। ताहि हेतु "सन्तोषार्थी" सभासँ कोनो-कोनो कथा प्रकाश कएल जाइत वा कोनो विवेचकसँ यथार्थ समालोचना "मैथिल समाज" काँ "दृष्टिगोचर" होइतन्हि त गद्य लिखबाक बहुतो व्यक्ति काँ उत्साह तथा समाजक मनोभाव अवगत होइत, से नहि भेने सामाजिक हानि वा लाभ की होइछ, एकरा एक उदाहरणसँ प्रवीण पाठककाँ बुझबैक प्रयासी होइत छी।[२]

पं० जीवछ मिश्रक एहि कथनसँ स्पष्ट होइछ जे 'संतोषार्थी सभा' अर्थात् मैथिल महासभा तथा मैथिल विद्वान लोकनि मैथिलीक प्रति सचेष्ट नहि छलाह। हुनक तात्पर्य छनि जँ विद्वान लोकनि "रामेश्वर" पढ़ि समालोचन करबाक परिपाटी चलौने रहितथितँ 'सुमति'

लिखबाक समय उपन्यासकार रासबिहारी लाल दास एहि बात पर अवश्य ध्यान रखितथि जे उपन्यासक विषय वस्तु आ उद्देश्य मात्र एक जातिक नहि हो तथा मैथिली उपन्यासमे हिन्दी कविताक प्रयोग नहि करितथि। पं० जीवछ मिश्रक मते एहि सँ मैथिलीक असामान्य हानि भेलैक अछि किएक तँ आनभाषा भाषी इएह निष्कर्ष बाहर करैछ जे मैथिलीमे पद्य नहि अछि। पद्य लेखक नहि छथि, तें आनभाषाक पद्यक प्रयोग कएल गेल अछि।

पं० जीवछ मिश्र 'मैथिल महासभाक' केन्द्र बिन्दु मानैत छलाह वर्ण विशेषक हित रक्षा। इएह वर्ण विशेष मैथिल मानल जाइत छल तथा मिथिलाक शेष व्यक्ति में अमैथिल बूझैत छलाह। एहि विचारधाराक प्रगतिगामी प्रभाव मिथिला आ मैथिलीक समस्याक समाधान पर पड़ल। "मैथिल महासभाक" मन्दार अधिवेशन मे विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक विषयक पारित प्रस्तावक विरुद्ध "भागलपुर गोपजातीय सभा" द्वारा सरकारक ओतय अर्जी पड़ल। ई "महासभा"क उक्त नीतिहिक परिणाम छल। पं० जीवछ मिश्र समस्त
मिथिलावासीकें मैथिल मानबाक पक्षधर छलाह। मिथिलाकें किछु व्यक्ति आ परिवारक मरौसी सम्पत्ति मानबाक ओ विरोध करैत छलाह [३] । एहि विरोधक स्पष्ट अर्थ होइत छल "मैथिल महासभा"क वंशानुगत सभापति तथा हुनक लगुआ-भगुआक विरोध करब आ कोपभाजन बनब। एहि प्रसंग पं० जीवछ मिश्रक विचार द्रष्टव्य अछि-"पैघ सँ छोट धरि अनेको महानुभावकाँ जखन ई एकान्त इच्छा छलनि जे एहि "मैथिल महासभा"द्वारा मैथिल समुदाय पर संभवतः (थोड़ बहुत) एहि चातुर्यसँ प्रभाव जमाए स्वार्थ-साधन करी तखन
समाजक उत्कर्ष वा पतित समाजक उन्नति, ओपतितक उत्थान के देखत, यदि क्यो तुच्छो मैथिल समाजोपकारी नियमक चर्चा वा संशोधनक चर्चा मात्रो कएलन्हि कि लगले हुनका लाल आँखि देखाए नाम मात्रक मिथिला भाषाक पत्रमे एक दिशाह आस्फालन वा हुँकार आरम्भ कै एम्हर-ओम्हर धवलाधारी लोकनिक निन्दा मे पागल खटमधुर गप्प आरम्भ होइछ। मध्य-मध्यमे धमकीक सेचन पड़ै लगैछ।[४] परंच, लोकक लाल-लाल आँखि आ धमकीक सेचन सँ पं० जीवछ मिश्र निफिकर रहलाह। निर्भीकता पूर्वक मठाधीशक षड्यंत्री मनोवृतिक भंडोफोर करैत रहलाह। इएह निर्भीकता एवं समाजक असली निदानक चिन्ता "रामेश्वर" क माध्यमे व्यक्त भए गेल अछि।

मि० मि० मार्च, १९७७

रासबिहारी लाल दास आ उपन्यास 'सुमति'

मैथिलीक तीन आरम्भिक उपन्यासकार जीवछ मिश्र, जनार्दन झा "जनसीदन" तथा रासबिहारी लाल दासमे अन्तिमक अपन फूट महत्व छनि। रासबिहारी लाल दासक वैयक्तिक अथवा पारिवारिक परिचयक प्रसंग कतहु विशेष लिखल नहि भेटैछ, परंच डा० जयकान्त मिश्र

ई[1] धरि अवश्य लिखने छथि जे रासबिहारी लाल दास दुलार सिंह दासक पुत्र छलाह तथा भच्छी' (मधुबनी) क निवासी छथि। भच्छी गामक एकटा विशेषता अछि जे मैथिलीक आधुनिक कालक साहित्यकें भरबा लेल कालीकुमार दास, (१९०२-१९४८) गुणवन्त लाल दास, हरिनन्दन ठाकुर "सरोज" (१९०८-१९४५) सन् साहित्यकार कें जन्म देलक अछि।

'सुमति' क प्रकाशन लेखक रासबिहारी लाल दास, द्वारा अगस्त १९१८ ई० मे भेल। ई पोथी समर्पित अछि महाराजा रामेश्वर सिंह (१८६०-१९२९) कें। ई समर्पण प्रमाणित करैछ जे रासबिहारी लाल दासक सम्पर्क आ सान्निध्य "राज दरभंगा" सँ अवश्य रहल होएतनि। एहि सम्पर्कक दोसर साक्ष्य अछि सिद्धान्तपूर्व दूनू पक्ष द्वारा कएल गेल ओरिआओनक विशद वर्णन।

"सुमति"क अतिरिक्त रासबिहारी लाल दासक "मिथिला दर्पण"क विशेष चर्चा भेटैत अछि। "मिथिला दर्पण" हिन्दीमे अछि तथा लेखकक प्रथम कृति थिक। एहि पोथीक समीक्षा करैत लिखल गेल अछि-"मिथिला का प्राचीन तथा आधुनिक इतिहास, भूगोल तथा अन्यान्य विषयों को प्रदर्शित करनेवाला २७५ पृष्ठों का यह ग्रन्थ छप गया है।"[2]

एकटा विचित्र संयोगे कही जे मैथिलीक तीनू आरम्भिक उपन्यासकार मैथिलीमे लिखबासँ पूर्व हिन्दी मे लिखि ख्याति पाबि गेल छलाह। मैथिलीक विरुद्ध चलि रहल षड्यंत्रसँ परिचित भेला पर जीबछ मिश्र हिन्दीमे लिखब छोड़ि देने छलाह तथा जनसीदन जीक मांजल हाथक लाभ मैथिली पबैत रहल। ओहिना "मिथिला
दर्पण" प्रकाशित भेलाक बाद रासबिहारी लाल दास कें मातृभाषाक प्रति विशेष प्रेम जागल तथा "सुमति" क रचना एवं प्रकाशन कएल।

"सुमति"क रचना ओ प्रकाशनक प्रसंग लिखने छथि "हिन्दी भाषानुरागी रसिक तथा प्रेमी पाठकक प्रोत्साहनसौं हिन्दी भाषाक अनन्य ग्रन्थक रचनाक परमाभिलाषी भेलहुँ, किन्तु मैथिली भाषाक रसिक कतिपय विवुध मित्र महाशय अनुरोध करय लगताह जे निज मातृभाषाक उन्नतिये सभ उन्नतिक मूल होइत अछि। अतएव, येहि बेरि मिथिला भाषाक साहित्येक सेवा करब परमावश्यक थीक।"[3]

अनुभूतिक अभिव्यक्ति लेल साहित्यक कतेको विधा प्रचलित अछि, परंच लेखक कोन विधाक चयन करैत अछि तथा अपन अनुभूति कें कोना स्वरूपायित करैत अछि, से निर्भर अछि कथ्य तथा ओहि कथ्य कें वहन करबाक क्षमतासँ परिपूरित विधाक। तें कोनो लेखक कोनो खास विधाकें भावाभिव्यक्ति ले किएक चयन करैत अछि, विशेष भावक भए जाइछ। रासबिहारी लाल दासक समक्ष एकटा व्यापक सामाजिक विषय-वस्तु छल, जकरा ओ समाजक समक्ष आनय चाहैत छलाह तथा अन्य विधाक सीमाक परिचय छलनि। उपन्यासक अर्थ ओ से नहि मानैत छलाह जे बाबू तुलापति सिंह (१८५९-१९१४) "मदनराज चरित उपन्यास" सँ बूझैत छलाह। ई भिन्न बात जे उपन्यास विधाक मानदण्ड पर आब "सुमति" कतेक ठठैत अछि।

उपन्यास विधा कें अभिव्यक्तिक माध्यमक रूपमे स्वीकार करबाक प्रसंग अपन विचार व्यक्त करैत रासबिहारी लाल दास भूमिकामे लिखने छथि--"नभ मण्डलस्थ नक्षत्रादिक दर्शन तौं सहज मे चक्षुपातहि सौं भै सकैत अछि, परन्तु भूमण्डल समाजाकाशस्थ चरित्ररूपी नक्षत्रक निरीक्षण तौं उपन्यास रूपी आइग्लासहीक (चश्माक)अवलम्बन सौं समाजगत गुप्त प्रकट, खानि-खानिक चरित्ररूपी नक्षत्र सूझय लागल, तैं कहि सकैत छी जे समाजरूपी फोनोग्रामक रेकर्ड, समाजरूपी फोटो कमराक लेंस, समाजगत चरित्रक चित्राधार अर्थात् अलबम, समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आदर्श आधार उपन्यासे थिक। अतएव, सामाजिक उपन्यासक पठन सौं मनुष्य सहजमे अपन दूषित चरित्र कैं सुविचार सौं परित्याग कय सकैत अछि।"[4]

साहित्याकार एक दिस जँ समाजकें प्रभावित करैत अछि तँ दोसर दिस प्रभावित सेहो होइछ। ई प्रक्रिया समाज आ साहित्यकारक मध्य निरन्तर चलैत रहैछ, कौखन तरे तर तँ कौखन देखा कए। परंच परिवेशसँ प्रभावित होएब तथा परिवेश कें प्रभावित करब दू-स्थितिक प्रतिफल थिक। अपन परिवेषक प्रति रचनाकार कतेक सजग अछि तथा परिवेधस छोट-पैघ घटना रचनाकारक भोक्ता मनकें कतेक दूर धरि प्रभावित कए सकैछ, से रचनाकारक संवेदनशीलता पर निर्भर करैछ। परिवेश तखनहि प्रभावित भए सकैछ जँ रचनाकारक व्यक्तित्व प्रखर रहैक। समाजक असंख्य विसंगति आ विडम्बना कें आत्म सात करैत, रचनाकार एकटा बिम्ब गढ़ैछ एवं आदर्श प्रस्तुत करैछ अपन संकल्पात्मक अनुभूतिक बलपर। लेखकक एही संकल्पात्मक अनुभूतिक साहित्यमे अभिव्यक्ति भेला पर ओ एकटा नव जीवन मूल्य बोधक निर्माण करैछ, हासशील जीवन आ सामाजिक मूल्यक स्थान पर, समाजोन्मुखी मूल्य स्थापित करैछ।

"सुमति"क रचनाकाल अथवा उपन्यासकार रासबिहारी लाल दासक जीवनकाल सुधारवादी आन्दोलनक काल थिक। ओहि कालमे कतेको सुधारक सामाजिक मंच पर अएलाह तथा सुधारवादी आन्दोलनक श्रीगणेश कए, सामाजिक विकृतिक निराकरण लेल जनमानसकें आन्दोलित कएल। एही सुधारवादी आन्दोलनक परिणामस्वरूप मिथिला मे "मैथिल कनफोरेन्स" अथवा "मैथिल महासभा"क स्थापना भेल जकर मूल लक्ष्य छल कोला-कोलामे बाँटल मिथिलाकें सामाजिक विकृति सँ मुक्त करब। ओहि सुधारवादी आन्दोलनक दूटा प्रमुख केन्द्र बिन्दु छल-स्त्री मे शिक्षाक प्रचार-प्रसार करब तथा वैवाहिक समस्या। ई दूनू
समस्या तेहन विकराल छल जे प्रत्येक सजग रचनाकार कें कोने-ने-कोनो रूपमे बिना प्रभावित कएने ओ नहि छोड़ैत छल। आ ओही सुधारवादी प्रभावें रासबिहारी लाल दास "सुमति"क रचना कएने छथि। लेखनक लक्ष्य कें स्पष्टत करैत लिखल अछि-"हमरा सभक आधुनिक सामाजिक दशा परम अधोगति कें प्राप्ति भे चललि अछि तैं येहि वेरि मिथिले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यासक रचना रचू, जाहिसौं समाज पर प्रचुर प्रभाव पड़ैक।"[5] लेखकक एहि मन्तव्यसँ स्पष्ट भए जाइछ जे हुनक उद्देश्य समाजो द्वारक छनि।

"सुमति"क कथावस्तु मिथिलाक कायस्थ परिवारमे विवाह आदिक अवसर पर होइत अपव्ययक कुपरिणाम देखेबाक निमित्त गढ़ल गेल अछि। सहलोला बाबू एक समृद्धिशाली आ मातवर पुरुखाक संतति थिकाह। किन्तु, आब आर्थिक स्थिति सोचनीय भए गेल छनि। आठम

संतान छथिन सोनेलाल, जनिक स्द्धान्त-विवाह खूब धूम-धामसँ आ अपन ओकाति कें बिना तौलने करेबाक छनि। फरीक सभ उसकेबासँ बाज नहि होइत छनि। कन्याप्रद मनोरथ लाभ कतहु पटबारी छथि। ओहो गतविभव छथि, किन्तु मनोरथ कम नहि छनि। समधिक तैयारी सूनि लज्जित होइत छथि आ बराबरी लेल कर्ज लैत छथि। वरियातीक स्वागत लेल नाना प्रकारक चीजवस्तु आ सजावटिक सामान महाराजाधिराज सँ मंगनी करैत छथि। हरिसिंह देवी व्यवस्था सँ सिद्धान्त होइत अछि। एहि अवसर पर बनल पंडाल आ अंग्रेजी बाजाक तान सूनि कए सभक मन प्रसन्न भए जाइत छैक। पटवारी मनोरथ लाभ कें होइत छनि जे प्रतिष्ठा रहि गेल। किन्तु जखन महाराजी चीजवस्तुक संग आएल साइस-महाउथ बिल छैत छनि तँ ओ आकाश सँ धरती पर खसैत छथि एवं सिद्धान्तपूर्ब लेल हजार टाकाक कर्ज, कम भए जाइत छनि। पाइ देबामे आनाकानी करबाक कारणें डहकनो खूब सुनैत छथि। करीब एक वर्षक उपरान्त कन्यादानक दिन स्थिर होइछ। दूनू पक्ष अपना-अपनी कें कर्ज लैत छथि। कार्यकर्त्ता आ विचारक छथिन गिरहकट्ट सभ। जे-सदिखन अधिकाधिक नफा कमयबाक ताकमे रहैत अछि। निर्णयक प्रतिकूल परियातीक संख्या होइछ। वरियाती लोकनि रस्तामे मद्यपान कए ओंघरा जाइत छथि। कन्यादानक समय कोनो विधि व्यवहार पर मत वैभिन्न सँ स्थिति बिस्फोटक भए जाइछ। वरियातीक कोन कथा, वरो कें वेदी पर सँ उठा लए जएबाक ओकालति होमए लगैछ। वर 'जी-जाँति' चतुर्थी धरि रहैत छथि, किन्तु चतुर्थीक प्रातहि सासुरक परित्याग करैत छथि। वरकें बौंसबा लेल साल भरि मनोरथ लाभ भार-दौड़ि पठबैत रहैत छथि। विधि-व्यवहारक ओरियाओनमे साल बीति जाइछ। ऋण सँ मुक्त होएबाक स्वाच्छन्ने नहि भेटैत छनि। कर्जदाता लोकनि समधि द्वय पर सवार भए जाइत अछि। ऋण ओसूली लेल मोकदमा होइछ। वारंट होइछ। अपार अपव्ययक परिणामक आघात कें सहलोला बाबू सहि नहि पबैत छथि आ पुत्रक दुरागमन सँ पूर्वहि प्राण-पखेरू उड़ि जाइत छनि। हिनक पुत्र लोकनि जतहि जाइत छथि, अपेक्षित संबंधी सभ धूतकारि दैत छनि। सहानुभूतिक एको शब्द सुनबाक अवसर नहि भेटैत छनि।

पाँचम वर्षमे सुमतिक दुरागमन होइत अछि। ओही मध्य सुमति कें पूर्णरूपें स्त्री-शिक्षा देल जाइछ। सासुर अबितहि आश्रमक भार उठा लैछ। समस्त गहना-गुड़िया बेचि आश्रममे लगा दैत अछि। स्वामीक जे किछु कमाइ होइत छनि, ओही पर गुजर करैत अछि। सुमतिक सुप्रबन्ध सँ आश्रमक स्थिति सुधरए लगैत छैक। बोहायल सम्पत्ति आपिस आबि जाइत छैक। जौतक शिक्षाक उचित प्रबन्ध करैत अछि। सुमतिक प्रयासें अर्जित सम्पत्तिक कारणें सोनेलाल दासवृत्ति सँ मुक्त होइत छथि। सुशील पर घटक अबैत छनि। किन्तु, सुमति आ सोनेलाल दूनू मिलि एक नियमावाली बनबैत छथि आ शर्त्त रखैत छथि, जे केओ कन्यागत एहि नियमावलीक पालन करताह, ताहीठाम सुशील आ सुबोधक सिद्धान्त विवाह कराएब।

"सुमति" स्त्री पात्र प्रधान रचना थिक। किन्तु पुरुष पात्र गौण नहि छथि। नायक छथि सोनेलाल जनिक विवाह सुमतिक संग होइत छथि। अन्य पुरुष पात्रमे प्रमुख छथि सहलोला बाबू। सहलोला बाबू सोनेलालक पिता छथि। परम समृद्धशाली पिताक पुत्र सहलोला बाबू कें आब मनोरथ टा रहि गेलछनि।

मनोरथ लाभ छथि सुमतिक पिता। पटवारीगिरी जीविका छनि। एकर अतिरिक्त ऋणदेवसाहु,

सरदारी मल्लिक, घाँइठाकुर (सहलोला बाबूक मित्र आ ऋणदाता) गिरहकट्टा मल (कपड़ावला) दिनमणि झा (ज्योतिषी), चैयाँ (नौकर), प्रपंची ठाकुर (सिपाही), पलटू ठाकुर आ मोचन ठाकुर (नौआ), जवाहिर लाल (सहलोला बाबूक जेठ बालक), सुशील (जवाहिर लालक पुत्र), सुबोध (सुमतिक बालक), हड़पुआ (सोनार), रजिस्ट्रार, भोलानाथ।

स्त्रीपात्रमे सुमतिक अतिरिक्ति अछि जेठरानी (सुमतिक सासु) कौशल्या कुमारि (घाँइ ठाकुरक पत्नी), मन्जुभाषिणी (सुमतिक देआदनी), हितवादिनी देवी आ प्रियम्बदा पण्डाइनि (सुमतिक सखि), कंसमसिया (खवासिनी) आदि। एहिसभ पात्रक अतिरिक्त एकटा उचित वक्ता छथि जे पात्रक काज एवं वक्तव्य पर टिप्पणी कैरत जाइत छथि।

उपन्यासकारकें अपव्ययीक स्थिति दयनीय देखेबाक छनि, तें स्त्री-पात्र हो वा पुरुष-पात्र, चरित्रक विकास पर ध्यान नहि देल अछि। एक समृद्धशाली पिताक पुत्र सहलोला बाबू आब साधनहीन भए गेल छथि। किन्तु, मनोरथ छनि जे खूब धूम धामसँ अन्तिम सन्तानक विवाह कराबी। सिद्धान्त सँ कर्ज करबाक रजे सूढ़ि लगैत छनि विवाहक एक वर्ष धरि चलिते रहैछ। एही पाछू सभ अचल सम्पत्ति बोहा जाइत छनि। तगेदा सहि नहि पबैत छथि आ बेटा लोकनिपर कर्जक बोझ छोड़ि देह त्यागि दैत छथि। सहलोला बाबू ओहि वर्गक प्रतिनिधित्व करैत छथि जे अपन विभवकें विना जोखने खर्च करैत जाइछ। सुमतिक पिता सेहो वैभवशाली नहि छथि किन्तु, समधिक देखाऊँसमे कर्ज लेबासँ बाज नहि अबैत छथि। ओहिपर सँ मालि क ओहिठाम खानि खसैत छनि आ जहल जाइत छथि। नायक सोनेलाल पर बड़ कम प्रकाश पड़ल अछि। पिताक परोक्ष भेला पर जेठ भाइ जखन सासुरक द्वितीय यात्रा लेल कर्ज लैत छथि तँ ओ सासुर सँ सभ रुपैया साते दिन मे फूंकि आबि जाइत अछि आ जखन सुमति घरक सुप्रबन्ध कए लैत अछि तँ दासवृत्ति सँ मुक्त होइत छथि। "सुमति"क छोट-छोट पात्रक चरित्र निर्माणमे उपन्यासकार विशेष सफल भेल लगैत छथि। घाँइ ठाकुरक व्यक्तित्वक निर्माणमे ओ कतेक सफल भेलाह अछि से एकहि उक्ति सँ स्पष्ट भए जाइछ। ओ पत्नीसँ कहैत छथि-- "प्रियतमे ! अहाँक अपन कोशलिया रुपैया किछु अछि, बालकक विवाह निमित्त दोस्त अपन मांस बेचबा पर उद्धृत छथि। हमर बहरुआ रुपैया सभ कर्जखोरक घरमे फंसि गेल अछि। रुपैया बाहर नहि कएला सौं येहन बढ़िया मांस अनके हाथ लगतैक"।

पुरुष पात्रमे जेना सहलोला बाबू "ऋणं कृत्वा घृतं पीबेत"क सिद्धान्तक अनुसरण करैत छथि, हुनक पत्नी जेठरानीदावी सेहो ओही विचारक छथि। जेठरानी देवी स्पष्टतः कहैत छथि- "जे किछु देने छलाह से सभ तौं विवाहे दान करैत-करैत निघटि गेल। सए दू सए होएबो करत तौं ताहि सौं कि ऊँटक मुँह मे जीरक फोड़न होएतैक? ऋणदाता मित्र मौजूद छथीह दश पांच हजार हुनकहि सौं हथफेर वा ऋण लेथु। आगाँ-पाछाँ सधैत-बधैत रहतैन्ह। सोनमा हमर कोरपोच्छू थीक एकर विवाह सभसौं विशेष रूपें कय देथून्ह। धन सम्पत्ति आब रखबे करताह कोन दिन लय।" सहए हाल घांइ ठाकुरक पत्नी कौशल्या कुमरिक अछि। ओ पतिसँ एक डिग्री आगूए छथि। कहैत छथिन्ह-"कागज पत्तर खूब पक्का-शक्का कराय लेब तखन रुपैया दोस्त कें देबैन्ह"। हितवादिनी देवी आ मन्जु भाषिणीक अवतरण सुमतिकें नारी धर्मक शिक्षा देबा लेल

कएल गेल अछि। ओ सभ मिलि सुमतिकें ताहि रूपें शिक्षित कए दैत छनि जे सुमति सासुर अवितहि घरकें सम्हारि लैछ। बोहाएल सम्पत्ति आपिस आबि जाइछ। पतिकें दासवृत्त सँ मुक्त कए दैछ। आ तखन सुमति एक आदर्श नारीक रूपमे ठाढ़ भए जाइछ। ओकर आदर्श भाव परिवारे लेल नहि, समाज लेल भए जाइत छैक। समाजकें सुधारब ओकर लक्ष्य बनि जाइति अछि।

'निर्दयीसासु' (१९१४) आ 'सुमति' (१९१८) एकहि युगक प्रतिफल थिक। दूनू गोटे स्त्री शिक्षाक प्रचार-प्रसार पर जोड़ देल अछि। किन्तु जनसीदनजी आ रासबिहारी लाल दासक चरित्र निर्माणक दृष्टिमे वैभिन्न स्पष्ट अछि। यशोदा किछु बजैछ नहि। अन्त-अन्त धरि सासु आ ननदिक यातना सहैत रहैछ। किन्तु सुमति घरकें सुधारि कए देखा दैछ। एकटा लटल-बूड़ल परिवारकें सम्हारि उक्तर्षक शिखर पर पहुँचा दैत अछि। विवाह आदिक अवसरपर अपव्ययकें रोकबालेल एक नियमावली बनबैत अछि। अपने तँ ओहिपर अछिए दोसरो कें ओकर पालन करबालेल प्रेरित करैत अछि।

मूल पोथी बिना देखने ऐतिहासिक भ्रान्ति कोना पसरैत जाइछ तकर एकटा उदाहरण थिक "सुमति"क प्रसंग प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक लिखब। सुमति थिकथि मनोरथ लाभक कन्या आ सहलोला बाबूक पुतहु। किन्तु डॉ० जयकान्त मश्रकें सहलोला बाबूक स्थान पर मनोरथ लाभ लिखा गेल। ओ लिखैत छथि-When the heroine Sumati, the daughter-in-law of Manorath Labh arrives, she manages things so well that his fortune turns for the better, the education and the bringing up of the child are done in the proper scientific manner and all ends happily[6] एही गलतीकें दोहरबैत प्रो० राधाकृष्ण चौधरी (१९२४-१९८५) लिखैत छथि :-"When the heroine, Sumati, daughter-in-law of Manorath Labh arrives, she manages things so well that the fortunes of the family takes a better turn.[7]

'सुमति' मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास थिक आ एहि कोटिक रचना पर विचार करबाक समय कमसँ कम दू बिन्दु पर अवश्य ध्यान राखल जाएबाक चाही। पहिल ई जे ओ कोन कालक रचना थिक आ ओहि समय मे एहि विधाक की स्थिति छलैक। तें जखन "सुमति"क औपन्यासिकताक चर्चा करैत छी तँ भेटैछ जे ओहि समय मे उपन्यास विधा आइ-काल्हि जकाँ प्रचलित नहि छल। दोसर भाषा मे उपन्यास लिखा रहल छल। से देखि मैथिलीक साहित्यकार प्रेरित भेलाह आ अपन मातृभाषा मे ओहि विधाक अभाव देखि उपन्यास रचना कएल। एकटा साहित्यिक आभावकें पूर्ण करबाक दायित्वक निर्वाह कएल। आ एही अभाव एवं मानसिकताक स्थितिमे "सुमति" सेहो लिखाएल अछि। सुमतिक औपन्यासिकताक प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्र लिखने छथि-'But there is hardly any skill displayed in narrating the story or in weaving the plot. Characterization is very vogue and indistinct. Indeed the work is a typical example of immature novel writing in Maithili. The situation in Mithila and the idea worthy of being the subject matter of a

Maithili novel but the handing is crude'.

डॉ० जयकान्त मिश्रक एहि मत सँ सहमत प्रो० राधाकृष्ण चौधरी लिखैत छथि- "Inspite of its crude handling and lack of interesting skill in narrating the story 'sumati' may be regarded as the first successful, attempt at writing a modern novel in Maithili." एहि सँ पहिने प्रो० चौधरी लिखने छथि-"the Era of Novel writing was formally inaugurated by Ras Bihari Lal Das (author of 'Maithili Darpan') whose Novel "Sumati" did a tremendous service".

प्रो० चौधरीक उक्त विचार सँ दू टा निष्कर्ष निकाल जा सकैछ-मैथिलीमे उपन्यास लेखनक विधिवत् उद्घाटन 'सुमति' सँ भेल तथा आधुनिक उपन्यास लेखन मे "सुमति" प्रथम सफल प्रयास थिक। प्रो० चौधरीक एहि मान्यतासँ सहमत नहि भेल जा सकैछ। हमर स्पष्ट धारणा अछि जे प्रो० चौधरी कें "सुमति" पढ़ल नहि छलनि किएक तँ ओही भ्रान्ति कें ओहो नहि दोहरा दैतथि जे डॉ० मिश्रक लेखनसँ पसरल। 'सुमति' पढ़ितहि स्पष्ट भए जाइछ जे सुमति के थिकीह। ककर बेटी आ ककर पुतहु। "सुमति" मनोरथ
लाभक कन्या थिकीह, पुतहु नहि।

"सुमतिक" प्रकाशन अगस्त १९१८ ई० मे अछि। एहि सँ पूर्वहि जीवछ मिश्रक "राममेश्वर" (१९१६) पुस्तकाकार प्रकाशित भए चर्चित भए गेल छल तथा १९१४ ई० मे जनार्दन झा "जनसीदनक" उपन्यास "निर्दयीसासु"क धारावाहिक प्रकाशन 'मिथिला मिहिर' मे भए गेल छल। तें, ई मानब ऐतिहासिक नहि होएत जे 'सुमति'क प्रकाशनसँ मैथिली मे आधुनिक उपन्यास लेखनक उद्घाटन भेल। जतय धरि मैथिलीक प्रथम सफल उपन्यास मानबाक प्रश्न अछि, से विवादक विषय भए सकैछ। रामेश्वर (१९१६) तथा निर्दयीसासु (१९१४) पुनर्मुद्रित भए सर्वसुलभ भए गेल अछि। ओहि सभ पर विचार आरम्भ भए गेलैक अछि।

हमरा ई मानबामे किंचितो तारतम्य नहि भए रहल अछि जे सुमतिक क्षेत्र निर्दयीसासु अथवा रामेश्वर सँ विस्तृत नहि छैक। एहिमे स्थिति अथवा पात्रक जतेक विविधता अछि वा विस्तार अछि से उक्त दूनू उपन्यासमे नहि। किन्तु, रासबिहारी लाल दास, जीवछ मिश्र अथवा जनार्दन झा 'जनसीदन' सँ कलात्मक स्तर पर पछड़ि जाइत छथि, आ तें 'सुमति' मे ओ सौन्दर्य नहि आबि सकल अछि जाहि सँ पाठक बन्हाएल रहि सकथि। 'रामेश्वर' अथवा "निर्दयीसासु" मे उपन्यासकार पाठककें अन्त-अन्त धरि बन्हने रहैछ किन्तु "सुमति"क ई स्थिति नहि छैक। "सुमति" मे उचित वक्ताक अवतरण अथवा लेखकक द्वारा प्रत्यक्ष रूपें पाठककें सम्बोधित करब, अरुचि उत्पन्न कए दैत अछि। पाठक कें सम्बोधित करैत लेखक कहैत छथि- "जिज्ञासु पाठक? येहि अवधकाण्ड मे श्रीमान् सहलोला बाबू कें सहस्राधिक मुद्रा दातव्य भेलैन्ह। अस्तु! वरप्रदक जिज्ञासा भै गेलि, आब कनेक कन्योप्रदक खोजपूछारी करब उचित थीक। कन्याप्रद मनोरथ लाभ जे हजार टाका सिद्धान्ततीर्थक निमित ऋण लेलैन्ह ताहि सौं ओहो कोन

रूपें सुफल लेलैन्ह, से सुनू।" एहि शैलीक प्रसंग डॉ० दुर्गानाथ झा "श्रीश" लिखने छथि-एहिमे उंचित वक्ता पात्रक सृष्टि कए लेखक कथावाचकक शैलीमे स्थान, स्थान पर उपन्यासक उद्देश्यक दिशि पाठकक ध्यान आकृष्ट करबैत चलैत छथि। मुदा ई उपन्यास कलाक कसौटी पर बड़ निर्बल सिद्ध होइत अछि।[2] उड़ियाक आदि उपन्यासकार फकीर मोहन सेनापति (१८४३-१९१८) 'छमन आठ गुण्ठ'क अध्ययन ई साबित करैछ जे ओहि समय उचित वक्ताक अवतरण स्वीकृत शैली छल।

"सुमति"क भाषा "सुमति"क आस्वादन मे पर्याप्त वाधा उत्पन्न करैत अछि। एकर भाषा उपन्यास वा कथाक भाषाक अपेक्षा निबन्धक भाषाक विशेष निकट छैक। लेखक अपन कथ्यक समर्थनमे जँहिं-तहिं तुलसीदासक चौपाइ ठूँसने छथि। डॉ० जयकान्त मिश्रक कहब-The whole work looks like an allegory on the following verse of Tulsi Das.

"जहँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना",
जहँ कुमति तहँ विपत निदाना ।।

सर्वथा ठीक लगैछ। जाहिछाम उपन्यासकार निबन्धात्मक भाषाक, प्रयोग नहि कएल अछि, वेश रोचक भए गेल अछि। जेना कसमसिया खवासिनि हजाम ठाकुर कें कहैत अछि-"औ हजाम ठाकुर? हम तौं अहाँक बहिनि पिउसीक दाखिल छी। छिः छिः हुनकहुँ सभ पर अहाँ कें ओहने भाव भक्ति रहैत अछि।" 'सुमति'क विषयवस्तु एक जातीय अछि तथा भाषामे हिन्दीओ कविता ठाम ठाम अछि। समकालीन उपन्यासकार पं० जीवछ मिश्र एहि दूमू स्थितिक आलोचना कएने छथि। मैथिली उपन्यास मे हिन्दी कविताक प्रयोगकें ओ सामान्य हानि मानने छथि। हुनका मतें ई प्रवृत्ति मैथिलीभाषा आ कविक अक्षमताक द्योतक थिक। भाषा ओ शैलीजन्य शिथिलताक अछैतो 'सुमति' एक महत्वपूर्ण रचना थिक। जकर मूल लक्ष्य अहि सामाजिक जागरण।
युगक एहि मूल स्वर कें व्यक्त करबामे उपन्यासकार सफल छथि।

-हालचाल १/१९८६

जनार्दन झा 'जनसीदन' आ निर्दयी सासु

जनार्दन झा 'जनसीदन' (१८७२-१९५१) क रचना तीन विधामे उपलब्ध अछि-उपन्यास, कविता तथा निबंध। डा० जयकान्त मिश्रक मतानुसार "निर्दयी सासु" शशिकला; "कलियुगी संन्यासी", "पुनर्विवाह" तथा "द्विरागम रहस्य" उपन्यास थिक। एहिमे "पुनर्विवाह"कें छोड़ि शेष सभ टा मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपमे प्रकाशित लिखल अछि। "कलियुगी संन्यासी उर्फ

ढ़कोसलानन्द" कें डा० मिश्र, डा० दुर्गानाथ झा "श्रीश" तथा डा० अमरेश पाठक (ज.१९३६) उपन्यास लिखने छथि किन्तु प्रो० हरिमोहन झा[1] प्रहसन कहल अछि। पद्य रचनामे "नीतिपद्यावली" प्रकाशित अछि। तकर अतिरिक्त किछु कविता पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल अछि। निबंधक रूपमे 'मिथिलाक महत्व'[2] तथा "प्रेम विवेचन"[3] सुलभ अछि।

पुरना "मिथिला मिहिर" देखला सँ ज्ञात भेल अछि जे जनसीदनजी पहिने हिन्दीमे लिखब आरम्भ कएल तथा तकर बाद मैथिली दिस अएलाह। जखन कि हिनक समकालीन मैथिल रचनाकार यथा यदुनाथ झा "यदुवर" त्रिलोचन झा, कालीचरण झा, मुंशी रघुनन्दन दास आदि हिन्दीप्रधान "मिथिला मिहिर" मे मैथिलीए मे लिखैत छलाह। मातृभाषा दिस कोना उन्मुख भेलाह तकर उल्लेख तँ नहि देखबामे आएल अछि, किन्तु हमर अनुमान अछि जे निम्न तीन कारणें जनसीदनजी मैथिलीमे लिखब शुरु कएने होएताह-(१) हिन्दीक विस्तारवादी मोनिमे मातृभाषा मैथिलीकें गरगोटिया देबाक चक्रचालिसँ आघात लागल होएतनि।(२) प्रचुर मात्रामे मौलिक आ अनुवाद साहित्य सँ हिन्दीक भंडारकें भरलो पर ओहन सम्मान नहि अनुभव कएने होएताह जे मोजर बिहारक बाहरक हिन्दीक साहित्यकारकें भेटैत छलनि।(३) जनसीदनजी तथा महावीर प्रसाद 'द्विवेदी' क बीच भेल पत्राचार सँ स्पष्ट होइछ जे द्विवेदी जी मैथिल राजदरवारसँ अपन पत्रिका 'सरस्वती'क लेल चन्दा प्राप्त करबाक निमित जनसीदनजीक परिचयकें भजबैत छलाह। जकर भान जनसीदनजीकें भए गेल होनि। आ से सब मिलि जनसीदनजीकें मैथिली दिस उन्मुख कए देलक। हमर एहि निष्कर्षक आधार थिक पं० जीवछ मिश्रक कटु अनुभव। पं० जीवछ मिश्र सेहो पहिने हिन्दी मे लिखैत छलाह। उपेक्षा भेला पर "सरस्वती" एवं "माधुरी"क बहिष्कारक घोषणा कएल। एहि प्रसंग जीवछ मिश्र स्पष्टतः लिखने छथि-"एहि प्रकार हिन्दी मध्य किछुओ लिखबासँ नहि लिखबे श्रेयष्कर बूझल ('रामेश्वर') एहि स्थितिक पुष्टि डा० ग्रियर्सन द्वारा कएल गेल 'रामेश्वर' पुस्तकक समीक्षा सँ सेहो होइछ। पं० जीवछ मिश्र जकाँ जनसीदनजी हिन्दीमे रचना नहि करबाक शपथ लेल वा नहि, से तँ ज्ञात नहि अछि, किन्तु मैथिलीमे रचना करबा लेल प्रवृत्त भेलाह तथा विभिन्न भाषा साहित्यिक परिचयसँ प्राप्त अनुभव सँ मैथिली भाषा साहित्यकें लाभान्वित कएल। एही प्रवृत्तिक परिणति थिक "निर्दयी सासु" जकर धारावाहिक प्रकाशन "मिथिला मिहिर"क १७ अक्टूबर १९१४ सँ भेल तथा २८ नवम्बर १९१४ क अंक में समाप्त भेल। (आब पुस्तकाकार प्रकाशित-निर्दयी सासु एवं पुनर्विवाह सं० डा० रमानन्द झा "रमण", वर्ष-१९८४)

निर्दयी सासुक कथावस्तु

'निर्दयी सासु' शब्द सुनलहिसँ बूझा जाइछ जे पुतहुपर अत्याचार कएनिहारि कोनो पराक्रमी सासुक
एहिमे कथा होएत। से सरिपहुँ पं० अयोध्यानाथ मिश्रक पत्नी अनूपरानी ओही कोटिक एक सासु छथि।

शिव नगरक ज्योतिषी चिन्तामणि झा कतेको वर्षधरि पश्चिमक कोनो राजधानी मे

रहलाक बाद गाम घूमैत छथि। ज्योतिशीजी सुधारवादी आन्दोलनसँ नीक जकाँ परिचित छथि तथा स्त्री शिक्षाक मर्म बुझैत छथि। अपन कन्या शारदाकें पढ़ेबा लिखेबामे खूब रुचि लैत छथि। शारदा मन लगा कए मिथिललाक्षर आ देवाक्षर सीखि लैछ। माय तथा पितामहीक संग टोल-पड़ोसक बूढ़ी लोकनि कें बैसा कए रामायण सस्वर पाठ कए लैत अछि।

शारदाक नओ वर्ष होइतहि, ज्योतिषीजी कें कन्यादानक चिन्ता भए जाइत छनि। अपन शारदाक हेतु योग्यवर तकबा लेल ओ खूब प्रयास करैत छथि। मुदा एकोटा कथा चित्त मे बैसैत नहि छनि। कतहु बर नीक तँ जाति नहि, जाति तँ, आस्थापात नहि। पत्नीक उपराग सुनैत छथि। अन्तमे हारिथाकि सहबाजपुरक पिसिऔत लक्ष्मीदत्त झाक संग सभ जाइत छथि। ओतहु खूब प्रयास करैत छथि। परंच एकहिठाम वरगुण, जाति आ धन नहि भेटैत छनि। एही बीच वसुहामक एकटा घटक घूटर झा उपस्थित होइत छथि। हिनकहि प्रयासँ वैरमपुरक अयोध्यानाथ मिश्रक अंग्रेजी पढ़ैत बालक सीतानाथ मिश्र मे बिना कोनो लेन-देनक कथा उपस्थित होइछ। अपंजीवद्ध रहलाक कारणें पिसिऔतक विरोध होइछ। ओ कथा भङठेबाक अपना भरि खूब प्रयास करैत छथि तथापि वरगुण देखि ज्योतिषी कथा स्थिर कए लैत छथि। एहिपर पिसिऔत तमसा कए चल जाइत छथिन। वर आ वरियातीक संग ज्योतिषी गाम आबि कन्यादान सम्पन्न करैत छथि।

पढ़लि-लिखलि पुतहु पाबि अयोध्यानाथ मिश्रकें खूब प्रसन्नता होइत छनि। पुतहुक रूप गुण सूनि प्रसन्नता तँ अनूप रानीकें सेहो होइत छनि, मुदा बेटाक विवाहमे टाका हाथ नहि अएबाक पर्याप्त दुख छनि। तीन वर्षक बाद दुरगमन भेला पर मन माफिक भार नहि अएलाक कारणें शारदाक प्रति सासुक व्यवहार रुच्छ भए जाइछ। बेटा-पुतहु कें गप्प करैत सूनि अथवा एकट्ठामे देखि लोहछि उठैत छथि। सदिखन चिन्ता रहैत छनि जे बेटा किनसाइत पुतहुक वशमे नहि भए जाए। पढ़ाइ समाप्त कए सीतानाथ नौकरी लेल बाहर जाइत छथि। सीतानाथक अनुपस्थितिमे सासु आ ननदिक अत्याचार शारदा पर बढ़ि जाइत छैक।

शारदाक नैहरिमे लोक पढ़ल-लिखल छल। पढ़बा-लिखबाकें नीक बूझैत छल। मुदा, सासुर मे स्थिति प्रतिकूल छैक। पढ़ब-लिखब वर्जित कए देल गेलैक। पोथी बढ़बालेल बाहर करए तँ ननदि उपद्रव करैक आ सासुकें शंका होइक। एक दिन किछु लिखैत देखि लेलापर शारदा कें सासु दुरगंजन कए छोड़ल। अपन अस्वस्थताक कारणें एक राति नहि जाँति सकल तँ सासु तूरपीन भए गेलीह। दुरागमनक तीन वर्ष बीतलोपर कल्याणक योग्यता नहि देखि, सासु बाँझ आदि शब्दसँ सम्बोधन करैछ। बेटाकें दोसर विवाहक लेल मनबैछ। शारदाक पुत्र होइछ। परिवारमे प्रसन्नता अबैछ। पौत्र पाबि अनूपरानी गद्‌गद् भए जाइत छथि। किन्तु, शारदाक प्रति व्यवहार नरम नहि होइत छनि। दुखित पड़ला पर दवाइ उपचार आदिक व्यवस्था नहि होमय दैत छथि। सीतानाथकें बजाओल जाइछ। उपचार चलैछ। शारदा नीके होइछ।

"निर्दयी सासु"क रचनाकालमे सुधारवादी आन्दोलन चरम पर छल। आ तकर स्पष्ट प्रभाव "निर्दयी सासु" मे अछि। ज्योतिषी चिन्तामणि झाक अवतारणा ओही आन्दोलनक परिणाम थिक। शारदाकें शिक्षित करब, स्त्री शिक्षाक महत्वक प्रतिपादन थिक। हरिसिंह देवी भूत समाज

कें कोला-कोलामे बटने जाइत छल, जाहिसँ कतेको प्रकारक सामाजिक कुरीति पसरि रहल छलैक। ओहि कुरीतिकें रोकबा लेल जनसीदनजी घटक सँ कहबाओल अछि.....हरिसिंह देवी कतय लेने फिरैछी, कन्या जाहिसँ सुखमे रहय से कर्त्तव्य थिक। परन्तु, हमरो मेहनति मोन राखब" घटकक एहि उक्ति मे हरिसिंह देवी व्यवस्थाक विरोध तँ अछिए घटकक आन्तरिक इच्छा-"हमर मेहनति मोन राखब"-अत्यन्त सहज रूपमे व्यक्त भए गेल अछि।

"निर्दयी सासु"क कथा वस्तुक निर्माण सामाजिक घटनाक आधार पर संयोजित अछि। एहि घटनाक चित्रण ततेक कौशलपूर्ण अछि जे समक्षहिमे घटित होइत प्रतीत होइछ। तात्पर्य जे स्वाभाविकता एवं विश्वसनीयताक विर्वाह सर्वत्र अछि। कन्यादान लेल पिताक फिफिआएब, पाँजिक रक्षाक चिन्ता, कन्याक सुख-सुविधाक चिन्ता क बीच झुलैत कन्यागतक मन स्थिति, बेटाकें विवाहमे पर्याप्त चीजवस्तु नहि भेटलापर वरक मायक खौझाएब, सासु द्वारा पुतहुक पुरखाकें उकटब, आदि स्थितिक चित्रण कुशलता एवं प्रभावक शैली मे अछि। गाममे हकार पड़ल अछि। गीतहारि सभ जूमि, रहलीह अछि। एहि कालक स्थितिक चित्रणक स्वाभाविकता एवं सजीवता देखनुक अछि-"दू घड़ीक बाद एकाएकी सभ जमा होमय लगलीह। आबय मे जनिका विलम्ब भेलनि, हुनका ओतए झोटहा पेआदा छूटलि, पकड़ि, अनलक। कतेक कालधरि हँसी मसखरी भेल। सीतानाथक मायकें ननदिक डहकन, कते कोन ठेकान नहि रखलकैन्हि। ओहो कियेक चुकितीह। जे फुरलैन्हि, तानि कय-कय सत्कार लोकक कयलथिन्ह।"

"निर्दयी सासु" स्त्री प्रधान रचना थिक। अनूपरानीक चारूकात घटना चक्र घूमैत रहैछ। अनूपरानीक अतिरिक्त आओरो पाँच नारी पात्र छथि-शारदा, शारदाक माय, सीतानाथक पीसी, सीतानाथक बहीन आ विधिकरी। पुरुष पात्रमे ज्योतिषी चिन्तामणि झा, लक्ष्मीदत्त झा, घटक घूटर झा, अयोध्यानाथ मिश्र, सीतानाथ मिश्र आ खब्बास आदि।

अनूपरानीक चित्रण क्रूर आ चिड़िचिड़ाहि सासुक रूपमे भेल अछि। पति आ पुत्र पर पूर्ण अधिकार छनि। अनूपरानीक मनक इच्छाक प्रतिकूल ककरो कल्ला नहि अलगि पबैछ। समाधिऔर सँ खूब चीज वस्तु आबय तकर उत्कृष्ट इच्छा छनि। अपूर्ण मनोकामनाक जनित समस्त रोष आतामसक केन्द्र शारदाकें बना लैत छथि। पढ़बा-लिखबासँ जन्मी शत्रुता छनि। बेटा-पुतहुक मेल अखरैत छनि। बेटाक सासुर जाएकबें, कनियाँक वशीभूत भए जाएब मानैत छथि। ज्योतिषीजी द्वारा शारदाकें देल गेल गहना मे बेटाक कमाइक शंका होइत छनि। सन्तानमे विलम्ब भेलाक कारणें पुतहुकें बाँझ-चूड़ैत आदि कहि, दोसर विवाह लेल बेटाकें मनबैत छथि। शारदाक मृत्युक कामना छनि तें औषधि आदिक व्यवस्थामे विलम्ब करबैत अछि। पौत्रक जन्म भेलो पर पुतहुक प्रति क्रूर भावना मे नरमी नहि अबैत अछि। शारदाक ननदि सेहो माइए पर गेलि अछि। लूत्ती लगएबामे पारंगत अछि। अयोध्यानाथ मिश्रक वहीनक क्षणिक उपस्थितिसँ रोचकता आबि गेल अछि। विधिकरीक चरित्र-चित्रण मे सेहो स्वाभाविकता अछि। दोसर दिस ज्योतिषीक पत्नी कन्या आ जमायक हित चिन्ता मे सदिखन लागल रहैछ। अपन आन कोनो संतान नहि, तें आकर्षण आ ममत्वक केन्द्र जमाइये छथिन्ह। सामर्थ्य भरि सां ठबा मे कोताही नहि करैत छथि। किन्तु सभसँ भिन्न स्थिति अछि शारदाक। सम्पूर्ण "निर्दयी सासु"मे शारदा एको शब्द बजै तक नहि अछि। सासु आ ननदिक यातना मूक बनि सहैत रहैछ। पढ़बा

लिखबाक सौख छैक। किन्तु, सासु आ ननदि मिलि प्रतिबन्ध लगा दैने छैक। शारदा खटैत अछि, अनुभव करैत अछि किन्तु अपन मुँह नहि खोलैत अछि। शारदाक चरित्र निर्माणमे उपन्यासकार धैर्य आ साहसक स्रोत भरि देल अछि।

पुरुष पात्रमे प्रमुख छथि ज्योतिषी चिन्तामणि झा। समाज सुधारक प्रति सजग छथि। हिनक ई सजगता वैचारिके नहि, कार्यरूप मे प्रकट होइत अछि। स्त्री शिक्षाक महत्वक प्रति सजग छथि। कन्याक सुख सुविधा लेल हरि सिंह देवी भूतकें झाड़ि लैत छथि। हिनक पिसिऔत लक्ष्मीदत्त झाक चित्रण एक पुरानपंथीक रूपमे कएल अछि। घटकक चरित्रांकन विलक्षण अछि। हिनके विचारक कार्यान्वयन कए ज्योतिषी सामाजिक कुरीतिकें तोड़बामे सफल होइत छथि। अयोध्यानाथ मिश्र एक ततेक शुद्ध लोक छथि जे पत्नीक प्रकृतिसँ
परिचित भइओ कए मौनव्रत भंग नहि करैत छथि। सएह हाल सीतानाथक अछि। यद्यपि पढ़ल-लिखल छथि, पत्नी पर होइत अत्याचारसँ परिचित छथि। किन्तु, माइक प्रतिकूल एको शब्द बाजि नहि पबैत छथि। मुदा अतेक धरि अवश्य करैत छथि जे माइक चढ़ौलो पर दोसर विवाह लेल तैयार नहि होइत छथि। चरित्रक ई गम्भीर्य आ एक पत्नीक अछैतो दोसर विवाह नहि करबाक आन्तरिक निर्णय विशेष महत्वक अछि।

औपन्यासिकताक दृष्टि सँ "निर्दयी सासु"क अध्ययन कएला पर ओ झुझुआन लगैछ। एहिमे औपन्यासिक विविधताक अभाव अछि। किन्तु रचना ओहि समयक थिक जखन मैथिलीमे उपन्यास लिखबाक प्रति जागृति नहि आएल छलैक। एहि विधाक परिचय मैथिली जगतकें बड़ कम छलैक। आ तें जेना चन्द्रलोकपर पड़ल पहिल मानव अन्तरिक्षा यात्री आर्मस्ट्रांगक डेग महत्वपूर्ण अछि, ओहिना मैथिली उपन्यासक इतिहासमे जनसीदनजीक "निर्दयी सासुक" महत्व अछि।

निर्दयी सासु आ रामेश्वर

जनसीदनजीक "निर्दयी सासु" धारावाहिक रूपमे प्रकाशित मैथिलीक प्रथम उपन्यास थिक तँ पं० जीवछ मिश्रक "रामेश्वर" मैथिलीक प्रथम पुस्तकाकार उपन्यास अछि। दूनू रचनाकार हिन्दी मे चर्चित भए, मैथिलीमे आएल छलाह। दूनूक उपन्यासक रचनाकालो प्रायः समाने अछि। "निर्दयी सासु" (१९१४) क अन्तमे प्रकाशित भेल तथा "रामेश्वर" १९१६ ई० मे पुस्तकाकार। "रामेश्वर" लिखितहि पुस्तकाकार भए गेल होएत तकर संभावना कम अछि। जखन मैथिलीकें आइयो ओहन सुविधा प्राप्त नहि छैक तखन ओहि समयमे रहल होएत, तकर कोनो संभावना अछि? तें इहो संभव अछि जे "रामेश्वर" पुस्तकाकार होएबा लेल प्रेसक प्रतीक्षा मे होअए। एहना स्थितिमे पहिने ककर रचना भेल से निर्णीत नहि भए सकैछ। जे से, दूनू कृति मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास थिक। जाहिठामसँ बाट चलि मैथिली उपन्यास वर्तमान युग धरि पहुँचि सकल अछि।

दूनू उपन्यासकार एकहि युगमे छलाह। किन्तु दृष्टिकोणमे अन्तर अछि। "निर्दयी सासु"

वैवाहिक समस्या पर अछि। किन्तु "रामेश्वर" क समस्या शोषण आ भूखक थिक। ई शोषणा आर्थिक आ सामाजिक दूनू प्रकारक अछि। पिताक श्राद्धमे रामेश्वर घर-आङन बेचि, साकिन भए जाइत अछि। परिवारक पालन हेतु अनिच्छा पूर्वक अपराध वृति अपना लैछ, डकैती करैछ। सम्पन्न व्यक्तिकें लूटैछ आ अन्त मे ह्रदय परिवर्त्तन होइत छैक। पाशविक प्रवृत्ति पर मानवीय प्रवृतिक विजय पताका फहराइछ।

"निर्दयी सासु" मे औपन्यासिकताक अभाव खटकैछ। जखनि "रामेश्वर" मे औपन्यासिक विविधता अछि। घटना संयोजन आ चरित्र मे विविधा अछि। विभिन्न संदर्भ आ घटना प्रवाह पाठककें अन्तधरि परिणतिक भान नहि होमए दैछ। किन्तु "निर्दयी सासु" क प्रारंभहि अन्तक संकेत दए दैछ। 'रामेश्वर'क घटना सभ पाठककें बन्हने रहैछ, तँ "निर्दयी सासुक" भाषा आ परिचित स्थितिक वर्णन। मुदा, जेना कोनो घटना अथवा छोटसँ छोट स्थितिक चित्रण "निर्दयी सासु" मे भेटैछ से "रामेश्वर" मे नहि अछि। "निर्दयी सासु" मे आएल पात्र सभक व्यक्तित्व निरूपण सोझ साझ अछि, पात्रक मानसिक स्थितिक आ जटिलताक चित्रण नहि भए सकल अछि। किन्तु "रामेश्वर" मे मानसिक द्वन्द्व आ संघर्ष पर वेश प्रकाश पड़ल अछि। दूनू उपन्यासकारक भाषामे सेहो अन्तर अछि। "निर्दयी सासुमे" फुदकैत भाषाक प्रयोग अछि, जे अत्यन्त स्वाभाविक अछि। ओहन फुदकैत भाषाक अभाव "रामेश्वर" मे अछि।

जनसीदनजीक युग आ व्यक्तित्व-जनसीदनजी जखन रचना दिस प्रवृत भेलाह, विदेशी शासनक
विरोधक सक्रियता सर्वत्र व्याप्त छल। ओ सक्रियता प्रकट आ सुप्त दूनू प्रकारक छल। केओ धन आ मनसँ संग छलाह तँ केओ तन-मन आ धन तीनूक संग। युगसचेत साहित्यकार जन मानसक ओहि आगि कें फल प्रिप्ति धरि प्रज्वलित रखबालेल रचनात्मक सहयोग करैत छलाह। ई सहयोग प्रच्छन्न आ प्रतीकात्मक दूनू प्रकारक होइत छल। बंगला साहित्यमे "आनन्द मठ" सन क्रान्तिकारी उपन्यास लिखा गेल छल। हिन्दी साहित्यमे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र "भारत दुर्दशा" आदि तथा मैथिली शरण गुप्तक "भारत भारती"क खूब प्रचार-प्रसार भए गेल छल। मैथिलीमे कवीश्वर चन्दा झा अंग्रेजी शासनक विसंगति आ अन्यायक विरोधमे लिखि गेल छलाह। जनसीदन जीक समकालीन कवि मुंशी रघुनन्दन दास, (१८६०-१९४५) बदुनाथ झा "यदुवर" आदि स्वाधीनता संग्रामक अनुकूल रचना कए, जनमानसकें प्रेरित कए रहल छलाह। किन्तु, बंगला, हिन्दी तथा मथिलीक साहित्यिक गतिविधिसँ परिचित साहित्यकार जनार्दन झा "जनसीदन" ओहिसँ सर्वथा अप्रभावित रहलाह। तात्पर्य जे राष्ट्र पिता बापूक नेतृत्वमे विदेशी शासन व्यवस्थाकें छाउर करबालेल जेना चारू कात आगि धधकि रहल छल, तकर कनिको उष्णता जनसीदनजीक रचनामे नहि भेटैछ।

ई सत्य जे प्रत्येक साहित्यकारक संवेदना क्षेत्र भिन्न होइछ। अनुभूतिक क्षेत्र फराक होइछ। कोन घटना आ परिस्थिति कतेक दूर धरि आ कोना ग्रहण करैछ, से रचनाकारक संवेदनाशीलता आ मानसिकता पर निर्भर करैछ। किन्तु, किछु घटना आ स्थिति तेहन अवश्य होइछ, जकर प्रभाव क्षेत्रसँ फराक रहि जाएब, युग सचेत रचनाकारक लेल सर्वथा असंभव

अछि। तथापि जँ कोनो स्थिति अथवा घटना कतहुसँ प्रभावित नहि कए पबैछ तँ ई मानि लेबाक रचाही जे कोनो ने कोनो व्यक्तिगत कारणें ओहि दिस ओ प्रवृति नहि भेल होएताह। एहना स्थितिमे रचनाकारक व्यक्तित्वक विश्लेषण आवश्यक भए जाइछ, सम्पर्क आ सानिध्य कें बूझब आवश्यक भए जाइछ।

ई सर्वज्ञात अछि जे जनसीदनजीक पालन पोषण मातृत्वमे भेलनि। हिनक मातामह एक प्रभावशाली जमीन्दार छलाह। पैघ भेलापर जनसीदनजीक सम्पर्क पैघ-पैघ राज दरबार सँ भेलनि। ओहिठाम हिनक सम्मान होइत छल। ओहिकाल राजा-महाराज अथवा जमीन्दार अपन प्रभु अंग्रेज सरकारक प्रति कतेक दासोदास रहैत छलाह, से छपित नहि अछि। जनसीदनजीक रचनाकार ओहि फँदा कें तोड़ि छिन्न-भिन्न नहि कए सकल। आ प्रायः तें अंग्रेजी शासन व्यवस्थाकें भस्मीभूत करबा लेल एकोटा काठी जनसीदनजी नहि जुटा सकलाह। जनसीदनजीक कविता-"श्रीमान् भारत सम्राट का स्वागताष्टक" हमर एहि निष्कर्षमे सहायक भेल अछि।

जय ब्रिटिश नायक जार्ज पंचम भारताधिभूपति
जय श्रीमती मेरी महरानी दयामती सुव्रते
हम भारतीय प्रजा सभी स्वागत मनावे आपके।" [३]

आ एहि सिद्धान्तक अनुकूल जनसीदनजी ओही प्रजाकें सुप्रजा मानल जे शोषण तथा अत्याचारक वर्षामे भीजलोपर राजक नहि करैछ-

प्रजा प्रशंसा योग्य वैह जे करथि न राज विरोध
राजा रूष्टो होथि कदाचित प्रजा करथि नहि क्रोध।' [४]

जनसीदनजीक सान्निध्य आ एहि प्रकारक रचना सभकें देखि स्पष्ट भए जाइछ जे जनसीदनजीक व्यक्तित्वमे ओ प्रखरता नहि छल जाहिसँ शासन-व्यवस्थाक विरोधमे ठाढ़ भए सकथि। आ तें जनसीदनजी
अपन सम्पर्क एवं सान्निध्यकें ध्यानमे रखैत साहित्य सर्जना लेल सामाजिक क्षेत्रकें अपनाओल। ओही पर कलम उठाओल, ई तँ देशक समसामयिक राष्ट्रीय चेतनाकें ध्यानमे राखि जनसीदनजीकव्यक्तित्वक मूल्यांकन भेल। जँ सामाजिक आ सुधारवादी चेतनाकें ध्यानमे राखि जनसीदनजीक उपलब्ध साहित्यक माध्यमसँ व्यक्तित्वक विश्लेषण करैत छी तँ व्यक्तित्व प्रखर भेटैछ। सामाजिक विकृतिकें दूर करबालेल तत्पर देखैत छी। जे सामाजिक व्यवस्था मिथिलाक समाजकें कोला-कोलामे बांटि शोषण करैत छल, तकर विरोधमे शंखनाद करैत पबैत छी। उपन्यासकारक प्रखर सामाजिक चेतनाक ई प्रतिफल थिक जे घोर मानसिक संघर्षक वाद ज्योतिषी चिन्तामणि झा ओहि परिपाटीक विरोधमे कन्यादान करैत छथि जे मिथिलाक सामाजिक जीवन मे विभेद उत्पन्न करबाक हेतु ठाढ़ कएल गेल छल।

मि० मि० जून १९८२

पं० जनार्दन झा-एक बिसरल साहित्यसेवी

एहन नहि भेल होएतैक जे महाकवि विद्यापतिक समयमे केवल महाकवि विद्यापतिए रचना करैत छल होएताह। मुदा, सामान्यतः लोक जनैत अछि हुनके। विद्यापतिक समकालीन आन जाहि कोनो कविक रचना थोड़ बहुत भेटैछ, से लोकक जीभ पर नहि छथि। ओहिना की मनबोध, की कवीश्वर चन्दा झा अथवा हर्षनाथ झा क समयमे ओएह लोकनि साहित्य साधनामे लागल छलाह आ कि आओरो लोक छल? वस्तु स्थिति तँ ई अछि जे हिनका लोकनिक अतिरिक्तो कविलोकनिक रचना पर्याप्त अछि, मुदा तैयो लोक नाम बरोवरि उचारैत रहैछ हिनके सभक। साहित्येतिहासक एहि स्थितिसँ एकटा निष्कर्ष अवश्य बाहर कएल जा सकैछ जे प्रत्येक कालखण्ड मे दू प्रकारक साहित्यकार अवश्य होइत छथि। पहिल कोटिक साहित्यकारक रचना ततेक व्यापक होइछ, व्यक्तित्व ततेक विशद होइछ जे दोसर कोटिक साहित्यकारक रचना किंवा व्यक्तित्वकें ओ आच्छादित कएने रहैत छथि। लोक जखन-तखन अथवा जतय ततय ओही महान साहित्यकारक नाम लैत रहैत अछि। आ कालान्तरमे दोसर कोटिक साहित्यसेवीक नाम लोक विसरि जाइछ। हुनक नाम शोध ग्रन्थ मे सम्पुटित भए, रहि जाइत अछि।

लोक भलहि द्वितीय कोटिक साहित्यकारक नाम विसरि जाए, किन्तु भाषा-साहित्य कें व्यापक बनेबामे हुनका लोकनिक योगदान कम अछि, मानब अनुचित होएत। ई सत्यजे गंगा आ कोशीक जल सँ वेशी खेत पटाओल जा सकैछ। मुदा एक गामकें दोसर गामसँ जोड़ैत छोटो-छोट धारक तँ अपन स्थानीय महत्व छैके। करीन अथवा दमकलोसँ तँ खेत पटाओल जाइते छैक। एहनहि स्थिति दोसर कोटिक साहित्यकारक अछि। स्थानीय मंच पर ओ साहित्यकें प्रवहमान रखवा लेल अथवा भाषा साहित्यकें व्यापक बनेबा लेल सदिखन प्रयत्नशील रहिते छथि। इएह कवि लोकनि ओहि वातावरणक सर्जना करैत छथि जाहिसँ कालान्तरमे एक महान साहित्यकार राष्ट्रीयमंच पर अवतरित भए जाइत छथि। आ भाषा साहित्यिक प्रभाव-विस्तार होइछ।

मैथिलीमे प्रकाशनक सुविधा कहिओ नहि रहल आने अखने अछि। तखन अनयमित आ अनियतकालीन पत्रिके एक मात्र माध्यम रहलैक, जाहि सँ साहित्यकार प्रचारित-प्रसारित भए सकथि। एकर फल भेज जे बहुतो रचना आ रचनाकार प्रकाशमे अएबासँ वंचित भए गेलाह। पत्र-पत्रिको मे जे रचना प्रकाशित भेल होएत, आब सर्वसुलभ नहि अछि। एहना स्थितिमे विगत युगक साहित्यसेवीक प्रसंग जानब, हुनक रचनाकें पढ़ब आ तखन ओहिपर प्रकाश देब एक विकराल समस्या अछि। एहि समस्याक कारणें विसरल साहित्यसेवी आओरो
विसराएल जाइत छथि। एहनहि विसरल साहित्य सेवी मे पं० जनार्दन झाक नाम अबैत अछि। पं० जनार्दन झा "जनसीदनक" नाम तँ लोक पहिनेसँ जनैत अछि, मुदा० पं० जनार्दन झा पूर्णतः बिसरा गेल छथि। हिनक नामोल्लेख कोनो इतिहास ग्रन्थ मे नहि भेटैत अछि। जखन कि अपना समय आ परोपट्टामे ओ आदरक पात्र छलाह। पं० जनार्दन झा ठाढ़ी, (मधुबनि) क निवासी छलाह। ज्ञात भेल अछि जे ओ निष्णात् वैयाकरण तथा अपराजेय शास्त्रार्थी छलाह। हुनक व्यक्तित्वमे एकटा विशेषता छलजे, ओ नीडर छलाह आ सत्य सँ हुनका केओ डिगा नहि सकैत छल।

पं० जनार्दन झा लिखित एकटा खण्ड काव्य "जानकी परिणय" अछि। ई "मिथिलामोद" (१९१० ई०) मे धारावाहिक रूपे प्रकाशित अछि। "जानकी परिणय" क कथा मिथिलामे भीषण अकालसँ कोवर धरिक अछि। एही बीच कवि कतेको स्थितिक वर्णन कएल अछि। जनक द्वारा हर जोतब, जानकी अवतरण, जलककें कन्यादानक चिन्ता, गुरुक आज्ञा पाबि राम लक्ष्मण द्वारा पूजा लेल फूल तोड़ब, सखि संग जनकतनयाक गौरी पूजनार्थ जाएब, फूलवाड़ी मे देखि पूर्वरागक स्थिति प्रगाढ़ होएब, शिवधनु तोड़बा लेल बलगर-गलगल राजा लोकनिक आएब, राम द्वारा शिवधनु तोड़ब, धनुष भंगसँ उत्पन्न टंकार सूनि त्रिभुवनक दलमलित होएब, परशुरामक आएव, परशुराम आ लक्ष्मणमे संवाद, परशुरामक परीक्षा मे रामकें उत्तीर्ण भेलापर मुनिवरक प्रसन्नतापूर्वक घूमि जाएब, कन्यादान, महुअक तथा वर-कनियाँक कोवर जाएब, धरिक घटना आ स्थितिक वर्णन अछि। एहि स्थितिक वर्णन करबामे कवि पूर्ण सफल छथि।

मिथिलामे अकाल पड़ला पर राज्यक स्थितिक प्रसंग जनक पण्डित वर्गसँ जिज्ञासा करैत छथि-

"तनिका राजमे भेल उत्पात, बारह वर्ष वृष्टि नहि पात
तखन पुछल पंडित सँ जाय, कहु सब जन वर्षाक उपाय।"[१]

शिवधनु तोड़बा लेल राजा-राजकुमार जूमल छथि। सभकें होइत छनि जे पहिने हमही धनुष भंग करी, नहि तँ पछताइत रहि जाएब। "तोड़ब धनुष हमहि अगुआए, पाँछा रहब मरब पछताए, किन्तु धनुष टस्ससँ मस्स नहि होइत छनि-"बड़बड़-बलगर-गलगर जाथि उठैने धनुष महि पछताथि"। धनुष भंग भेलापर महाशब्द होइछ-"महाशब्द गर्जन घनघोर त्रिभुवन गृह जनि पैसल चोर"। से टँकार सूनि परशुराम अबैत छथि। सभ थरथर काँपय लगैछ-"क्रोधवान मुनि पहुँचल जखन, भभरल गोल जनकपुर तखन"। धनुष भंगकर्त्ताक नाम सूनि परशुराम एहि लेल विशेष तमसाइत छथि जे परशुरामक अछैतहि दोसर राम के कहा सकैछ-

"परशुराम जीवतहि के आन, राम कहाओत धरि अभिमान
राम राम कें पड़ल विवाद लछुमन किछु कैलन्हि संवाद।"[2]
एहि विवादमे लक्ष्मण साफ-साफ कहैत छथिन-
'छुबइत धनु अपनहि टूटि गेल, तैं कहु अहाँ काँ की कत भेल
एहन एहन लछुमन कहि बात, मुनि कैं धूसि कैल तहुँ कात।'

कन्यादान तथा कन्यादानक उपरान्त मिथिलामे प्रचलित विविध विधि-व्यवहारक वर्णन खूब बिटिआएल अछि। महुअक कालक वर्णन करैत कवि लिखने छथि-

"झूण्ड-झूण्ड आबथि मिथिलानी, गाबथि गीत अनूप सयानी,
गौरि पूजाथि सिअ दूवधान लय, विविध नैवेद्य पान दय
माङथि भाग सोहाग अशीष, नाथ जिवथु मम लाख वरीस।
स्नान ध्यान दतमनि नहि राम, घरहि चारि दिन करु विश्राम,

दूध छोहोड़ा मिसरी खाथि, महुअक वेरिमे बड़ै लजाथि।
तेल फुलोल अङ्ग उमराव, पान मसाला वारंवार
सियाराम दूनू अनुपम जोड़ि, कोवरहिमे हम देलिएन्हि छोड़ि।"[3]

पं० जनार्दन झाक बड़ कम रचना उपलब्ध अछि, परंच जे किछु उपलब्ध अछि। हुनक काव्य प्रतिभा आ मौलिकताकें प्रकट करैत अछि। भाषा आ शिल्पक निपुणता प्रकट करैत अछि।

-मि० मि०, दैनिक २९-७-८५

पं० त्रिलोचन झा, (बेतिया) बिसरल मातृभाषानुरागी

पं० त्रिलोचन झा (१८७८-३ फरवरी १९३८) क प्रसंग जागल जिज्ञासाकें शान्त करबाक बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि। लिखित सामग्री कही वा साहित्यिक सक्रियताक सूचनाक एक मात्र आधार अछि डा०.जयकान्त मिश्रक 'हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर'। ओकर वादक इतिहासकार पं० त्रिलोचन झाक प्रसंग एको शब्द वेशीक गोन कथा कम्मे लिखलनि अछि। आदित्य सामवेदीक एक लेख 'साहित्य तपस्वी पं० त्रिलोचन झा' प्रकाशित भेल अछि।[1] ओहि मध्य पं० त्रिलोचनक व्यक्तित्व आ कृतित्वक विस्तारसँ परिचय अछि। दोसर आधार अछि ओहि व्यक्तिक संस्मरण रजे पं० त्रिलोचन झा कें देखने छलाह। हुनक सक्रियता सँ परिचय पओने छलाह। हिनक रचनाक प्रसंग लोकक अनभिज्ञताक पहिल ओएह कारण अछि, जे ओहि कालक आन रचनाकारकें नहि जानि सकबाक अछि। तात्पर्य जे पं० त्रिलोचन झाक प्रायः अधिकांश रचना 'मिथिला मिहिर', "मिथिलामोद" आदि पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि। जे आब सर्वसुलभ नहि अछि।

डा० मिश्रक[2] अनुसार पं० त्रिलोचन झा अनुवादक छलाह-कवि छलाह, आख्यान लेखक छलाह। जीवनी लेखक छलाह। निबन्धकार छलाह। सामाजिक कार्यकर्त्ता छलाह। मिथिला आ मैथिलीक प्रबल हित चिन्तक छलाह। पं० त्रिलोचन झाक दृढ़ मान्यता जे अपन भाषा साहित्यक उन्नतिए सँ शेष क्षेत्रमे उन्नति कएल जा सकैछ। ओएह सभ उन्नतिक प्रस्थान बिन्दु थिक।

पं० त्रिलोचन झा, मे अपूर्व संगटन शक्ति छल। ओ कतेको स्वयंसेवी संस्थाक संगठन कए मैथिलीक आन्दोलनकें प्रखर ओ मुखर कएल। पंडित त्रिलोचन झाक संगठनात्मक क्षमताक प्रसंग बाबू गंगापति सिंह लिखने छथि जे पं० त्रिलोचन झीक उद्योगसँ स्थापित "सुवोधिनी सभा"क मैथिली विभागसँ बहुत किछु आशा अछि। एही तरहें सब प्रान्तमे एकरा हेतु (मैथिलीक विकासक हेतु) केन्द्र स्थापित करबाक चाही।"[3]

पं० त्रिलोचन झा, मात्र मैथिली भाषा ओ साहित्यक लेल सक्रिय नहि रहैत छलाह, अपितु क्षेत्रक विकास लेल सेहो सक्रिय छलाह। सुख ओ समृद्धि हेतु घूमि-घूमि लोककें जगबैत छलाह। अवनतिक कारणकें स्पष्ट करैत छलाह। अभीष्ट प्राप्ति हेतु जनमानस तैयार करैत

छलाह। पं० त्रिलोचन झाक एहि सक्रियता ओ वैशिष्ट्यक प्रसंग पं० यदुनाथ झा "यदुवर"क विचार अछि जे मिथिलाक सम्प्रतिक अवस्थाक प्रसंग पं० त्रिलोचन झाक 'वक्तृता पुस्तकाकार पढ़ै योग्य अछि।'[४] यदुवरक एहि कथन सँ प्रतीत होइछ जे ओ कोनो पोथीक चर्चा करैत छथि। परंच कोन पोथी छल तकर कोनो सूचना उपलब्ध नहि अछि।

मैथिलीक सक्रियताक मंच ओहि समयमे "मैथिल महासभा" छल। पं० त्रिलोचन झा "मैथिल महासभाक" एक सबल स्तम्भ छलाह। प्रत्येक क्रिया-कलापक भागीदार छलाह। ओ एहि विचारक छलाह जे "मैथिल महासभाक" कार्यक्षेत्र व्यापक हो। संगठन व्यापक हो। "मैथिल महासभा" मे पं० त्रिलोचन झाक संलग्नताक प्रसंग अपन संस्मरण सुनबैत बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह (ज.२० जुलाई १९१८) कहलनि अछि जे ओ एकटा नीक वक्ता छलाह। हुनक ओजस्वी धारा-प्रवाह एवं आलंकारिक भाषण सूनि श्रोतागण मन्त्र मुग्ध भए जाइत छल। आ एही वाक् पटुताक कारणें "महासभा"क प्रत्येक अधिवेशन मे धन्यवाद ज्ञापनक भार पं० त्रिलोचन झा कें देल जाइत छल। एहिसँ एकटा लोकोक्ति वनि गेल छल। अन्यो कार्यक्रमक अवसर पर, जाहिठाम त्रिलोचन बाबू नहिओ रहैत छलाह, धन्यवाद ज्ञापनकर्त्ता अन्तमे कहि दैत छलथिन त्रिलोचन बाबूओक दिससँ धन्यवाद दैत छी। एहि संस्मरणसँ एकटा तथ्य अवश्य समक्ष आबि जाइछ जे पं० त्रिलोचन झा अपना समयमे बड़ लोकप्रिय छलाह तथा मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक लेल आयोजित होइत प्रत्येक कार्यक्रममे अवश्य सहभागी रहैत छलाह।

पं० त्रिलोचन झाक जन्म (१८७८ ई०) ओहि समयमे भेल जखन प्रथम स्वाधीनता संग्रामक असफलताक कारण कें देखि, भारतीय चेतना आत्म निरीक्षण कए, देशवासीकें सुशिक्षित करबा लेल प्रयत्नशील भए गेल छल। एकसँ एक समाज सुधारक भारतीय मंच पर उपस्थित भए रहल छलाह। सुधारवादी आन्दोलन क्रमशः तीव्र भए रहल छल। अपन भाषा-संस्कृति, आचार-व्यवहार दिस लोकक ध्यान आकर्षित भए गल छलैक। समाजमे व्याप्त दुर्गुण, विशेष कए वैवाहिक समस्या सँ आक्रान्त समाज प्राचीन गैरव गाथाक गान दिस विशेष रूपें उन्मुख, भए गेल छल। तात्पर्य जे अपन विकृतिपूर्ण वर्त्तमान सँ मुक्त होएबालेल प्रत्येक व्यक्ति साकांक्ष भए गेल छल। आ इएह दृष्टि साहित्यकारोक छलनि, जाहिसँ परिचित भए ओ लोकनि साहित्य सर्जना करैत छलाह। कविलोकनिक दृष्टि उद्वोधनात्मक होएबाक एक दोसरो प्रमुख कारण छल जे श्रृंगार, ज्ञान, भक्ति इत्यादि सँ संबंधित कविताक रसास्वादन ई देश नीक जेकाँ कए चुकल छल। विलासादिक समय छलैक नहि तें भक्ति व, ज्ञान वैराण्य ओ श्रृंगार विषयक काव्यमे लोकक रुचि नहि छलैक। तात्कालिक साहित्यिक दृष्टि ओ लोक रुचिक तथ्यपूर्ण विवेचन करैत यदुनाथ झा "यदुवर" लिखने छथि जे 'सभक सभ राष्ट्रीय धुनमे मस्त छथि। देशकें, जातिकें अथवा समाजकें ऊपर उठेबाक प्रयत्न सभ कए रहल छथि। राष्ट्रीय भावसँ सभक हृदय भरल छलैक जे किछु करैत अछि केवल राष्ट्रीय उद्देश्य सँ। पं० त्रिलोचन झाक कृतिक चर्चा करैत डा० जयकान्त मिश्र लिखैत छथि जे ओ भगवत गीताक पद्य और गद्य मे अनुवाद कएल, महाभारतक उद्योगपर्वक अनुवाद कएल, 'शकुन्तलोपाख्यान' ओ अपन भाए हरिमोहन झा वकिलक रजीवनी लिखल तथा छिट-फुट निबंध टिप्पणी तथा उद्वोधनात्मक कविता लिखल। किन्तु पं० त्रिलोचन झाक चर्चा ओहि सभ रचनाक आधार पर हम करब जे

हमरा पत्र पत्रिकामे छिड़िआयल भेटल अछि। पूर्वहि लिखल अछि जे पं० त्रिलोचन झाक समयमे सुधारवादी आन्दोलन तीव्र भए रहल छल। मातृभूमि वन्दना आ अतीत गान मुख्य काव्य प्रवृति छलैक। ओहि धाराक अमुरूप पं० त्रिलोचन झा 'मातृभूमि वन्दना' मिथालक प्राकृतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक उत्कर्षक वर्णन कएल अछि। प्राचीन गाथा प्रस्तुत करैत वर्त्तमानक कलुष और पराधीनताजन्य विकारकें दूर करबा लेल लोकमानस तैयार कएल अछि। 'मिथिलाक वन्दना' करैत लिखल अछि-

"जय जय जयति मैथिल जाति।
निगम आगम कर्मरत जे मध्य भारत ख्याति
विविध विद्या विभव बुधिबल विनय नयमय जाति
भूमि पावन अति सुहावन सुखद सुरपुर भाति।
सुफल सुजला बहुत सरिता वायु सुरभित गात।"[५]

अपन सामर्थ्यक बाहरक उचित वस्तु प्राप्त करबालेल लोक ऊश्वरक शारणापन्न होइछ। कविकें विश्वास छनि जे शत्रुकें पराजित करबालेल चाही शक्ति। शक्ति लेल ओ चण्डीक आह्वान करैछ:- जानकीक विशेषरूप, अरिदल नाशक चण्डीकें उपालम्भ दैत कवि लिखैछ-

"चण्डि तोहर मिथीला देश'।
जकर सुपच्छिम भाग भैसलि धरि सुन्दर वेश
जाहि भूमिसँ जन्म लेलहुँ भै सुता मिथिलेश।"[६]

पं० त्रिलोचन झा अनुभव करैत छथि जे मैथिल आलस्यक पाँक मे फंसि गेल छथि। जीवनक समस्त लक्ष्य स्वार्थसाधन मे केन्द्रित छनि। अतएव, ओ समस्त मिथिलावासीसँ मिथिलाक गत विभव ओ प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कए लेबालेल ललकारैत छथि। मिथिलाक प्रतिष्ठा-रक्षाक दायित्व-बोध सँ पिरिचित करबैत छथि। कविक ई ललकार अथवा अनुरोध कोनो एक व्यक्तिक नहि, अपितु ओहि वर्गक विचारक प्रतिनिधित्व करैछ जे मिथिलाकें उत्कर्षमय देखय चाहैछ-

"भैया मैथिल मान बचाऊ, जुन जग नाम हँसाउ,
भाषा भेष भाव भसिआएल ककरा जाय सुनाउ
क्यो नहि सुननिहार छथि एकरा हाय ! कतै हम जाउ
कहुना स्वारथ साधन आपन पैघ-छोट सब ठाँउ।
चरण शरण लोचन मन राखू, दुर्गति सकल मेटाउ।[७]

मैथिलक जीवनधारामे रागात्मकता अपेक्षाकृत विशेष रहल अछि। एहि रागात्मकताक अभिव्यक्ति काव्य सर्जना तथा विभिन्न अवसर पर गाओल जाइत समसामयिक गीतक श्रवण शँ स्वतः स्पष्ट भए जाइछ। आ प्रायः संस्कारजन्य एहि रागात्मकताक कारणें काव्य रचना विशेष कए गीत राग तालाश्रित होइत छल एवं ऋतु साम्य एहि गीत गएबाक परिपाटी जीवित अछि।

एहनहि ऋतु साम्य गीतक श्रेणीमे फागु, चैत आदि अबैत अछि। ऋतु साम्य एहि गीतक विशेषता होइछ जे विशेष प्रकारक भासक लहरि पर मनुष्यक किछु मूल प्रवृत्ति कें प्रज्वलित करैछ। अपन समसामयिक अन्ये कवि जेकाँ पं० त्रिलोचन झा प्रचलित भास, आदिक लहरि पर नव कथ्य भासय लेल छोड़ि देल। ओकर माध्यमसँ भर्त्सना उद्‌वोदन, त्याग, मातृभूमि ओ मातृभाषाक महत्वकें प्रस्तुत करए लगलाह। एहि प्रकारक रचना एक दिस जँ अवसर विशेषपर गाओल जाएवला गीतक भासक आनन्द दैत छल, तँ दोसर दिस अर्थक बोधसँ श्रोताकें आत्मबोधक संभावना रहैत छलैक। जकर लय, निश्चित रूपे सामाजिक दायित्वबोधक परिपालनक होइत छलैक। चैतक भास पर त्रिलोचन झा लिखल अछि

'मैथिल गण जागू अपन काजमे लागू, हो रामा.....
देश देश सब उन्नति कै कै जाइत बढ़ल आगू, हो रामा
विद्या विभव विवेक बढ़ाउ, द्वेष परस्पर त्यागू, हो रामा।[८]

पं० त्रिलोचन झाक सामाजिक बोध आ समाजकें सुधारबाक चिन्ता तीव्र छल। तें, जतय कतहु ओ अनुभव करैत छलाह मिथिला, मैथिल एवं मैथिली पर आघात होइत अछि, चुप्प नहि रही सकैत छलाह। हुनक प्रहार तत्काल होइत छल आ आरोपकर्त्ता धाराशायी भए जाइत छलाह। हिन्दी पत्रिका 'सरस्वतीक' अक्टूबर १९०९क अंकमे, जनार्दन झा 'जनसीदनक' लेख "मैथिलों की वैवाहिक परिपाटी" प्रकाशित भेल जे पं० त्रिलोचन झाक मते मैथिल जाति पर आक्षेप छल। "मोद"क माध्यमे दूनू गोटे मे पत्राचार भेल। अन्तमे
त्रिलोचन झाक तर्कक समक्ष जनसीदनजी पराभूत भेलाह आ अपन गलती स्वीकार कएल। जनसीदनजीक प्रसंग त्रिलोचन झा लिखैत छथि-"मैं आपकें प्रखर विद्वतासे पूर्ण परिचित हूँ, किन्तु आपके यथार्थ कूर्मग्रीव शील स्वभाव का पता इसी वार लगा है।"

पं० त्रिलोचन झा कें जहिना मिथिला आ मैथिली सँ अगाध प्रेम छलनि यशस्वी मैथिलक प्रति हुनकर हृदयमे अपार सम्मान छल। एकर एकटा ज्वलंत उदाहरण भेटल अछि। पं० विंध्यनाथ झा (१८८७-१९१२) असामयिक निधनसँ समस्त मैथिल समाज शोक संतप्त भए गेल छल। पं० त्रिलोचन झाक श्रद्धाञ्जलि "विन्धनाथ बाबूक शोक" शीर्षक हृदयक मर्मकें वेधि, फूटि पड़ल अछि-

"हा ! हा !! मिथिला रत्न कतै दा गेल हेड़ाए
हा ! हा !! सद्‌गुणमूर्त्ति गेला कत लोक विहाए
हा ! हा !! बाबू विन्ध्यनाथ झा कतै पधारल
करुणा सिन्ध निमग्न जाति मैथिल न निहारल
प्रथम ग्रैजुएट हाय ! जाति मथिल मे भेलहुँ
तत्परताक स्वरूप अहाँ मिथिलाकें देलहुँ।"[९]

पं० त्रिलोचन झा गीताक मैथिली अनुवाद "श्रीमद्‌भगवत्‌गीतादर्श" नामे कएने छथि।

ओहिमे अपन परिचय निम्न प्रकारे लिखल अछि-

'नाम हमर त्रिलोचन झा थिक वानू छपरा वासे।
मध्य जिला चम्पारणहिक जे वेतिया नगरक पासे।।
मिथिला देशहि पश्चिम दक्षिण योजन मात्र प्रमाणे।
नारायणि तट सौं अछि शोभित जानू विज्ञ सुजाने।।
कैशाल स्थित कूमर झाहिक ज्येष्ठ पुत्र हमही छी।
भूषण झाक पौत्र हम थिकहुँ मूल गौत्र मधही छी।।
भारद्वाजक वंश बेलोंचय सुदइ मूले रजानू।
महादेव झा पाँजि ख्यात अछि पंजीकारहि मानू।
श्रीकपिलेश्वर झा सुयोग्यवर पलीबाड़ रजमदौली।
थिकहुँ हुनक दौहित्र थिकथि जे वेतिया प्रान्तक मौली।।
बेतियाधीशक सचिव पितामह पिता बनैली राजे।
संबंधी भेलाह रहै छी, हुनके आब समाजे।।"[१०]

"जाति देश हेतु सब किछु अहाँ मिथिला कें देलहुँ।" स्वीकार कएनिहार पं० त्रिलोचन झा, बेतियाक प्रसंग बड़ कम सामग्री सम्प्रति उपलब्ध-अछि। किन्तु जे किछु उपलब्ध अछि तकरा आधार पर निश्चिन्त रूपें कहल जा सकैछ जे ओ अपन समसामयिक परिवेशक प्रति पूर्ण जागरूक छलाह, समाज, देश आ भाषा-संस्कृतिक रक्षाक निमित्त अपन कर्त्तव्यसँ ओ पूर्ण परिचित छलाह तथा तदनुरूपे जीवन मूल्य छलनि। वात आ व्यवहारमे समानता-पं० त्रिलोचन झा, वेतियाकें युग युग धरि मोन रखबा लेल पर्याप्त अछि। परंच ईहो सर्वथा आवश्यक अछि जे हुनक छिड़िआएल रचनाकें ताकि प्रकाशमे आनल जाए। हुनक अवदानक चर्चा आ विवेचन कएल।

भाखा, सितम्बर १९८७

राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'

यदुनाथ झा 'यदुवर' (१८८८-१९३५ ई०) क रचना जतेक उपलब्ध होइत अछि, तकर अनुपात मे परिचय आ व्यक्तित्व बड़ कम बूझल भए सकल अछि। यदुवरक उपलब्ध रचनामे प्रमुख अछि "मिथिला गीताञ्जलि" (सं-यदुवर) मे संगृहीत ४४ टा गीत, लघु मैथिली गद्य-पद्य संग्रह (सं०-प्रो० आचार्य रमानाथ झा) मे एक-एकटा गीत तथा 'मिथिलामोद', 'मिथिला मिहिर' आदि पत्र-पत्रिका मे समय-समय पर प्रकाशित रचना। डा० करुणाकान्त झा (मैथिल साहित्यमे सहर्षा जिलाक अवदान, पटना वि० वि० द्वारा स्वीकृत किन्तु अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) यदुवरक किछु आओर प्रकाशित-अप्रकाशित रचनाक उल्लेख कएने छथि, जाहिमे अछि "वासन्ती विलास"

(प्रकाशित), "यदुवर विनोद ६ भाग," अन्योक्तिशतक", "मिथिला संगीत रत्नमाला" "संकीर्तनसार संग्रह," 'अन्योक्ति पुष्पावली', भजनावली (मैथिली) एवं "साहित्य सरोरुह" (हिन्दी-अप्रकाशित)।

यदुवरजीक साहित्यक चर्चा डा० जयकान्त मिश्रक अतिरिक्त डा० करुणाकान्त झा, रामकृष्ण झा "किसुन" (रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रंथ), प्रो० आनन्द मिश्र (मैथिली साहित्यिक रूप रेखा), प्रो० मायानन्द मिश्र (सांस्कृतिकवाद-अखिल भारतीय' मैथिली साहित्य सम्मेलन, वैदेही समिति) आदि कएने छथि। एहिमे डा० करुणाकान्त झाकें छोड़ि प्रायः सभक विचार आ सामग्रीक सीमा डा० जयकान्त मिश्रक इतिहासे अछि। डा० करुणाकान्त झा, किछु अतिरिक्त सूचना अवश्य एकत्र कएल, किन्तु प्राप्त सूचनाक आधारपर सामग्री संकलन आ मूल्यांकनक काज अद्यावधि शेष अछि। यदुवरजीक गद्य रचना मे उपलब्ध अछि "मैथिली साहित्य दिग्दर्शन" ("मिथिला मोद" आ "मिथिला मिहिर" १९१४) तथा "मिथिला गीताञ्जलि"क विस्तृत भूमिका।

पं० छेदी झा "द्विजवर"क प्रसंग लिखबाक क्रममे ललितेश मिश्र[१] ई० प्रमाणित करबाक चेष्टा कएने छथि जे यदुनाथ झा 'यदुवर' अपन अनुज साहित्यकार पं० छेदी झा 'द्विजवर' (१८९३-१९७२ ई०) सँ प्रभावित भए कविता लिखल। ललितेश मिश्रक एहि विचारक उन्मेष हमर एक पूर्व प्रकाशित लेख "यदुवरक" काव्यमे राष्ट्रीय चेतना क प्रतिक्रिया अछि। एहि विचारक समीचीनता तथा ऐतिहासिकताक विवेचन पछाति करब।

यदुवरजीक पारिवारिक-सामाजिक परिचय बड़ कम उपलब्ध अछि। डा० जयकान्त मिश्रक अनुसार ओ बेसी पढ़ल-लिखल नहि छलाह तथा मुरहो, जिला-भागलपुर (सम्प्रति मधेपुरा) मे ब्रांच पोस्टमास्टर छलाह। हिनक मैथिली सेवाक प्रसंग श्री परमेश (श्री जनार्दन मिश्र, सनौर) लिखल अछि-"सहृदय पंडित श्री यदुनाथ झा "यदुवर" महाशयक मथिली साहित्य प्रेम सरिपौं स्तुत्य तथा अनुकरणीय छनि। हमरा प्रायः पन्द्रह-सोलह बरख लए कए हिन महाशयक संग साहित्यिक मैत्री अछि अथच हम हिनक साहित्यिक सेवासँ विशेष, प्रकारें परिचित छी। आइ शारीरिक अस्वस्थता रहलहुँ सन्ता हिनक अदम्य उत्साह मे केनको भांङठ बुझना नहि जाइत छन्हि मानू जे मैथिली साहित्य सेवा मात्र हिनक जीवनक प्रधान विषय भए गेलन्हि अछि।"[३]

यदुनाथ झा 'यदुवर' आ श्यामानन्द झाक किछु उपलब्ध रचनाक आधार पर हमर पूर्व चर्चित लेख मे मैथिली काव्यमे राष्ट्रीय चेतना कें तकबाक, प्रयास कएल गेल अछि, से ललितेश मिश्र लिखने छथि। किन्तु, तथ्य ई अछि जे - "यदुवर" आ श्यामानन्द झा क राष्ट्रीय चेतना-मूलक गीतक दूटा संग्रहकें सम्पादिक कए
प्रकाशित कराओल। डा० जयकान्त मिश्रक कहब एहि प्रसंग स्पष्ट अछि-Two remarkable anthologies--'मिथिला जीताञ्जलि' "edited by Yadunath Jha 'Yaduvara and 'मैथिली संदेश' edited by Shyamanand Jha were published in the twenties which expressedly announced the birth of these spirit.

पं० यदुनाथ झा 'यदुवर' कें छेदी झा 'द्विजवर' सँ प्रेरित प्रभावित सिद्ध करबाक लेल अपन अनुमान कें ओ तीन बिन्दु पर केन्द्रित कएल अछि। ओ थिक-(१) 'द्विजवर'क 'मैथिली गीत कुसुम' नामक राष्ट्रीय चेतना मूलक गीतक संग्रह, जकर प्रकाशन १९११ ई० मे जीवन प्रेस कलकत्ता नँ भेल। तकर बारह वर्षक बाद 'यदुवर' मिथिला गीताञ्जलि प्रकाशित कएल। (२) "द्विजवर" सह सा क्षेत्र मे स्वतंत्रता सेनानीक रूप मे ख्यात छलाह। तथा लोकमे आदर छलनि। "यदुवर" बेसी काल वनगाम (वेटीक ओहिठाम) जाथि आ द्विजवरसँ सम्पर्क कए, सरकारी सेवा मे रहितो राष्ट्र प्रेमक अभिव्यक्ति हेतु अभिमुख भेल छलाह। (३) मैथिली गीत 'कुसुम'क शैली, वर्ण्य-विषय, चित्रण-निरुपणक अनुरूपहि यदुवरक शैली छनि।

डा० मनोरंजन झा अपन शोध प्रबन्ध "पं० छेदी झा "द्विजवर" आ हिनक 'रचना' (अप्रकाशित) मे "मैथिली गीत कुसुम'कें प्रकाशित रचनाक कोटिमे अवश्य रखने छथि। किन्तु ई नहि लिखने छथि जे प्रकाशन १९११ ई० भेल। ललितेश जीक ओहि लेख मे' द्विजवरक 'एक गित' "किये सूतल छी मैथिल वृन्द, भेल प्रभात प्रभा के देखू, छाड़ि पिसाचिनी निन्द-" उत्धृत अछि। द्विजवरक ई गीत 'मिथिला मिहिर'क दिनांक १८ नवम्बर १९१६क अंक मे "मैथिली गीत कुसुम" शीर्षक अन्तर्गत छपल अछि।

यदुवर अपन विस्तृत शोध लेख "मैथिली साहित्यिक दिग्दर्शन, मे लिखने छथि- "वनगामक प्रियवर छेदी झी "द्विजवर" कादम्बरीक अनुवाद कएने छथि। अपन भाषा मे कतेको उपन्यास तथा पाठ्य पुस्तक लिखि चुकल छथि।' 'यदुवरक' ई लेख जून १९१४ ई- थिक तथा एहिमे ओहि समय धरिक मैथिली साहित्यक पूर्ण गतिविधिक चर्चा अछि। किन्तु "मैथिलीक गीत कुसुम, जकर प्रकाशन १९११ ई० मे भेल, लिखल गेल अछि, चर्चा नहि अछि। ललितेशक मते यदुवर कें अपन प्रेरणा-पुरुषक साहित्यिक गतिविध आ उपलब्धिक परिचय नहि छलनि।

"मैथिली पत्रकारिताक इतिहास" (पं० चन्द्रनाथ मिश्र "अमर") तथा 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' (डा० जयकान्त मिश्र) मे ई तथ्य उल्लिखित अछि जे 'यदुवर' मैथिलीक प्रथम पत्रिका "मैथिल हितसाधन" मे छपैत छलाह, किन्तु "द्विजवर"क प्रसंग चर्चा नहि अछि। डा० मिश्रक अनुसार "द्विजवर"क प्रथम कविता थिक "वसन्तोत्सव गीत" (मोद १३२१ साल) तथा पहिल गद्यरचना थिक 'मिथिला भाषा कुठार' (मिथिला मोद, उद्गार ८९ फाल्गुन शाके १९३५, सन १३२१ साल १९१४ ई०)। जयकान्त बाबू तँ स्पष्टतः लिखने छथि जे छेदी झा "द्विजवर" मधेपुरा हाई स्कूलमे अएलाक बाद यदुवरक प्रभावमे मैथिली रचना आरंभ कएल।

रामकृष्म झा "किसुन" (१९२१-१९७०) एहि प्रसंग मे लिखने छथि-यदुवरजी मे लोक चेतना तथा राष्ट्रीय चेतनाक भावना बड़ उग्र रूप मे छल। पुरान परंपराकें तोड़ि राष्ट्रीय कार्यक सूत्रपात करबाक संगहि संगीतक रागपाश सँ मैथिली कविताकें सर्वप्रथम यदुवरेजी मुक्त कएने छलाह। ललितेश "मिथिला गीताञ्जलि"क प्रकाशन मैथिली गीत कुसुम सँ बारह वर्षक बाद

मानल अछि। "मिथिला गीताञ्जलि"क भूमिकाक अनुसार यदुवरजीक अस्वस्थता तथा आर्थिक समस्याक कारणे उक्त पोथी चारि वर्ष भागलपुरक एक प्रेस मे छल। "मिथिला गीताञ्जलि" विभिन्न कविक रचनाक संग्रह थिक। एहि सँ ई नहि प्रमाणित होइछ जे यदुवरजी "द्विजवर" सँ प्रभावित प्रेरित भए रजना दिस उन्मुख भेलाह। आइयो-काल्हि कतेको नव लेखकक
पोथी पहिने प्रकाशित भए जाइछ, आ नीक ओ प्रतिष्ठित रचनाकार अर्थक असौकर्यक कारणें अथवा सरकारी गैर-सरकारी संस्था मे गतात सूत्र नहि रहलाक कारणें पोथी प्रकाशित नहि कए पबैत छथि।

पं० छैदी झा "द्विजवर" प्रथम कोटिक स्वतंत्रता सेनानी छलाह। हुनक ख्याति धेमुरांचलक सीमा टपि गेल छल, एहिमे किञ्चितों शंकाक गुंजाइश नहि अछि। किन्तु, स्वतंत्रता सेनानी कहिया सँ भेलाह? गाँधीवादी कहिया भेलाह। उत्तर स्पष्ट अछि-महात्मा गाँधी कें भारतीय राजनीति मे अएलाक बादे गाँधीवादी बनल होएताह। शोधकर्त्ताक सूचना अछि जे द्विजवर नौकरी छोड़ि स्वाधीनता संग्राम मे कूदि पड़लाह। किन्तु हीरालाल झा "हेम" "द्विजवरक समकालीने नहि, सहकर्मि सेहो छलथिन, किछु भिन्न सूचना देल अछि। ओ लिखैत छथि [४] - "बनगॉव निवासी पं० छेदी झा "द्विजवर" मधेपुरा हाई स्कूल मे मैट्रिक परीक्षातीर्ण भए वीरवना मिडिल इंगलिश स्कूलमे द्वितीय अंग्रेजी अध्यापक रूपें नियुक्त भेलाह। किछु काल रहलाक उत्तर एक सेकेण्ड पंडित बनगॉव निवासी अध्यापक नियुक्त भेलाह। दूनू बनगॉव निवासी युद्ध करथि तॅ वीरवन्ना स्कूलक मालिक "द्विजवर" कें हटा देलथिन्ह। यदुवर पहिने जनमि, कमे अवस्था (१९८८-१९३५ ई०) मे कीर्ति ध्वज फहराय स्वर्गवासी भए गेलाह।' "द्विजवर" पाँच वर्ष पाछू जनमि दीर्घ जीवन (१८९३-१९७२) प्राप्त कएल। "द्विजवरक व्यक्तित्वकें बुझबाक अवसर कतेको पीढ़ी कें भेटलैक अछि। किन्तु, यदुवरक संबंध मे ई सुविधा प्राप्त नहि छैक। एहना स्थितिमे बादक बहुतो बातकें पहिलुकें मानि लेबाक भ्रमक सम्भावना रहैत छैक। एहिठाम पं० हीरालाल झा "हेम" (१८९१-१९८४) कें उद्धृत करब अप्रसांगिक नहि होएत। ओ लिखने छथि- 'ओहि समयमे (१९१२-१९१८ ई० के बीच) मुरहो निवासी श्री यदुनाथ झा "यदुवर" एवं श्री पुलकित लाल दास "मधुर" (१८९३-१९४३ ई०) आदि सँ संपर्क भेल। श्री यदुवरजी "मिथिला गीताञ्जलि" लिखि हमरा देखाबथि आओर मधुरजी फुटकर लेख रचना आदि। हमहुँ ओहि समय मे फुटकर कविता लिखैत रही।"

हेमजीक एहि कथनसँ ई मानि ली जे यदुवरजी अपन गीत कें ठीक करएबाक हेतु हेमजीकें रचना देखबैत छलाह, अनुचित होएत। एकर स्पष्ट अर्थ होइछ जे हीरालाल झा 'हेम' यदुवरजीक रचनाक श्रोता छलाह। ओहिना ललितेशजी द्वारा ई मानि लेब जे सहरसा परिसर मे द्विजवरक बड़ ख्याति छलनि, तें यदुवर हुनकहिसँ प्रभावित भए स्वाधीनतामूलक गीतक रचना करैत छलाह, उचित नहि होएत।

यदुनाथ झा "यदुवर" क साहित्यपर "द्विजवरक" भाषा-शैलीक प्रभावक प्रसंग ललितेश लिखने छथि। 'मैथिली गीत कुसुम" के संकलित रचना सभक पर्यावलोचनसॅ कोनो अध्येताकें

स्पष्ट भए जयतनि जे "यदुवर" जे काव्यक रचना कएलनि अछि तकर शैली, तकर वर्ण्य-विषय, तकर चित्रण-निरूपण ओएह अछि जे द्विजवरक छनि।' जाहि रचनाक आधार पर "यदुवर" कें द्विजवर सॅ प्रेरित-प्राभावित मानल अछि, तकर एकोटा बानगी प्रस्तुत नहि कएल अछि। एहि प्रकारक विषय सर्वप्रथम ललितेश मिश्र लिखल अछि। तें अपन मतक समर्थन मे चाहैत छलनि जे तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करितथि। यद्यपि उक्त लेख मे द्विजवर"क कतेको पाँती उद्धृत अछि। किन्तु एकोटाक श्रोत अंकित नहि अछि एक गीतक प्रसंग मे पहिनहि लिखने छी से १८ नवम्बर १९१६ ई० 'मिथिला मिहिर' मे "मैथिली गीत कुसुम" शीर्षक सँ प्रकाशित अछि। जतय धरि रचनाक विषय वस्तुक प्रश्न अछि ओहि कालक मूल स्वर उद्‌बोधनात्मकता-सभ रचना मे विद्यमान अछि। तखन एतबा धरि अवश्य जे "द्विजवर" क भाषा "यदुवर"क काव्य भाषाक अपेक्षा विशेष खराजल अछि।

विभिन्न ऐतिहासिक साक्ष्यक आलोक मे ललितेश मिश्रक कथनक सत्यताक परीक्षा कएलापर हम पुनः अपनहि पूर्व निष्कर्ष पर अबैत छी जे यदुनाथ झा 'यदुवर' पं० छेदी झा "द्विजवर" क संसर्ग आ प्रभावहि लिखब आरंभ नहि कएलनि। मैथिलीमे राष्ट्रीय चेतना मूलक कविताक उद्‌घोष "यदुवर" कएल तथा विभिन्न कविक राष्ट्रीय चेतनामूलक कविताक प्रथम संग्रह "मिथिला-गीताञ्जलि" अछि। मैथिली साहित्यक विकासमे
"यदुवर"क योगदान कविते धरि सीमित नहि अछि। ओ मैथिलीक अनुसंधानपरक साहित्य लेखनक श्री गणेश सेहो कएल। ओहि सँ पूर्व म. म. परमेश्वर झा (१८५६-१९२४) "मिथिला तत्व विमर्श लिखने छलाह, किन्तु ओकर प्रतिपाद्य साहित्यिक नहि, राजनीतिक-सामाजिक अछि। "यदुवर"क अनुसंधानपरक ओ लेख थिक "मैथिली साहित्य दिग्दर्शन"। एहि दिशामे "यदुवर"क बाद मुंशी रघुनन्दन दास, शशिनाथ चौधरी (१९००-८०) म० म० उमेश मिश्र, भोलालाल दास (१८९७-१९७७) गंगापति सिंह प्रवृत भेलाह। डा० जयकान्त मिश्र "यदुवर"क एहि अवदानक प्रसंग विस्तारसॅ लिखने छथि।

पं० चन्द्रनाथ मिश्र "अमर" यदुवरक एहि कालक उल्लेख करैत लिखने छथि-"मोद" मे पं० यदुनाथ झा "यदुवर" "मैथिली साहित्यिक दिग्दर्शन" शीर्षक मे ओहि समय धरिक मैथिलीक विविध पुस्तक सभक परिचय प्रस्तुत कएने छथि। "मिथिला" मे ओकर अनुगमन करैत "साहित्य रत्नाकार" मुंशी रघुनन्दन दास (१८६०-१९४५) जी मैथिली साहित्यक दिग्दर्शन करौने छथि। (मै० पत्रकारिताक इतिहास)

हमर ई मान्यता ओओरो पुष्ट भए गेल अछि जे मैथिली साहित्यकें अपन देश काल सँ जोड़बाक जे प्रवृत्ति कवीश्वर चन्दा झासँ चलल ओहि पर सँ धार्मिक लेप पोछि राष्ट्रीय आ देशोत्थान विषयक रचनाक सुदृढ़ परिपाटी यदुनाथ झा "यदुवर"क रचनेसँ प्रारम्भ भेल अछि। राष्ट्रीय चेतनामूलक स्वर कम्पनकें एक सबल रूप प्रदान करबाक गारिमा "यदुवर" कें प्राप्त छनि। किन्तु, यदुवरक प्रसंग अद्यावधि बड़ कम अनुसंधान भेल अछि। धेमुराञ्चलक जिज्ञासु लोकनिक ई कर्त्तव्य होइत छनि जें "यदुवर"क जीवन आ साहित्यक प्रसंग अनुसंधान करथि। हुनक समग्र कृति ओ व्यक्तित्वकें समक्ष अनबाक प्रयास हो। ओहिसँ पूर्व जे किछु कहल जाएत

वा लिखल जाएत अपूर्ण रहत।

भाखा-१९८८

❁ ❁ ❁ ❁

कवि सेनानी छेदी झा "द्विजवर"

मैथिली साहित्य आ साहित्यकारक प्रसंग सामान्य धारणा अछि जे ओ लोकनि राष्ट्रीय चेतना आ स्वाधीनता संग्रामसँ असम्पृक्त छलाह। सर्जनात्मक प्रतिभाक अभिव्यक्ति लेल ओ वैवाहिक समस्याकेँ महत्व देल। मुदा, हमरा जनैत मैथिलीक साहित्य किंवा साहित्यकार पर ई आरोप तथ्यमूलक नहि अछि। सर्वप्रथम कारण ई अछि जे अधिकांश रचना पत्र पत्रिकामे छिड़िआएल अछि, जे लोककेँ सुलभ नहि छैक, दोसर कारण इहो अछि जे राष्ट्रीय चेतनासँ सम्पन्न रचनाकारक रचनाक प्रचार-प्रसार ओतेक नहि भेलैक जतेक प्रचार-प्रसार हास्य-व्यंग्य रचनाक भेल।

मैथिली मे राष्ट्रीय चेतना अथवा स्वाधीनतामूलक रचना आ रचनाकारक अन्वेषण कएला पर धेमुराञ्चलक दू कविक कविता विशेष आकर्षित करैछ। ओ थिकथि-यदुनाथ झा "यदुवर" (१८८८ सँ १९३५ ई०) आ छेदी झा "द्विजवर"। किन्तु एहू दूनू गोटेमे अन्तर अछि। "यदुवर" पोस्ट आफिस मे काज करैत छलाह। सरकारी सेवक छलाह तेँ यदुवरक सक्रियता आ योगदान साहित्यिक स्तरेधरि अछि, राजनीतिक स्तर पर नहि। किन्तु "द्विजवर" सरकारी सेवाकेँ लात मारि बाहर भए गेलाह। तेँ स्वाधीनता संग्राममे द्विजवरक सक्रियता राजनीति आ साहित्य दूनू स्तर पर अछि। तात्पर्य जे द्विजवर जँ एक दिस राष्ट्रीय चेतना मूलक साहित्यक निर्माण आ प्रयार-प्रसार करैत छलाह तँ दोसर दिस धेमुराञ्चलक हजारक हजार स्वाधीनताकामी लोककेँ अंग्रेजी साम्राज्यक विरुद्ध नेतृत्व करैत काल लाठीक प्रहार सेहो सहैत छलाह। एकहि व्यक्तिमे सर्जनात्मक प्रतिभा आ आन्दोलनात्मक क्षमता संगमित भए जाएब, मैथिलीए लेल नहि, आनो साहित्य लेल
बिरल घटना थिक।

छेदी झा "द्विजवर" अथवा छेदी झा "मधुप"क जन्म कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा सन १३०० साल (१८९३ ई०) केँ सहरसा जिलाक वनगाँवमे भेलनि। हिनक पिता छलथिन पं० बबूआ झा तथा माताक नाम छल बौआ देवी। प्रथम पत्नीक अल्प वयसहिमे निःसन्तान स्वर्गवासी भए गेलाक वाद "द्विजवर" द्वितीय विवाह गामहिमे कएल। द्वितीय पक्षमे तीन सन्तान-दू पुत्र माहेश्वर झा, उग्रसेन झा तथा एक कन्या रामेश्वरी देवी भेलनि।

द्विजवरक शिक्षा गामाहक पाठशाला सँ आरम्भ भेल। १९१० ई० मे माध्यमिक विद्यालय परीक्षोतीर्ण भेलाह तथा १९१५ ई० मे उच्च विद्यालय मधेपुरा सँ उच्च माध्यमिक परीक्षा पास कएल। द्विजवरक पिताक आर्थिक स्थिति तेहन नहि छल जे ओ पुत्रकेँ उच्च शिक्षा हेतु आनठाम पठा सकतथि। बीरबना मिडिल इंगलिश स्कूल मे अंग्रेजीक द्वितीय अध्यापक नियुक्त होएबामे ओ

सफल भेलाह। ओहिठाम करीब सात वर्ष धरि रहलाह। ओही बीच द्विजवर क पिता स्वर्गवासी भए गेलथिन तँ नौकरी छोड़ि द्विजवर गाम पर आबि गेलाह।

द्विजवरक सर्जनात्मक प्रतिभा आ आन्दोलनात्मक क्षमता समान रूपे छल। साहित्य सर्जना आ राष्ट्रपिता बापूक आह्वान पर स्वाधीनता संग्रामे मे कूदि, राष्ट्रीय चेतना जागृत करब एकहिंसग चलैत छल। स्वाधीनता संग्राम मे द्विजवरक भूमिकाक प्रसंग डा० मनोरंजन झा लिखने छथि जे द्विजवर प्रथम दर्जाक स्वतंत्रता सेनानी छलाह। हिनक नेतृत्वमे हजार क हजार ग्रामवासी स्वाधीनता आन्दोलनमे अपनाकें झों कय लागल। तुरन्तहि अंग्रेजक आँखि द्विजवर पर गेलैक। कतेको वेर हिनक घर जरौलक। सामानक कुर्की-जप्ती भेल। किन्तु 'द्विजवर' एहि गाम सँ ओहिगाम नुकाइत, विचार-गोष्ठी करैत आ भोर होइत थाना, आफिस, स्टेशन आदिकें जरा फेर नुका जाइत छलाह। १९३० ई० क २ फरवरी कें पाँच हजारक जुलूसक नेतृत्व करैत छलैह, अंग्रेज सिपाही हूलि गेल। सभ भागल। किन्तु एकटा व्यक्ति ठाढ़ रहि गेल। ओहिकालक हुनक रूपछल, त्रिपुण्ड चाननक नीचा सिन्दूरक ठोप आ तकर नीचा लहलह करैत अङोरसन युगल आँखि। धमधमाइत डाङक मध्य ओहि युवकक मुँहसँ अनवरत उद्घोषित भए रहल छल, ओएह मूल मन्त्र-भारत माताक जय भारत माता क जय।"[१] स्वाधीनता आन्दोलनक क्रममे कवि सेनानी "द्विजवर" चारि बेर (१९३०, १९३२, १९४० आ. १९४२) जहल गेलाह आ आततायीक यातना सहल। कोशीक प्रलंयकारी बाढ़िसँ बिगड़ैत हुनक आर्थिक स्थितिकें अंग्रेजी शासनक कुदृष्टि आओरो बिगाड़ि देलक। किन्तु द्विजवर कहिओ किंचितो विचलित नहि भेलाह।

पं० छेदी झा "द्विजवर" एकटा प्रतिभाशाली कवि छलाह। हिनक साहित्यिक प्रतिभा मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी तथा उर्दूक माध्यमसँ समय-समय पर व्यक्त भेल अछि। किछु पोथीक अनुवाद सेहो कएने छथि। डा० मनोरंजन झा क मोताविक हिनक चौंतीस टा पोथी अछि। मैथिलीक अछि--(१) सीतायन (महाकाव्य) (२) द्विजवरशती, (३) कोयलीदूत (४) ऊर्मिला (उपन्यास) (५) स्वानुभूति आ जीवन दर्शन (६) साहित्य शतदल (७) मैथिली व्याकरण (८) मैथिली गीत कुसुम (९) नरसिंह पद्यावली (१०) वन्दी विनोद एवं (११) अमर संगीत। अनुवाद मे अछि (१२) वैदेही वनवास (बंगलासँ मैथिली) (१३) वैशेषिक दर्शन (संस्कृतसँ मैथिली) (१४) पातञ्जलि योगसूत्र (संस्कृतसँ मैथिली टीका) (१५) सत्यनारायण कथा (संस्कृतसँ मैथिली)। किन्तु दुर्योग अछि जे अतेक राश प्रकाशित-अप्रकाशित पोथीक लेखक कवि सेनानी पं० छेदी झा "द्विजवर" मैथिलीक सामान्य पाठक लग नहि पहुँच सकल छथि। जे प्रकाशित अछि, अलोपित अछि, आ जे हुनक संततिक घरमे होनि संभव थिक देबारक आहार होइत हो।

कवि सेनानी पं० छेदी झा "द्विजवर"क देहावसान उनासीवर्षक अवस्थामे ३० अगस्त १९७२ कें भए
गेल।

द्विजवरक साहित्यिक प्रतिभा ओहि समय प्रकाशमे आएल जखन ओ मात्र एगारह वर्षक छलाह। सर्वप्रथम ओ "सत्य नारायण कथा" क मैथिली अनुवाद १९०५ ई० में कएल। आ

अन्तिम थिक संस्कृतमे 'प्रधान प्रशस्ति' (१९६६ ई०) इ। चीनी आक्रमण एवं पं० जवाहर लाल नेहरू पर अछि-हिनक प्रथम आ अन्तिम पोथीसँ स्पष्ट होइछ जे द्विजवरक साहित्ययात्रा संस्कृतसँ संस्कृत धरि भेल अछि। परंच, साहित्य यात्राक केन्द्रबिन्दु रहल अछि राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीयता।

स्वतंत्रता संग्रामसँ असम्पृक्त देहधारी लोककें जगबैत "द्विजवर" ललकारैत छथि-

"करू देशक उपकार किछु दृढ़ शरीरकें पाबि
भेटत ने अवसर एहन, पछताएब ई गाबि
पछताएब ई गाबि गेल मम जन्म निरर्थक
प्रतिदिन पेटक हेतु कएल सब छल बल व्यर्थक
भन छेदी तजु द्वेष सुगुण साहस निज उर धरू
तन धन कैं उत्सर्गि, भला तँ किछु देशक करू।"[२]

देशक उपकार कए, अपन तन मन धनकें सार्थक करबाक हेतु द्विजवर मैथिलगणक आह्वान करैत छथि-

"करू सूतल छी मैथिल वृन्द
भेल प्रभात प्रभा कै देखू छारि पिशाचिनि निन्द।
सकल जाति निजकार्य अराधल छारि अभागल हिन्द।"[३]

मिथिलाक कथा, देशक पराधीनता लोकक स्वातंत्र्य विमुखता तथा स्वार्थ लिप्सा "द्विजवर" कें आहत करैत छलनि। कविमे ई भाव हुनक "अनुताप" शीर्षक कविता मे अछि-

'ने हम भाषा भाव भेष लय, केलहुँ किछु अवधान
जाति-धर्म ओ देश हेतु नहि, अरपल आपन प्राण।
निशि दिन पेटक हेतु अनेको कयलहुँ कर्म निदान
द्रव्य लोभ सेहो गम कैलहुँ भाय बन्धु वलिदान
खरखाही लुटबाक हेतु हम भिन्न भै कैल प्रयाण
पड़ल-पड़ल शय्यापर छेदी, गाबथि शोकक गान।'[४]

"द्विजवर" भारत वर्षमे वसन्तक स्वागत लेल प्रस्तुत छथि जाहिसँ एहिठामक लोकक दीनदशा समाप्त होअए, ओकर मुखमण्डल पर प्रसन्नता अबैक आ विश्व मे ओकर आदर सत्कार होइक-

"आऊ आऊ ऋतुराज करू भारत शुभ आगम
अति उत्कंठित विश्व करै लै छथि तव संगम"।[५]

द्विजवर मे स्वाधीन भारतमे जीवाक लालसा कूटि-कूटि कए भरल छल। हुनक ई

स्वाधीनता मात्र
राजनीतिक नहि छल, आर्थिक स्वतंत्रताक अवधारणा विशेष महत्वपूर्ण छल। स्वदेशी आन्दोलनक प्रभाव हिनक "चरखा चौमासा" कविता मे स्पष्ट अछि।

"अहाँ मन दए बाँटू, सूत काटू देसिया
देशक सब धन बाँचत, अरि डर, थरथर काँपत
.....
बारि बाती धरू चरखा, करू बरखा आखरी
मधुप विपत्ति सब बीतत, देश कठिन रण जीतत।"

द्विजवरक स्पष्ट मान्यता छलनि जे भारत कोनो अमूर्त वस्तु नहि थिक। राष्ट्र कोनो वायवीय पदार्थ नहि थिक, देश थिक लोकक गामघर, लोकक आशा-आकांक्षा आ सरिता प्रवाह, चिड़ै-चुनमुनीक कल-कूंजन। गामक प्राकृतिक सौन्दर्यमे बसल अपन आत्मक प्रसंग लिखल अछि-

"सिनेही मन बसि गेल धेमुराक तीर
की कल-कल जलनाद करै अछि
सुनि-सुनि आगम धीरे हो।
कात-कात करमी लत शोभित
मोहित देखि फकीर हो।
कूल समीप धान तरु झूलत,
भूतल लखि नर पीर हो।'

छेदी जा "द्विजवरक" रचनात्मक आ सामाजिक राजनीतिक-सक्रियताकें समाजक समक्ष आएबामे विलम्ब नहि भेलैक। अल्प कालहिमे हिनक ख्याति पसरए लागल छल। एहि प्रसंग यदुनाथ झा "यदुवर" मैथिली साहित्यिक दिग्दर्शन करबैत लिखने छथि जे "वनगामक पं० छेदी झा अपन भाषामे कतेको उपन्यास तथा पाठ्य पुस्तक चुकल छथि।

छेदी झा "द्विजवर"क रचनात्मक जीवन आ सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक सक्रियताक अवलोकनसँ निर्विवाद रूपे कहल जा सकैछ जे "द्विजवर" राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम क अनुकूल लोकके जगेबामे सबसँ आगू छलाह। हिनक रचना, कविक ओहि वैशिष्ट्य कें इंगित करैछ जे कोनो भाषा-साहित्य आ राष्ट्र लेल गौरवक विषय बूझल जाइछ।

मि० मि०, दैनिक, अगस्त १९८५

कुमार गंगानन्द सिंहक कथा संवेदना

कुमार गंगानन्द सिंहक कथायात्रा सन् १९२४ सँ सन् १९६५ ई० धरि अछि। हिनक पहिल कथा "मनुष्यक मोल" १९२४ ई० मे प्रकाशित भेल तँ अन्तिम कथा "पंच परमेश्वर" १९५६ ई० मे। एकर अतिरिक्त "विवाह", "बिहाड़ि" "आमक गाछी" "पंडितपुत्र" एवं "अगिलही" कथा छनि। "मनिष्यक मोल" तथा "विवाह" कें
डा० जयकान्त मिश्र एवं डा० श्रीश भोलक रचना मानल अछि। डा० मिश्र स्पष्टतः लिखने छथि:- Bhola Jha shows a better motivation of his plots. His two published short stories are "मनुष्यक मोल एवं "विवाह" परन्तु कालान्तर मे ई प्रमाणित भए गेल अछि जे कुमार गंगानन्द सिंह भोल'क उपनामे ई दूनू रचना कएने छलाह।

दैनिक जीवनमे प्राप्त अनुभवक संग वौद्धिकताक समावेश कएला पर अनुभूतिक स्थिति अबैछ। अनुभूतिक अभिव्यक्तिमे सत्यक सम्प्रेषण रहैछ। सत्यक सम्प्रेषणमे जीवन आ परिवेशक यथार्थ व्यंजित रहैछ। जीवन आ परिवेशक इएह अभिव्यक्ति साहित्यक महान धरोहरि, काल प्रवाहमे प्रमाणित भए जाइछ। जाहि यथार्थमे जीवनक यथार्थ आ अपन जीवन्त परिवेशक जीवन्तता नहि रहैछ, समसामयिक चेतनाक निरन्तर प्रतिध्वनित होमएवाला संघनात्मक गुणात्मकता नहि रहैछ, ओहि सँ रचनाक अपन आकर्षण आ गुणवता क्रमशः समाप्त होइत जाइछ। एहि कोटिक रचनामे अपना अपना समय-परिवेशक इतिहास अवश्य रहैछ। परंच ओ इतिहास बदलैत युगमे सान्दर्भिक महत्व सँ च्यूत भए जाइछ। कुमार गंगानन्द सिंहक रचनाक आरम्भिक कालमे देशमे स्वाधीनता संग्रामक आगि प्रखरतर छल। कुमार साहेब राजनीतिसँ सम्बद्ध छलाह। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक नेतृत्वक प्रति सतर्क छलाह। ओहि समयक कालधर्म छल जे लक्ष्य सिद्धि हेतु साहित्यक रचना कएल जाए। देश वा समाजक हित हेतु अनेको प्रकारक नियम छल, आत्म संयम छल, कतेको कार्यक्रम छल। कार्यक्रमक कोनो सूत्र कें पकड़ि कएल गेल रचनामे प्रचारात्मक कलात्मकता रहैछ। एहि प्रचारात्मक कलात्मकतामे युगकथार्थक परिवेशक जीवन्तता आ दलित शोषितक हृदयक स्पन्दनक बदलामे अपन सम्प्रदायक मत स्थापनाक प्रयास होइछ। ओ मत स्थापन आदर्शपरक भए जाइछ।

ओलोच्य कथाकारक रचना क अध्ययन विश्लेषणसँ स्पष्ट होइछ जे हिनक कथा लक्ष्यमूलक अछि। प्रत्येक कथाक रचना लक्ष्य प्रतिपादन लेल भेल अछि। सर्वप्रथम लक्ष्य स्थिर भेल, पुनः कथानक, घटना आ चरित्रक तानी-भरनी चलल अछि।

कुमार गंगानन्द सिंहक (१८९८-१९७०) प्रायः सभ कथा सामाजिक सुधारमूलक अछि। राजा राममोहन रायसँ समाजक कलुषकें दूर करबाक जे प्रक्रिय चलल, महान उपन्यासकार शरच्चन्द्र जाहि सामाजिक विकृतिकँ अपन रचनाक आत्मा बनाओल, समाजक विभिन्न अंग-उपांग आ स्थितिक उद्घाटनसँ समाजक नव संस्कार करबामे सफल भेलाह, ओही भावभूमिपर कुमार साहेब कथा लिखल। मनुष्यक मोल एवं विवाह वैवाहिक कुरीति कें प्रकट करैछ तँ विहाड़ि अछूतोद्धार आन्दोलन कें लए कए लिखल गेल अछि। पंडितपुत्र क माध्यमे सत्य कार्यक सुफल समक्ष आएल अछि। पूर्वहि लिखल अछि जे कुमार गंगानन्द सिंहक प्रवेश देशक

राजनीतिओ मे छलाह अपन किछु मान्यता छलनि। हुनक ई दृष्टि सामाजिक कल्पनाक परिवर्त्तन शीर्षक निबन्धमे स्पष्ट भेल अछि। समाजक निर्माण खातिर तीन टा उपाय समक्ष राखल अछि:- (१) स्वतन्त्र सद्विचार द्वारा सिद्धान्त तथा नीति निर्णय करब, (२) ओहि नीति तथा सिद्धान्तपर काज कए दृष्टान्त बनब तथा (३) साहित्य तथा सद्व्याख्यान द्वारा नवीन नीति आ सिद्धान्तक प्रचार करब। एही मान्यताक अभिव्यक्ति 'पंच परमेश्वर' कथामे भेल अछि।

देशक सक्रिय राजनीतिमे प्रवेशी कुमार गंगानन्द सिंहक रचनाकारसँ ई अपेक्षा कएल जाइछ जे ओ अपन राजनीतिक दृष्टिकोणक परिचय देथि। किन्तु से नहि भेल अछि। जाहि प्रकारें ओ देशक सक्रिय राजनीतिमे छलाह तकर सम्यक् अनुगुंज हिनक कोनो कथामे नहि अछि। परतंत्र भारतमे काहि कटैत, किंवा विदेशी सन्ताक क्रूरपाश मे आवद्ध, दमन-चक्रमे फँसल, स्वतंत्रताकामी भारतवासीक मनः स्थितिक संकेतोधरि हिनक रचनामे नहि भेटैछ। हिनक एकोटा चरित्र निर्माण एहन नहि अछि जे अमर कथाकार प्रेमचन्दक कतेको
कथानायक जकाँ स्वतंत्रता संग्राममे सम्मुख आबय। तात्पर्य जे आलोच्य कथाकारक कथासाहित्यमे राजनीतिक चेतनाक सर्वथा अभाव अछि। संभव थिक जे हिनक सामंती संस्कार किंवा तात्कालिक सामन्तवर्गक विदेशी सत्ताक प्रति नतमस्तक बनल रहबाक प्रवृति, बाधक भेल होनि। आ, तें ओ अपन रचनात्मक संवेदनाक उपयोग सामाजिक कथा लिखि कए लैत छलाह। स्वाधीनताक पूर्व विदेशी सत्ताक स्थानपर स्वदेशी शासनक स्थापना हेतु, किछु वर्गकें छोड़ि, प्रबल संघर्ष छल। स्वाधीन भारतमे संभव छलैक जे पराधीन भारतक सुविधाभोगी वर्ग सुविधा च्यूत भए जाए। किन्तु सामाजिक अथवा राजनीतिक सुविधा परिवर्तन सूर्योदय-सूर्यास्तक घटना नहि थिक। अतएव, नव संविधान लागू भेलापर शोषित आ प्रताड़ित वर्ग लेल कतेको प्रकारक सुविधाक प्रावधान भेल। कतेकोक सुविधा कपचल जएबाक स्थिति सेहो आबि गेल। एहिसँ समाजक दू वर्ग-सुविधा भोगी आ सुविधा पयबालेल लालायित वर्गमे मूल्यगत संघर्ष असंभावी छल। जँकि, सुविधा भोगी वर्गक हाथमे जोड़-घटावक क्षमता छलैक, तें ओ चाहलक जे समाज मे यथास्थिति बनल रहय। कुमार गंगानन्द सिंह एहिसँ उपर नहि छलाह। हुनक यथास्थितिवादी दृष्टि पंच परमेश्वर कथामे आबि स्पष्ट भए गेल अछि। जे अमलदारीसँ चलि आबि रहल अछि, ओहिमे व्यक्तित्वक्रम अधलाह थिक। ओहिमे खोर कएलापर समाजमे अशान्ति मचि जाएत, कलह होएत से कुमार गंगानन्द सिंह मानैत छथि। "ग्राम सरकार कें उचित नहि थिकैक जे अकारण ककरो आमोद-प्रमोद मे व्याघात करैक।" (पंच परमेश्वर) अर्थात् ई सभ जे राजा, सामान्त आ जमीन्दार, सामाजिक सम्पतिक उपयोग आमोद-प्रमोद निमित करैत छलाह, से स्वाधीनताक वादो ओहिना करैत रहथु। संगहि, समाजमे शान्ति व्यवस्था लेल आवश्यक समाजक सूत्र ओही वर्गक हाथमे रहय। पंच परमेश्वर क घूटर झा आ मूटर झा द्वारा सामाजिक सम्पतिक व्यक्तिगत स्वार्थ लेल उपयोग, ग्राम रक्षादलक प्रतिरोध, ग्राम पंचायतक सरपंच द्वारा दूनू पक्षमे निर्णय आदि सामन्तीय संस्कार क प्रतिफल थिक। समाजक गनल-गूथल सुविधा भोगीक अपरिमित स्वार्थ-प्रसार, एक आध भजार द्वारा समाजक लूटि, एवं माइनजनक संग वा बटबाराक संग वहुसंख्यकक सुख-सुविधा आ आशा-आकांक्षाक प्रति साकांक्ष, एही खातिर नहि रहब जे यथास्थितिकें समाप्त कएला पर समाजमे अशान्ति मचि जाएत, असंगत आ सामंती चिन्तन धाराक सर्वथा अनुकूल अछि।

आलोच्य कथा सभमे समाज मे प्रचलित विविध संस्कार दिस ध्यान विशेष केन्द्रित अछि। वाल-विवाह, अनमेल विवाह अथवा बहु-विवाह जन्य दुर्गुण पर प्रकाश अछि। परंच जखन अछूतोद्वार आन्दोलनक आधार पर कथा लिखैत छथितँ पुनः कथाकारक कुलीन सामंतीय संस्कार आरूढ़ भए जाइछ। परिणामतः बिहाड़ि महात्मा गाँधीक हरिजन-कल्याण आ अछूतोद्धार पर आधारित रहितो विहाड़ि अनबामे असमर्थ अछि। ओ बिहाड़ि अथवा सामाजिक क्रान्ति नहि थिक जे महात्मा गाँधी आनल। ओ जकरा हरिजन कहल, जकरा समाजमे अछूत देखि, सामाजिक प्रतिष्ठा लेल प्रयास कएल, ओतय धरि कुमार साहेब नहि पहुँचि सकलाह अछि। बदलामे ओ समाजक ओहिवर्ग द्वारा हड़ताल कराओल, जकर पानि पहिनहिसँ चलैत छलैक। जे बाबू भैयाक बेगारी कए अपन जीवन गुजर करैत छल, कुमार गंगानन्द सिंह ओहि वर्गकें तेरहा कराय युगक आदर्शो प्रस्तुत नहि कए सकलाह अछि। डा० शैलेन्द्र मोहन झाक मान्यता छनि जे पण्डित पुत्र मे शिक्षाक वर्त्तमान उद्देश्य पर मार्मिक व्यंग्य अछि। हमरा मते से तथ्यपूर्ण नहि अछि। कथाकारक एक मात्र लक्ष्य छनि इमनदारीक फल देखाएब। एही हेतु सुन्दर झाक जन्म होइछ, "घोखन्त विद्या" मे मन नहि लगैत छनि। ओ कतकत्ता पड़ा जाइत छथि। ट्राफिक पुलिसक नौकरी पाबि धन संचय करैत छथि। एहि कोटिक युगक यथार्थ नहि अछि। युगक यथार्थ छल स्वाधीनता संग्राम, युगक यथार्थ छल हरिजन उद्धार, युगक यथार्थ छल लोक तांत्रिक शक्तिक प्रतिष्ठा, से सभ हिनक कथामे नहि अछि।

कुमार गंगानन्द सिंह अपन युगक यथार्थकें अभिव्यक्त कएल वा नहि ई भिन्न वात, किन्तु एकटा धरि सत्य आ यथार्थ अछि जे ओ उपाख्यान लिखबाक परिपाटी कें तोड़ल। कथा वस्तु कोनो पुरान अथवा धार्मिक
ग्रन्थसँ नहि उठाय, अपन समसामयिक परिवेशसँ लेल। देशमे समाज सुधारक आएल बाढ़ि सँ अपन कथावस्तुक चयन कएल। उपाख्यान शैलीमे कथाक माध्यमसँ उपदेश देबाक परिपाटीक स्थान पर अपनहि वीचक समाजक कलुष पर प्रहार कएल। ई कुमार गंगानन्द सिंहक कथाक वैशिष्ट्य थिक।

आलोच्य कथाकारक कथामे पुरुष पात्रक अपेक्षा, स्त्री पात्रक संख्या कम अछि। स्त्रीपात्र मे प्रमुख मनोरमा (मनुष्यक मोल) रमा, कृष्मकान्तक माय, मनचनियाक माय (विवाह), चपला (अगिलही) तथा पुरुष पात्रमे प्रमुख छथि हर्षनाथ (मनुष्यक मोल), चुम्बे, भागवत, आ कृष्णकान्त (विवाह) द्वारिका, लुटकून बाबू (विहाड़ि) क अतिरिक्त अनेक गौण पात्र पंडितजी, सुन्दर झा, सोमनाथ (पंडितपुत्र) घूटर-मूटर (पंच परमेश्वर), मुसाई झा (आमक गाछी)।

मनोरमा (मनुष्यक मोल) तथाकथिन कुलीन ब्राह्मणक विकायलि कन्या छथि। शुद्ध-शिद्ध लिखबाक योग्यता नहि छनि। सासुरक आर्थिक दुःस्थिति, पतिक नौकरीक हेतु कलकत्ता प्रवास, सासु-ससुर द्वारा विदागरी तथा नैहरक अत्याचार, वाल विधवा कें आत्महत्या करबा लेल विवश कए दैछ। रमा (विवाह) अपन जीवनक कटु अनुभव क प्रसंग विना एको शब्द बजने शान्त भए जाइछ। कृष्णकान्तक माय आ मनचनियाक मायक चरित्र निर्माणमे कथाकारक कौशल टपकैछ। कृष्णकान्तक माय एक टिपिकल सासुक रूपमे चित्रित छथि। हिनक प्रत्येक शब्दमे आत्म प्रदर्शन आ समधिऔनक उपेक्षा ध्वनित छनि। भाइक अएबाक समाद पाबि पुतहु आनन्दित

होइछ किन्तु कृष्णकान्तक माय लोहछि उठैछ। पुतहुक नैहरिक खवासिनीओ कें नहि छोड़ैछ "अयँ खवासिनी अरे धैर्य करू, एना नाचय की लगलहुँ? अहाँक बाबू की भैया अएलाह हे, तँ की आब नटुआ मंगाउ? "मनचनियाक माय" कथाक-गौण पात्र अछि। किन्तु चरित्र प्रभावक छैक। एक दिस जँ एकरामे ममता छैक तँ दोसर दिस प्रतिकार करबाक तत्परता सेहो छैक। रमा पर लोहछल सासुकें देखि ओ कहैछ-"तमसाउ जुनि ओझाइन। हमहूँ लागि दैत छियनि, तरकारी कटैत कोन देरी होएतैक?" अगिलहीक चपला वस्तुतः चपला थिकथि। चपलाक बाल सुलभ चंचलता, नव वस्तु जनबाक उस्तुकतासँ चपलाक गुलाब मामा नाकोदम्म भए जाइत छथि। पंडित पुत्र क पंडिताइन अशिक्षित माताक प्रतिनिधि छथि। सदिखन पुत्र आँखिक समक्षे रहथि, सएह कामना छनि। "भगवान करथु जे एहुना भरि आँखि देखैत रहियैन। सब की पंडित होइते छैक?"

कृष्णकान्त (विवाह) आ द्वारिका (विहाड़ि) क चरित्रमे कोनो गुणात्मक भेद नहि छैक। दुनू कथा नायक समाजमे सुधारक पक्षपाती अछि, परंच समाजक मोकाबिला करबाक साहस नहि छैक। कृष्णकान्त स्वीकारैछ-"हम वाल विवाहक विरोधी एखनहुँ छी कनेको कम नहि, परन्तु एकसर की करू? आ "बिहाड़िक" द्वारिका समाजमे सुधारक आगि सुनगा ब्राह्मण वर्ग द्वारा वारल गेलापर सिमरिया वास कए लैछ। कृष्णकान्त जतय वाल विवाहिक फल भोगि, प्रायश्चित स्वरूप आत्महत्या कए लैछ, ततहि 'विहाड़ि' मे सुधारक आगि प्रज्जलित भेला पर द्वारिकाकें आदर सत्कार भेटैछ। एहि दूनू कथामे कथाकारक जीवन दृष्टि निराशासँ आशा दिस बढ़ल अछि, से स्पष्ट भए जाइछ।

कुमार गंगानन्द सिंहक कथाक फलक पैघ छनि। एहिसँ कथा सभ इतिवृत्तात्मक भए गेल छनि। ई इतिवृतात्मकता कथाक तानी-भरनीकें फलका देलक अछि। जाहि कथाक आरम्भ नाटकीय ढंग सँ कएने छथि एक पैघ कालखण्डक होएबाक कारणें प्रभाव छितरा गेल अछि। शान्त पोखरि मे ढेप फेकला सँ उठल पानिक हिलकोर जकाँ विवाह कथा आरम्भ होइछ। वातावरण निष्क्रिय छल, झटकासँ तोड़ि भगवतकें धकेलि वातावरण गतिशील बना देल जाइछ। मुदाः पैघ कालखण्डक इतिवृति रहलाक कारणें अनेको मोड़ कथामे आबि गेले अछि। यथा, भागवत द्वारा चुम्बेकें धकेलब, कृष्णकान्तक गारि सूनि अकवकाएब, सासुरक रंगल धोतीक प्रति मोहक भर्त्सना, सासुरक हाल चाल सुनबा लेल आग्रह, चुम्बे द्वारा चारि विवाहक रहस्योद्घाटन, बाल विवाहक
विरोधी कृष्णकान्त द्वारा समाजक डरें बाल-विवाहक जालमे फँसब, रमाकें कल्याणक योग्यताक खबरि पाबि तीन वर्षक बाद नैहरक खोज-पूछारी, कृष्णकान्तक सारक एकसरे घूमब, मृत बालकक जन्म, यथायोग्य चिकित्सा कएलो पर रमाक देहान्त, कृष्णकान्त द्वारा अपन दोष कबूल करब, लोकक व्यवहारमे अन्तर आ आत्महत्या, कथामे ततेक मोड़ आएल अछि जाहिसँ पाठक लेल किछु शेष नहि रहैछ।

बिहाड़ि कथा वाँचल जाइछ। तथा-'अपना गाम मे द्वारिका फनैत कहबैत छलाह'। वीच मे वार्तालाप मे नाटकीयता सेहो अछि। कथाक कालखण्ड पैघ रहलाक कारणें कथाक तन्तुवाय

फलकि गेल अछि। आ तखन कथाक रचनात्मक शैथिल्यक कारणे बिहाड़ि कथा झूस भए जाइछ।

पंडितपुत्र सेहो "एकटा पंडित रहथि" सँ आरम्भ होइछ। सुन्दर ढंगे कथा ससरैछ। घात-प्रतिघात होइछ। कुतूहल बढ़ैछ। परंच पंडितजीक दुर्घनाक बाद सुन्दर झा द्वारा अपन विगत वर्षक इतिवृतिक वखान कथाक चुसती कें समाप्त कए दैछ। बीच-बीचमे कथाकारक लक्ष्य सेहो खोंसल लगैछ।

पंच परमेश्वर कथा इतिवृत्तात्मक होइतहु एक छोट घटना पर चतरल अचि। अन्य कथाक अपेक्षा तन्तुवाय गस्सल छैक। कथाक वातावरण आ कथोपकथन पाठकें आकर्षित कएने रहैछ। "आमक गाछी" आलोच्य कथाकारक सभसँ छोट आ चुस्त कथा अछि। एहिमे अनावश्यक मोड़ नहि छैक। कथोपकथन द्वारा वातावरण निर्माण भेल अछि। अन्त एक रहस्यक संग होइछ जे पाठक क लेल किछु छोड़ि जाइछ। पाठकें सोचबालेल बिलमय पड़ैछ। आन कथा जकाँ पाठकक हाथमे शून्य नहि बचैछ।

कुमार गंगानन्द सिंहक कथाक भाषा सरल आ विनोदपूर्ण अछि। भाषा सरल होएबाक इहो कारण भए सकैछ जे कथा वस्तु अपनहि वीचक अछि। तें लोक भाषाक प्रयोग अछि। अन्यदेशी लोक रहैत अथवा पुराणसभक पात्र रहैत तँ संभव थिक जे तदनुरूपे शब्दक प्रयोग भेल रहैत। विवाह मे प्रयुक्त भाषाक बानगी प्रस्तुत अछि-"तखन हम जे नीक बुझैत छी से लोककें कहबे करबैक, सैह ने हमर साध्य अछि। मानबाक विषयतें लोकक सामाजिक इच्छा पर निर्भर करैछ। करैक बेरमे तँ जेहे दस करवाणि सेहे हमहु करवाणि।" एहिठाम "करवाणि" शब्दक प्रयोग सटीक आ विनोदपूर्ण अछि। विहाड़ि कथामे पूर्वसँ कमा कए आएल रौदी कामातिक काहे-कुहे बाजब "भाइयो ऐसे गोंगों करने से कुछ नहि होगा। हमको डर भर किसी का नहीं है"-जँ एक दिस निम्न वर्गमे आएल आत्म सम्मान आ साहसक स्थितिकें प्रकट करैछ तँ दोसर दिस अशिक्षित पर अन्य भाषाक प्रभाव कोना पड़ैछ से देखा कए कथाकार कथाक विनोदपूर्ण अंत कएल अछि।

मि० मि० २४-१०-१९७६

कवीश्वरी हरिलताक वैष्णवता

कवीश्वरी हरिलता पं० श्रीकृष्ण ठाकुरक दौहित्री, लालगंज निवासी पं० श्री हेमपति झा क जेठि कन्या तथा कविवर श्यामानन्द झाक अग्रजा छथि। हिनक जन्म सन १३९० साल (१९०३ ई०) क भादव मे भेल। मात्र चारि वर्षक अवस्थाहिमे हिनक परिणिय राघवपुर डेउढ़ी (सकरी, दरभंगा)क बाबू यदुनन्दन सिंहक पुत्र बाबू हरिनन्दन सिंह सँ भेल तथा ओही दिनसँ

नैहर छोड़ि सासुर बसय लगलीह। पति उन्माद रोगसँ पीड़ित
भए स्वर्गवासी भए गेलथिन्ह जखन हिनक अवस्था बड़ कम छल। हिनक एक सन्तान बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह छथि। कवीश्वरी हरिलताक प्रसंग श्रीमति अरुन्धती देवी लिखने छथि-"ई स्वामीक शुश्रुषा बहुत तत्परतासँ करैत ग्रन्थक अध्यवसायमे अपन जीवन बितबैत छलीहि। स्वामी ओ श्वसुरक स्वर्गवासक बाद जमीन्दारीक कार्य सम्पादन बहुत चतुरतासँ कए रहल छथि। हिनक कविता बहुत सुन्दर होइत अछि। श्रुति मधुरता ओ रस प्रचुरता हिनक कवितामे भेटैत अछि। विश्वस्त सूत्रसँ पता लागल अछि हिनक बनाओल गीतसभ शीघ्र काशीसँ प्रकाशित होएत"।[१]

कवीश्वरी हरिलताक टू टा गीत संग्रह-"भजनमालिका"क प्रकाशन १९३७ ई० क लगपासमे भेल। तकरबाद लिखल गेल गीत सभ अप्ककाशित अछि। वादमे ओ हरिलता नामकें छोड़ि मोदवतीक नामे भजन लिखय लगलीह। 'हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि'क स्थापनाक पृष्ठभूमि मे हिनकहि साहित्य साधना अछि।

हरिलता नैहरक सुखसँ वंचित छलीहे सासुरक सुखसँ सेहो वंचित भए गेलीह। एहि सभसँ हिनक ध्यान ईश्वरक दिस उन्मुख भए गेल। कातर भावे प्रार्थना करय लगलीह। भावना छलनि, किन्तु अक्षर ज्ञान नहि छल। ओहि समय मे स्त्रीगण लेल पढ़ब निषिद्ध छलैक। तथापि सासु आदिसँ चोरा कए अक्षर सिखलनि। एहि काज मे देवानजी लोकनि सहायक भेलथिन्ह। ओ लोकनि छोट-छोट पोथी पहुँचवा देथिन्ह अध्यवसायक वले अक्षर ज्ञानसँ शास्त्र पुरान, कर्मकाण्डक गंभीर अध्ययन धरि कए लेलनि। महान साधिका कवीश्वरी हरिलताक देहावसना १२ सिनम्बर १९८५ ई० भए गेल।

ओना तँ मिथिला आदिए कालसँ सर्वदेवोपासक भए अपन धार्मिक सहिश्णुताक परिचय दैत रहल अछि। परंच ईश्वरक कोनो-कोनो स्वरूपक प्रति व्यक्ति विशेषक आस्था विशेष भए जाइत अछि। कवि कोकिल विद्यापति जखन गबैत छथि। "कज्जल रूप तुअ काली कहिओ, उज्जवलरूप तुअ वाणी" आदि तँ मिथिलाक ओही सांस्कृतिक उत्कर्षक स्वर बाजि उठैत अछि। ओहिना कवियित्री मोदवतीक गीत साहित्यमे विभिन्न देवी-देवता आ अवतारक प्रति निवेदित हुनक गीत सर्वदेवोपासनाकें व्यक्त करैत अछि। यथा-

गणेशक प्रति	:	"जय जय गणपति शुभकारी शम्भु सुवण अरुण, वदन लालमालधारी"।
सुरसरिताक प्रति	:	"पद्मा श्वेत पद्म दल वासिनी श्वेताम्बर जननी विमले।"
शिवक प्रति	:	"शिवशिव सुमिरहु मन अविनाशी।"
भगवतीक प्रति	:	"सुवरण सरिस शरीर सरित पति तनया जय जगदम्बे।
श्रीरामक प्रति	:	"मनसोचत सब अनुखन सखिहे

राम आजु नहि आये।"

परंच, पतिक विक्षीप्तता आ वैधव्यक यातना मोदवतीक भक्ति कें लीला नटवर वृन्दा विपिन बिहारी श्री कृष्णक प्रति अत्यन्त उन्मुख कए देलक, जाहि मे कवियित्रीक प्रगाढ़ भक्ति, अनुराग, समर्पण आ हृदयक तादात्म्य परिलक्षित होइछ।

ईश्वरक मूलरूप निर्गुण, निराकार, सर्वकालिक अछि, ई अमात्य नहि, परंच एहि रूपक प्राप्ति सर्वसुलभो नहि, सेहो अमान्य नहि भए सकैछ। तें सहज-सुलभ भक्ति मार्ग, ईश्वर कें संसारक कल्याणक हेतु
अवतार ग्रहण करैत मानल अछि, जे भक्त कवियित्री मोदवती स्पष्टतः उद्‌घोष करैत छथि :-

"पतित-तरण तुआ नाम कन्हाई।
भक्त हेतु नर देह धरत महि, महिमा ध्रुवहि देखाई।"

एवं ओ आदि पुरुष ठुमकैत छथि, किलकैत छथि :-

"ठुमुक ठुमुक पगु उठल मृदुल-गति, बाजत नूपुर मन मोहित पुरन्दर।"

तथा भक्त एहि रूपक स्मरण-भजन करैछ, कारण भक्त कें विश्वास रहैछ-भक्ति आ प्रेमक बिना मुक्ति सम्भव नहि :-

"विना प्रेम औ भक्ति मुक्ति नहि, मोद भजहु घनश्याम"

तथापि मूलरूप मे ईश्वर कें निराकार, निर्गुण मानिते अछि :-

"देखु सखि ! विपिन मारग मे
निर्गुण ब्रह्म सगुण बनि आयल, जपत रजाहि शिव नाम।"

वैष्णव भक्ति मे भक्तिक छओ अंग तथा सात भूमिका मानल गेल अछि। एहि छओ अंग आ सातो भूमिकाक तीक्षण मानदण्ड पर सफल भेले पर भक्त कें पूर्ण मानल जाइछ। मोदवतीक गीत मे भक्तिक छओ अंग आ सातो भूमिका सर्वसुलभ अछि।

(१) आनुकूल्य-संकल्प-भक्त सब प्रकारें अपन आराध्य देवक प्रति अनुकूल बनल रहबाक संकल्प करैछ :-

"रे मन हरि गुन गाबहु ना
निरमाओल जे एहि काया कें विसरि देल तेहि ना।"

(२) प्रातिकूल्य वर्जन- भक्त ईश्वरक इच्छाक प्रतिकूल किछु नहि करबाक शपथ लैछ आ तें मोदवती एहि भवजाल सँ बचवा लेल वृन्दावन जएबाक तैयारी करैत छथि, कारण ओहि ठाम ईश्वरक प्रतिकूल किछु नहि अछि-

"चलू मन ! वृन्दावन सुख धाम।
जतै न मन दुख ताप सतावत मिलत मुरति अभिराम।"

(३) रक्षणविश्वास-भक्त कें अपना भक्ति पर विश्वास रहैछ जे आराध्य देव रक्षा अवश्य करताह, दुःख सँ उवारि मुक्ति अवश्य देताह, कारण ओ अन्यो भक्त कें भवजाल सँ उबारि देलनि अछि-

"खेबि लगावहु पार हो प्रभु।
केशव कृष्ण हरे मधुसूदन, सुनहु करुण पुकार।
अघ मोचन हरि नाम जगत भरि, आयल सूनि दरबार।
द्रुपद सुता सभा महि टेरल बढ़ल चीर अपार।
ग्राह-ग्रसित-गज टेरि सुनत ब्रभु, पैरहि आबि उबार।
कतै जाउ तुअ चरण कमल तजि, नाथ भसल मझधार।
क्षमहु मोद अनाथ नाथ हो, करहु कृपा करतार।"

(४) गोप्तृत्व वरण : भक्त कें अपन भक्ति पर विश्वास रहैछ आ तें ओ मात्र अपन आराध्य देव कें मुक्ति दाता तथा उद्धारक मानैछ-

"कहहि द्रौपदी विलखि नाथ अब हेरो।
अन्ध तनय अति पतित कुमति मति, नग्न करै तन मेरो।"
"हरि बिनु हमर हरत के पीर"।

(५) आत्मनिक्षेप-भक्त ईश्वरक चरण कमल पर आत्म समर्पण कए दैछ :-

गहल चरण हम तोहर प्रभु हो।
सूनि विरद आबि करुणामय, सुनहुँ जगत बिहारी।
मोर पंख सन माल विराजै, पीताम्बर तनधारी।
ग्वाल बाल संग धेनु चराबै, व-न्दा विपिन विहारी।
इन्द्रमान हरल हरि पल मे, गोवर्द्धन नख धारी।
धरहु हाथ आब मोद केर, मोहन मुरली धारी।।"

(६) कार्पण्य-सदिखन भगवानक समक्ष दीनताक भाव प्रकट करब-

"कबहु न नाम लेल करुणामय, मोह पयोधि भुलाय।
क्षमहु दोष अब मोर दयामय, मोद चरण लेपटाय।।"

एहिना भक्तिक सातो भूमिका मोदवतीक गीत मे सहज उपलब्ध अछि

१, दीनता-अपना कें सब प्रकारें तुच्छ मानब :-

"विनय करत कर जोरि क्षमहु प्रभु।
दोष करै कत मोद कुमति नर।"

२. मानमर्षता-सब प्रकारें अभिमान त्यागि प्रभुक शरण मे आएब :-

(क) "हमरि वेरि विरत किये प्रभु, कहहु करुणा मय की कारण?
मोद आरत चरण भावत, सुनहु दुःख मोर पतित पावन।।"

(ख) "जपब नित नाम गिरधारी
बिनु गिरिधर रैन चैन नहि, नयन नीर वह भारी।।"

३. भर्त्सना-पछिला काज पर नजरि फेरि मन कें शासित करब तथा अपकर्मसँ निवारब :-

"जानि अधम मोहि पुरुष उत्तम तिमि परिचय जनु विसराये।।
गिद्ध अजामिल वार-वधु कें पल मे प्रभु अपनाये।।"

४. भयदर्शन-माया मोह मे फँसला सँ उत्पन्न अधर्मक भय देखा कए मन कें शासित करब-

"माया झूठ छारु अपनो भजु, निसि दिन राधा श्याम।
महिमा मोद वखानहु केहि विधि, जाहि पद सुख विश्राम।।"

५. अनुशासन-भगवानक भक्त वत्सलता मे विश्वास कए, मन कें दृढ़ आओर निश्चित करब :-

(क) "हम त ध्यान धरल उर अन्तर
मोद जगत निधि तरिया।"

(ख) "जहनु सुता जेहि पद सँ निकसल, नाशक जे कलि मल केर।
ओही चरणक मोद शरण गरि धन्य भाग्य जीवन केर।"

६. मनोराज्य-भगवन द्वारा अपन इच्छा पूर्तिक आशा राखब :-

"छन-छन विपति मृत्यु आकुल। सहि ने सकै दुख भार।
करुणा करहु दयामय हरि हो, मोद उतरे भव-धार।"

७. विचारणा:- संसारक माया जाल पर तर्कपूर्वक विचारब तथा मनकें ओहि सँ विरक्त कए ईश्वरोन्मुख करब :-

"मोद चेतकर अबहु अधम मन,
की यम-यातना सहबे अछि?"

एहि प्रकार सँ कवियित्री मोदवती (हरिलता) एक सफल वैष्णव भक्त छथि, जनिक कृति मे वैष्णव परम्पराक अनुराप ईश्वरक निराकार रूप कें अप्राप्त मानि, सगुण रूपक आराधना भेटैछ। आ ओ सगुण रूप कखनहु पलना मे झूलैत छथि तथा अंगना मे ठुमुकि चलैत छथि तँ कखनहुँ वृन्दावन मे गाय चरबैत छथि आ बटमारिओ करैत छथि। भक्तिक दोसर पक्ष मे भक्तवत्सल श्रीकृष्ण अपन भक्तजन कें भवसागर सँ त्राण दैत
छथि। असामाजिक तत्व कें निर्मूल कए, पृथ्वीक भार हल्लुक करैत छथि। अन्ततः भक्तिक आधार पर जोखि कहल जा सकैछ जे मोदवती एक सफल वैष्णव भक्त छथि तथा हुनक कृति मे वैष्णव परम्पराक अनुरूप भक्तिक अभिव्यक्तिक प्रच्छन्न अछि।

मथिली प्रकाश-सितम्बर १९७२

कविवर श्यामानन्द झाक काव्य-वस्तु

जरि जाय जें जजाते करिते पटाय की हो :- "सन आक्रोशमय अभिव्यक्ति कविक अन्तरसँ एकाएक नहि फूटि पड़ल अछि। एहि आक्रोशक पाछाँ तात्कालिक परिवेशक कारुणिक स्थिति छैक, जकरा देखि, युगसचेत कवि विह्वल भए उठल अछि। अपन चारूकातक निम्नगामी प्रवृतिक अनवरत प्रसार-विस्तारकविक अन्तस्तल कें कंपित खए दैछ। एहि कंपना आ

भावावेगक प्रबल आघातक झंकार शब्दक माध्यम सँ अनुगुंजित भए उठैछ। कविक भावक अनुगुंज मे तात्कालिक परिस्थितिक संग देशक राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक पतनक प्रतिबिम्ब वर्तमान अछि।

अंग्रेजी शासन-व्यवस्थाक कर्कश आ क्रूर पाश सँ मुक्ति पएबा लेल राष्ट्रपिता महात्मा गांधीक नेतृत्व मे प्रयास शीर्ष पर छल। परंच, जनिका लग जन छलनि, धन छलनि, सकल सामर्थ्य छलनि, असंबद्ध छलाह। फराक छलाह। ओहि सामंती व्यवस्था आ प्रवृतिक पोषक लेल धन सन- "कोउ नृप होहिं हंमे का हानी।" कोनो हाहि नहि बेगरता नहि। स्वतंत्र भारतक स्वच्छन्द वायु मे साँस लेबाक कोनो चिन्ता नहि। अपन भौतिक सुखक समक्ष अधम सँ अधम काज स्वीकार छनि। ओहने काज करैत छलाह। जमीन बेचि, पत्नीक गहना बन्धक राखि, चाह-पानक खर्चा जुटएबा मे कोनो प्रकारक संकोचक अनुभव नहि होइत छलनि। अलाय-बलाय खर्च करबाक समय अपन नियमित स्त्रोतक कोनो ध्यान नहि छलनि। परंच राष्ट्रक नामे सूनि, मुँह बिचका लैत छलाह। देश सेवा हित छदामो बाहर होएव दुर्लभ, कोताहीक सीमा नहि-देश सेवा बेरि मे तँ सोम होथि छदाम लय, बन्धकी गहना रखै छथि पान-जरदा चाय पर।

देशक राजनीतिक परतंत्रता आ विदेशी शासकक गनल-गूथल लगुआ भगुआक हाथ मे देशक समस्त पूंजी, धन-सम्पादक केन्द्रीकरण, सामान्य लोकक आर्थिक स्थिति कें बिगाड़ि निर्धनता क सीमा कें टपि गेल। एक दिश लोक शान-शौकतक अपव्ययी जीवन जीबैत छल तँ दोसर दिस अन्न-वस्त्र लेल लोक बेलल्ल। धनक अमानवीय वितरण आ अमानवीय प्रवृतिक पराकाष्ठा सामाजिकता आ अपनैती कें गीरि गेल। समाज व्यक्तिगत सुख-सुविधा प्रधान भए गेल। एक दिश अपन लगीची व्यक्तियो कें देखबाक, हुनका विषय मे सोचबाक, वसुधा कें कुटुम्बवत् बूझबाक परिपाटी तँ, दोसर दिशि हिन्दीक आक्रमक आ विस्तारवादी नीति, एहि बीच मैथिल आ मैथिली अस्तित्व रक्षार्थ संघर्षरत भए उठलीह, बाहरी आ भीतरी शत्रु सँ लड़ए लगलीह। मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्व रक्षार्थ संघर्षक समय अंग्रेजिया मौन रहल, परंच अपनहि आंगन मे मैथिली कें विलखैत देखि, आर्त्तनाद सूनि संस्कृतक पंडित लोकनि चुप्प नहि रहि सकलाह, पंडित कमलनाथ चौधरीक शब्दक माध्यम सँ वैदेहीक आकुल शब्द फूटि पड़ल-

"वैदेही अकुलाय कहथि की हम अबला नारी
हिन्दी आनि बसावथि घर, से जे छथि गोप बिहारी।"[२]

अपन मातृभाषाक अवहेलना देखि, ओकर स्थान पर विदेशी भाषा कें किछु व्यक्ति द्वारा अरिआतैत देखि, तात्कालिक समाज मे कतेक आक्रोश छलैक, अंग्रेजी आ हिन्दी क प्रतिष्ठापकक प्रति कतेक घृणाक भाव छलैक, एहि कविता मे व्यक्त भेल अछि। ई प्रवृति आगू बढ़ल। फड़ल फूलाएल। परिणामतः पंड़ित केदार नाथ झा "मोद" मे हिन्दीक विरोध मे धारावाहिक रूपमे लिखल। पंडित यदुवर द्वारा १९२३ ई० कविता संकलन "मिथिला गीताञ्जलिक" प्रकाशन मातृभाषा मैथिली कें विदेशी भाषाक प्रभाव सँ मुक्त रखबा लेल नितान्त आवश्यक भए गेल। यदुवरक "देश जाति भाषा विषय धनिक हृदय शुचि प्रीति, सैह महापण्डित वैह विशारद नीति।" तथा छेदी झा द्विजवरक "कहु जन्म नेने कियेक छी अहाँ औ, स्वभाषा

उपेक्षा सहै छी सदा औ।" कविता एही स्थितिक द्योतक थिक। पं० गणेश्वर झा "गणेश" (मृ० १६ नवम्बर १९७९) एक डेग औरो आगू बढ़ि "मिथिला भाषा" शीर्षक कविता मे मिथिला जनपद कें पूजनीय आ मैथिली भाषाकें नैसर्गिक मानैत अग्रिमो जन्म मे मिथिले मे जनमि मैथिली बजबाक अभिलाषा करैत छथि-

"पूजनीया मिथिला जनपद काँ नैसर्गिक ई भाषा
जौं जनमी, पुनि मिथिला बाजी मिथिला भाषा।" [३]

जाहि प्रकार सँ पुरुष वर्ममे मिथिला मैथिल आ मैथिलीक उत्थान निमित्त साहित्य सर्जना होइत छल, नारीवर्ग मे यद्यपि किछु बिलम्ब सँ, स्व० अरुन्धती देवी 'विदुषी महिला' (संवत् १९३३) मे आदिकाल सँ प्रकाशन वर्ष धरिक मिथिला क विदूषी लोकनिक व्यक्तित्व आ कृतित्वक परिचय दैत नारी समाज मे जागरण अनबाक प्रयास कयलनि। एहने समाजोहयोगी आ उद्‌बोधनात्मक साहित्यिक पृष्ठभूमि मे कविवर श्यामानन्द झा (१९०६-१९४९) ओहि विद्वान आ धनिक पर, मिथिला आ मैथिली क दुर्दशा कें दूर करबा योग्य होइतहुँ, अंगेजी आ हिन्दीक प्रति नतमस्तक रहबाक कारणे असमर्थ देखि, एकहिसंग आक्रोश आ व्यंग्य बाण छोड़ैत अबैत छथि-

"मिथिला क दुर्दशा जँ नहि दूर कय सकी तँ
विद्वान ओ धनिक भए, बाते बनाय की हो।
अपना बुतयँ होअय जे, कय जाउ बेरि मे से
जरि जाय जँ जजाते करिते पटाय की हो।'

कविवर श्यामानन्द झाक काव्यक, साहित्यक समुचित अध्ययन विश्लेषणक लेल आवश्यक अछि, उपलब्ध काव्यकें विभिन्न विषयक अन्तर्गत बाँटि, अध्ययन करब। प्रथमतः एकरा दू कोटि में बाँटब उचित बूझैत छी-वस्तु पक्ष आ कला पक्ष। परंच, एहिठाम हमर इष्ट केवल वस्तु पक्षक अध्ययन करबाक अछि, तें वस्तुपक्ष कें पुनः राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक आ व्यवाहारिक कोटि मे बाँटि अध्ययन विश्लेषण करबाक प्रयास करैत छी।

राष्ट्रीयता-कविवर झाक उपलब्ध काव्यक लेखन वा प्रकाशन तृतीय दशकक उत्तरार्द्ध आ चतुर्थ दशकक पूर्वार्द्ध छनि। ई समय परतंत्रताक पाश सँ पीड़ित जनता कें उन्मुक्त, निर्मल, परंच उत्तरदायित्वपूर्ण वायु मे साँस लेबाक प्रयासक काल थिक। अतएव, ओहि समयक प्रत्येक सजग, संवेदनशील, सर्जनकर्त्ताक लेल राष्ट्रीय चेतनामूलक साहित्यक सर्जना करब आवश्यक आ वांछनीय छलैक। आन मनोभावना पेटक ज्वाला सँ झरकल व्यक्तिक मनोदशाक समक्ष नहि टिकि सकल-

"छथि परम लगीची भाय जे बन्धुसंगी
जनिक छल सदासँ आशा सेहो न जाने
कियेक मुँह घुराबै देखि शीघ्रता सँ
सभक अछि गरीबी दुःखटा के धनि छी।'

देशक परतंत्रता, ओहि सँ उत्पन्न धनक अमानवीय विभाजन, शासकक लगुआ-भगुआ

द्वारा भारतीय संस्कृति, सभ्यता आ भाषाक आनादर-"अछि जे अपन भूषण वसन दुसि देथि तकरा देखिकय, कान लेथि छिपाय झच विद्यापतिक शुभ नाम सँ", परंच, विदेशी संस्कृत सभ्यता आ भाषाक आदर-"लोट-पोट रहैत टा अछि टोप ओ नेक टाय पर"-देखि कवि आहत भए जाइछ। एक दिश जँ बाड़ीक पटुआ तीतक दृष्टिकोण सँ कवि दुखी छथि तँ दोसर दिशि "टोप ओ नेकटाय"। बाहरी तड़क-भड़कक अनुशरण कर्त्तापर व्यंग्य सेहो करैत छथि। जाहि व्यक्ति कें अपन भाषा, संस्कृति आ सभ्यताक प्रति कनेको आदरभाव नहि छनि, हुनकहि मुँहे कवि सुनैत छथि-"कहि देथि बहुतो व्यक्ति अवनति भेल जाइछ देशमे"। मुदा पश्चिमाभिमुख व्यक्तिकें अतेक अवकाश कहाँ छैक जे ओकर कारण आ उपाय पर कनेको ध्यान देथि-"किन्तु समुचित रूप सँ नहि ध्यान देखि उपाय पर।"

राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जकाँ कविवर श्यामानन्द झाक साहित्यिक पृष्ठभूमि सेहो विशेष उत्साह वर्धक नहि छलनि। यद्यपि कवीश्वर चन्दा झा (१८३०-१९०७) "तिरहुत सन नहि दोसरा देश" देखलनि, दशकन्धपुरी मे मैथिली कें आक्रोश करैत सुनलनि, परंच, ओ महावन मे सिंहक त्राणे डरायल छलीह। अंग्रेजी आ हिन्दीक बाढ़िसँ भयभीत छलीह। फल स्पष्ट अछि मैथिलीक पत्रिकामे हिन्दी कें स्थान, मिथिलाक्षरक स्थान पर देवनागरी लिपिक प्रचार-प्रसार पर बल दए मैथिली क स्वतंत्र अस्तित्व कें गीड़ि रजएबाक षड्यंत्र। देवनागरी लिपिक माध्यम सँ मैथिली कें अधिक व्यापक, बोधगम्य, सर्वजनीन बनेबाक स्वांग रचि, मैथिली कें उखारि फेंकबाक प्रपंच। अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार पर बल आ सरकारक खरखाह द्वारा ओकरे प्रश्रय भेटल छलैक। तैं-आवश्यक छलैक लोक मे साहस आ उत्साह अनबाक, अपन प्राचीन मर्यादा, स्वर्णिम गरिमाक ध्यान देआय, पुनः उत्कर्ष प्राप्त करबाक लेल उत्प्रेरित करब।

कविवर झाक कविता मे राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्रामक चेतना गुंजित अछि। कवि मानैत छथि-आर्थिक दुःस्थित परतंत्रताक मूल कारण थिक। जावत धरि समाज दुःखि रहत, अन्न वस्त्रक कष्ट रहतैक लोक, केवल अपने धोधरि भरबाक चिन्ता राखत, समाजक कल्याण नहि होएतैक। अतएव आवश्यक अछि जाबत धरि समाज दुःखी अछि, देश परतंत्र अछि, धनक एकदिशाह संचय नहि हो। दोसर, ई जे जँ सभ क्यो मनेमन गुड़ चाउर फँकैत रहत, राष्ट्र सेवाक निमित अपस्याँतो रहत, मुदा प्रयास मे एकसूत्रता नहि रहतैक, तारतम्य नहि औतैक, स्वतंत्रता संग्राम मे विजय पएबाक संभावना कम भए जाएत। तैं समाजक प्रत्येक वर्गक लोक मे एकसूत्रता अनबाक प्रयास कविताक माध्यम सँ कएलनि अछि :-

"दुःखी समाज अछि जा, बान्ही बखार ने ता
काने कटाय ली तँ कुण्डल गढ़ाय की हो।
थिक व्यर्थ देश सेवा यदि होय एकते ने
अद्धी न हाथ पर तँ बटुए सिआय की हो।
नहि कय स्वजाति सेवा, नेता बनी कथीलय।
यदि आँखि ने रहय तँ चश्मे चढ़ाय की हो।"

आगू बढ़ि कवि सूतल आ डरपोक कें ललकारैत छथि-[७]

"घस मोड़ि की पड़ल छी माता क दुख दिन मे
घरमे घसिक रही तँ पैघे कहाय की हो

"मैथिल सन्देश"क सम्पादकीय मे कविवर श्यामानन्द झा लिखैत छथि-"खेद थिक अतीतक महान व्यक्ति अपन भाषाक साहित्यक दिशि कनडेरियो ध्यान नहि देलनि। आधुनिक विद्वान छिः सैह बुझैत छथि, एहि भाषा मे रचना करब अभिमानक विरुद्ध छन्हि।" एहि सँ स्पष्ट अछि कविक समसामयिक विद्वानवर्ग मे मातृभाषा मैथिलीक प्रति घृणा आ उपेक्षापूर्ण दृष्टि छलनि। ई देखि युवा वर्ग क्षुब्ध छल, दुखी छल। आ प्रायः एहि दुःख आक्रोश आ क्षोभक सम्मिलित प्रयास "मैथिली सन्देश मे" आनन्द झाक (१९१४-८८) "दीन दशा मे आबि कनै अछि भाषा अहाँक बेचारी, उठू मैथिल भाइ वियारी"। उमेशचन्द्र झाक-"जननी समुचित नहि थिक देरी, देखू दीन दशा मिथिला केर होइछ अनेक अन्हेरी। चन्द्रकान्त मिश्र 'मिश्रोल'क-" भेल सभठां जागृतिक संचार एहि संसार मे किन्तु मैथिल छी अहीं आलस क भण्डार मे।" देव चन्द्र झा चंदिरक-"अहाँ हँस केर राजा घोड़सार मे पड़त छी, अहाँ सिंहसँ वलि भै, पिंजड़ा मे हा ! सड़ै छी।" वामदेव मिश्र विमल क-"उठू मैथिल युवक जागू बनाउ मौलि मिथिला के। हटाऊ द्वेष घर-घर सँ बढ़ाउ मान मिथिला कें", काञ्चीनाथ झा किरणक-"निज देश भाषाक सेवा निरत ईश, हँसइत किरणके शुभमय निलय हो।" काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क-"मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी, सूनि मैथिली सुभाषा बिनु आगिये जरै छी।" "मुकुन्द झाक" शुभद थिक, युवक जनक उल्लास, सुनू मैथिल मिथिला भाषा केर करू कविताक विकास" वैद्यनाथ वैदेह (यात्री)क-"जग मे सभ सौं पछुआयल छी, मैथिल गण, आबहु बढ़ू निज अवनति खाधक बाधिक सँ, मिलि उन्नति शिखरक उपर चढ़ू" जागरण गीतक संकलन प्रकाशित करेबाक प्रेरणा भेल। मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक सर्वांगीण उत्थान लेल अनेक जागरण-गीतक रचना ओ कएने छथि। 'कतहु-फेरि मिथिलाक कोड़ मे सीताक उदय हो', कामनाक संग देश मे सुख-शान्ति और समृद्धि निचय हो,' क कामना करैत देखैत छिअनि। मात्र कामने नहि, अपितु पथहीन, पथच्युत मैथिल कें दिशा निर्देश करबाक प्रार्थना सेहो अछि-

"हे मैथिली करुणा करू पथहीन मैथिल भाय पर
मिथिलाक गौरव छल जते से आब अछि, डूबि जाय पर।"

कवि अपना कें व्यक्तिगत लाभ सँ सभ प्रकारें निर्लिप्त मोह मुक्त रखने छथि-"मैथिली नहि अभिलाषा ई अछि वनी नृपति बसुधा मे'।

सामाजिक-कविवर श्यामानन्द झाक कविता मे तात्कालिक समाजिक चित्र भेटैछ। एक दिस समाज मे गरीबी छैक, तँ दोसर दिस आभिजात्य संस्कार। दूनूक लोक सकपंज भेल अछि। निर्धनता लोकक रुचि मे परिवर्त्तन नहि आनि सकैत अछि। नीक निकुत खएबाक,

पहिरबाक सौख गरीब कें नहि पूर्ण होइत छैक। तखन पूरा नहि भेला पर मानसिक कष्ट होइछ। ओहिपर सँ जँ पैघ परिवार मे एक अर्जन कर्त्ता, बाँकी सभ भोक्ता हो तँ स्थितिक भयंकरताक अनुमान सहजँ कएल जा सकैछ।

"पहिरथि नहि बौआ भोटिया काढ़ि, धोती
अपन प्रति कहु की देह ने देख लती
हुकुम न अङनहुँ कम्म देखि कनिको

दुःखक घर गरीबी, की कहु व्यर्थ बाबू- "भोजन वस्त्र आ रुचिक समस्याक अतिरिक्त समाज मे आवासक सेहो समस्या अछि-

"घर न अछि कनेको ठीक चारो चुबैछै पहिरक ककरौ ने छैन्हि नुआ एकोटा
अपन थिति कहू की लागि भारी अबैय, विपत्ति क अंगना मे हा मरैले जिबैछी !"

सांस्कृतिक-अपन शिक्षा विषयक विचारात्मक निबंध 'शिक्षा' मे कविवर झा लिखैत छथि- कुशिक्षा जन्य हमरा लोकनिक सभ्यता बहुत किछु भ्रष्ट भए गेल अछि। तथापि राजनीतिक मुक्ति जखन भेल अछि तखन यादृश आर्थिक मुक्ति अवश्य भए आर्य संस्कृतिक जीर्णोद्धार होएत ओ एकरे प्रभाव सँ पाश्चात्य तथाकथिन सभ्यताक रूप बदलत"-कविवर झाक निबंध आ रचना संग्रह कें देखला पर आर्य संस्कृतिक प्रति हुनक मान्यता स्पष्ट भए जाइछ। आ लगैछ जेना हिनक समस्त कृति अपन संस्कृति कें बचा रखबाक निमित्त हो। कविवर अपन रचनाक माध्यमसँ सांस्कृतिक विशिष्टता, वैविध्य आ उच्चताकें उपस्थित कएल अछि। एहिठामक संस्कृति मे धर्मक विशेष महत्व छैक। विपतीक समय, शत्रुक दमनक हेतु, विधर्मीक नाश हेतु ईश्वर विभिन्न रूपमे अवतार लए त्राण दैत छथि। शक्तिक उपासना होइछ। घर-घर मे गोसाउनिक पूजा होइछ। प्रत्येक सांस्कृतिक आ मांगलिक अवसर पर देवी-देवताक गुण कथन आ आराधन होइछ। "मैथिली गीत-चन्द्रिका' मे गोसाउनि आ दशावतारक अतिरिक्त दशो महाविद्याक अराधना अछि, जे परतंत्र देश में शत्रु-दमन हेतु शक्तिक कामना थिक। दक्षिण कालिका क आराधना करैत कवि कहैत छथि-

"जय करुणा करि दक्षिण देवी शारद शिशु शशि शेखर सेवी।
रिपु गिरहर भयानक भेषा घोर वदन पुनि फुजल केशा।
चाहि भुजा अति पीन उरोजे, सृकथल बहय असृक अति ओजे
नीरद नील वरन तनु भासे दन्तुरदन्त मधुमुख हासे
दिशावसन लस शिव शव वासे चहु दिश फेरब खपरकाते
तीन नयन शव टुइ लस काने अरिकर निकर ललित परिधाने।
अभयवरद दक्षिण कर शोभी लहलह जीह मधुर मधु लोभी।
मंजुल खड्ग मुण्ड करवामे सदावास समशान ललामे।
विषम चरित अति विकट निनादे सुख अभिमुख मुख परम प्रसादे
फुरित वदन वह सोनित धारा करि कृपादृग त्रिभुवन तारा

श्यामानन्द बालकवि भाने। तात हेमपति सेवि सुजाते।"

व्यावहारिक-व्यवहारिक गीत मे कविवर प्रत्येक मांगलिक व्यवहार पर गीत लिखने छथि। एहि मे सोहर, छठिहार, नन्ना-भैया, नामकरण, अन्नप्राशन, कुमारिक गौरीपूजा, होरिलाक चुमाओन, कुमारिक महेशवाणी, उपनयन, परिछनि, कन्यादान, सिन्दूरदान, पसाहिन, देहरि, छेकैक, गौरीपूजा, झिल्ली सम्हारैक,
मुट्ठी छोरबैक, लगहर भरैक, योग, जुआ खेलाइक, महुअक, घसकट्टी, चतुर्थी, दसाउति, फूलतोरी, अभिसार, उचिती, वटगबनी, मलार, समदाओन, चीनी परसैक, नगनीपी, ओरझोर, भरफोरी, मसनही, चुमाओन आदि मांगलिक अवसर पर गयबा लेल गीत अछि।

विवाह अथवा द्विरागमन मे बहिन अतिशय विभोर भए इनाम पएबा लेल देहरि छेकैछ, परंच देहरि छेकबाकाल गोसाउनिक घर उचित लगन मे प्रवेश करबामे व्यवधान आनब इष्ट नहि रहैछ-

"बिना इनाम देव नहि जाय, बहिन छेकल देहरि अगुआय।
गाओल पुरधनि मंगल बाढ़, सुमुख धनी संग रहला ठाढ़।।
उचित लगन नहि बीतय देल अभिमत पुरिगृह उपगत भेल।
श्यामानन्द बाल कविभान तात हेमपति चरन महान्।

कोबर मे कौतुकक लेल अनेक प्रकारक विधिक विधान अछि। जाहिसँ वातावरण परिहासमय रहय।
एहि प्रकारक विधि व्यवहार मे मुट्ठी छोड़ाएब सेहो अछि। कनियाँ अपन मुट्ठी मे जनउ बन्द करैछ आ वर कें एक्के हाथे खोलबाक लेल कहल जाइछ। कनियाँक सक्कत मुट्ठी कें खोलवा मे असमर्थ वरकें देखि, हँसी होइछ, वातावरण कौतुकमय भए जाइछ-

"कोबर घर अति कौतुक विचरल कामिनी गोरि
सुमुख सोहागिनि कर सँ करथि नौआ चोरि
धनि लेल हाथ सक्कत कए दुलह विफल कए बेरि
हँसय लाग युवतीगन, सुपुरुष मुख छवि हेरि
आज जनौआ बिनु वरु भोजन करथु जमाय,
दय करताल कहय सब, कोबराक रीति सुनाय
श्यामानन्द बालकवि गाओल हृदय विचारि
तात हेमपति पद गहि अरज पदारथ चारि।

कृष्ण काव्यक परंपरा मे रासक विशेष महत्व छैक। कविवर श्यामानन्द झाक कापी मे एकटा रास भेटल अछि। जे कविक भाव, कल्पना-कौशल, मंजुल शब्द विन्यास अलंकार योजना आ गीतात्मकतो कें प्रकट करैछ-

"यमुना कुंज मंजु मोहन नव रास रचो।

कोकिल कलकूजित करलवकर कामिनि मन उन्माद
मलय पवन वन विरह निहुरि-हरि हरिन नयन परसाद
अलिक मुकुट कटि तट कछनी छवि
निकुंज रुचिर-रुचिवास
मधुमय अधर मधुर मुलीकर माधव माधव मास
परवस सुनि मुरली ता छन ललित वधू तजि गेह
मधुसूदन मिलि मदन मनोरथ परल अनुपम नेह
"श्यामानन्द" मधुर माधव मिलि फुटल अधरित नेह।

आत्माभिव्यक्ति-यौवनावस्थाजन्य अन्तरक उद्दाम विह्वलता, विचारक स्थिरता कविक किछु कविता मे भेटैछ। की नीक, की अधलाह, कोन रुचिकर आ कोन अरुचिकर, कोन समयोपयोगी आ कोन काल निरपेक्ष, तकर स्पष्ट विभाजक अभाव मे कवि मन बौआइत भेटैछ। कवि ई स्थिर नहि कए पबैछ जे कोन मार्गक अनुसरण करी-कामलता मे ओझरा कए जीवन काटी, की विद्याध्ययन मे रमी। कवि "दुर्निवार मनोरथ" आ "द्वैध" मे फँसल अछि-

"पूजापाठ क उचित समय अछि मज्जन लय छथि देवसरी
'लक्ष्मीवती' दया रखै छथि शिवदर्शन हो कैक घरी।
कोठा अछि रहबाक हेतु, भलमानुस संगत कैल करी
तैओ मन होइछ अपने घर रहि कै वनिता पैर परी
धर्मोपार्जन करब उचित थिक प्राणक किछु नहि आशा
कामलता कयने छथि बहुतो श्रृंगार क प्रत्याशा
कविता लिखक मनोरथ आओर पढ़क अधिक अभिलाषा ।
एक करी तँ एक नष्ट हो, विषम विधिक परिभाषा।

काशीक लक्ष्मीवती छात्रावास मे रहि कविकें गंगास्नान आ शिवदर्शन क अतिरिक्त विद्वत्जनक सामीप्य प्राप्त छनि। तथापि अपन मन कें कतहु अन्यत्र टांगल देखि व्यर्थताबोधसँ ग्रस्त छथि-

"बड़ दुःख देल जनम दय जननी की भेल मन एहि बेरि
पिता वृद्ध छथि वनिता युवती छोड़ब थिक अनहेरि
पढ़ब रहत भरि जन्म अपन शक करब परिश्रम ढ़ेरि
एखन प्रवास उचित नहि हम तॅ गओले गायब केरि।

कवि ओहि कुसुम कें देखलनि अछि जे मुग्धा अछि। "मुग्ध कुसुम" कें देखब एक दिस जँ कविक सौन्दर्य-प्रियताक द्योतक थिक तँ दोसर दिस द्वैध मे फँसि जएबाक मनोवैज्ञानिक स्थितिक-चित्र अछि।

"मुग्ध कुसुम ! परिमल क व्यर्थ गर्व रखने छी।

याचक मधुप समाजक अनुचित अवहेला कयने छी।
जा धरि अछि नव वयस मनोहर ता नव पथ छयने छी-
चरण दलित कखनहुँ देखब धूलि मिलल अपने छी।

परंच, कविक विचार मे परिवर्त्तन अबैछ। सांसारिक रूप लावण्यक असारता देखि धारणा बदलैछ। गरीबीक कारणे लगीची बन्धु संगीकें शीघ्रता सँ मुँह फेरैत देखि, याचक मधुप समाजक अनुचित अवहेलना कए निहारि मुग्ध कुसुम कें अकालहि झड़ैत, सौरभ मधु सर्वस्व लूटैत देखि कविक आँखि खूजि जाइछ, कौतुकक स्थान पर (कौतुक सँ उखरि मुँह देल, पड़ल समाठ मांथ फूटि गेल)

वास्तविकताक ज्ञान होइते, आकाश सँ धरती पर अबितहि आक्रोश कए उठैछ-
हाय ! हाय ! करितहि रहि जायब फँसि जायब जम फाँस
चानी बूझि लोभ हम कयलहुँ, जचल अन्त मे कांस।

मिथिला मिहिर २३-११-१९७५

❁ ❁ ❁ ❁

बाबू लक्ष्मीपति सिंह आ मैथिली पत्रकारिता

बाबू लक्ष्मीपति सिंहक जन्म १५ फरवरी १९०७ ई० कें भेल तथा ६ मार्च १९७२ कें ७२ वर्षक अवस्थामे ओ इहलौकिक लीला समाप्त कएल। ई सत्य जे बाबू लक्ष्मीपति सिंहक पार्थिव शरीर नहि अछि, मुदा अपन इष्ट अपेक्षितक बीच बाबूसाहेब क नामे ख्यात लक्ष्मीपति सिंह विराजमान छथि। अपन विनोदी स्वभावें सभकें नेहपाशमे बान्हि रखनिहार, हुनक विहुँसैत आकृति लोकक समक्ष नचिते अछि। सभ समस्या क समुचित उत्तरदैत बाबू साहेब क फोटो लोकक मन प्राण पर तेना ने आच्छादित छैक, जकरा चाहिओ कए केओ पोति नहि सकैछ।

बाबू लक्ष्मीपति सिंहक आचार्य गुरु छलथिन ख्यातनामा पंडित मैथिलीक प्रथम कथा संग्रह "चन्द्रप्रभा" क लेखक पं० श्रीकृष्ण ठाकुर। गुरुसँ कौलिक मन्त्रक अतिरिक्त साहित्य सर्जनाक मन्त्र सेहो भेटलनि। एहि मन्त्रकें ओ जीवन भरि जपैत रहलाह। मातृभाषाक मन्दिरमे अपन सर्जनात्मक प्रतिभाक फूलपात जीवनक अन्तिम काल धरि चढ़बैत रहलाह।

बाबू लक्ष्मीपति सिंहक प्रतिभाक स्रोत असीमित छल। ओ ने तँ एक विधामे बान्हल छलाह आ ने एक भाषे मे। ओ साहित्यक सभ विधामे समान प्रतिभा, व्युतपन्न तथा गम्भीरता सँ लिखैत छलाह। भाषा कोनो रहौक एक समान सम्प्रेषणीयता हिनक रचनाक वैशिष्टय थिक। ई वैशिष्टय साहित्य सर्जनाक अत्युच्च मर्यादाक अनुकूल अछि, संगहि मातृभाषाक उन्नयन आ मिथिला, मैथिली एवं मैथिलक हितचिन्ता सँ लबालब भरल अछि।

बाबू साहेब मिथिलाक सांस्कृतिक सूत्रकें पकड़ि मिथिलाक भौगोलिक सीमासँ कोसो दूर बसल प्रवासी मैथिल कें मिथिलाक नजदीक अनबाक चेष्टा जीवन भरि करैत रहलाह। सुदूर प्रान्तक यात्रा कएल तथा अपन सहज आकर्षक स्वभावें प्रवासी मैथिलकें अनुकूल बनाओल। मिथिलाक निकट अनबालेल कतेको ठामसँ पत्र-प्रकाशित कराओल। प्रवासी लोकनिकें मैथिलीक शिक्षा देबा लेल "मौथिली हिन्दी शिक्षक" पोथी लिखल।

बाबूसाहेब अपन जीवन कालमे अनेक पत्र-पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कएल कथा कतेको पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन सम्पादन सँ सम्बद्ध रहलाह। एहि पत्रिका मे अछि मैथिलीबन्धु आ मैथिल युवक (अजमेर), नीवन प्रभा (आगरा), मिथिला ज्योति, चौपाड़ि, मिथिला भारती (पटना) आदि। कोशीक भीषण बाढ़िक विभीषिकाक चपेट पड़ला पर हिनक जीवनक क्रम मे तेहन भए गेल जे जीवन-निर्वाह लेल "मिथिला मिहिर"क प्रकाशन संस्था-दि न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिकेशन, पटना सँ सम्बद्ध भए गेलाह। एहिठाम ओ २७ नवम्बर १९४७ सँ फरवरी १९७७ धरि विभिन्न पदपर प्रतिष्ठापूर्वक रहलाह। पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक दीर्घ साहचर्य सँ प्राप्त अनुभवक कारणें बाबूसाहेब नीक जेकाँ बुझैत छलाह जे सफल पत्रकारिताक विकासक मार्ग मे कोन-कोन बाधा अबैत रहलैक अछि। ओहि कारण सभक विवेचन आ निदानक विश्लेषण ओ खूब नीक जकाँ कएने छथि। बाबूसाहेब बरमहल कहैत छलथिन जे "हम कतेको पत्र-पत्रिकाक अंकुरी खयने छी" तँ सहजहि मानल जा सकैछ जे मैथिली पत्रकारिताक सन्दर्भमे हिनक विचार कल्पना प्रसूत नहि, अनुभव सिद्ध अछि।

मैथिली पत्रकारिता गत अस्सी वर्षसँ यात्रा पर अछि। अस्सी वर्षक यात्रा कोनो भाषाक पत्रकारिता लेल कम नहि होइछ। एतेक पैघ काल खण्ड मे अवश्य कोनो नीक ठेकान पर पहुँचल जा सकैत छल। अपन पएर पर ठाढ़ कएल जा सकैत छल। किन्तु, से सब नहि भेल। मैथिली पत्रकारिता अपन पएर पर नहि, उदार व्यक्ति वा संस्थाक वैसाखी पर ठाढ़ होइत रहल। ओकरे मदति वा सहानुभूति पाबि रस्ता थाहि रहल अछि। मैथिली पत्रकारिताक एहि दुःस्थितिकें देखि बाबूसाहेब कहैत छथि जे एकरा पर जन्म कालहिसँ राजनीतिक डाइनि-योगिनीक ओ ओझा-गुनी लोकनिक शनिक लोकनिक शनिक दृष्टि छनि। इएह शनिक दृष्टि मैथिली पत्रकारिता कें अपन टांग पर ठाढ़ नहि होमय दैत छैक।" राजनीतिक डाइनि-योगिनी अथवा ओझा-गुनीक शनिक दृष्टिसँ स्पष्ट तात्पर्य छनि जे मैथिली पत्रकारिताकें कहिओ राज्याश्रय नहि भेटलैक। जे केओ राजा भेलाह, जे केओ नेता भेलाह अथवा जे कोनो राजनीतिक दल सत्तामे आएल, मैथिल पत्रकारिताकें आत्मनिर्भर करबाक स्थानपर झटहे मारैत रहलाह। मैथिली पत्रकारिताकें एहि ग्रहदशा सँ मुक्त कोनो सिद्धाचार्य कए सकैत छथि, से बाबूसाहेबक मानब छनि। जाबत काल धरि एहन कोनो सिद्धाचार्य नहि अबैत छथि जे स्वतः अथवा मिथिलांचलक लोकक चपेट मे पड़ि मैथिलीकें अपन राजनीतिक जीवनक अंग नहि बना लैत छथि, ताबत काल धरि मैथिली पत्रकारिता आत्मनिर्भर नहि भए सकैछ। ओकर स्थिति आ अस्तित्व संदिग्धे रहतैक।

पत्रकारिताक सफलता लेल दू टा मजबूत खुट्राक अवधारणा छनि-राजकीय सहयोग

तथा जनसहयोग। राजकीय सहयोगक तँ कथे नहि हो, जनसहयोग सेहो उत्साहवर्द्धक नहि रहल अछि। पत्रकारिताक विकास लेल मूलधन लगौनिहार कतबो त्याग करथु सम्पादक नीकसँ नीक रुचिकर चहटगर सामग्री परसबलेल राति-दिन एक करैत रहथि मुदा पत्र-पत्रकाक स्थायित्व लेल राजकीय सुदिष्टिक अतिरिक्त जाहि तत्वक सर्वाधिक्य आवश्यकता छैक ओ थिक पाठकवर्ग। पाठकवर्गक सहानुभूतिक विना कोनो पत्र-पत्रिकाक दीर्घायु होएब असंभव। ओ तँ ठीके मानैत छथि जे राजकीय सहयोग तथा जन सहयोगक अभाव मे स्थायित्वक कल्पने भावोन्माद सिद्ध भए जाइछ। व्यक्ति विशेष अथवा संस्थाविशेषक उदार संरक्षण किएक ने ओकरा भेटैत रहौक।

पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक पृष्ठभूमि मे दू टा प्रेरणा तत्व कार्यशील रहैछ। कहिल थिक साहित्यसेवा तथा दोसर थिक व्यवसायिक दृष्टि। मैथिली पत्रकारिताक उन्मेष साहित्य सेवाक भावना सँ भेल अछि। अखनधरि जे पत्रपत्रिकाक प्रकाशन भेल अछि से कोनो व्यक्ति अथवा संस्थाक उदारता आ मातृ भाषाक सेवाक भावना सँ। किछु व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूहक गोसवारा प्रयासँ प्रकाशित पत्र-पत्रिका द्वारा अपनाकें परिचित करेबाक मनोकामना सेहो व्यक्त होइत रहल अछि, कौखन पत्र-पत्रिका प्रकाशन प्रतिस्पर्धीक समक्ष ठाढ़ होएबा लेल सेहो भेल अछि। जें कि उदारचेता द्वारा पत्र पत्रिकाक प्रकाशन मातृभाषाक सेवाजन्य अथवा अपन साहित्यिक परिचय बनेबा लेल वा प्रतिस्पर्धीक समक्ष ठाढ़ होएबालेल प्रतिशोधात्मक मनःस्थिति मे होइत रहल अछि। तें, कोनो पत्र-पत्रिकाक स्थायी रूपें प्रकाशित नहि भए अल्पायु भेल अछि। किएक तँ, प्रकाशन व्यय आ नियमित प्रकाशनलेल आवश्यक व्यवस्थाक समक्ष ओ बम बाजि जाइत रहलाह अछि। जे कोनो संस्था मैथिलीक पत्रपत्रिका प्रकाशित कएलक अछि, तकरो मूलमे मातृभाषाक सेवा प्रथम लक्ष्य रहलैक अछि, पत्रकारिताकें व्यवसायिक रूप देब, नहिए जकाँ। पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आ अकाले काल कवलित भए जएबाक जे कोनो कारण रहल हो, किन्तु ई तँ निर्विवाद जे अल्पजीवी मैथिलीक पत्रिको मैथिली साहित्यकें भरैत रहबा लेल अपना भरि खूब प्रयास कएलक अछि। मैथिली साहित्यकारक रचनात्मक क्रमहीन होएबासँ बचौलक अछि।

किन्तु, बाबूसाहेबक विचार छनि जे आब अभिव-द्धिक संगे संग भाषाक प्रचार-प्रसार लेल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया अंगीकार करब सेहो परमावश्यक। हुनक स्पष्ट संकेत छनि मैथिलीक समाचार पत्रक प्रकाशन पर। ओ कहैत छथि जे 'आब ई समय आबि गेल अछि जखन हमरा लोकनिकें उच्चस्तरीय सत्साहित्यक विकासक संगहि संग मैथिली समाचार पत्रक माध्यमसँ भाषाक प्रचार ओ प्रसार मनोवैज्ञानिक दृष्टि अपनबैत कएल जाए। आब ने नव सूत्री योजनाक मौलिक सामयिकता रहि गेल अछि आओर ने रहिगेल अछि साहित्यिक एकाधिकारिकताक लोकिक मान्यता। बाबूसाहेबक एहि मतक अभिव्यक्तिक पाछू हुनक मातृभाषाक प्रेम अछि। ओ एक घटनाक उल्लेख कएने छथि जखन पी. इ. एनक तत्वावधानमे १९४७ ई. मे ओयोजित विश्वलेखक सम्मेलनक अवसरपर स्वर्गीया सरोजिनी नायडू टिपने रहथि-हमरा विद्यापतिक भाषा पर पूर्ण श्रद्धा अछि। पी. इ.एन. मैथिली कें मान्यता दैए चुकल अछि, किन्तु यदि अहाँ लोकनि अपन पौने तीन कोटिक मातृभाषा मैथिलीक वास्तवीक सेवा करबाक हेतु कटिबद्ध होइ तँ, कमसँ कम दुइयो-तीनियो गोट मैथिली दैनिक पत्रक प्रकाशन प्रारम्भ करैत जाए।' बाबू साहेब

कें अवश्य दुःख भेल होएतनि आ जीवन भरि कचोट मोन मे रहिए गेल होएतनि जे मैथिलीक एक स्थायी दैनिक पत्रक मुँह देखी।

साहित्यिक पत्रिकाक पृष्ठभूमि मे भावना आ सर्जनात्मक उद्वेगक त्वरित अभिव्यक्तिक चिन्ता विशेष रहैछ। तें साहित्यिक पत्रिकाक प्रकाशन सँ पूर्व ओतेक ओरिआओन करब आवश्यक नहि रहैछ, जतेक कि एक समाचार-विचारक पत्रकें प्रकाशित करबासँ पहिने, सरंजाम आवश्यक अछि।

ई रेडियो-टेलिप्रिन्टरक युग थिक। एक कोनक घटना दोसर कोन क्षणहिमे पहुँचि जाइछ। समाचारक त्वरित संचरणक कारणे पत्र-पत्रिकाक पाठकक दृष्टि बदलि गेल अछि। ओ टटका समाचारक संग स्फूर्त विचार सेहो पढ़य चाहैछ। विचार करए चाहैछ। लोकक एहि मानसिक भूखक तुष्टि केवल भावनाक आधार पर संभव नहि छैक। तें पत्रिका पढ़ैत काल आब ओ मातृभाषाक सेवाक संग मानसिक भूखक तुष्टि सेहो चाहैछ। संगहि, एहि भौतिक युगमे कठिन परिश्रममे अर्जित राशिक प्रत्येक अंशक अनुपात मे तुष्टिक इच्छा लोक रखैत अछि। आ दोसर भाषामे प्रकाशित होइत पत्र-पत्रिकासँ मनेमन तुलना करैत अछि। झुझुआन लगला पर अनेरे पाठकक मन झूस भए जाइत छैक। एहि कारणें पत्रकारितामे स्थायित्व आएब सुलभ नहि अछि। बाबूसाहेब लिखैत छथि जे केवल मातृभाषाक प्रति भावनात्मक स्नेह, सीमित प्रचारक सिहन्ता तथा वैयक्तिक संकीर्ण प्रतिस्पर्द्धाक बलें मथिली पत्रकारिताक भविष्य ने समुज्ज्वले बनाओल जाए सकैछ आओर ने आत्मानिर्भरे।'

पत्र-पत्रिकाक पाठकक बढ़ब अथवा बगदब भाषा आ कथ्य प्रतिपादन शैली पर सेहो निर्भर करैछ। ई समस्या मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक क भाषा-शैलीक संग विशेष रूपें लागू होइछ। किछु पाठक वर्ग एक प्रकारक मानक भाषाक लेखन शैली पसीन करैछ, लिखैछ तथा चाहैछ जे ओही लेखन शैली मे रचना प्रकाशित हो, तँ दोसर कोटिक पाठक वा लेखक दोसर लेखन शैलीकें पसीन करैत छथि। एहिसँ पत्र-पत्रिकाक प्रति पाठक आ लेखकक मनमे लगाव अथवा दुराव उत्पन्न भए जाइछ। एहन स्थिति नहि आबय, तें बाबू साहेब पत्र-पत्रिकाक स्वरूपकें देखि, भाषा शैलीक प्रयोग आवश्यक मानैत छथि। तात्पर्य जे साहित्य प्रधान एवं शोध पत्रिका सभक लेल उच्चस्तरीय भाषा शैलीक प्रयोग तथा समाचार प्रधान पत्र, चाहे ओ दैनिक हो, अथवा अर्द्धसाप्ताहिक वा साप्ताहिक, लेल जकर लक्ष्य सर्वसाधारणक सेवा करब हो, सर्ववोधगम्य भाषाशैलीक प्रयोग आवश्यक अछि। एहि कोटिक पत्र-पत्रिका लेल मैथिलीक आंचलिक भेदोपभेदहुक प्रयोग करब पत्रकारिता लेल उचित बूझैत छथि। एहि प्रकारक प्रयोगसँ एक दिस जँ बहुतो शब्द अलोपित होएबासँ बचैत अछि तँ दोसर दिस ओहि अंचल विशेषक पाठक आकर्षित होइछ, जे अन्ततः पत्र-पत्रिकाक पाठक वर्गेकें आकर्षित कए, संख्या बढ़बैत अछि।

पत्र-पत्रिका सर्वप्रिया हो से सम्भव नहि अछि, तखन तें ई अवश्य सम्भव अछि जे ओकरा अधिकाधिक सुरुचिपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक बना देल जाए। आ से निर्भर करैछ सम्पादक पर। तें सम्पादक कें चाहियनि जे ओ पाठकवर्गक व्यापक मनोरुचिक समादर करथि। अपन सिद्धान्त ओ जनभावनाक यथोचित सौमनस्य, स्वतंत्र, निर्भीक, निष्पक्ष एवं सशक्त तथा तर्कयुक्त सम्पादकीय लिखथि तथा विनीत भावें कर्त्तव्य भावनासँ प्रेरित भए अपन उत्तरदायित्व निवाहबाक

उद्देश्यमे जनमानसक प्रहरी बनि, पाठकवर्गक समक्ष सत्यक प्रतिपादन करब परमावश्यक मानथि। से सभ छोड़ि जँ ओ एकपक्षीय दृष्टि अपना लेथि अथवा कोनो एक दल, व्यक्ति अथवा वर्गकें खेहारैत रहथि तँ पाठकक दृष्टिमे ओहि पत्र-पत्रिकाक खसब आरम्भ भए जाइछ।'

गत अस्सीवर्षक यात्रामे कतेको मैथिली पत्रिका आएल तथा लोककें आकर्षित कए प्रस्फुटित होएबासँ पहिनहि झड़िअ शोधक विषयक बनि गेल। मैथिली पत्र-पत्रिकाक अल्पायु होएबाक कारण कें तकैत बाबूसाहेब लिखैत छथि जे 'पारस्परिक कटु आलोचना, ध्वसंत्मक उपेक्षा, संकीर्ण नीति, दलीय प्रशस्ति, दलगत संघर्ष, साम्प्रदायिक वैषम्य, संकुचित दुराग्रह, व्यवसायिक दृष्टिकोणक अभाव, प्रचार प्रसारक अस्त-व्यस्त प्रक्रिया, समुदाय विशेषक प्रति विशेष आसक्ति, आइ धरि मैथिली पत्रकारिताक हेतु अनिवार्य व्यवधान रहल अछि। हमहुँ एहि अनुभवक स्वयं भुक्तभोगि रहि चुकल छी।' तथापि हुनक विश्वास छनि जें यदि मिथिला एवं मैथिलीक त्रिगुणात्मक शक्ति एकठाम मिलि जाए आ वैयक्तिक अथवा सहकारिताक स्तर पर पर्याप्त मूल धन, प्रस्तावित समाचार पत्र विशेषक समयानुकूल निश्चित सिद्धान्तविशेष, विज्ञापन प्राप्त करैत रहबाक व्यापक ओ अविरल अभियान, समाचार पत्रक प्रचार-प्रसारक हेतु सुनियोजित ओ व्यापक व्यवस्था, संवाददाता लोकनिक समुचित
प्रतिनिधित्व, समाचार सभक संकलन सम्पादन ओ प्रतिपादनक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया, कलात्मक रंगरूप, निर्भीक निष्पक्ष, स्वस्थ, संयत ओ मार्गदर्शक सम्पादक एवं संचालक लोकनिक विवेकपूर्ण यथानुकूल उदारनीति रहैक तँ मैथिलीक कोनहुँ समाचार पत्रकें स्थायी, यथासंभव लोकप्रिय एवं लोकोपकारी बनाओल जा सकैछ। एहि सभ व्यवस्थाक अछैतो जाबतकाल धरि मैथिलीक समाचार पत्र समस्त मैथिली भाषाक्षेत्रक अनन्य संरक्षण प्राप्त नहि कए लैत अछि, ताबत काल धरि सर्व साधारण मैथिलहुकें आने-आने भाषामे प्रकाशित समाचार पत्र-पत्रिका सभ पर अनिवार्यतः निर्भर रहय पड़तैक।

बसात प्रवेशांक १९८४

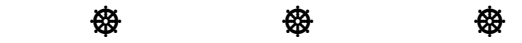

कवि चूड़ामणि मधुपक गीति साहित्य

'विहग धर ज्योति नीड़ केर बाट [1]। ई पांती थिक मैथिलीक महान गीतकार उपेन्द्र ठाकुर "मोहन"क एक गीतक। गीतक माध्यमे विहगकें प्रतीक बनाय मनुष्यकें कहय चाहैत छथि ज्योति नीड़ केर बाटक अनुसरण करबा लेल। एहिठाम सहजहि प्रश्न उठैछ जे गीतक माध्यम आत्माकें ज्योति नीड़ दिस लए जएबाक हेतु कवि कियेक कहैत छथि? गीत भावाश्रित होइछ। हृदयपर ओकर प्रभाव तत्काल पड़ैछ। रागात्मिका वृतिक तार झनझना उठैछ आ कवि ओ श्रोताक मन-प्राण आनन्दित भए, ज्योति नीड़ केर बाटक अनुसरण करए लगैछ। गीतक प्रसंग मोहनजी लिखैत छथि 'गीतनाद साधनाक मधुरमार्ग थिक, आनन्दक संग ज्योति जगएबालेल ओकरा अपनौने रहल अछि! तँ, ई लोक जीवनक अत्याज्य अंग भए गेल अछि। आङन, दलान, खेत 'खरिहान, गाछी, पोखरि सर्वत्र एकरा प्रति प्रीति देखल जाइत अछि। कोनो माँगलिक काज होअए, मूड़न, उपनयन, विवाह, द्विरागमन होअए, गीतनाद भेलहि। कुलदेवता आ कि

इष्ट देवताक गीतक संग अनेक-अनेक देव-देवीक गीत होइत छनि, गामक मन्दिरमे आ ग्राम देवताक निकट, सिमरिया घाट आदि तीर्थमे गीत, कोबर मे गीत कनियाँ-वरक संग बीच आङनमे गीत, बाटमे गीत, लोक जीवनकें गछारि झँपने अछि, ऊँच-नीच वा दुखिया-सुखिया सभक लोक जीवन कें गाछारि राखएवला गीतनाद साधनाक एक मधुर मार्ग थिक। ई साधना सभकेओ करैत अछि। केओ राग तालक संग आलाप दैत तँ केओ दावले स्वरमे, गुनगुनाइत, नादब्रह्म कें जगबैत अछि। गीत साधनाक मधुर मार्ग थिक तँ जीवनमे बिना कोनो तीक्ता अनने 'कान्तासम्मति उपदेश' जकाँ लक्ष्य प्राप्ति क हेतु गीत एकटा सुलभ रास्ता थिक। तात्पर्य जे गीतक माध्यम सँ मन प्रफुल्लित होइते छैक अन्हार बाटकें पार करबा लेल दृष्टिओ भेटि जाइछ- 'विहग धर ज्योति नीड़ केर बाट'।

गीत साधनाक मधुर मार्ग थिक। गीत आनन्द दैत अछि। गीत ज्योति नीड़क बाट देखबैत अछि। तात्पर्य जे गीत आनन्दकसंग अन्हार कें चीड़ैत लक्ष्य संधान करैत अछि। ई संधान दू प्रकारें भए सकैछ-आत्मगत आ वाह्यगत। आत्मगत गीत ओ भेल जाहिमे आत्मिक सुख, आत्मोत्कर्ष, आत्माकें परमात्ममे एकाकार करबा हेतु कवि अहुँछिया कटैत भेटथि। जाहिमे लोकक हृदयक राग-विराग, लोकक आशा-आकांक्षा, आत्म-समर्पण आदि भावनाक गीतात्मक अभिव्यक्ति झलकैत रहय। तात्पर्य जे एहि कोटिक गीतमे स्थूलतासँ सूक्ष्मता दिस प्रयाण रहैछ। दोसर प्रकारक गीतमे सांसारिक सुविधा, सामाजिक उत्कर्ष अथवा राष्ट्रीय महत्वक विषय दिस गीतक माध्यमसँ ध्यान आकर्षित कराओल जाइछ। कौखन उद्वोधित कएल जाइछ तँ कौखन व्यंग्यवाणसँ आहत कएल जाइछ आ कौखन सामाजिक विकृति कें दूर करबालेल प्रेरित कएल जाइछ। एही दूनू तत्त्वक आधार पर कविचूड़ामणि मधुपक (१९०६-१९८७) गीति साहित्यक विश्लेषणक प्रयास कएल अछि।

वाह्यगत गीत वाह्य जगत भेल कविक परिवेश, जाहि मे ओ जीवैत अछि, जन्मैत अछि, बढ़ैत अछि
आ देह विसर्जन करैत अछि। कवि कें अपन परिवेशक अधलाह चीज वा स्थिति नीक नहि लगैछ। ओ समाजकें कलुष विहीन करए चाहैछ। सूतलकें जगबय चाहैछ आ जागल कें सक्रिय बनबए चाहैछ। ओकर एहि काजक माध्यम होइछ भाषा। भाषे ओकर अस्त्र-शस्त्र रहैछ, भाषे ओकर मोहिनी मंत्र होइछ। एकरहि माध्यमसँ किछु राखय चाहैछ, किछु कहय चाहैछ। कविक अपन व्यक्तित्वो एक निश्चित भाषेक माध्यमसँ स्पष्ट भए, आकर्षित करैछ। मधुपजी एहि तथ्यकें प्रारम्भे मे बूझि गेल छलाह। ओ बूझिगेल छलाह जे चाबतधरि अपन संस्कृति नहि रहत, भाषा नहि रहत, साहित्य नहि रहत, ताबत धरि अस्तित्व पर संकट बनले रहत। आ तें, जँ कही जे मधुपजीक वाह्य गीतक कारण थिक भाषा रक्षा, समाज रक्षा, राष्ट्ररक्षा, संस्कृति रक्षा तँ अत्युक्ति नहि होएत। अपन एक आरम्भिक गीतमे लिखने छथि-

"मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी,
सूनि मैथिली सुभाषा बिनु आगिये जरै छी।
सूगो जहाँक दर्शन सुनबैत छल, तहि ठां।
हा ! 'आइ गो' टा पढ़ि उच्चता करै छी।

हम कालिदास विद्यापति नाम छाड़ि मुंहमे
बाड़ीक तीत पटुता सभ बंकि मे धरै छी
भाषा तथा विभूषा अछि ठीक अन्यदेशी
देशीक गेल ठेसी ! की पांकमे पड़ैछी ?
औ यत्र तत्र देखू अछि पत्र सैकड़ो टा
अचि पत्र मैथिलीमे एको ने तें डरै छी [2]

मधुपजीक ई गीत ओहि समयक थिक जखन ओ काशीमे विद्याध्ययन करैत छलाह। एहिमे एकहिठाम कविक अनेक चिन्ता प्रकट भेल अछि। मिथिलाक अधोगति, मैथिलीक अवहेलना, स्वदेशी वस्तुक अवहेलना, विदेशीक प्रति आसक्ति, मैथिलीक अस्तित्वक चिन्ता, मिथिलाक पारंपरिक वैशिष्ट्यक रक्षा आदि व्यक्त भए गेल अछि।

मधुपजीक युवा कवि पूर्व अनुभव कए लेने छल-भारतीय संस्कृति पर खतरा संभावित अछि, कालिदास ओ विद्यापति कें लोक बिसरय लागल अछि, जे चिन्ताक विषय थिक। कवि कोकिलक गीत सँ जे सांस्कुतिक उत्कर्ष ध्वनित होइछ, से क्षीण होअए लागल तँ ओ व्यथित भए उठलाह। जाहिठाम तिरहुत, बटगवनी, नचारी, महेशवाणी, सोहर, समदाउन होइत छल, ततय सिनेमाक गीत पहुँचि गेल। ओकर तर्ज आ वाद्य-संगीत दिस युवावर्ग आकर्षित भए गेल। बूढ़ो पुरान कें गुदगुदी लागय लगलन। वनितागणक कंठमेओ आश्रय पाबि गेल। सत्यनारायणक पूजाक अवसर पर पारंपरिक भजन-कीर्तनक स्थानपर सिनेमाक भजन-कीर्तन होअए लागल। सिनेमाक गीतक उद्दाम प्रवाह कें अथवा मिथिलाक कीर्त्तन मंडली नचुआवर्ग कें सिनेमाक लहक-चहक गीत गयबासँ रोकब ओहिना असंभव भए भेल, जेना बान्ह तोड़ि आएल बाढ़िक पानि कें रोकबा। एहि स्थिति पर कविक व्यथित स्वर फूटि पड़ल-

'फिल्मी भास लहरिमे भासल हरि ! हरि ! मैथिल तरुण समाज, गीतोपम पावन विद्यापति, गीतो तजि रहला अछि आज ।"[3]

कविक दृष्टि सीमित नहि रहैछ। पाछू देखि प्रेरणा लैछ। भविष्यक लेल दृष्टि दैछ। दिशा इंगित करैछ। कविक एहि कल्याणकारी दृष्टिक मधुपजीमे अभाव नहि छल। मैथिली भाषा साहित्यकें लोक कण्ठ सँ
विलेबाक प्रवाह कें रोकबा लेल ओ किछु समझौना कए। ओ स्वर आ शब्दमे सामंजस्य स्थापित कए देल। आवरण राखल सिनेमाक, परंच आत्मा रहल मैथिलीक। सिनेमाक आकर्षक गीतक तर्ज पर अपन गीत लिखि-लिखि बाँटय लगलाह। नटुआ-गायक स्वाभिमान अनुभव कएलक, जे महाकवि हमर अनुरोध पर चटपट गीत लिखि देल अछि। गयबामे सुविधो भेलैक, एकटा रियाजल भास पर दोसर गीत तैयार भए गेलैक। श्रोताक फरमाइश पूरा कए देलापर गायककें आत्म-सन्तोष होअए लगलैक आ सिनेमाक गीतक आवरणमे मैथिली गीत पसरय लागल 'सुगर कोटेड' पिल जकाँ। कविक दृष्टि मैथिलीक अस्तित्व रक्षा करय लागल। एहि प्रसंग मधुपजी स्पष्टतः लिखने छथि-

'गीत मञ्जु मैथिली मध्य हो, मुदा रहैक सिनेमा तर्ज
फरमाइस नटुआ गायककें, ओ सब अर्ज करथि दए तर्ज।'

मैथिलीक अस्तित्वपर खतरा अथवा स्वाभाविक प्रचार-प्रसार पर प्रतिबन्ध एक दोसरो बिन्दु पर छल, मधुपजी तकरो समाधान कएल-

"कीर्त्तन, नाटक तथा रामलीलाक मंचपर औखन आबि
गायक हिन्दी गीत गबैत छथि, जनप्रिय सिनेमाक ध्वनि पाबि।'

कमरियाक थाकल आ श्रान्त क्लान्त मनः स्थिति कें, लक्ष्य धरि पहुँचेबालेल परिचित भास मे गीत देल आ ओ सभ गबैत-गबैत लक्ष्य दिस बढ़ैत रहल। -

"काम लिंग कें करुण कथा कहबाक हेतु पथ क्लेशो घोंटि,
जाथि देवधर तनिको रुचि पद रुचिर लिखू क' फिल्मक ध्यान।'

सिनेमाक गीत आ तर्जक आक्रमण कें निरस्त करबा लेल कवि चूड़ामणि सिनेमाक तर्ज मे मांगलिक अवसर विशेषक भाव निबद्ध कए देल-

"मुण्डन, मौजी बन्धन, परिणय, द्विरागमन वा हो सब काल,
नव धुनि विना-नवीना गाइनि, गीत गाबि सकती न रसाल।'

ई सभ कविक स्पष्टीकरण भेल जे ओ सिनेमाक तर्ज पर गीत कियेक लिखल। कविक स्पष्टीकरणक प्रयोजन भए गेल छलैक। मधुपजी पर आरोप लागल छलनि जे ओ अपन प्रसिद्धि लेल सस्तौआ आ क्षणिक मार्गक अनुसरण कए रहल छथि। किन्तु, वस्तु स्थिति ई छल जे जनकण्ठमे मधुपजीकें विराजमान देखि अपना कें मैथिलीक एक मात्र महारथी आ हित चिन्तक मानयवला कतेको मठाधीश आतंकित भए गेल छलाह आ तें ओसभ खौंझा-खौंझा मधुपजी पर व्यंग्य-वाण छोड़ि-छोड़ि अपन तरकस कें खाली करैत गेलाह। सत्य तँ ई अछि जे 'फिल्मीभास लहरि मे भासल मैथिल तरुण समाज' लेल जनप्रिय सिनेमाक गीतक तर्ज पर गात लिखबाक कारण रहल छनि 'निज भाषाक प्रचार रोध-बोध सेहो हम दी अम्लान ।'

मैथिली ललनाक दाम्पत्य जीवन मे "वट सावित्री" पावनिक महत्व ओहिना छैक जेना माथमे सिन्दूर। ओहि अवसर पर कथा होइछ। कथा एक गोटे कहैछ आ शेष सधवा सुनैत रहैछ। किन्तु मधुपजी ओकरा गीतक स्वरूप देल अछि जाहिसँ सभ केओ एकहि संग अपनाकें सहभागी बूझथि तथा कथाक निरसता समाप्त होअए। एहिसँ ई साभ भेल अछि जे कथाक भावात्मकता गीतक रागात्मक तत्व सँ मिलि प्रभावक क्षिप्रता कें द्विगुणित कए देलक अछि। "वटसावित्री" क कथाकें गीतक माध्यमसँ प्रस्तुत करबाक प्रसंग कविचूड़ामणि
लिखल अछि-

'तें किछु गीत लिखि तैं विषयक प्रकट करी हृदयक उद्‌गार।
गाबि बाल-वनिता कलकण्ठे सफल करौ मधुपक गुन्जार।
घर-घर साध्वी सती बनौ, सावित्री देवी केर स्वरूप
सदा सोहागिन गाइनि, राखौ भाल सिन्दूरी बिन्दु अनूप,

ई तँ भेल जे मधुपजी गीतक रचना कोन प्रेरणा सँ कएल। कोन लक्ष्यक प्राप्ति हेतु कएल। आब विचारणीय अछि जे ओ गीतक माध्यमे की कहलनि अछि। हुनक कहब आजुक लोक लेल कतेक सान्दर्भिक एवं महत्वक अछि। आ कि सिनेमाक गीत, जेना किछु दिन मे लोक कण्ठ सँ विला जाइछ ओहिना ओहि भास पर लिखित मधुपक गीत सेहो वासि-तेवासि भए जाइछ?

कवि चूड़ामणिक कवि हृदय अहर्निश जाग्रत अवस्थामे रहैत अछि। ओ अपन चारूकात घटैत घटनाक प्रति आँखि खोलने रहैत छथि। समाजमे कतय की भए रहल अछि, देश-कालक स्थिति की छैक से, बुझैत गमैत रहैत छथि। देश जखन पराधीन छल, देशक युवावर्ग पराधीनताक बन्धन कें तोड़बा लेल आत्मोत्सर्ग कए रहल तँ कविचूड़ामणि लोकमे स्फूर्त्ति अनबा लेल, विदेशीक पाश सँ भारतमाता कें मुक्त करबा लेल कतेको गीतक माध्यमसँ ललकारल। सूतलो लोकक धमनीमे उष्ण धारा प्रवाहित करब गीत द्वारा सुलभ अछि, से ओ नीक जकाँ बूझैत छलाह। आ, तें जे कवि स्वाधीनता संग्रामक पसाहिसँ अपनाकें सुरक्षित रखने छलाह, मधुपजी आह्‌वान कएल।

"शीघ्र सुनादे एक तान टा कृपया
रुद्ध कण्ठ अचि हमहुँ क्रुद्ध भै गाबी युद्धक गाना
आज काज नहि भट्‌ठी माघक नैषधादिहुक
वा आषाढ़क प्रथम दिवस जे गान भेल कवि कण्ठे।
हो गीता उपदेश शिवा वावनी गान हो,
कृष्णक शिक्षा पाबि धनंजय शीघ्र प्रकट हो।
भूषण सँ जे मुग्ध छला से तान अहंक सुनि,
आबथु अमरावती छोड़ि खलदल कै मारथु !
घर-घर अमर प्रताप सन क्रान्तिक हो पूजक
एके विश्वामित्र होथु पुनि भव परिवर्तक।

'भारतीय सब बनथु भगत सन फांसि प्रेमी, वलिवेदी तखता पर' लिखनाहर कविचूड़ामणि स्वाधीनताक वादो जखन-जखन राष्ट्रपर संकट आएल देखल, अपन गीतसँ श्रोताकें ओजस्वित कए देल। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डताक रक्षा निमित्त कवि प्रचलित सिनेमाक गीतक तर्ज पर ओज भरल गीतक संग प्रस्तुत भेलाह।

"एक इंच भूमिक हित शोणित सरिता सतत बहाबी,
चौ तर चाउ-माउ कें ल' क' पेंकिंग किला ढ़हाबी।

काटि मुण्ड 'भुट्टो' 'अयूब' केर माला अपन बनाबी
विजय वैजन्ती भारत केर हिमगिरि पर फहरा दी
मंदर-मथनी बना पाक आ चीन समुद्रो महू। काली कराली कहू।।"

एकदिस कवि दू पड़ोसी शत्रु देशकें मथबाक लेल उद्वोधन करैत छथि, मातृभूमिक मान रक्षाक लेल लोकमे चेतना जगबैत छथि तँ दोसर दिस कवि अपन मातृभूमिक नैसर्गिकता पर सेहो अपना कें अर्पित कएने भेटैत छथि। कृष्णक लीला धाम ब्रजमे रसखान कवि पुनः बसबाक कामना कएने छलाह-'मानुष हौं तो वही रसखान वसौ ब्रज गोकुल गांवके ग्वालन' तँ कवि चूड़ामणि व्यक्ति नहि क्षेत्रक प्रति अगाध प्रेम करैत भेटैत छथि आ ओहिं क्षेत्रक सागो पात रोज भेटैत रहय, सएह कामना करैत छथि

'कमलाक काते-काते, कमलाक रहितहुँ काते,
भेटौ टा सागे पाते रोज, रे की।
तथा सब धाम सँ बढ़ि जनकपुर धामकें मानैत छथि।

गीतक माध्यमसँ जेना मातृभूमिक रक्षा निमित्त लोकमानस कें उद्वोधित कएल जाइछ, ओहिना शिक्षा सेहो देल जा सकैछ। सासुर जाएवाली कन्याकें शिक्षा देबालेल कवि गाबि उठैछ

'ससुरामे जा क' धीया रहिए सम्हारि क'
बजिहह तहूँ नहूँ मनसँ विचारी क' ।

मिथिलाक समाज वाल विवाह, बृद्ध विवाह, अनमेल विवाह आदि सामाजिक कुरीतिसँ आक्रान्त रहल अछि। मधुपजी सन तीक्षण दुष्टि वला कविक ध्यान एहि दिस जाएब असंभव छल। वाल विवाह जन्य विकृतिक निदर्शना हेतु कवि चूड़ामणि लोक कंठमे बैसल सिनेमाक तर्ज पर गीत लिखि बांठि देल। कन्याक मनोदशाक चित्र प्रस्तुत करैत कवि लिखल अछि-

'मोर आशा महल एकपलमे ढहल आब की कानि क'
धूर्त डाकू घटक केर केलियैक की ?
माय ओ बापकें कष्ट देलियैक की ?
छोट नादान वरसँ धरा देल कर, हाय की जानि क' ।

छोट नादान वरसँ विवाह करादेबा लेल कन्या, माय बाप ओ घटक कें उलहन दैछ तथा मन होइछ जे ओहन वरकें तलाक दए दिअनि। किन्तु, क्षणहिमे मनक उत्ताल तरंग शान्त भए जाइछ, ओ अपना कें असहाय पबैछ-

'होइछ मनमे सखी जे तलाके दिअनि
बाल व्याहक प्रथा पर डोला दी विअनि,

किन्तु, क्यो ने शरण हा ! मधुप तजि मरण व्यर्थ की कानि क ।'

समान्यतः इएह देखल-सुनल गेल अछि जे अनमेल विवाहक अन्तर्गत वर बूढ़ वा अवस्थगर, किन्तु कनियाँ अवस्थे छोट ओ अबोध रहलि अछि। किन्तु एहि गीतमे कवि जाहि कन्याक वर्णन कएल अछि ओ वोधगरि आ अवस्थगर अछि। परंच वरे छोट आ नादान छैक। अवस्थाक हिसाबे एना प्रायः नहि होइत छैक। व्यंग्यार्थ सँ अर्थ ग्रहण करी तँ इएह निष्पन्न होइछ जे पत्नी काम कलाक मर्मकें बुझैत अचि, परन्तु ओकर पति कामज्वर पीड़ित अथवा काम कलाक बाट पर अत्यन्त अनभुआर अछि। गीतक पहिल पाती-' मोर आशा महल एक पलमे ढ़हल' सँ कन्याक प्रति जागल सहानुभूति विला कए ओहिना हास्य रस उत्पन्न कए दैछ जेना 'पिया

मोर बालक हम तरुणी गे, कोन तप चुकलहुँ भेलहुँ जननी गे' गीतसँ भए जाइछ। गीतक अन्तिम पांती सँ कन्याक मनमे उठल विद्रोहक सुगबुगी बूझाइछ, किन्तु कवि ओहि सुगवुगीकें स्थिर होएबासँ पूर्वहि मरणकें एक मात्र शरण कहि, जागल आत्म विश्वासक कारुणिक परिणति प्रस्तुत कए दैछ। ई कारुणिक परिणति देखि कहि सकैत छी जे मधुपजीक अतिशय कारुण्य प्रवाह, जे हुनक वैशिष्ट्य आ सीमा छनि, एहू गीत मे वर्त्तमान अछि।

मधुपजीक किछु गीत सिनेमाक कोनो प्रचलित तर्ज पर अछि ओकर शब्द ओ भाव, सिनेमेक गीत जकाँ लहक चहक शब्दावली सँ युक्त सेहो अछि। एहि प्रकारक गीतक सफलता एही लए कए अछि जे सिनेमाक गीतपर लट्टू भेल मैथिल युवा वर्गकें आकर्षित करैत रहल अछि। सिनेमाक तर्ज आ कथ्यक मैथिली गीतसँ मनोरंजन करैत रहल। एहि कोटिक गीतमे किछु प्रमुख गीत अछि-"हम जेवै कुशेश्वर भोर रंग कै ठोर"

पहिरि क काड़ा, झनकाय झनाझन छाड़ा; ।'
"हिय लूटि एना न चली मचली रहते थिर यौवन राजन ई ।"
"कलवल कें भोरे-योरे ई कोमलांगी ओघैंले ऐली, चौंकि चुप्पे।'
"एहि मकर मे जेवै विदेश्वर धाम गे बहिनया।"
कोनाके खेपबै सौनक राति अनहरिया देखि धन करिया ना।"
"हे देवी कहाबै वाली। की मेला घुम्मी बलजोरी, ऐ मेलामे,
लुच्चा आवारा करै चोरी सीनाजेरी',
'संगी ! कोना खेपबैक छाती तोड़ जवानी,
कहबैक ई ककरा अपन करुणाक कहानी ?' आदि।

ऊपर जाहि प्रकारक वाह्य गीतक चर्चा कएल गेल अछि, से सब फिल्मीभास पर तँ आधारित अछिए, ओकर माध्यमसँ अधिकांश गीतमे जे कहल गेल अछि तकर विषयो तात्कालिके अछि। अथवा ओकर रचनाक कोनो ने कोनो तात्कालिक कारण अवश्य अछि। किन्तु, फिल्मी अथवा हिन्दी गीतक प्रवाहकें रोकि मैथिली भाषाकें लोक कण्ठसँ विलेबासँ रोकबा

लेल जे काज ओ गीतसय कएल अछि अथवा कए रहल अछि, तकर मोल नहि छैक। आ एहि हिसाबें कहि सकैत छी फिल्मी भास लहरिमे भासल तरुण मैथिल समाज कें मातृभाषाक प्रति अनुराग जगेबालेल मधुपजीक ओ गीत सभ पहरेदारक काज करैत रहल अछि।

'कविता केहन आ ककरा लेल होएबाक चाही, ओहि प्रसंग आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' जि. १९१० लिखल अछि-' कविता केवल महलक टहल लगौनिहार नहि भै सकैछ। ओकरा कुटीक पुछारी लेब आवश्यक छैक। आवश्यके नहि अनिवार्यो छैक। यदि कविता केवल सुखीक सखी बनै, दुखीक संगगामिनी नहि बनै, तँ मानै पड़त जे ओ पक्षाघातसँ पीड़ित अछि। यदि काव्य दृष्टि केवल इजोरियाक चकमक पर चकित रहै और ओ अन्हरियाक गम्भीर अन्धकारकें देखबामे असमर्थ रहै, तँ कहै पड़त जे ओ कनाह अछि। वस्तुतः कवितातँ उत्तापमय अनुभूतिक निदाघसँ पघिलल हिमजल थिक। यदि सुखक शिशिर मे ओ जमल रहै तँ ओ लोक कल्याणकारिणी जान्हवीक पदकें नहि प्राप्त कै सकैछ। हर्ष अछि जे मधुपजी कविताकें अपेक्षिताक उपेक्षा नहि करै देलन्हि अछि।[16] 'मधुपजी सरिपहुँ कविताकें उपेक्षितक उपेक्षा नहि करै देलन्हि अछि। कविता हुनका लेल महलक टहल लगौनिहारि नहि थिक, कुटीक सदिखन जिज्ञासा कएनिहारि, ओकर सुख-विषादमे संग पूरनिहारि सेहो अछि। तें एक दिस ओ 'परिपक्व सेव सेवकें कोमल कपोल ई, ककरा नै दै छै कछमछा चन्ना अमोल ई', लिखैत भेटैत छथि तँ दोसर दिस 'भूखल प्यासलि' बुचनीं [17] कें छओ मासक नेनाकें काँखतर दबने सेहो देखैत छथि। एक दिस ओ मिथिलेश महाराजाधिराजा कामेश्वर सिंहक 'कोवरगीत'-

'जय जयकार करैत सकल जन
अपन अपन घर गेल मुदित मन
'कोवर गीत' गाबि मिथिलेशक
मधुप सफलता लेल
मोटर बहुतो बढ़ि गेल ।' [५]

गाबि सफलता लैत भेटैत छथि तँ दोसर दिस युग-युगसँ शोषित, अस्पृश्य आ सामाजिक प्रतिष्ठासँ च्यूत 'छूतहर', 'पतित पीक', 'झखरल गाछी' आदि वस्तुओकें काव्यमे प्रतिष्ठि कए रागात्मकता सेहो स्थापित कए लैत छथि। 'छूतहरक' मनोव्यथा कविक स्वर ओ शब्द पाबि बाजि उठल अछि-

'अस्पृश्य भेलहुँ कै कोन पाप ?
मृतिका एक एके कुम्हार
ओ दण्ड चक्र चीवर, संभार
आकार एक क्यो मंगल घट
गोबरौड़ बनल हम सही ताप।" [६]

कविचूड़ामणिक ई गीत ओहि समयक थिक जखन राष्ट्रीय मंचपर एक दिस राजनीतिक

स्वतंत्रता लेल लोक सक्रिय छल तँ दोसर दिस सामाजिक विषमता, भेदभाव, छूआछूत आदि दुर्गुणकें दूर करबालेल समाज सुधारकलोकनि प्रयत्नशील छलाह। अछूतकें मन्दिर प्रवेशक अधिकार देबाक मानसिक ओ क्रियात्मक सक्रियता बढ़ि गेल छल। सभ केओ मानय लागल छल जे मनुष्य-मनुष्य मे जाति, वर्ण, धर्म आदिक आधार पर विभेद नहि होएबाक चाही। सभ क्यो एकहि ईश्वरक सन्तान थिक। किन्तु व्यवहारिक स्तरपर भेदभाव बना कए राखल जाइत छल। अपन काज सुतारबा लेल औखन तरेतर जाति, धर्म, वर्ण, क्षेत्र, भाषा आदिक नाम पर राजनीति कएले जाइछ। एहनहि राजनीतिक मारल 'छूतहर' अपन उद्धारक संभावनाकें असंभव मानि, हृदयक कथा-व्यथा प्रकट करैछ-

'घटघटमे बासी ब्रह्म एक
हो भान अविद्यासँ अनेक
बुझितहुँ वेदान्ती हमर वारि
अपवित्र कहथि कए तें प्रलाप।
हो सदिखन संसारक सुधार
पतितौक बनथि क्यो कर्णधार
उद्धार सुधारक सँ न हमर
ई सभ्य समाजक थिक प्रताप।

'युगयुगसँ शासित, शोषित, प्रताड़ित, अस्पृश्य आदिकें प्रतिष्ठा देबाक कवि चूड़ामणिक मान्यता भावावेशजन्य नहि, अपितु क्रान्तिदर्शी जीवन मूल्यपर आदारित अछि। कवि देखैत छथि, आइ समाजमे जकरा अछूत बूझल जाइछ, जकरा जाति, धर्म वा वर्णक आधआर पर सामाजिक प्रतिष्ठा नहि देल जाइछ, से अपन अधिकार आ उचित प्रतिष्ठा काल्हि बलपूर्वक प्राप्त कए लेत। ओकर प्रवाहक समक्ष समस्त दार्शनिकता तथा भेदनीति भसिया जाएत। एहि तथ्यकें कवि चूड़ामणि रागात्मक संवेदनाक चासनीमे पागि राहुक प्रतीकक
माध्यमे कहल अछि-

"अधिकार ने भेटत जोरि हाथ
जा चटपट नहि कटबैब माथ
कटि बक्रचक्रसँ से देखौल
पी सुधा साहसीमे अनन्य
जरि जौ, से जीवन ओ यौवन
ओ युवक यमक घर जाथु निधन
जनिकासँ सत्ता हो न लब्ध
से सिखा देल साहस शरण्य ।
ई क्रान्ति कुमारिक कण्ठहार
समता साम्राज्यक सूत्रधार
आक्रमण हिनके तैं देखि लोक
सोल्लास करै सब दान पुण्य।

आत्मगीत-विषयवस्तु वा शिल्पकें ध्यानमे राखि गीतक वर्गीकरण जाहि कोनो प्रकारें करी, किन्तु वास्तविक अर्थमे होएबालेल ओहिमे किछु तेहन वैशिष्ट्य रहब परमावश्यक जे सोझे अन्तः स्थलकें बेधैत रहए। ई बेधब तखनहि सम्भव अछि जँ गीतक सर्जना कविक अन्तः स्थलकें बेधि भेल हो। त सुख-दुख जन्य भावावेशमयी अवस्था विशेषक परिसीमित शब्दमे स्वर साधनक उपयुक्त शब्दाभिव्यक्ति थिक गीत। तात्पर्य जे गीतमे कविक आत्माभिव्यक्ति रहब परमावश्यक। आत्माभिव्यक्ति थिक जीवनमे दुख जन्य प्राप्त अनुभूतिक अभिव्यक्ति। एहूमे दुखक प्रभाव विशेष होइछ। विशेष स्थायी होइछ। इष्ट नाश अथवा अनिष्ट प्राप्तिसँ शोक होइछ। शोक थिक करुण रसक स्थायीभाव। एहिमे दू विकल हृदयकें बन्हबाक ततेक शक्ति छैक जे मानवे नहि मानवेतर प्राणियो कें अपन प्रभाव क्षेत्रमे बान्हि रखैछ। इएह करुणा समस्त चेतना पुञ्जकें एकसूत्रमे बान्हि विश्व बन्धुत्वक मंगलाचरण करैछ। इएह करुणा भगवान बुद्धकें चारि आर्यसत्य दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध तथा दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा-स्थापित कए विश्वकें एक सूत्र मे बन्हबाक प्रेरणा देने छनि। एही करुणाक रागात्मक अभिव्यक्ति क्रौंचवधकं उपरान्त आदिकवि सं निःसृत होइछ। कोमल प्राण अथवा कठोर प्राण-दूनू प्रकारक व्यक्तिपर एकर प्रभाव पड़ैछ। करुणा रसक प्रभाव विस्तारक चर्चा करैत भवभूति लिखल अछि-करुण रस सँ पाथरो कानय लगैछ आ वज्र हृदय सेहो फाटि जाइछ आ तखन कहय पड़ैत, छनि-'एको रसः करुणः एव, जँ कवि चूड़ामणि मधुपक साहित्यकें ध्यानमे राखि कही, जे ओ कारुण्य रसधाराक एक शीर्षस्थ कवि छथि तँ अतिशयोक्ति नहि होएत। प्रत्येक व्यक्तिकें जीवनमे किछु आशा रहैछ। अपन हित-अपेक्षितसँ किछु अपेक्षा रहैछ, किन्तु प्राप्त नहि भेला पर निराशा होइछ, दुख होइछ। आ तखन करुणाक धारा फूटि पड़ैछ। एहनहि रागात्मक स्थितिक भावात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत आत्म गीत मे भेल अछि-

'जे छले सबटा गमओलहुँ किछु न पओलहुँ
क्षेत्र नहि भेटल, अमीनहुँ सँ नपौअलहुँ,
क्यो न अप्पन भेल, कीर्ति न ककर गओलहुँ
हे प्रकृति ! बानर जकाँ बहुतो नचओलहुँ,
'मधुप' तदपि बुझैछ कहुना समय ससरल जा रहल अछि
वायु वेगे चार आयुक यद्यपि उतरल जा रहल अछि।
कामना लतिका तदपि दिन-राति लतरल जा रहल अछि। [6]

कवि चारूकात निहारैछ! अपन लोककें तकबामे सभटा गमा लैछ तथापि कामनाक लतिका लतरिते जाइछ। अपनत्व स्थापित करबाक सभ प्रयास निष्फल होइछ-

'जानि रसाल विमल जल सींचल
फलक प्रीतक्षामे युग बीतल
आबि बिहाड़ि उपाड़ि देलक तरु
मजरल पड़ल पुनीत
सकल उद्योग बनल विपरीत ।'

कवि अपन रागात्मक भावावेशक अभिव्यक्तिक लेल प्रकृतिक उपकरणहुक उपयोग मानवीयकरण द्वारा करैछ। एहि प्रयोग मे मधुपजी निपुण छथि। जड़हुमे चेतनाक संचार कए मानव हृदयक ततेक ने समीप आबि जाइछ जे लोक ओहिमे अपनहि हृदयक राग-विराग, आशा-निराशा, सुख-दुःख प्रतिबिम्बित देखय लगैछ।' झखरल गाछीक' प्रतीक क माध्यमसँ एक रागमय बिम्ब ठाढ़ कएल अछि जे पाठक-श्रोताकें करुणाक धारामे भसियेबा लेल तँ विवश करिते अछि, सहानुभूति जगेबासँ बाजो नहि अबैछ-

'के करुण कथा मम करत कान?
फल पाकि-पाकि खसि सठल सकल
बुझि रूसि चलल बगबारक दल
मचकीक मलार मकरन्द बन्द
पिक निकर मूक तजि देल तान ।
के करुण कथा मम करत कान ।

करुण कथा नहि कान देबाक स्थितिक बोध कविक अवसादकें प्रकट करैछ। ओ अनुभव करैछ जे समान स्थितिमे रहितहुँ निस्सहाय छी। केओ अपन नहि अछि। केओ बोल-भरोस देनिहार नहि, यद्यपि 'सेवक बनि वक सभ' ध्यान कएल अछि। जीवनक अतृप्ति गीतात्मक भए उठल अछि-

'स्वातीक सलिलसँ चातक दल
नव नीरद देखि शिखी मण्डल
हो सुमन, सुमनकें देखि मधुप
हम मधुप विमन करितहुँ प्रयास
नहि ज्ञात फसौलक कोन पाश' ।

प्रेम कलह वश रूसल कृष्णक कलहताप शान्त होइतहि पुष्पित पुंजक पुंज कुसुमसँ मण्डित निभृत निकुंजक माँझ बैसल विरह विकल कृष्ण थम्हि-थम्हि वेणु बजाकए राधाकें संकेत करैछ-'नयनक आधाहुक आधासँ राधा वाधा देखह आबि,' राधाकें केवल अपनहि सुखसुविधा आ राग विरागक चिन्ता नहि छैक। परिवारक दायित्व सेहो छैक। तें भानस-भात मे लागलि अछि। किन्तु, ओही बीच मुरलीक मारुक ध्वनि ओकर कानमे पड़ैछ। सुनितहि आत्मा बिकल भए उठैछ। आश्रमक चिन्ता आ आत्माक विकलताक द्विविधा मे पड़लि राधाक मनः स्थितिक रागात्मक चित्र प्रस्तुत करैत कवि गाबि उठैछ-

'घनश्याम एना ने बेणु बजा कय वेरि तोरा हम कहने छी
भनसा न हेतै की लोक खेतै, बुझितहुँ से जिद्द पकड़ने छी।

जें की कनि ओ मुरली बजाबी सुखलो जारनि नहि लहरै,

पजरै ने अनल फुकि-फुकि थाकी बीअनिसँ बहुतो होंकने छी।

जों सूनि पौती यशोमती मैआ उखरि सँ पुनि बान्हल जैब
मधुपो ने एना जखने तखने गुन्जार करय हम सुनने छी।

कृष्णक अनुराग मे विकल विद्यापतिक राधाकें भानस भात सन आवश्यक आश्रमी काजक चिन्ता नहि छनि। पानि भरबाक लाथे पहरक पहर पनिघट पर प्रतीक्षा मे समय व्यतीत करबाक सुविधा छनि। परिवारक भारसँ ततेक मुक्त छथि जे विरहावस्थामे 'माधव माधव रटैत' अपनेकें माधव मानि लेबाक भ्रम कए लैछ। कृष्णक प्रेममे बावरी बनलि मीराकें कहियो आश्रमक चिन्ता नहि छलनि। किन्तु कवि चूड़ामणिक एहि राधाकें अपनो चिन्ता छनि आ परिवारक सेहो। परिवारक प्रति अपन दायित्वकें छोड़ि ओ ने तँ पनिघट पर घड़ीक घड़ी आतुरतासँ कृष्णक प्रतीक्षा करैत छथि, आने विरह विकल भए गिरहस्तीसँ पला यने करैत अछि। वेणु सुनि अवश्य उद्धेलित भए उठैत छथि। ओही उद्वेगक कारणे सुखलो जारनि नहि पजरैत छनि। आ ओ फूकि हौंकि थाकि जाइत छथि। एकहि गीत मे विरह विकल आत्माकें परमात्मामे एकाकार होएबाक आतुरता तथा गार्हस्थ्य जीवनक दायित्व पालनक चिन्ता समज्जित भए जाएब मधुपेसन कुशल, संवेदनशील आ अनुभूति -प्रवण कविक वशक बात थिक।

'मधुपजीक गीतात्मक व्यक्तित्वक उत्कर्षक चर्चा जे सुमनजी 'राधाविरह'क सन्दर्भ मे कएने छथि मधुपजीक सम्पूर्ण रचनाक सन्दर्भ मे सत्य अछि। ओ लिखने छथि-एहि व्यस्त युगकें महाकाव्यक युग नहि मानि, गीति काव्युक मानल जाइछ। ओहने व्यस्त भावुककें एकर अंशवाचनसँ गीत रसक आनन्द उपलब्ध होएतनि। मधुपजीक कवि व्यक्तित्व सदा गीतात्मक रहलनि अछि।' कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' क गीति काव्यक विशेषताक प्रसंग जँ संक्षेपमे कहबाक प्रयोजन हो तँ ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' (१९१८-१९८६)क शब्दोमे कहल जा सकैछ-

'घसल अठन्नी सोनाकें ओ घसि कए कएलनि हीरा
मधुपक स्वर ये बाजि उठइ छथि विद्यापति ओ मीरा।'

मिं. मि. अक्टूबर १९८७

भट्टीकाव्यक परम्परा आ मधुपजी

'जय जकार करैत सकल जन
अपन-अपन घर गेल मुदित मन
कोबर गीत गाबि मिथिलेशक

'मधुप' सफलता लेल
मोटर बहुतो बढ़ि गेल ।' [1]

कवि चूड़ामणि मधुपक 'कोबर गीतक' एहि अन्तिम पद्यावलीसँ स्पष्ट अछि, जाहि प्रयोजनवश मिथिलेशक 'कोबर गीत' गओने छलाह, सिद्ध भेलनि। प्रश्न अछि जे कवि चूड़ामणि कें 'कोब गीत' लिखबाक कोन प्रयोजन पड़लनि?

कविता कथी लेल लिखल जाइत अछि? कोन विवशता रहैत छैक? जँ कविता, कवि नहि लिखलाह तँ की भए जएतनि। माथ दुखेतनि, पेट मे दर्द करतनि आ कि कोनो आंतरिक बेचैनी दम नहि लेमअय देतनि? किछु तँ होइते छनि, नहि तँ एक सर्जनाक बाद मानसिक शान्ति आ तुष्टि नहि भेटतनि? परंच महत्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे दोसराकें की भेटैत छैक? दोसरा लेल हुनक रचनाक की सार्थकता छैक, आदि प्रश्न पर खूब घमर्थन भेल अछि। घमर्थनक परिणामे समक्ष आएल सत्य मे अछि 'यश' आ 'अर्थ'। एहि दूनू शर्तक सीमा सँ बाहर एकोटा कवि नहि भेटैत छथि। ई दोसर बात जे मात्राक भेद भलहि हो। एक कविक प्रथम लक्ष्य जँ अर्थक अर्जन हो तँ दोसर कविक प्रथम कविक प्रथम लक्ष्य यश प्राप्ति भए सकैत अछि। किछु कविक काव्य रचनाक प्रयोजन यश आ अर्थक संगहि समाजक मंगल कामना सेहो भए सकैत अछि।

कविकें यशस्वी के बनबैत अछि? अर्थलाभ कतय सँ होइत छनि? लक्ष्मीवानक कृपापात्र कोना बनि जाइथ छथि? जतय धरि 'यश' क प्रश्न अछि अर्थहीन सहृदय समुदाय एहि लेल पूर्ण सक्षम अछि। किन्तु अर्थलाभ लेल तँ लम्क्षीपात्रे सक्षम भए सकैत छथि।

सत्ताधीश प्रायः दू कारणें कोनहुँ कविकें 'यश' आ 'अर्थ' लाभ करएबा लेल उत्सुक होइत छथि। शासक वर्ग जखन जनसाधारणक हृदय पर पड़ल कविक अमिट छाप कें गमि लैत अछि तँ अर्थसहित उपाधि प्रदान कए वाह-वाही लुटि, आ जनताक समक्ष अपनाकें साहित्य, कला आदिक पोषकक रूपमे प्रचारित करबैत अछि। एहि विधिकें परिधि सँ केन्द्रक दिस प्रयाण कहि सकैत छी। दोसर थिक केन्द्र सँ परिधिक दिसक यात्रा। शासक वर्ग किछु व्यक्तिकें अपन यशोगान लेल अपन दरबार मे रखैत अछि। आश्रय दैत अछि, प्रतिपाल करैत अछि। ओ आश्रित कवि अपन आश्रयदाता एवं प्रतिपालकक विरुदावली झूमि-झूमि गबैत रहैत छथि। 'सोनक गुल्ली चानिक टालि' पबैत रहैत छथि। एहि कोटिक दरबारी कवि एहि बात पर ध्यान नहि दैत छथि जे हुनक रचनामे जनसाधारणक आत्माक विकल निनाद अछि वा नहि? दीन दुःखी आ शोषित प्रताड़ितकें प्रशस्त मार्गपर अनबा लेल प्रकाश पुञ्ज छैक वा नहि। प्रथम स्थिति मे अर्जित यश स्थायी होइत अछि, सत्ता-परिवर्तनक कोनो प्रभाव नहि पड़ैत छैक। किन्तु, द्वितीय स्थिति मे प्राप्त यश आरोपित रहलाक कारणें शासन परिवर्तनक संगे-संगे समाप्त भए जाइत अछि।

स्वाधीनताक प्राप्ति धरिक मैथिली साहित्यक बहुलांश राज दरबाक साहित्य थिक। राजदरबारक साहित्यसँ तात्पर्य ओहि प्रकारक साहित्यसँ अछि जकर सर्जनाक प्रत्यक्ष उद्देश्य

अपन आश्रयदाताक मनोरंजन अछि। प्रतिपालककें प्रसन्न राखब अछि। किछु कविगण शाश्वत मूल्यक कलात्मक अभिव्यक्तिक संग
अपन आश्रयदाता आ प्रतिपालकक अपन रचनामे नाम जोड़ि, अमरत्व प्रदान कए देल अछि। कविगणक ई एकटा विवशता छल। कला-साहित्यक संरक्षण आ सम्यक् विकासक आन कोनो व्यवस्थो नहि छलैक, तखन की करथि? जाथि तँ कतय जाथि? एक राजाक राज-पाट कें दोसर आबि तहस-तहस करैत छलाह, राज दरबार उजड़ैत छल आ बसैत छल। कविओ लोकनि पोथी-पतराक संगे एक दरबार सँ दोस दरबार मे आश्रय लैत छलाह। इयह कारण थिक जे राज्याश्रित कतेको कविक काल निर्धारिण मे आश्रयदाताक राज्य काले
निर्णायक सिद्ध भेल अछि। परंच, सबसँ विशेष द्रष्टव्य आ उल्लेखनीय तथ्य ई अछि जे मैथिलीक कवि लोकनि अपन काव्य प्रतिभाक उपयोग अपन प्रतिपालकक राज्य विस्तार लेल नहि कए, कलाप्रियताक लेल नामोल्लेख कएल अछि।

कविशेखर ज्योतिश्वर (१२८०-१३४०) अपन आश्रयदाताक कला निपुणता आ कलाप्रियताक उल्लेख करैत लिखल अछि जे कविशेखर जोतिक एहु गावे राए हरसिंह बुझ भावे। कवि कोकिल विद्यापति (१३६०-१४४८) तँ अपन सभ आश्रयदाता कें अपन गीत मे नामोल्लेख कएल अछि। यशक संग अर्थक लाभ सेहो भेलनि। उमापतिक काल निर्धारण आश्रयदाताक राज्य कालावधिए द्वारा सम्भव भए सकल अछि। कविवर हर्षनाथ झा (१८४७-९८) अपन आश्रयदाताक रसमर्मज्ञताक उल्लेख करैत लिखने छथि-

'रसमय हर्षनाथ कवि गावे
नृप लक्ष्मीश्वर इहो रस जाने।'

सीताराम झा (१८९१-१९७५) अलंकार निरूपणक अतिरिक्त कतेको ठाम मिथिलेश आ महारानीक नाम गुणक उल्लेख कएने छथि-

'जग प्रसिद्ध पावन परम' जा दृश मिथिला देश
ता दृश धर्म धुरीण छथि 'भूपति श्रील रमेश'
'मिथिला देश अधीश्वरी, दीनक पालनि हारि
जीबथु श्रीलक्ष्मीवती कुशल सहित युग चारि।

एहिना पं० श्यामानन्द झा अपन समकालीन मिथिलेशक नाम गुणक चर्चा रसोपम अलंकार निरूपणेक क्रम मे कएने छथि-

'कुलसन शील शीलसन प्रज्ञा प्रज्ञासन अछि लोकाचार
श्री कामेश्वर सिंह तृपतिवर हो अपनेक सुखद संसार।

तथा महाकवि यात्री (ज. १९११) महाराज रमेश्वर सिंह, क उच्चज्ञान मे माँ मिथिलाक वैशिष्ट्यक आभा देखैत छथि-

'नृप रमेश्वरक उच्च ज्ञानमे आभा अमल अहाँक।

पराधीन भारत मे उच्च आदर्शक प्रतीक राजा छलाह, रानी छलीह। तँ जखनहि कोनहुँ उच्च आदर्शक नमूना प्रस्तुत करबाक प्रयोजन भेल, एक व्यक्ति मे पूँजीभूत विशिष्ट मानवीय गुण धर्मक आदर्शक उदाहरणक आवश्यकता पड़ल, कविगण राजा-रानीक नाम लए लैत छलाह। किन्तु स्वाधीनताक बाद ओ आदर्श खण्डित भए गेलैक। आत्मरक्षाक अधिकार भेटलैक। आ तँ गुणगानक परिपाटी समाप्त प्राय अवश्य भेल, निर्मूल नहि। जे आर्द्रता पबितहि अंकुरित भए जाइत अछि। आपातकालक समय मे एहि प्रकारक प्रवृत्ति विशेष देखार भए गेल छल। ओहि क्रम मे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (ज.२.३.१९२५) लिखने छथि-

बंचकता करब चीट बाट पर रोकि लेत
खसतै पहाड़ तँ बीस सूत्र ई लोकि लेत । [7]

तथा आपात्कालक घोषणासँ पूर्व नुक्कड कविगोष्ठी मे अपन 'सत्यनारायणक पूजा' कविताक माध्यमे घूसखोर व्यवस्था पर प्रहारकर्त्ता कवि भीमनाथ झाक (ज.१७.२.१९४५) 'बीस सूत्री कार्यक्रम' शीर्षक रचनाक टेप खूब प्रसारित होइत छल-

'नव एप्रेंटिशक योजना शुरु, भेल अछि सौंसे
बेकारी बैसाड़ी भागल लंक लेने मुँह झौंसे
अनुशासन प्रतिबद्ध राष्ट्रमे प्रगतिदीप हम नेसी
बीस सूत्री कार्यक्रम तखने सफल काज सँ वेसी'

एहि विवृत्तक तात्पर्य ई अछि जे परतंत्र भारत मे मैथिलीक अधिकांश कविगण अपन आश्रयदाता अथवा समकालीन मिथिलेशक नामोल्लेख फूटसँ नहि कए गीत, अलंकार आदिक क्रम मे कएने छथि तथा स्वाधीन भारत मे मात्र आपातकालक अवधि मे किछु कविगणक स्वर सरकारी तंत्रक अनुरूप भए गेल छल।

संस्कृत काव्य साहित्य मे भट्टिकाव्यक सुदीर्घ परम्परा भेटैत अछि। किन्तु मैथिली मे केवल टूटा पोथी भेटैत अछि जे भट्टिकाव्यक रूप मे परिगणित कएल जा सकैत अछि। पहिल थिक पं० ऋद्विनाथ झा (१८९१-१९७६)क 'अभिलाषा' (१९४० ई०) तथा दोसर थिक कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क 'कोबर गीत'। दूनू पोथी कृशिकाय अछि। 'कोबरगीत' मे प्रकाशन वर्ष मुद्रित नहि अछि परंच एतबाधरि निश्चिते जे एकर प्रकाशन 'शतदल' (१९४४) क बाद भेल अछि। अभिलाषाक, प्रयोजनाक प्रसंग पं० ऋद्विनाथ झा लिखने छथि-'भट्टिकाव्यक उक्तयानुसार अपन आश्रयदाताक कल्याण कामना करब हमर कर्त्तव्य थिक तँ तकर पूर्त्ति एहि 'अभिलाषा' द्वारा भगवतस्तुति रूपें कएल अछि।' एहि दूनू भट्टिकाव्यक विलक्षण साम्य अछि जे दूनूक आश्रय छथि महाराज कामेश्वर सिंह (१९०७-६२)। 'अभिलाषा' मे मिथिलेशक मंगल कामना हेतु विभिन्न देवी देवताक स्तुति अछि। ई स्तुति मैथिली आ संस्कृत मे अछि। परंच

'कोबरगीत' मे दरभंगा सँ सासुर मंगरौनी धरिक एक सए पद्य मे वर्णन अछि। वरियाती कोना साजल गेल। के के ओहि मे छलाह। कोन-कोन साज-बाज छलैक आदिक विशद आ सुललित वर्णन अछि।

पं० ऋद्धिनाथ झाकें राजदरभंगा सँ पूर्ण सानिध्य छलनि। पिता म. म. हर्षनाथ झा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक (१८५८-१८९८) दरबारक एक विशिष्ट व्यक्ति छलरह। तँ, पं० ऋद्धिनाथ झा द्वारा महाराज कामेश्वर सिंहक प्रति व्यक्त भाव अनन्वित नहि अछि। परंच कवि चूड़ामणि कें एहि प्रकारक सम्पर्क आ सानिध्य प्रायः नहि छलनि। आ ने मधुपजीक काव्य यात्रे मे एहि प्रकारक दृष्टि अछि। तखन 'शतदल'क कवि मधुप कोन विवशताक कारणें 'कोबर गीत'क रचना कएल, अनुसन्धानक विषय भए जाइत अछि।

'प्रेरणापुंज'क अनुसार मधुपजीक परमवृद्ध पिताक अन्तिम मनोरथ छल काशीवास। पिताक ई मनोरथ मधुपजीकें चिन्तामग्न कए देलक जे काशीवासक खर्च कोना जुटाओल जाए। साधनहीन पुत्रकें चिन्तामग्न देखि वृद्ध पिता कलमक उपयोग करबाक बाट देखा देलथिन्ह-

'हमर काशीवास केर खर्चा
अहाँ सँ अछि न सम्भव
किन्तु जगदम्बाक कृपयें
कलम मात्र चलाय
'अहीं टा ई क' सकै छी
ते अहाँ
भागलपुर स्थित ख्यात
रानीसाहिबा चन्द्रावतिक किछु
जीवनी केर पद्य लिखि क'
हमर संगे जौं चलि तै ठाम
तै हमर सब काज होयत सिद्ध।'

'पूँजीपतिक दूषित दुआरिक दर्शनक नामो सँ द्रुत दुलित भए' गेनिहार मधुप जी अपन आत्माक प्रतिकूल बाबूजीक काशीवासक आकांक्षाक पूर्त्ती हेतु मैथिलीक एकावन पद्य मे रानी चन्द्रावतीक जीवनी लिखि पिताक संग भागलपुर गेलाह। अपन पद्यबद्ध जीवनी सूनि पानी चन्द्रावती कानय लगलीह। किन्तु बाद मे एक सए एकावन टाका पुरस्कार देल तथा हुनक पिता कें काशीवासक हेतु काशी स्थित अपन श्यामा मन्दिर मे रहबाक सभ व्यवस्था धराय देल। पिताक विश्वास-'कलम मात्र चलाय अहीं टा ई क' सकै छी'-सत्य भए गेल। काशी मे पिताजीक सभ व्योंत कए मधुपजी विद्याध्ययन क हेतु पुनः देवधर घूमि अएलाह।

बहेड़ा मे जीविका पएबा धरि आशुकविक रूप मे मधुपजीक ख्याति पसरि गेल छल। कतेको रचनात्मक स्पर्धा मे अपन कवित्वशक्तिक बलें विजय पाबि विद्वत मंडली कें अचंभित कए

देने छलाह। एक सरकारी दल द्वारा विद्यालयक निरीक्षण होएब निश्चित भेल। अनुकूल रिपोर्ट लेल पैरवी आवश्यक बूझल गेल। एहि काज लेल सभ सँ वेसी प्रभावशाली कुमार गंगानन्द सिंह छलाह। संयोगवश ओही बीच महाराज सामेश्वर सिंहक कोबर वजरल। जाहि मे कुमार गंगानन्द सिंह क सम्मिलित होएब निश्चित छल। मधुपजीक ख्याति आ परिचयकें देखि कुमार गंगानन्द सिंह सँ पत्र अनबाक भार सचिव महोदय हुनके सौंपल। सचिवक आदेश पाबि मधुपजी असंजस्य मे पड़ि गेलाह। अवज्ञाक स्पष्ट अर्थ होइत छल, अपना संग विद्यालयक छात्र वर्गहुक भविष्यकें दूरि करब। ओहि दूनू दबाव मे पड़ि, आत्माक विरोध करितहुँ बिना बजौने मंगरौनी जाए पड़लनि। मंगरौनी पहुँचि अपन अएबाक प्रयोजन राजपण्डित बलदेव मिश्र (१८८७-१९६५) सँ निवेदित कएल। राजपण्डित पत्रक प्रति आश्वस्त करैत कहलथिन्ह-

'से काज तँ हेबे करत
पहिने उपस्थित जे हमर अछि काज
तकर सम्पादन करू ने !
आइ अढ़ाइ घंटा केर वादे
छै एतय दरबार
जाहि मे कोबरक वर्णन
सुनक इच्छुक छथि स्वयं मिथिलेश
कतेको दिनसँ कते कवि लोकनि
लिखि रहलाह अछि ताहि विषयपर
तें बरात केर चित्रण करू, अहाँ
हमर अछि विश्वास
सफल कलम अहाँक हैत अवश्य'।

राजपण्डितक शर्त्त कविचूड़ामणिकें अवग्रह मे दए दलकनि। विरुदावली नहि लिखबाक स्पष्ट अर्थ
छल कुमार साहेबक पत्र नहि भेटब आ तखन सचिवक कोपभाजन आ छात्रक अन्धकारमय भविष्यक संभावना निश्चिते छल। फेर ओ अपन इच्छाक विरोध मे निर्णय करबा लेल विवश भए गेलाह। राजपण्डितक कहब 'कतेको दिन सँ कतेको कवि लोकनि लिखि रहलाह अछि ताही विषय पर'-संभव तिक मधुपजी कें जल्दी निर्णय लेबा मे सहायक भए गेल हो। एकरा ओ रचनात्मक प्रतियोगिताक रूप मे ग्रहण कएने होएताह। किएक तँ कोनहुँ प्रतियोगिता मे अद्यावधि द्वितीय स्थान पर नहि आएल छलाह। आ ओ 'कुमोने' कोबर गीत लिखबाक निर्णय कएल :-

'भेल विषम स्थिति हमर
विरुदावली लिखनाइ
सिद्धान्तक विरोधी
किन्तु,

बिन तकर कएने न आब कुमार
साहिब केर भेटत पत्र
पूरा मनेमन सोचि
कहि वेश ।
पंडितजीक संकेतित नितान्त एकान्त
सुन्दर एक पटनिर्मित कुटी मे जाय
इष्ट देविक पद सुमिरि
शत पद्यावधि पद्य मे
बारात सहिते कोबरक विशद वर्णन
कवि कदम्बक कम्पीदीशन मध्य
प्रथम भय क'
पाँच सय सँ पुरस्कृत ।

कविता लिखब एक सर्जना थिक जे विध्वसंक विपरीत अर्थक बोध करबैत अछि। सर्जना मे मंगल कामना सन्निहित अछि, परंच मंगल कामना ककर,? व्यक्ति वा समूहक मंगल? कामना तँ सम्पूर्ण प्राणि मात्रहिक, किन्तु प्राथमिकता समाजक मंगल कामना कें प्राप्त छैक। मधुपजी सबसँ पहिने वृद्ध पिताक आकांक्षाक पूर्त्ति हेतु रानी चन्द्रावतीक पद्यमय जीवनी लिखने छलाह। अतिवृद्धक कथन आर्षवचन भए जाइत अछि। तकर पालन नहि करब अव्यवहारिक आ अमंगलिक भए जा सकैछ। तकर बोध मधुपजी कें छलनि। कुमार साहेबक पत्र बिना स्कूलक मंजूरी सम्भव नहि छल, पाँच सए छात्रक संग बहेरा परिसरकें प्राप्त शिक्षण संस्थाक सुविधा सँ वंचित भए जएबाक खतरा छलैक, तें वाध्य भए 'कोबर गीतक' रचना करय पड़लनि। हुनक कवित्व शकृए ततेक प्रखर छल जे अनिश्चित विषयोपर कलम उठा लेलपर दिव्य मार्मिकता आबि जाइत छलैक। 'कोबरगीत' युगीन विवशताक द्योतक थिक। श्रीमन्त लोकनिकें बिनामुदित कएने समाजक कोनहुँ काजक कल्पना असंभव छल। कविचूड़ामणि मधुप लेल व्यक्तिसँ पैघ समाज छल, तें अपन आत्माक प्रतिकूल 'कोबरगीत' गाबि सकल छलाह। 'कोबरगीत' गाबि मिथिलेशक मधुप सफलता लेल, तकर ओएह रहस्य थिक।

मि० मि०
12/1987

काञ्चीनाथ झा 'किरण'क कथा जगत

तृतीय दशकक उत्तरार्द्ध मैथिली साहित्यक संक्रान्ति काल जकाँ अछि। सामाजिक, राजनीतिक अथवा साहित्यिक परिवेश नव संस्कार आ नव ज्योतिक पीड़ा सँ छटपटा रहल छल। ओहि समय धरि साहित्यकार, कविकोकिलक 'देसिल वयना सभ जन मिट्ठा'- अर्थात्

अपन परिवेश मे उठैत छोट-पैघ तरंग कें निहारि लोकेक भाषा मे कहबाक प्रवृत्तिकें पूर्णरूपेण हृदयंगम नहि कए सकल छलाह। अपितु विद्यापतिक अमलदारीक सामाजिक परिवेशक कल्पना कए साहित्य-सर्जना मे संलग्न रहि, अपना कें धन्य मानैत छलाह। परिणामतः, एक दिस जँ रजनी सजनी कें पराकाष्ठा भेटैछ तँ दोसर दिस समस्त जागतिक विकृति आ विडम्बना कें देवी प्रकोप मानब। ओकर निराकरणक समस्त दायित्व अव्यक्त सत्ता पर थोपि स्वयं कोनो प्रेरणा किंवा जागरण अनबाक बदला मे निष्क्रियताक प्रतिमूर्त्ति रहि जएबे सम्मानप्रद मानैत छलाह। एहि कनिष्क्रियताक प्रतिमूर्त्ति अथवा संवेदनाहीन लेल अपन चारूकात उठैत बिहाड़ि आ परिवर्त्तनक प्रक्रियाकें आत्म सात कए, प्रेरणादायक आ देश-भाषा साहित्यक सम्यक विकास लेल साहित्य सर्जना करब असंभव छल। समाज मे की भए रहल छैक? लोकक डेग स्वाधीनता संग्राम सँ अपना कें जोड़बा लेल अनायासे कोना बढ़ल जा रहल छैक? देश ओ परिवेशक विचारधारा की छैक? अपन संस्कृति, सभ्यता आ भाषाकें गीड़ि जएबाक हेतु कोना प्रपंच रचल जा रहल अछि? धर्म-कर्म, रीति-रेवाजक उपयोग सामंत, राजा-महाराजा आ विदेशी शासकक अमला लोकनि कोना अपन स्वार्थ-सिद्धिक निमित्त कए रहल छथि, सामाजिक आ धार्मिक रूढ़ि आ अन्धविश्वासक अन्हार खोह मे लोक कें बलात् धँसा कए कोना अपन काज सुतारि मठोमाठ बनल रहबाक षड्यंत्र रचल जाइछ, तकर निराकरण लेल अथवा एहि प्रकारक कुकृत्य आ विसंगतिक उद्घाटन कए समाज कें नव जीवनदान, नव आलोक आ नव सम्मान देबा लेल अपन काव्यात्मक प्रतिभाक उपयोग करबाक ऊहि नहि छलनि। निर्दय शासक क जाँत कर पिसाइत-किकिआइत लोकक अन्तरक हाहाकार-चीत्कार कें व्यक्त करबाक आवश्यकता अनुभव नहि करैत छलाह। जे किओ करितहुँ छलाह अथवा कएने छथि, संख्या कम अछि। इहो संभव थिक जे सामाजिक जीवन मे पसरल विकृति आ विडम्बना अथवा देशक स्वाधीनता लेल छटपटाइत लोकक आकांक्षा, शासक वर्गक विरुद्ध भए जएबाक कारणें अनुचित आ हेय बुझैत छलाह। एहने साहित्य-सर्जनक परंपरा मे किरणक प्रसार नव ज्योति, नव-जीवन संचार आ नव-प्रेरणा देबा लेल होइछ।

किरणक (१९०६-१९८९) परिसरक समाज कोला-कोला मे बाँटल छल। प्रत्येक छोट-पैघ कोलाक अपन स्वार्थ छलैक। अपन जजात छलैक, जकर आरि पर ठाढ़ भए दोसर कोलाक रखबार क आँखि बचा कए, किंवा जोरगर रहला पर औठो देखा खए सीस नोचि सगर्व फेरा दैत छलाह तथा बटेर लड़बैत छलाह। मिथिलाक प्रत्येक छोट-पैघ गाम मे कमला, कोशी, आ लखनदेइ उत्तर सँ दक्षिण दिस बहैत छलीह, जनिक पाट चाकर छल, पेट गंहीर छल आ धारा तीव्र छलैक। ओहि पर सँ पार करबाक कोनो व्यवस्था नहि छल। जे केओ साहस करैत छलाह, फल होइत छलनि कमला, कोशी आ लखनदेइ क तेज धारा मे भसिया जाएब। भसिया कए कतहु करौट लागि जाएब एहन स्थिति मे कुशल क्षेम बूझि, घूमि आएब असंभव छल। परिणामतः धारक पूबारी कातक लोक पछवारी कातक लोककें हेय मानैत छलाह तँ पछबारी कातक बहुसंख्यक पूबारी कातक शासक कें सदिखन शंकक दृष्टिए देखैत छलाह। एक दोसरा मे सामंजस्यक अभाव समस्त मिथिला जनपदक समस्या कें एकजुट भए समाधान करबाक बेगरताक अनुभव नहि करए दैत छलैक।

अभिजात वर्गक हाथ मे सामाजिक व्यवस्थाक संचालन-सूत्र छल। विदेशी शासक

कमतिया लग शासनक भार छलैक, ओकरे जीरात कें सुरक्षित रखबाक चाँकि छलैक। ओकर सुख-सुविधा लेल नियम आ
कानून छल। उल्लंघन कएनिहार कें तुरन्त दण्डित करबाक तत्परता छलैक। गुणीक अवहेलना होइत छल, आ सर्वत्र धनक बोलबाला छल। म० म० डॉ० गंगानाथ झाक निबंध 'मिथिलाक अधोगति' (मिथिलांक) क उत्तर मे किरणक विचार एहि तथ्य कें पुष्टि कए दैछ-'सरिसब क महासभा-(मैथिल महासभा) मे डॉ० झा (म० म० डॉ० गंगानाथ झा) सन व्यक्ति फरसे पर बैसल छलाह आओर विद्या वयस कोनो दृष्टिए आदारस्पद नहि बबुआन मसनद पर औंगठल छलाह।' [1] तत्कालिक मिथिलाक व्यवस्था आ सत्ताधारीक परिचायक थिक। संगहि ओहि विकृतिक रूप रेखा सेहो प्रस्तुत करैछ, जकर हथरा बाबू-भैया छलाह।

किरणक जन्म आर्थिक दृष्टिए लटल, सामाजिक आ आर्थिक रूढ़ि क आँखि मूनि पालन करबा मे असमर्थ तथा देश आ भाषा साहित्यक उन्नति लेल सचेत एवं संघर्षशील परिवारमे भेल अछि। समाज मे व्याप्त विसंगति आ विषमताक विरोधमे जाहि प्रकारक रूढ़ि सामाजिक व्यवस्थाक संग सामंजस्य स्थापित नहि कए सकबाक एक कारणें हिनका सामाजिक यातना भेटल। ई जीविकाक सुविधा सँ वंचित कए देल गेलाह। मिथिला छोड़ि काशीवास करए पड़लनि। मुदा एहि सभ सँ आलोच्य साहित्यकारक संघर्षशीलता मे जरती नहि भेल, अपितु, व्यवस्थाक विरोध मे अंकुरित विचारक स्वरूप गुणात्मक भए गेल। लोहना पाठशाला सँ 'हिन्दू विश्वविद्यालय' अएला पर माहामना मालवीयजी (१८६१-१९४६)क सान्निध्य, अखिल भारतीय स्तरक विभिन्न स्वाधीनता संग्रामक नेताक अनुखन दर्शन आ श्रवण सँ लाभ होइत छलनि। अन्य भारतीय भाषा साहित्यक समकक्ष मैथिलीकें नहि पाबि कहिओ हताश नहि भेलाह। अपितु, प्रेरणा लैत रहलाह। परिणामतः एक दिस तँ हिनक जीवन-दृष्टि संघर्षशील, सुधारात्मक आ रूढ़ि-भंजक भए गेल तँ दोसर दिस मैथिली कें 'विश्वविद्यालयक' पाठ्यक्रम मे स्वीकृत करएबाक प्रयासक संग, पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक योजना सेहो सफल होमए लागल।

किरणक चिंतना आचरण मे कोनो विरोध नहि भेटैछ। मंचक अनुरूप हिनक रूप नहि बदलैछ। हिनक साहित्य 'शोकेश'क साहित्य नहि थिक ते मंच अथवा व्यवस्थाक तृप्ति लेल तूरक फाहा मे लगा कए ओकरा तुरन्त उपस्थित नहि कएल जा सकैछ। ओकर अपन चरित्र छैक, जाहि बल पर चीन्हल जा सकैछ। प्रगतिक निश्चित दिशा छैक जाहि पथ पर जन-जीवनक संवेदना कें समाहित करैत सतत आगू पढ़ल जाइछ। भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसार निमित्त आएल विचारकें दैनिक जीवन मे उतारैत रहलाह अछि। गामे-काम घूमि आयोजन कए लोककें सचेत करब हिनक व्यक्तित्वक एक अंग बनि गेल अछि। अपन दैनिक जीवन मे कतेक संघर्षशील आ प्रगतिशील छथि, सिद्धान्तक उपेक्षा आचरण मे कतेक दृढ़ छथि तकर प्रमाण अछि हिनक दैनिक जीवन।

किरणजीक कथा-साहित्य पढ़ला पर तुरन्त स्पष्ट भए जाइछ जे ई कोनो कलाबाज जकाँ साहित्य निर्मण नहि कएल अछि। शिल्प क फेरा मे पड़ि अपन अभिप्रेतकें अस्पष्ट नहि कए देल अछि। जीवन समाज आ परिवेश मे जाहि प्रकारक विकृति वा विडम्बनाक अनुभूति भेलनि, दीन-दुःखिकें विलखैत देखलनि, क्रूर-व्यवस्था आ ओकर हथराक क्रूर मनोवृत्तिक,

प्रभावशाली ढंग सँ भंडाफोड़ कएल अछि। धार्मिक रूढ़ि मे फँसल आ अन्धविश्वासक खोह मे जखन लोककें धँसल देखलनि तँ ओहि सँ उबारबाक प्रयास कएल। अन्धविश्वास कें तोड़बा लेल प्रतिवद्ध भए गेलाह। यथा-आलोच्य कथाकार 'चन्द्रग्रहण' मे एकहि संग धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक एवं नैतिकताक अधःपतन सँ लोककें रोकबाक आ शिक्षित करबाक प्रयास करैत छथि। संगहि, राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्रामक पसरैत चेतना सँ मिथिलांचलक सूतल जनमानस कें जगएबाक प्रयास सेहो कएल अछि। 'धर्मरत्नाकर' तथा 'इहो चारि खुन किए' कथा मे शोषणक विरोध मे ठाढ़ होएबाक साहस दैत भेटैत छथि। 'समाजक चित्र' मे वावाह मे लेन-देनक पक्षधरक दुःस्थिति क चित्रण द्वारा समाजक आँखि खोलबाक हेतु तत्पर छथि। कथा हो वा कविता एकांकी हो वा अन्य साहित्यिक विधा आलोच्य साहित्यकारक
कथ्य साफ रहैछ। दृष्टि फरिच्छ आ सामाजिक प्रतिबद्धताक संग सरल भाषा-शैली रहैछ।

किरणक साहित्य मे धार्मिक रूढ़ि आ साजामिक अन्धविश्वास पर खूब प्रहार भेल अछि। जगन्नियन्ताक आराधनाक नाम पर समाजक तथाकथित ठीकेदार द्वारा जखन स्वार्थक खातिर विविध प्रकारक प्रपंच रचल जाइछ तँ धर्म मे, जे विश्वबन्धुत्व क सन्देश रहैछ से स्वतः लोप होमए लगैछ। अशिक्षित स्त्री-पुरुष कें परतारि व्योंत सुतारि माइनजन बनल रहबाक हेतु सभ प्रकारक किरदानी कएल जाइछ।

विज्ञानक प्रभावें अनेक प्राचीन मान्यता खण्डित भए गेल। अन्धविश्वासकें जड़ि सँ उखाड़ि फेंकबाक सभ सरंजाम विज्ञान जुटा देलक। जाहि प्राकृतिक घटना पर धार्मिक रंग चढ़ा कए, अशिक्षित कें ठकबाक व्यवस्था छलैक। तकरा विज्ञान छहोछित कए देलक। विज्ञानक एहि करामात सँ प्रगतिशील कथाकार किरण प्रेरणा लए धार्मिक अन्धविश्वासक खाधि मे खसल मैथिलकें आँखि खोलि देबा लेल अपन लेखनी कें प्रच्छन्न छोड़ि देल। एही प्रच्छन्न रूपबंधक परिणाम थिक 'चन्द्रग्रहण'। प्राकृतिक घटनाक अवसर पर गंगा डूब देबाक भेड़िया धसानी प्रवृत्ति सँ लाभ पबैछ असामाजिक तत्त्व। धरम-करम लेल जाइत तरुणीक अपहरण, लूट-पाटि गाड़ीक वीभत्सरूप तथा पुनः नव जागरणक चेतना सँ सम्पन्न रूढ़ि भंजक तरुणा द्वारा व्यभिचारी-गिरोह पर आक्रमण, छोड़एबाक प्रयास से तरुण क आहत होएब तथा स्वयं सेवी युवावर्गक प्रयासे सफलताक चित्र उपस्थित, कए किरण सत्य आ असत्य मे संघर्ष देखा कए, प्रथमतः असत्यक विजय' मुदा अन्ततः सत्यक असत्यपर विजय, अनैतिक पर नैतिकक विजय, पाप पर पुण्यक विजय तथा मानवीय प्रवृतिक अमानवीय प्रवृति पर विजय द्वारा धार्मिक रूढ़ि आ अन्धविश्वास सँ मुक्त होएबा लेल शंख फूंकल अछि।

सामाजिक जीवन मे पसरि गेल कुरीति पर किरणक कथा-साहित्य मे कसि कए प्रहार भेल अछि। एहि निर्मम प्रहारक एक मात्र लक्ष्य छनि समाजकें कलुष विहीन करब, व्यक्ति-व्यक्तिक बीच भ्रातृत्वक स्रोत प्रवाहित कए, 'बसुधैव कुटुमबकम्क स्थितिकें पुनः स्थापित कए देब। विवाह मे टाका कें महत्व देलाक फल की होइछ? श्राद्ध आदिक अवसर पर भोजखौक समाज कोना बटुआ खोलि कर्ज देबा लेल तैयार रहैछ आ काजक तुरन्ते बाद घर-घराड़ी लिखा लेबा लेल ठोंठ पर कोना सवार भए जाइछ, तकर चित्र 'समाजक चित्र' कथा मे

प्रभावशाली ढंग सँ उपस्थित करैछ। बेटाक पढ़ाइक लेल प्राप्त समस्त टाका भोला बाबू अपना कें जीवित रखबा लेल खर्च कए, कर्जक बोझ छोड़ि मरि जाइत छथि। भोजखौक समाज सुधीर लेल परीक्षा फीस धरि नहि जुटा पबैछ, मुदा भोज भात लेल डीहो नीलाम करबा दैछ। ओम्हर ससुरक डीह सेहो विवाहक कर्ज मे नीलाम भए जाइछ। एक भविष्णु युवकक समस्त संभावना कें कोना समाजक प्रपंची लोक नाश कए, भविष्यहीन कए दैछ तकर चित्र उपस्थित कए सामाजिक जीवनकें विकृति-विहीन करबाक प्रयास कएल अछि।

देश-विदेश सँ अनेक प्रकारक हवा चलैत रहैछ जाहि सँ कौखन गात डोलि जाइछ, तँ कौखन मन सिहरि उठैछ। एहि देशी-विदेशी हवाक झोंक मे नारी जाति सेहो अलसाइत आ भसिआइत रहल अछि। कौखन अपन अस्तित्व कें पृथक स्थापित करबा लेल पारिवारिक सौमनस्य कें ताक पर राखि दैछ तँ कौखन ओकर आचरण समाज लेल बोझ सेहो भए जाइछ। आजुक मशीनी जिनगी क कारणें भंग होइत पारिवारिक जीवन, शिक्षाक प्चार-प्रसार सँ प्राप्त आत्मगौरब क बोधसँ किरणक कथा नायिका सर्वथा फराक छथि। तात्पर्यजे हिनक कथा नायिका शहरुआ नहि गामक जन-बोनिहारि छनि जे बाबू भैयाक ओहिठाम टहल टिकोरा कए गुड़ा-खुद्दी पाबि, परिबारक पालन करैछ। एहि वर्गक नारी पात्रक चित्रण द्वारा आलोच्य कथाकार नारीक शाश्वत गुण मातृत्व, मात्सर्य पारिवारिक सौमनस्य, सामाजिक दायित्वक निर्वाह द्वारा शाश्वत मूल्यक स्थापनाक प्रयास कएल अछि। चन्द्रग्रहणक अवसर पर गंगा डूब देबा लेल जाइत अपहृत युवतीक रक्षा मे आहत तरुण कें देखि, सुषमा मे दामपत्य जीवनक प्रति जे आस्था जगैछ, क्रमशः बलवती होइत 'मधुरमनि' मे आबि चरम
बिन्दु पर पहुँचि गैल अछि। 'धरती कतहु काक बंझ होथि' मैंया अपना-अपना लेल सभकें बेहाल आ सामाजिकताक ह्रास देखि आक्रान्त अछि।

आर्थिक दृष्टि सँ लटल आ सामाजिक दृष्टि सँ त्याज्य कें छोड़ि प्रगतिशील साहित्यक कल्पना करब असंभव अछि। आलोच्य कथाकार एहि तथ्य सँ परिचित छथि। तकरे परिणाम थिक जे हिनक साहित्य शोषित आ प्रताड़ितक साहित्य भए गेल अछि। शोषित आ प्रताड़ितक दयनीय स्थिति कें चित्रित कए ओकर आर्थिक आ सामाजिक स्थिति कें उठएबाक प्रयास हिनक साहित्य मे सर्वत्र भेटैछ। हिनक कथावस्तु अभिजात वर्गक समस्या सँ लादल नहि अपितु सामाजिक जीवनमे व्यस्त आ अपन कोंढ़ तोड़ि, परिवारक प्रतिपालन हेतु दिन-राति खटैत समुदायक समस्याकें अपना संवेदनाक अत्याज्य अंग बनाओल अछि। ओकरे आशा-निराशा, आक्रोश आ विद्रोहकें स्वर देल अछि। ओकर सामाजिक अस्तित्वकें अस्वीकारि, अपन सौख पूरा कएनिहार तथाकथित धर्मरत्नाकरक पूँजीवादी मनोवृतिक उद्घाटन कएल अछि। अपन परिश्रमक बोनि मँगबाक फल राम किसान कें भेटैछ जे ओकर डीह पर धर्म रत्नाकर बाबू साहेब हर जोतबा दैत छथि। राम किसनक स्पष्टता-'हमरा लटर-पटर नै आबैए। हम दू वर्ष सँ एकरा पोसने छी। कते दिक्कम-सिक्कम सहलौ मगर बेचलौं ने जँ शुद्ध औते तँ दाम देत। से जें लेबाक हुए तँ जँ दू गोटे कहै से दाम दिय' खस्सी लए जाउ'[7] रामकिसनक कथन वाराहिलक मूँहे सूति बाबू साहेब कें लेसि दैत छनि। तात्कालिक व्यवस्था मे रैयत कोना तबाह छल, मालगुजारी, चौकीदारी आ ओहि पर बहुबेटीक केहन दुर्गति होइत छलैक तकर यथार्थ रूप 'धर्म रत्नाकर' मे उद्घाटित भेल अछि। शोषितक क नेता रामकृष्ण झा कें काटि आ

विरोधक प्रत्येक साक्ष्य कें नष्ट कए थानाकें मिला, कोना राज चलाओल जाइत छल तकरो रूप स्पष्ट भए जाइछ। संगहि, रामकिसना आ रामकृष्ण झा क हत्या सँ तत्काल दबल विरोधक आगि तरेतर कोना सुनगि रहल छल ताहू स्थितिक प्रभावी अभिव्यक्ति भेल भेटैछ। किरणक सम्पूर्ण कथा साहित्य यथार्थक धरती पर सदृढ़ अछि। फलतः अपन चारूकात पसरल दीन-दुखीक समस्याकें जन बोनिहारक समस्याकें ओकर अन्तरक हाहाकार कें आशा-निराशा कें आ संघर्षशीलता कें अपन साहित्यक प्रेरणा स्रोत बनाओल अछि। चारूकात पसरल कथ्य कें अपन विशिष्ट शैली मे दारल अछि। ऐही लेल कल्पनाक उड़ान आ विजातीय परिवेशक संस्कार हिनक कथामे नहि भेटैछ। अपितु भेटैछ सदिखन अपने टोल-पड़ोसक मानवीय समस्याक ब्रभावशाली अभिव्यक्ति आ अपने धरतीक सोहनगर महमही आ ओकरे आशा-आकांक्षाक संतुलित टिपकारी।

तँ, जखने कल्पनाक मचकी पर आस लगैछ, यथार्थ सँ सरोकार छूटि जाइछ, एक विस्फोट होइछ। परिवार आ समाजक दुख दैन्यक करुण रूप नाचि उठैछ। आँखि खूजि जाइछ आ देखैछ जाड़क पाला मे ठिठुरैत नाङट नेना कें, लज्जा-झँपबा लेल व्याकुल तरुणी कें आ भूखे अहुँछिया कटैत स्कूलक फीस लेल बाबू भैयाक दरबजा पर दौड़ करैत देशक भविष्य कें। बेरहटक बेर मे थुर्री लताम चिबबैत पिताक प्रश्नक उत्तर मे पुत्रक विवशता 'पनपिआइ की करितौं' कते यथार्थ अछि, कतेक आत्मीय संवेदनाक संग अछि देखल जा सकैछ। इएह थिक किरणक साहित्यक मूल स्वर, इएह थिक किरणक जीवन मूल्य, इएह थिक किरण दैनिक जीवन आ इएह थिक भूखल नाङटक प्रति किरणक संवेदना सन्देश।

मि मि० मइ - १९७७

मैथिली उपन्यासक आलोक मे 'चन्द्रग्रहणक' नारी पात्र

काञ्चीनाथ झा 'किरणक' कथा साहित्यक नारी पात्रक अन्वेषण आ चरित्रगत वैशिष्ट्यक निर्धारण

लेल 'चन्द्रग्रहणक' अतिरिक्त 'कथा किरण' मे संगृहीत कथाक नारी पात्र आधारभूत सामग्रीक रूपमे उपलब्ध होइत अछि। ओहि नारी पात्र मे प्रमुख अछि रजनी आ सुषमा (चन्द्रग्रहण-१९३२), करुणा (करुणा-१९३७), राधा (काल ककरो नहि छोड़त, १९३९), मधुरमनि (मधुरमनि-१९६२), मैया (धरती कतहु काक बंझाहोथि-१९६४), मैलामवाली, समधिनि, पुतहु (अभिनव उत्तरा-१९८८) रूपा, बूढ़ी पण्डिताइन, इंजिनियरक पत्नी (रूपा-१९८८)। प्रथम नारी पात्रक सर्जना किरणजी १९३२ मे कएलनि तँ अन्तिम नारीपात्रक सर्जना १९८८ मे। किरणजीक रचनात्मक सक्रियताक अवधि छह दशकक होइतहुँ, कारण जे कोनो रहल होइक, कथा साहित्यक परिणामे अत्यल्प अछि। ओहूमे सभ कथामे नारी पात्र अछिओ नहि। ओही अत्यल्प आ अतिक्षीण कथा साहित्यमे अछि 'चन्द्रग्रहण' जकर मुख्य नारी पात्र रजनी आ सुषमा थिक। एहि दूनू पात्रक चरित्र निर्माण मे किरण जी अपन परिवेशकें कतेक गिलेवा लगाओल अछि, किरणजीक जीवनदर्शक ओकतेक अनुरूप अछि, से विवेचनीय अछि। किन्तु ओहिठाम धरि

पहुँचबा लेल 'चन्द्रग्रहण'क पूर्वक उपन्यासक नारी पात्रक गुणात्मकताक अन्वेषण आ विश्लेषण अपेक्षित अछि।

गत शताब्दीक पूर्वार्द्धसँ अखिल भारतीय स्तर पर समाज सुधारक लोकनि भारतीय चेतना मे नारी उद्धारक प्रति संचार अनबाक प्रयास शुरु कए देने छलाह। ओकर किछु-किछु धाह मिथिलाक कठोर आ पारंपरिक समाज पर, जे गार्गी, मैत्रेयों, लखिमा आदि विदुषी महिला लोकनिक नाम मात्र लेबे धरि अपन कर्त्तव्यक इतिश्री बूझि लेने छलाह, पड़य लागल। यद्यपि समाजक पैघ वर्गक नारी कें शिक्षित करब सामाजिक, धार्मिक अंधविश्वास सँ मुक्ति देब तथा समाजमे प्रतिष्ठा देबाकें अपन पाण्डित्य आ प्रतिष्ठाक प्रतिकूल मानि लेने छलाह, किन्तु समाज मे एक एहनो वर्ग छल जे देशक आन भाग मे चलैत समाज सुधारक प्रति संवेदनशील आ साकांक्ष भए गेल छल। तें, समाज सुधारक धाह सँ बचबाक प्रयास कएलोपर मिथिलाक समाजकें किछुने किछु धाह लगबे कएल। परिणामतः नारी उद्धारक समस्या समिति आ साहित्य चिन्तन क विषय होमय लगाल।

सभसँ विषम समस्या छल शिक्षाक अभाव। ई सत्य जे स्त्री समाज अशिक्षित छल, निरक्षर छल, तखन ओकर प्रसंग लिखल साहित्यक कोन प्रयोजन। जे पढ़ि नहि सकैछ तकरा लेल पोथी पतराक कोन महत्व? की उपादेयता? किन्तु, ओहि लेखन आ विचारक प्रभाव पड़ल। परिवार आ समाजक सूत्र छल पुरुष वर्गक हाथ मे। ओ जखन नारी शिक्षाक महत्वसँ परिचित भेल तँ नारी समाजक उद्धारक प्रति पूर्वहि जकाँ असहिष्णु नहि रहल। ई बोध विकसित भेल जे जाबत धरि अर्द्धांगिनी शिक्षित नहि होएतीह, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर समृद्धिक कामनाक पूर्त्ति असम्भव रहत।

'चन्द्रग्रहण'क पूर्वक चारिटा उपन्यास 'रामेश्वर' (पंडित जीवछ मिश्र) 'निर्दयी सासु' एवं 'पुनर्विवाह' (जनार्दन झा 'जनसीदन') तथा 'सुमति' (रासबिहारी लाल देस) अछि। 'रामेश्वरक' पार्वती अशिक्षित आ पति परायणा अछि। जखन रामेश्वर पुलिसक हाथ सँ पुत्र आ पत्नीक मोह मे पड़ा कए घर अबैत अछि तथा पत्नी आ नायवक अनुचित संबंधक धारणा बनाय पार्वति कें लांछित करैत पुनः बन्दी होएबा लेल चल जाइत अछि तँ ओ जीवन त्यागक उद्देश्य सँ नदी मे कूदि पड़ैछ। ओ बिसरि जाइत अछि जे ओकर गरीबी ओकर पतिकें ओहन काज करबा लेल वाध्य कए देलक अछि जे लोक सामान्य स्थितिमे नहि कए सकैत अछि। ओ इहो बिसरि जाइत अछि जे एकटा छोट पुत्र सेहो छैक। पार्वती अपन पतिक आँखिमे अपनाकें ततेक गेल गुजरल मानि लैत अछि जे संघर्षक बाट छोड़ि पलायनवादी बनि जाइत अछि। ई पलायनवादिता अशिक्षाजन्य अछि। अपन दायित्वक प्रति सजगताक अभावक कारणें अछि। उपन्यासकार जीवछ मिश्र अशिक्षित पार्वतीक एहि पलायनवादी प्रवृत्तिकें प्रायः मिथिलाक सभ नारी पात्र मे देखैत छलाह। आ तें चारित्रिक दौर्बल्यकें समक्ष अनबा लेल पार्वती सन चरित्रक निर्माण कएने होथि, से संभव प्रतीत होइत अछि।

'निर्दयी सासु' स्त्री प्रधान रचना थिक। अनूपरानी एक अशिक्षित क्रूर आ चिरचिराहि सासु छथि। पति आ पुत्र पर पूर्ण अधिकार छनि। ओ सभ अनूपरानीक मनक प्रतिकूल ने किछु

वाजि सकैत छथि आने किछु कए सकैत छथि। अनूपरानीक अतिरिक्त आओरो पाँच गोटे छथि- शारदा, शारदाक माय, सीतानाथ क पीसी, सीतानाथक बहिन आ विधकरी। एहि मे मात्र शारदा पढ़लि अछि। 'पुनर्विवाह' मे आवेसरानी सुघर गृहणी छथि। किन्तु, अकारणहि काल कवलित भए जाइत छथि। हुनक छोट दिआदनी जयनाथक पत्नी अरलूरि आ कंजूस छथि। विशेषपानीक दबाइ विर्रो मे खर्च पर आँखि लगैत छनि। पत्नीक मृत्युक वाद भवनाथ विशेषरानीक समक्ष लेने शपथकें विसरि पार्वतीक संग विवाह करैत छथि। पार्वती यद्यपि पढ़लि अछि, किन्तु सतौतकें पढ़ाएब नहि चाहैत अछि। जनसदनजीक दूनू उपन्यासमे मात्र शारदा आ पार्वती साक्षर अछि। किन्तु उपन्यासकार शिक्षाजन्म चरित्रक विकास नहि कएल अछि। शारदा तँ एको शब्द वजितो नहि अछि। मौन भए सासु ननदिक अत्याचार सहैत रहैत अछि यदि शारदा कौखन किछु पढ़ैत अछि तँ ननदि मायसँ सिकाइत करैत अछि। पार्वतीक चित्रण पारंपरिक सतमायक रूपमे कएल अछि। ओकरा चिन्ता छैक जे सतौत कही मुद्दइ भए नहि ठाढ़ भए जाए। एहिसँ इएह स्पष्ट होइत अछि जे जनसदीनजीक दृष्टि शिक्षक महत्वकें देखायब नहि छल। शिक्षासँ प्राप्त चारित्रिक गुणकें प्रकाशित कए समाजक समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करब नहि छल। अपितु विवाह संबंधी जे दुर्गुणं समाजमे व्याप्त छल, तकरा प्रकाशमे आनब छल। वैवाहिक समस्या दिस लोककें आकृष्ट करब छल।

कथ्य ओ उपन्यासकारक रचनाक दृष्टिक हिसावे सबसँ फूट अछि 'सुमति'। 'सुमति' मे यद्यपि समस्या वैवाहिके अछि। विवाह आदिक अवसर पर होइत फाजूल खर्चक कारण होइत पराभव चित्रित अछि। किन्तु शिक्षा सँ कोना समाजकँ दुर्गुण मुक्त कएल जा सकैछ, कोना लसकल घरकें आर्थिक रूपे सुदृढ़ कएल जा सकैछ से उपन्यासकार बुझा देलनि अछि।' 'सुमति' मे सुमतिक अतिरिक्त जेठरानी (सुमतिक सासु) कौशल्या कुमारि (धांइ ठाकुरक पत्नी) मृदु भाषिणी (सुमतिक देआदनी), हितबादनी देवी आ प्रियम्बदा पण्डाइनि (सुमतिक सखि), कसमसिया (खवासिनी) अछि। सहलोला बाबूक पत्नी जेठरानी देवी अपन कोरपोच्छू बेटाक विवाह खूब धूम धामसँ करए चाहैत छथि। यद्यपि टाका नहि छनि। आँ टाकाक स्रोत ऋणों मानैत छथि। ओ एहि प्रसंग बजैत छथि-'ऋणदाता मित्र मौजूदे छथिन दश-पाँच हजार हुनकहि सौं हथफेर वा ऋण लए लेथु। आगाँ पाछाँ, दश-पाँच सघैत वघैत रहतैन्ह। सोनमा हमर कोर पोच्छू थिक। एकर विवाह सभसौं विशेष रूपें कय देथुन्ह। धन सम्पत्ति आब रखबे करताह कोन दिन लेल।' धाँइ ठाकुरक पत्नी कौशल्या कुमारि पति कें चेतबैत अछि-'कागज पत्तर खूब पक्का-शक्का करा लेब आ तखन रुपैया दोस्त कें देबैन्हि।'

मंजु भाषिणी सुमतिकें नारीधर्मक शिक्षा दैत छथि। आदर्श नारी बनबैत अछि। सुशिक्षिता सुमति सासुर पहुँचितहि सासुरक खसैत घरकें अपन बुद्धि आ कौशल सँ थाम्हि लैत अछि। बोहाएल सम्पति आपिस करा लैत अछि। पति कें दास वृत्ति सँ मुक्त करैत अछि। जौत आ पुत्रकें पढ़बैत अछि। विवाह आदिक अवसर पर अपव्यय कें रोककालेल नियम बनबैत अछि। एहि प्रकार कें सिशिक्षित सुमति परिवार आ समाजक हितमे अपन शिक्षक उपयोग करैत अछि।

रासविहारी लाल दास 'सुमति'क भूमिका मे अपन लक्ष्यकें स्पष्ट करैत लिखने छथि

'हमरा सभक आधुनिक सामाजिक दशा परम अधोगति कें प्राप्त भए चलल अछि तें एहि वेर मिथिले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यास रचू, जाहि सौं समाज पर प्रचुर प्रभाव पड़ैक।' समाज पर 'सुमतिक' की प्रभाव पड़ल, से तँ अनुसंधानक विषय थिक किन्तु उपन्यासकार क लक्ष्य उपन्यासमे निश्चित रूपें सुफलित भेल अछि।

तेसर दशकक अन्त-अन्त होइतरचनात्मक चेतना सामाजिक क्षेत्रहि धरि सीमित नहि रहि राष्ट्रपिता
महात्मा गाँधीक नेतृत्व मे चलि रहल स्वाधीनता संग्रामक उष्णतासँ अभिभूत होमए लागल। अंग्रेजी सरकारक विभेद-नीतिक प्रभाव सामान्य लोकक जीवनयापन, सामाजिक, धार्मिक क्रियाकलाप पर पड़ब शुरु भए गेल। एही पृष्ठभूमि मे 'चन्द्रग्रहण' लिखाएल। 'चन्द्रग्रहण' लिखबाक कारणकें स्पष्ट करैत किरण जी कहने छथि 'ओहि समय तक ब्रिटिश सरकारक डिवाइड एन्ड रूल'क नीति वेश सफल भए गेल छलै। मुस्लिम सम्प्रदाय कें खूब सनका देने छल। जेना तेना अपन संख्या बढ़ाएब ओ सभ लक्ष्य बना लेने छल। अपहरण कए धर्म परिवर्त्तन करबैत छैल। स्त्रीगणक अपहरण वेशी होइत छलैक। एहिसँ जल संख्या तँ बढ़ितें छलैक, वासनाक तृप्तिओ होइत छलैक। मेला अथवा भीड़ आदिसँ अपहरण बेसी सुविधगर छलैक। ई समस्या ततेक सामान्य आ दारुण छलैक जे हमरा आकर्षित कएलक। तें एहि समस्या सँ परिचित आ प्रतिकार लेल 'चन्द्रग्रहणक' रचना हम "मैथिली सुधाकर" हेतु कएल।'[1] 'चन्द्रग्रहण' मे ओना मुख्यतः दू टा नारी पात्र अछि। किन्तु गप्प शुरु होइत अछि सोनमाक माय सँ जे अपन ससुरक वरखीक दिन तकेबा लेल भुल्लूबाबूक ओहिठाम भोरे-भोरे पहुँचि जाइत अछि। रजनी थिक भुल्लू बाबूक कन्या। ओएह अपन सखि गंगाजली अथवा सुषमा कें कहि अबैत अछि जे एहि बेर देखबाक योग्य मेला होएतैक। रजनी चाहैछ मेला लेल संगी जाहिसँ घाड़ाजोरी कए मेलाक आनन्द लए सकय। ओएह सुषमाकें सिखबैत अछि। विचार दैत छैक जाहिसँ माय-बाप मेला लए चलबा लेल तैयार भए सकथि। अपहरणक कारण रजनीए बनैत अछि। ओकर बाडस सासुरो मे नहि होइत छैक। मेला घूमबाक ततेक सौख छैक, जनकपुर जएबा लेल पतिकें वाध्य कए, दैत अछि। ओतय कर्णफूलक संगे कानो फरा जाइत छैक। स्वभावसँ अकच्छ भे रजनीकें पति नैहर विदा कए दोसर विवाह कए लैत छथि। एहि प्रकारे रजनीक चरित्र कें नामक अनुरूप किरणजी गढ़ल अछि।

सुषमा देवन बाबूक एक मात्र कन्या आ हुनक समस्त स्नेह सम्पत्तिक अधिकारिणी अछि। ओ शुद्धा अछि। स्वभावमे सरलता छैक। वचनमे सधुरता छैक। अन्तःकरणसँ निर्मल अछि। किन्तु जिद्दी आ रूसनी सेहो अछि। तें जखन कथनानुसार ओ रूसि रहैत अछि तँ देबनबाबू दुलारक समक्ष हारि सिमिरिया जएबा लेल तैयारी करए लगैत छथि। किन्तु ठेस लगला पर ओकरा अपन गलतीक बोध होइत छैक आ सुखमय जीवनक मार्ग पर अग्रसर होइत अछि।

प्रश्न उठैत अछि जे किरण जी चन्द्रग्रहणक अवसर पर गंगा डूब देबाक लोक मानस मे बैसल महत्वकें किएक छूलनि तथा पंडितजीक बेटीक अपहरण किएक कराओल? हमरा जनैत

ई निरुद्देश्य नहि अछि। एहन धार्मिक विश्वास जनमानस मे पसरल अछि जे सर्वग्रासक अवसर पर गंगा नहेला पर लोक पुण्यक भागी होइछ। ओकर पाप विमोचन भए जाइत छैक। किन्तु, ओहि अवसर पर जे लूटपाट होइत अछि तकरा धर्महिक फेर कहि लोक मोन मारि लैत अछि। एहि प्रकारक अवसर पर लागल मेला मे असामाजिक तत्व, धर्मार्थी महिला लोकनिक अपहरण नहि करय एवं हुनक अभिभावक लोकनि सतर्क रहथि संगहि धार्मिक अन्धविश्वास पर चोट करबाक, उद्देश्य सँ चन्द्रग्रहणक अवसरक उपयोग कएने होथि। ग्रहण लागब, नीक अर्थक बोधो नहि करबैत अछि।

एकटा और प्रश्न अछि-उपन्यासकारकें नारीक अपहरण द्वारा जखनि समाजकें शिक्षित करबाक छलनि तखन ओ पंडितेजीक बेटीक अपहरण विधर्मीक हाथें किएक कराओल। ओ ककरो बेटी भए सकैत छलि? इहो नियोजन सोद्देश्यपूर्ण अछि। धार्मिक अंधविश्वासक जड़ि थिकथि दक्षिणा कामी पंडित वर्ग। ओ लोकनि सामान्य सँ सामान्य प्राकृतिक घटना पर धार्मिक लेप चढ़ाय अपन काजसुतारैत अएलाह अछि। ओ वर्ग नहि चाहैत अछि जे धार्मिक अन्धविश्वासक खंडन होअए। चन्द्रग्रहण मे सभक नहि भूल्लर बाबूक उद्‌गार थिक। ओएह कहैत छथि जे एहि वेर देखैक योग्य मेला होएत। जँ ओही क्षण भुल्लरबाबू मेला आदिक अवसर पर होइत दुराचारसँ सतर्क कए देने रहितथि तँ हुनक बेटी अतेक कूद-फान नहि करैत। तें पंडितक बेटीक अपहरण
कराएब आवश्यक छल जाहिसँ पंडित वर्ग धार्मिक अंधविश्वासक कुपरिणामसँ स्वयं परिचित भए सकथि।

किरणजी एहि उपन्यासमे ओहि दूनू स्थिति पर प्रहार कएने छलाह। विड़नीक छत्ता कें खोंचारने छलाह। से बिना बिन्हने कोना रहैत? परंच ओ ओकर डंक सहैत रहलाह। तथापि अपन विचार नहि बदलल। 'चन्द्रग्रहण' क प्रकाशनक वाद किरणजीकें कोना गोलिएबाक प्रयास पंडित वर्ग द्वारा भेल तकर स्पष्ट करैत ओ कहने छथि-"प्रतिक्रिया तेहन छलैक जे एक व्यक्ति, आब मैथिलीक प्रतिष्ठित ओ साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत साहित्यकार कहलथिन जे ई घटना किरणजीक संग घटल अछिहल। एहि प्रतिक्रिया मे निर्मूल करबाक लेल 'चन्द्रग्रहण' कें हम जेना-तेना छपबा देल। प्रकाशनक वाद तँ पण्डित लोकनि नराज भए गेलाह। हमरा धर्म-विरोधी घोषित कए जाति वहिष्कृत करबाक धमकी देल गेल अन्तमे हमरा सफाइ देबय पड़ल जे 'चन्द्रग्रहण' धर्म विरोधी नहि विधर्मी द्वारा हिन्दू नारीक कएल जाइत अपहरणकें रोकबाक प्रयास थिक।' [2]

महत्वपूर्ण ई नहि अछि जे किरण जी पण्डित वर्गक समक्ष किएक सफाइ देलनि। महत्वपूर्ण ई अछि जे ओ पंडितक घरसँ एक ओहन नारी पात्रकें तकलनि जे मेला-ठेला मे जाए अपहृत भे गेलो पर शिक्षा नहि पबैत अछि। ई ओहन पंडित वर्ग थिक जकर समस्त उपदेश अनके लेल होइक छैक। एहन चरित्रक निर्माण मे रचनाकारक व्यक्तित्वक आक्रामकता सहजहि देखल जा सकैत अछि।

वर्णित पाँचो उपन्यासक नारीपात्रक विश्लेषण सँ इहो स्पष्ट भए जाइत अछि जे जेना-

जेना परिवेशमे विभिन्न प्रकारक सुधारात्मक आन्दोलनात्मक चेतना प्रखर होइत गेल उपन्यासक चरित्र निर्माण मे तकर प्रभाव पड़ैत रहल। 'चन्द्रग्रहण' मे आबि नारी पात्र नव रूप ग्रहण कए लैत अछि।

आ० भा० मै० सा० प्र० १९८९

प्रो० हरिमोहन झा एवं हुनक 'चर्चरी'

'चर्चरी' नामेसँ स्पष्ट अछि जे ओ कोनो एक विधाक पोथी नहि थिक। जेना चर्चरी एकहि संग विभिन्न व्यञ्जनक सम्मिलित रूप रहितो एकटा फूटे स्वाद दैछ ओहिना प्रो० हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) द्वारा विभिन्न विधामे लिखल गेल रचनाक संग्रह 'चर्चरी' सेहो एकटा फूटे स्वाद पाठककें दैछ। 'चर्चरी' मे प्रो० झाक उत्कृष्ट रचना संगृहीत अछि।

'चर्चरी' मे विभिन्न उपखण्ड अछि। कथा उपखण्ड मे 'ग्रेजुएट पुतोहु' मर्यादाक भंग, 'ग्राम सेविका', 'परिवर्त्तन', 'युगक धर्म', 'महारानीक रहस्य' 'पाँच पात्र', सातरंगक देवी', नौ लाखक गप्प, तिरहुताम, ब्रह्माक श्राप, आ तीर्थयात्रा अछि। द्वितीय उपखण्ड मे आचाची मिश्र एवं मंडन मिश्र एकांकी अछि। तेसर उपखण्ड अछि छायारूपक, जाहि मे अछि-एहि बाटें अबै छथि सुरसरि धार, चारिम उपखण्ड अछि झाजीक चिट्ठी जाहि मे अछि संगठनक समस्या। पांचम उपखण्ड भोलाबाबाक गप्प 'दलान परक गप्प' चौपाड़ि परक गप्प आ' पोखरि परक गप्प' अछि। प्रहसन उपखण्ड मे रेलक झगड़ा अछिहल्ल। खट्टरककाक तरंग उपखण्ड मे 'पाचीन सभ्यता', दर्शन शास्त्रक रहस्य 'आ' मिथिलाक संस्कृति' अछिहल्ल।

प्रो० झा गप्प लिखल की कथा, एहि पर वेस विचार आ खण्डन मण्डन होइत रहल अछि। किछु गोटे प्रो० झाकें कथाकार रूपमे मानैत छथि तँ किछु गोटे विधाक प्रणेता एवं आचार्यक रूपमे। सुधांशु 'शेखर' चौधरी (१९२२-१९९०) प्रो० झा कें गप्प साहित्यक प्रणेता एवं आचार्य मानि लिखैत छथि 'जाहि वस्तुक आधार पर प्रो० झा पूज्य छथि, जीवित छथि चिरकालक हेतु अमर रहताह ओ थिक हिनक गप्प साहित्य' प्रो० श्रीकृष्ण मिश्र प्रो० झाक रचना मे कथातत्वक अभाव देखि गप्प साहित्यक अन्तर्गत मानैत लिखल अछि-'प्रो० झा लिखलनि 'प्रणम्यदेवता', 'खट्टर ककाक तरंग', 'चर्चरी', 'रंगशाला', एहि सभ मे कथाक अंश बड़ कम अछि। हमरा जनैत ई सभ ने कथा थिक आ ने निबन्ध। ई वास्तव मे गप्प थिक जकरा हरिमोहन बाबू अपन प्रतिभा क वले एक नव साहित्य विद्या (genre) रूप मे प्रचलित कयलनि। हिनक 'चूड़ा दही चीनी' वा अलंकार शिक्षाकें कथा कहब समुचित नहि बूझना जाइछ। ई रोचक गप्प थिक। ओना जं किछु लिखब सँ ओहि मे सूक्ष्मो रूप मे कथावस्तु, चरित्र चित्रण,

घटना वार्तालाप विचार सभ रहबे करतैक, किन्तु 'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति' एहि नियम सँ हरिमोहन बाबूक अधिकांश रचना गप्प प्रधान अछि।[२] प्रो० आनन्द मिश्र सेहो प्रो० हरिमोहन झाक कथाकें कथा सँ बेशी गप्प मानल अछि-'हुनक कथा कथा सँ वेशी गप्प अछि वेस चहटकार तिक्त, कषाय आदि सभसँ युक्त, कोनो चरित्र जावत धरि अतिशय नहि करताह तावत संतोषे नहि होइनि'।[३]

परंच डा० जयकान्त मिश्र चर्चरीक एहि कोटिक रचनाकें कथा मानैत छथि :- 'Carcari revealed him to be even more successful as a short story writer than as a novelist.

प्रो० झा एहि रचना सभकें कथा साहित्यक अन्तर्गत मानैत लिखत छथि जे हमर कथा साहित्यक तेसर मोड़ 'खट्टर ककासँ प्रारम्भ होइछ।" परंच कथा विद्या लेल आवश्यक तत्व जखन प्रो० झाक रचना मे तकैत छी जकरा ओ कथा साहित्यक अन्तर्गत मानल अचि तँ ओ कथाक अनुरूप नहि भेटैछ। ओहि दृष्टिसँ बड़ कम रचना अछि जकरा कथाक रुपमे अलोचि विश्लेषित कए जा सकैछ। इएह स्थिति 'चर्चरी' क रचनाक संग अछि। किछु कें बेराक "कथाक रूप मे आ शेष कें गप्प साहित्यक रुपमे देखबे विशेष श्रेयस्कर होएत।

प्रो० झा भारतीय वाङमयक प्रखर सर्जनात्मक क्षमता सम्पन्न रचनाकार छथि। एहन प्रखर क्षमता सम्पन्न रचनाकार लेल बहुत स्वाभाविक छैक जे ओकर अभिव्यक्तिक वहन करबाक क्षमता कोनो प्रचलित विधाकें नहि होअए। तखन ओ जे लिखैछ से कालक्रमे स्वतः एकटा नव विद्याक जन्म दए दैछ। ई तँ निर्विवाद अछि जे प्रो० झा पहिल मैथिल रचनाकार थिकहु ओ अपन रचना सँ अधिकाधिक पाठकक निर्माण कएल। हिनक रचनाक पाठकक एकटा पैघ समुदाय तैयार भए गेल जे सदिखन प्रो० झाक रचना पढ़बा लेल उनमुनाइत रहैत छल। एकटा इहो विशेषता प्रो० झा मे छल जे ओ हास्यव्यंग्य प्रिय मैथिल संस्कारक अनुरूप अपन रचनाक धारा कें प्रवाहित राखल अपन पाठकक प्रवाहकें अवाधित रखबा लेल हास्य रसक वर्षा करैत रहलाह, पाठककें गुदगुदी लगबैत रहलाह, जाहि सँ एक स्वतंत्र विधाक, गप्प साहित्यक निर्माण भए गेल।

पूर्वहि लिखल अछि मैथिल संस्कारतः हास्य-व्यंग्य प्रिय होइछ। ओकरा ओहन कोनो सामाजिक स्थितिक मोकाविला नहि करय पड़लैक जे लोककें संघर्षशील बना दैछ। संघर्षशीलताक अभाव आ पेटक चिन्तासँ निफिकिर लोक मे गप्पक खेती वेशी होइते छैक। एही स्थितिक प्रतिफल थिक जे एक सँ एक गप्पी मैथिल समाज मे होइत रहलाह अछि एहन गप्पीक उपस्थितिए सँ वातावरणक जड़ता समाप्त भए जाइछ। लोक कान खोलि गप्पक आनन्द लिअ लगैछ। एहन एहन गप्प सूनि दुखियाक मन बहटारल जाइछ तँ वैसल लोकक हँसी खुशी मे समय कटि जाइछ। ओ आनन्दित भए कौखन द्विगुणित उत्साह सँ अपन अपन काजो करए लगैछ। मनोरंजक क्षणक उपयोग सँ थाकल ठेहीआएल मन उत्फुल्ल भए जाइछ। प्रो० झाक गप्प साहित्य मैथिली साहित्यक पाठककें एही प्रकारक आनन्द देलक अछि। स्फूर्ति प्रदान कएलक अछि। समय

कटबाक एकटा माध्यम देलक अछि।

प्रो० झाक गप्प साहित्यक एक खास विशेषता अछि। ई ततेक रोचक आ प्रवाहपूर्ण अछि जे पाठक बिना समाप्त कयने छोड़बा लेल प्रस्तुते नहि रहैछ। हिनक गप्प परीदेशक गप्पन नहि थिक, जे गप्प ओ कहैत छथि ओ रहैछ मैथिल संस्कृतिक, मिथिलाक समाजक आ शास्त्र पुराणक। पाठकक चारू कात पसरल, अथवा घटैत घटनाक संयोजनपूर्ण विनोद आ हास्य व्यंग्ययुक्त प्रभावक शैलीमे रहैत छैक। 'चर्चरी' मे संगृहीत 'दलान परक गप्प' चौपाड़िपरक गप्प, 'घूर परक गप्प', 'पोखरि परक गप्प', प्राचीन सभ्यता "दर्शनशास्त्रक रहस्य", "मिथिलाक संस्कृति" सात रंगक देवी, 'नौ लाखक गप्प' 'महारानीक रहस्य' आदि एही शैली मे अछि।

एहि सभ गप्पक माध्यम सँ हरिमोहन बाबू पाठक-समुदायकें हँसबैत छथि। कौखन तँ ई हँसी हृदय विदारक भए जाइछ। एहि संदर्भ मे प्रो० जयदेव मिश्र (१९११-१९९१) लिखैत छथि जे समाजक जाहि अंग पर श्री हरिमोहन बाबू देखैबाक हेतु हँसैत हँसैत प्रहार करैत छथिन्ह। ओतय फोंका धरि बहार भए जाइत छैक। एही कारणें हिनक हास्य रचना समान रूपसँ सभक हेतु प्रिय नहि बनि सकलन्हि अछि। ई रचना सभ बहुत स्थल पर जीवन विषयक विषमता एवं विद्रूपताक विनोदपूर्ण अध्ययन होएबाक अपेक्षा विद्रूपता अतिरंजन मात्र प्रतीत होइत छनि। प्रो० हरिमोहन झाक हेतु सभसँ उपर्युक्त प्रसंग तखन अबैत छनि, जखन ओ भोजन अथवा धर्मचरणक प्रसंगकें लए कए लेखनी चलतैक छथि।"[४] डा० जयकान्त मिश्रक मत सेहो एही प्रकारक अछि। डा० मिश्रक मते प्रो० झाक कथा साहित्यमे हँसी तँ उड़ाओल गेल अछि किन्तु ओहि हँसीक माध्यम सँ कोनो बाट देखाइत छैक से नहि-Harimohan Jha's stories are marred by his obession of finding fault with even some of those things which form the really noble sublime and good in over culture. While he seeks to shake our confidence in their values, he does not always succeed in offering with any force other alternative values of life.[५] मे प्रो० हरिमोहन झाक सर्वोत्कृष्ट कथा 'पाँच पत्र' एहीमे संगृहीत अछि। पाँच दशकक पति-पत्नीक रागात्मक सम्न्ध, क्रमशः परिवर्तित होइत दृष्टि आ परिवारिक दायित्व बोधक जीवन्त कथा थिक 'पाँच पत्र'। ई पाँच-पत्र प्रो० झाक नहि, अपितु मैथिली कथा साहित्येक एकटा सर्वोत्तम कथा थिक। एहि 'पाँच पत्रक प्रसंग कुलानन्द मिश्र (ज० १९४०) लिखने छथि जे 'अखनोधरि एकटा कोमल आ धड़कैत आ मधुर चेतना कथा करुण आ उदास नियति बोधक कथाक रूप मे मैथिलीक अन्यतम सफल कथा थिक। एकर अन्तिम पत्रक अन्त मे पुनश्च कहिक छोड़ल पाँती जे देवकुष्ण पत्नीकें इंगित कए बेटा के लिखने छथि। अद्भुत करुणा आ व्यंग्यक बोध-मोन मे उत्पन्न कए दैछ।' [६]

'चर्चरी' मे प्रो० दू टा एकांकी संगृहीत अछि आयाश्री मिश्र एवं मंडल मिश्र। छओ दृश्य मे समाप्त 'आयाची मिश्र' एकांकी मे म० म० भवनाथ मिश्र प्रसिद्ध आयाची मिश्रक जीवन दृष्टि, शंकर मिश्रक विद्वता, अतिथि सत्कार, निर्लोभता आदिक दृश्यांकन भेल अछि। दोसर एकांकी 'मंडल मिश्र' मे शंकराचार्यक मिथिला आगमन, मंडन मिश्र सँ शास्त्रार्थ, विदूषी सरस्वती द्वारा मध्यस्थता, शंकराचार्यक सात वर्षक वाद आबि विदुषी सरस्वतीक प्रश्नक समाधान, मंडन

मिश्रक संन्यास ग्रहण करब, पत्नी द्वारा सुरेश्वाराचार्य तामकरण एवं कर्ण फूल उतारि प्रथम भिक्षा देब आदि स्थितिक दृश्यांकन कएने छथि। एहि दूनू एकांकीक माध्यम सँ प्रो० झा मिथिलाक प्राचीन सांस्कृतिक उत्कर्षकें प्रस्तुत कए समाजमे उद्‌बोधन अनबाक प्रयास कएल अछि।

प्रो० हरिमोहन झाक एहि दूनू एकांकीक ऐतिहासिक महत्व एहू लेल अछि जे मैथिली रंगमंचक इतिहास मे स्वर्गीया सुभद्रा झा मंच पर उतरलीह तथा प्रथम मैथिल महिला रंगकर्मीक रूपमे ख्याति पाओल।

'चर्चरी' मे एकटा प्रहसन संगृहीत अचि' रेलक झगड़ा?' रेलगाड़ी मे बैसवा लेल कोना कराउझ होइछ तकर एहिमे विनोदपूर्ण अछि। किन्तु, जखन पोल खुजैछ, परिचय होइछ तँ संभावित सिमाधानि आ संभावित सासु पुतहु पश्चात्ताप करैछ। सम्बन्ध स्थापित होइछ। 'रेलक झगड़ा'क प्रसंग डा० वासुकीनाथ झा लिखैत अछि जे 'रेलक झगड़ा' मे आधुनिक शिक्षाक वायुसँ कनेक सिहकल दू टा परिवारक विवाह सम्बन्ध स्थिर करबाक क्रम मे आकस्मिता कें हास्यपूर्ण अभिव्यक्ति देल गेल अछि। कन्या देखय-देखयबाक हेतु दूनू भावी समधिन एवं भावी सासु-पुतहुक बीच रेलगाड़ी मे विशिष्ट मैथिल पद्धति सँ झगड़ा होइत अछि। दूनू पक्षक परिचय खुजैत अछि। पश्चाताप प्रकट कएल जाइछ। अन्त मे वरक माए कन्या कें अंगीकार करैत छथि। विषयक दृष्टि सँ एहि मे प्रगतिशीलताक भेटैत अछि आ शिल्पक दृष्टि सँ हास्य शँ अधिक फैंटसीक तत्व विद्यामान अछि।' [७]

'झाजीक चिट्ठी' उपखण्ड मे 'संगठनक समस्या' पर सम्पादक कें पत्र लिखल गेल अछि। काज दिस कम किन्तु संस्थाक नामकरण पर विशेष घमर्थन होइछ। ओहि पर व्यंग्य कएल अछि। प्रतिकूल विचारधाराक व्यक्ति संगठनक काज मे कोना बाधा उत्पन्न करैत छथि देखाओल अछि।

'छायारूपक उपखण्ड मे' एहि बाटे अबै छथि सुरसरि धार' संगृहीत अछि। एहि छायारूपक केन्द्र थिक 'सौराठ सभा' । तिलक-दहेजक उन्मूलन करबा लेल महिला लोकनिक सक्रियताक वर्णन पाँच रील मे कएल गेल अछि। प्रथम रील मे तिलक दहेजक विरोध कएनिहार महिला उपहास्य बनैत छथि। किन्तु क्रमशः जागृति अवेत जाइछ आ पाँचम रील मे आबि स्वयंवर होइछ। तिलक दहेजक घृणित प्रथा समाप्त होइछ। प्रो० हरिमोहन झा केहन भविष्य द्रष्टा छलाह हिनक दृष्टि नारी जागरण एवं कल्याण लेल कतेक तत्पर छल, तकर ज्वलंत प्रमाण थिक' एहि वाटें अबैत सुरसरि धार, जहिया ई रूपक लिखल गेल ओहि समय मे ई असंगत छल छे 'सौराठ सभा' मे महिला लोकनिक पैर दए सकतीह। किन्तु गत किछु वर्ष मे एहि छायापूरकक पहिल रील सदस्य रहल अछि। महिल संगठन सभा मे जाए दहेजक विरोध मे बाजए लगलीह अछि। नारी जागरणक अग्रदूत प्रो० हरिमोहन झाक एहि रचनाक अन्तिम रील कहिया सत्य होएत तकर प्रतीक्षा छैक। तिलक विनाशिनी सुरसरि सौराठ मार्ग सँ तिलक दहेजक प्रथा कें कहिआ आत्मसात कए लाखो कन्याक बाप कें वलि होएबा सँ बचबैत छथि, तकर प्रतीक्षा छैक। एहि छायारूपककें कथ्य धुहिना सामाजिक एवं सभसामयिक अछि ओहिना

प्रस्तुति सेहो आकर्षक। एकर अन्त संगीतमय अछि। जे लोकक मन प्राण कें आच्छादित कएने रहैछ :-

'भागू दूर घटक पंजियार
होउ बरागत आब होशियार
आब नहि चलत तिलक रोजगार
नहि केओ टाका गनत हजार
समटू अपन हाट बाजार
एहि बाटे अबै छथि सुरसरि धार ।'

प्रो० हरिमोहन झाक कतेको उत्कृष्ट रचना 'चर्चरी' मे संगृहीत अछि। एहि उत्कृष्ट रचना कें जँ फूट सँ पढ़ल जाइछ तँ ओकर उत्कृष्टता प्रभावित करैत छैक। किन्तु 'चर्चरी' मे पड़ि ओ 'भोला वाबाक गप्प' मे तेना ने स्पंदनहीन भए गेल अचि जे ओकर स्वादक पत्ता तकलासँ लगैछ। 'चर्चरी' क प्रसंग प्रो० निगमानन्द कुमरक कहब छनि जे आइ जँ मैथिली पाठकगणक बीच 'चर्चरी' कें सेहो लोकप्रियता भेटि रहल अछि तँ ई हमरा सभक हीन दृष्टि कोणक प्रमाण दए रहल अछि। जे स्वस्थ व्यंग्य लए श्री हरिमोहन बाबू 'कन्यादान' सँ यात्रा प्रारम्भ कएलैनि बुझाइत अचि जे रस्ते मे साँझ भेल देखि दिक्भ्रमित भए गेलाह। 'प्रणम्य देवता' सन उत्कष्ट व्यंग्य ओ हास्यक खट्टमिठी दोसर नहि भेटल, मुदा 'खट्टर कका'क संग पड़ि हुनका शास्त्रार्थ मे श्रीहरिमोहन बाबू तेना ने ओझारा गेलाह जे 'चर्चरी' धरि अबैत एवा लगैत अछि जेना डुमराँव मे ट्रेनक दुर्घटना कएगेल हो, जाहि मे मात्र हल्ला अर्थात गप्प आर ठहाकाक किछ वूझाइत अछिये नहि साहित्य सँ दूर रहि साहित्य कें समय कटबाक साधन बूझि जे लोकनिक 'भोलाबाबाक' चौपाड़िक सक्रिय सदस्य छथि, तनिके मन मोहिनी छथिन्ह 'चर्चरीदाइ'।[८]

प्रो० हरिमोहन झाक रचनाक मूलस्वर समाजोन्मुख आ उद्वोधनात्मक अछि। परंच ई समाजोन्मुखता व्यापक नहि अछि। किछु निश्चित निर्धारित क्षेत्र अछि, जाहि पर कलम उठबैत रहलाह अछि। प्रवरकए हँसबैत रहलाह अछि। तें प्रो० झाक समाजोन्मुखताक तात्पर्य ई नहि जे समाज मे व्याप्त विषमता आ शोषणपर प्रहार कएल अछि। समाजोन्मुखताक मतलब ई नहि, जे समाज मे व्याप्त आर्थिक दुःस्थिति जन्य विसंगतिक अभिव्यक्ति कएल अछि, प्रो० हरिमोहन झाक समाजोन्मुखताक मतलब नहि जे ओ समाजक ओहि वर्गक समाजिक स्थिति अथवा राजनीतिक स्थितिकें स्वर देल अछि धन जे युग-युग सँ सुविधाभोगी वर्ग आ धान्य पूर्ण व्यक्तिक पैर तर पिचातल रहल अछि। समाजोन्मुखताक मतलताई नहि जे हिनक रचना ओहि सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्ति थिक जाहि मे भूखक ज्वाला मे झरकल, शोषण, उत्पीड़न, सम्बन्धवाद, राजनीतिक सुतार नीतिक जाल मे फसल लोक किछु कए जयबा लेल विवश भए जाइछ। अपितु हरिमोहन बाबूक रचना मे विधि-व्यवहार, शास्त्रीय मान्यता, मैथिली भाषा आ संसस्कृतिक मैथिले द्वारा उपेक्षा अथवा ओकर विकासक प्रति अन्यमनस्कताक अभिव्यक्ति विशेष रुचिपूर्णक भेल अछि। तें अधिकांश रचना पढ़ला पर विचारक उन्मेष नहि होइछ। पाठक अभिप्रेत पर

सोचबा लेल प्रेरित नहि होइछ। वैचारिक मंथन नहि होइछ। अपितु अधिकांश रचना पढला पर गुदगुदी लगैछ। कौखन व्यंग्यास्पद पर दया सेहो होइछ, परंच एक बेर हँसा गेलापर ओकर प्रभाव बिला जाइछ।

मै. अ. पत्रिका-मार्च'८४

कविवर यात्रीक स्तम्भ लेखन

मैथिलीमे पत्र-पत्रिका प्रकाशनक टू टा मूल लक्ष्य छल - मातृभाषाक सेवा तथा सामाजिक कुरीतिक निदानक लेल लोक कें अनुकाल बनाएब। एहि हेतु संबंधित विषय पर विभिन्न विद्वानक लेख, विचार अदि प्रकाशित कारओल जाइत छल। सुधी आ विचारवान पाठकक तर्क ओ टीकाटिप्पणी आमंत्रित कए, प्रकाशित होइत छल। एहि सँ लेखक आ पाठकक बीच संवाद सूत्र स्थापनाक श्रीगणेश भेल। एकहि विषय पर अनेक व्यक्तिक विचार अएलासँ रोचकता आ संलग्नता बढ़ल। ई पत्र-पत्रिकाक प्रचार-प्रसार मे सहायक भेलैक। एहिसँ एकटा आओरो लाभ भेल कतेको पत्र लेखक पाठक बाद मे लेखक भए गेलाह। पाठकक प्रतिक्रिया छपबा लेल सम्पादक लोकनि अपन पत्रमे स्थान सुरक्षित कएल। एकटा शीर्षक देल। जाहि शीर्षकक अन्तर्गत लेखक आ पाठकक बीच संवाद-सूत्र स्थापित भेल नाम पड़ल..... 'फल्लाँ बाबूक पत्र (आरम्भ मे पत्र लेखकक नाम शीर्षक रूप मे भेटल अछि)', चिट्ठी-पत्री 'पाठकीय मंच', 'पाठकीय प्रतिक्रिया', अथवा 'पाठकीय स्तम्भ'। एहि प्रकारें पत्र-पत्रिकामे शुरु भेल पहिल स्तम्भ 'पाठकीय स्तम्भ' मानल जा सकैछ।

पाठकीय स्तम्भक माध्यमे विविध व्यंजन परसबाक अनुरोध होमय लागल। पाठकक रुचि विकसित
भेल। युग जीवनक प्रयोजन बढ़ल आ बदलल। सम्पादक अनुभव कएल पाठकक रूचि बदलि रहल अछि, विकसित भए रहल अछि। पत्र-पत्रिकाक आधार पाठके थिकाह तें वेशीसँ वेशी पाठक वर्गकें अपन पत्रिका दिस आकृष्ट करब, विभिन्न रूचिक आ रोचक सामग्री छापब, आवश्यक।'

शिक्षाक विकासक संग अक्षर ज्ञाताक संख्या बढ़ल। पाठकक संख्या बढ़ल। गुणात्मक परिवर्तन आएल। गैर साहित्यिक पत्रिका प्रकाशनक आवश्यकता भेल। पत्र-पत्रिका केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति आ ज्ञान वृद्धिए लेल नहि शुद्ध मनोरंजनक हेतु सेहो छपय लागल। अर्थात् जाहि पाठकक रूचि जेहने हो, ओ ओही प्रकारक सामग्री पढ़थि। एहिसँ एक 'चलता पाठक'क निर्माण भेल। अहिवर्गक पाठक समय कटबा लेल, किछु पढय चाहैछ, भलहि पत्रिकामे प्रकाशित तारिकाक अंग दर्शने। बाट गुजरि जाइत होनि। तात्पर्य जे जहिना पाठकक संख्या पढ़ल अछि, ओहिना रूचि भिन्नता सेहो। ई सभ देखि, विभिन्न रूचिक पाठकक रूचि कें देखि, पत्र-पत्रिकामे ओहना स्तम्भ देल जाए लागल जकर महत्त्व तात्कालिक वा क्षणिक रहैत

अछि।

प्रकाशनक आवधिकता पर स्तम्भक विषय वस्तु सेहो निर्भर करैत अछि। दैनिक पत्रक स्तम्भ आ वार्षिक अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक पत्रिकाक स्तम्भमे गुणात्मक अन्तर अछि। तें, पत्र-पत्रिकाक स्तम्भ आ विषय वस्तुक चयन ओकर आवधिकता पर सेहो निर्णर करैत अछि।

स्तम्भक स्वरूप निर्धारित करबामे पत्र-पत्रिकाक स्वरूप अर्थात् ओकर, दृष्टि की छैक, कोन प्रकारक विषय वस्तु छपैत अछि पर निर्भर करैछ। राजनीतिक पत्र-पत्रिका मे साहित्यिक-सांस्कृतिक स्तम्भक कोनो औचित्य नहि छैक। ओहिना जँ धार्मिक-आध्यात्मिक पत्रमे राजनीतिक गतिविधि आ नेताक छल प्रपंचक प्रसंग स्तम्भ हो तँ ओ एकदम्मे अरूचिकार होएत। तें, पत्र-पत्रिकाक स्तम्भ आ विषय चयन प्रकाशनक आवधिकता, सम्पादकक दृष्टि, पत्र-पत्रिकाक स्वरूप ओ उद्देश्य पर आधारित अछि। पत्र-पत्रिका लेल स्थायी स्तम्भ कतेक प्रयोजनीय भए गेल अछि, से एही सँ देखल जा सकैछ जे खेल धूपसँ पूआ-पकवान धरि स्थायी-अस्थायी स्तम्भ पत्रिकामे भेटैत रहत। सम्पादक वा प्रकाशकक व्यावसायिक दृष्टि अपन प्रकाशन कें एकरस बनाएब अव्यवहारिक मानैछ। तें, जाहिपाठक कें जेहन वस्तु रूचनि-पचनि सएह पढ़बा लेल पत्रिका कीनथि। अनेक प्रकारक स्तम्भक पाछू प्रायः दृष्टि रहैछ। पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन अवधि कें ध्यानमे राखि स्तम्भ निर्धारित करबासँ कम महत्वपूर्ण, विषय आ स्तम्भ लेखकक चयन नहि अछि। तात्पर्य जे निर्धारित स्तम्भ लेल ओहने व्यक्तिक चयन होएबाक चाही, जाहि व्यक्ति मे ओहि स्तम्भक विषय मे रूचि होनि, नवीनतम स्थितिसँ परिचि रहथि तथा प्रतिपादन शैली ओ भाषा ललितगर हो। जेना केओ खेलकूद वा क्रीड़ा जगतक स्तम्भ लेल लिखथि तँ ई नितान्त आवश्यक जे स्तम्भकार क्रीड़ा जगतक अद्यतन स्थितिसँ भिज्ञ रहथि। ओहिना दैनिक पत्रक स्तंभकार कें देश-विदेशक प्रत्येक क्षणक स्थितिक लेखा-जोखाक टटका ज्ञान रहब आवश्यक अछि। अन्यथा ओहि स्तंभक प्रति पाठककें अरूचि भए जएतैक।

पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन सांघातिक रूप सँ व्यावसायिक भेल जा रहल अछि। एहि व्यवसायिकता कारणें स्तम्भ लेखकक चयन मे विषयजन्य प्रवीणता नहि देखि, खोरिस देबाक नीति सेहो काज करैत छैक। परंच, एहि वर्गक व्यक्तिसँ लिखाएल स्तंभ पाठकवर्ग कें मात्र एक खानापूर्तिसन लगैत छैक।

स्तम्भ लेखनक प्रसंग पूर्व कथिन स्थितिसँ भिन्नो स्थिति संभावित अछि। जखन कोनो पत्र वा पत्रिका अपन प्रकाशन लेल अपना क्षेत्रक ख्यातनाम विद्वान अथवा लेखक कें एक स्तम्भक अन्तर्गत नियमित रूप सँ लिखैत रहबालेल मना लैत अछि। एहि सँ पत्र-पत्रिकाक प्रति पाठक वर्ग आकृष्ट होइछ। ओकर तत्काल प्रभाव पत्रिकाक प्रचार-प्रसार पर पड़ैत छैक। वैध्यनाथ मिश्र 'यात्री' (ज० १९११) मैथिलीक एही कोटिक स्तम्भ
लेखक छथि। जाहि कोनो पत्रिका मे यात्रीजी स्तम्भलेखन कएने छथि गरिमा बढ़ि गेल छैक।

लेखकक अनुसार स्तम्भलेखन दू प्रकारक भए सकैछ-एकजना आ बहुजना। एकजना स्तम्भ ओ भेल जकर अन्तर्गत एकहि व्यक्त नियमित रूपसँ लिखैत छथि। एहि मे दृष्टिक

समानता रहैछ। बहुजना स्तम्भक अन्तर्गत भिन्न-भिन्न लेखक एकहि शीर्षकक अन्तर्गत लिखैत छथि। 'माटि-पानि' पत्रिका मे एक स्तम्भ छल 'अछि सलाई मे आगि' जाहि मे विभिन्न लेखक अपन-अपन विचार व्यक्त करैत छलाह। एहि प्रकारक स्तम्भ मे विचारक विविधता देखल जाइछ। स्थायित्वक आधार पर स्तंभ के स्थायी आ अस्थायी मे विभाजित कएल जा सकैछ। स्थानक अनुसार देस कोस आ देश देशांतर भए सकैछ। वय वर्ग तथा लिंग भेदक अनुसार बाल जगत 'नेता-भुटकाक चौपाड़ि', 'बाल--गोपाल', 'नारी-जगत', 'घर-आंगन' अथवा 'स्त्रीगण समाज' में स्तम्भ लेखन बाँटल जा सकैछ। सूचनात्मक वा समाचार मूलक स्तम्भ कें बाजार भाव, खेलकूद, फिल्म लोक, राशिफल, टाइम-टेबुल आदि मे विभाजित कए सकैत ही। विषयक दृष्टि सँ सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि मे बांटल जा सकैछ। ओहिना प्रभावोत्पादनक दृष्टि सँ स्तम्भ लेखन हास्य-व्यंग्य प्रधान तथा विचारोत्तेजक भए सकैछ।

मैथिली मे स्तम्भ लेखनक परम्परा

पत्र-पत्रिकाक स्वरूप आ पाठकक रूचिक परिवर्तनक प्रभाव मैथिली स्तम्भ लेखन पर पड़ल अछि। पाठकीय स्तम्भसँ शुरु भए नाना प्रकारक डारिपात सँ सम्प्रति भरल पूरल देखल जा सकैछ। ओहि स्तम्भक लेखा-जोखा आ विश्लेषण आब फूट अध्ययनक विषय भए गेल अछि। तथापि पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित सूचनात्मक स्तम्भकें जँ बेरादी तँ ओहनो ओहनो स्तम्भक संख्या कम नहि छैक, जकर स्थायी आ दीर्घकालिक महत्व नहि हो। मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित स्तम्भक किछु नाम एहि प्रकारें अछि-'झाजीक पत्र' (भारती) 'किमाश्चर्यमतः परम' (विभूति) 'हमरो किछु कह दिअ तथा 'उचितरामक उचिती' (स्वदेश), बल धकेलानन्दजीक बलधिङरो, गोनू झाक चटिसार, 'बहिरा नाचय अपने तालें, ओझा लेखें गाम बताह', 'रूचय तँ सत्य नेतँफूसि' (मिथिला मिहिर), नगर रणनीति' (अग्निपत्र), 'छिटकी' (चाङुर), 'तिरपेच्छन' (फराक), धयल उसारल (हिलकोर), 'नव हस्ताक्षर' (मिथिला सौरभ), 'कहलनि पीसी (स्वाती)', प्रश् अहाँक अन्तर श्री.....क' (कोसी कुसुम), 'पावनि तिहार' 'मैथिली जगत', नन्हकी परदा (भाखा) 'पैट घाटक रेडियो' (धीयापूता) आदि। मिथिला मिहिर (साप्ताहिक)कें छोड़ि अधिकांश पत्र-पत्रिका मे स्तम्भ कारक नाम अथवा छद्यनाम मुद्रित अछि। परंच, 'मिहिर'मे स्तम्भकारक असली नामक अनुसंधानक क्रममे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', हीरानन्द शास्त्री, मार्कण्डेय प्रवासी आदि मैथिलीक ख्यातनामा लेखक वा व्यंग्यकार होइत छथि। अथवा हुनक कोनो सरोकारीक नाम रहैत अछि। 'ई नहि उचित विचार 'स्तम्भक (मिथिला मिहिर-साप्ताहिक)क अन्तर्गत श्री हीरा (हंसराज) पुस्तक समीक्षा लिखैत छलाह।

यात्रीजीक स्तम्भ लेखन

यात्रीजी (ज० १९११) कविता लिखलनि, कथा लिखलनि अथवा उपन्यास लिखलनि, से तँ सर्वज्ञात अछि। परंच, यात्रीजी कोनो कोनो पत्रिका लेल नियमित रूप सँ स्तम्भ लेखन कएल, अवश्य विस्मयकारी अछि। पर्याप्त अनुसंधानक उपरान्त तीन शीर्षकक अन्तर्गत यात्रीजीक स्तम्भ लेखन भेटल अछि। ओ थिक-'यत्र तत्र सर्वत्र' यत्किंचित 'आ चिन्तन

अनुचिन्तन'। एहिमे प्रथम वैदेही मे अन्तिम दूनू मिथिला दर्शन' मे अछि।

'यत्र तत्र सर्वत्र' वैदेहीक १९५७ क अंकसँ किछु अंक धरि प्रकाशित होइत रहल। एहि स्तम्भ कें शुरू करबाक प्रसंग 'वैदेहीक' सम्पादक लिखने छथि-'यात्रीजीक इच्छा छन्हि जे प्रतिमास एक प्रकारक टिप्पणी लिखि पठावी, तकरा हम सभ हार्दिक स्वागत करैत छी। आशा अछि पाठकके नवीन स्तम्भ प्रिय लगतन्हि।'

'यत्र तत्र सर्वत्र' क पहिल टुकड़ीक रूपमे यात्रीजी लिखने छथि-'साहित्य अकादेमीक अधिकारी लोकनि मैथिली संबंध मे एम्हर वेश उत्सुक भए गेल छथि। सङहि राजस्थानी ओ सिन्धी भाखाक दिस सेहो ओतबे तत्परतापूर्वक जिज्ञासा छइन्ह। हमरा विश्वस्त सूत्रे ज्ञात भेल अछि जे डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीकें अकाडेमीक मंत्री मैथिलीक मन्यता लए पूछने छथिन्ह। (आइ १२ मार्च थीक) १६ मार्च कें एतद्विषयक मीटिंग थिकइ) एहि तीनू भाखाक ओ साहित्यक एकहकटा इतिहास तइआर करबाकें अकादमी तकरा फेर प्रमुख भारतीय भाखा समहिये अनूदित करा लेत। ई काज अकादमीक छओ मासक भीतरे हेबालए छइ। ईभारी शुभ लक्षण थीक, हमरा लोकनिक लेल-मैथिली साहित्य परिषद, वैदेही समिति कें आब एहि दिशामे अधिकाधिक सचेष्ट हेबाक चाहिअइक.....पारस्परिक मनोमालिन्य छाड़ि साहित्यिक उपलब्धिक एकटा निष्पक्ष लेखा जोखा हमरा लोकनि कें समग्र भारतक समक्ष उपस्थित करक हैत। ई काज अब अनिवार्ये।'

'यत् किंचित' मिथिलादर्शनक जून १९५९ क अंकसँ प्रारम्भ भेल तथा (यत्र तत्र सर्वत्रहि जकाँ किछु अंक धरि चलल)। एहि स्तम्भकें प्रारम्भ करबाक प्रसंग मिथिलादर्शन क सम्पादक लिखने छथि-('ई स्तम्भ पहिने 'वैदेही') मे चालू रहइ। आब यात्रीजी कलकत्तामे छथि आ रहताह। 'मिथिला दर्शन'मे प्रतिमास ई स्तम्भ रहत। एहि स्तम्भक मतामतक लेल सम्पादक कोनो प्रकारक उत्तरदायित्व नहि लेताह।' सम्पादक टिप्पणी स्तम्भक नामक प्रसंग ठीक नहि अछि। 'वैदेहीक स्तम्भक नाम छल' 'यत्र तत्र सर्वत्र' । ई भिन्नवात जे दूनूक स्तम्भाकार यात्रीजी छथि। परंच वैदेहीक ओ स्तम्भ लोककें रूचैत-पचैत छलैक से धरि आवश्य सिद्ध भए जाइत अछि। आ ओही लोकप्रियतासँ 'दर्शन' क सम्पादक लोभाएल होएताह तकर पूर्ण सम्भावना अछि। एकटा और तथ्य स्पष्ट अछि-'वैदेही' आ 'मिथिलादर्शन' क सम्पादकीय दृष्टि मे अन्तर।

'यत् किंचित' स्तम्भ प्रारम्भ करैत यात्रीजी लिखैत छथि' सउराठक सभागाछी मे सभईता लोकनिः सौकर्यक लेल बिजुली पहुँछि गेल अछि। पीच रोड से हो मधुबनी स्टेशन सँ सउराठ धरि बनि गेल अछि।.....जय हो सरकार बहादुरक !'

'आब कने रेलवे बोर्ड सेहो अपन उदारता देखबइत ! सभाक अबइत-अबइत ततेक ने रेड़म रेड़ भए जाइ छइ, लोकक प्राण अवग्रह मे पड़ि जाइत छइ। बिहार सरकार जँ चाहथि त

सभइता लोकनिक सुविधार्थ अंततः तिनियो दिनुक खातिर दरभंगा-जयनगर-निर्मली दिशिसँ दू-दू घंटा पर शटल ट्रेन मधुबनी धरि करबा सकइ छथि। हानिक तँ कथे कोन, रेलवे बोर्जकें लाभे होइतइ। प्रदेशक मुख्य मंत्री (डा. श्रीकृष्ण सिंह) जँ एकोरत्ती अइ दिश ध्यान दितथिन !'

कविवर यात्रीक लिखल तेसर स्तम्भ 'चिन्तन-अनुचिन्तन' 'मिथिल दर्शनक' जनवरी-फरवरी १९६९ क अंकसँ प्रारम्भ भेल अछि। एहिमे कोनो सम्पादकीय टिप्पणी नहि अछि। किन्तु एहिठाम लिखल अछि-यात्री-नागार्जुन। एहि स्तम्भकें प्रारम्भ करैत लिखल अछि सुनबामे आएल अछि जे मिथिला अंचल (विशेषतः जिला दरभंगा) क मतदाता लोकनिक जागरूकता देखि प्रायःसभ राजनीतिक दल एहिबेर मैथिलीक माध्यमे अपना-अपना पक्षक प्रचार कए रहलाह अछि। एकरा हम बड्ड पैघ शुभ लक्षण बुझइ ही।'

'सत्ता संघर्षक हुलिमालिमे मिथिलाक न भाषा मैथिल मतदाता लोकनिकें साफ-साप हुझबामे अओतइत,
आन-आन भाषा दुर्बल ओ अक्षम प्रमाणित होएत राजनीतिक महत्त्वाकांक्षीगण एहि वस्तु स्थितिकें आब नीक जकाँ मानि लेलइन ताहिमे मिसियो भरि संशय नहि।'

यत्र तत्र सर्वत्र, यत् किंचित एवं 'चिन्तिन अनुचिन्तन' मिथिला मैथिल एवं मैथिलीक गम्भीर, आ ज्वलंत समस्याक पेटसँ जनमल अछि। जखन साहित्य अकादमी द्वारा मैथिली मान्यता नहि पओने छल तँ विभिन्न प्लेटफार्म सँ मान्यताक प्रयास होइत छल। मैथिलीक हित चिन्तक प्रयत्नशील छलाह। परंच ओहिमे समन्वय नहि छलैक। यात्रीजीकें ई खटकैत छलनि। मैथिलीकें सरकारी मान्यता आ विभिन्न मैथिली सेवीसंस्थामे समन्वय ओएकसूत्रताक अभावक पीड़ासँ 'यत्र तत्र सर्वत्र' स्तम्भ प्रारम्भ भेल।

मिथिलाक सामाजिक आर्थिक दुःस्थितिक चिन्ता प्रायः सभ संवेदनशील मैथिल कें हौड़ैत रहल अछि, यात्रीजी तकर अपवाद कोना होएताह। परंच सरकारी तंत्र लेल धनसन। ई विशेष चिन्ताक विषय थिकजे बिहारक नेतालोकनि मिथिलांचलक विकास कें गतिहीन राखल अछि। विकासक पहिल सोपान थिक आवागमनक सुविधा। परंच औहि दिस ककरो ध्यान अद्यावधि नहि अछि। मिथिलांचलक जन्नभावनाक कतेक निष्ठुरतासँ तिरस्कार भेल अछि, तकर ज्वलंत उदाहरण थिक रेलमार्गक स्वीकृत योजनाकें स्थगित करबाक उच्चस्तरीय षड्यंत्रक सफलता। भाषा, व्यक्ति आ क्षेत्रक अस्मिताक रक्षक आग्योतक थिक तँ आवागमन सुविधा ओकर आर्थिक मेरुदण्ड कें सुदृढ़ करैत छैक। यात्रीजीक दोसर स्तम्भ 'यत किंचित' मिथिलांचलक एही समस्या सँ शुरु होइत अछि।

क्षेत्र विशेषक भाषाकें राजनीतिक मान्यता भेटरला सँ ओहि क्षेत्रक लोककें मान्यता आ प्रतिष्ठा भेटैत छैक। एहिसँ कतेको समस्याक समाधानक मार्ग स्वतः उन्मोचित भए जाइत अछि। प्रजातांत्रिक युगमे जनप्रतिनिधिक बाजाब सूनल आ बूझल जाइछ। आ ई सभ होइत अछि राजनीतिक चेतनाक कारणें। कतेको राजनीतक दल कतेको बेरसँ अपन प्रचार लेल मैथिलीक

उपयोग करब शुरू कए देल अछि। यात्री एकरा शुभ लक्षण मानल अछि आ तेसर स्तम्भ 'चिन्तन अनुचिन्तन,' एही प्रारम्भ होइत अछि। परंच यात्री जी जहिया ई शुभ लक्षण अनुभव कएल तकर कतेको वर्ष बीति गेल। स्थिति यथावत अछि। जन नेता लोकनि एहितथ्यकें स्वीकारि मिथिलांचलक विकास हेतु एक मंच पर नहि अबैत छथि। आ इएह कारण थिक जे विकासक बदलामे मिथिलांचल मे भूख, रोग-शोक दिनानुदिन बढ़िते जा रहल अछि।

यात्रीक स्तम्भ लेखनक प्रकार

यात्रीक स्तम्भ लेखन कें विषय वस्तुक अनुसार सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदिमे विभाजित कएल जा सकैछ। स्तम्भ लेखनकें प्रभावक दृष्टिएँ हास्यव्यंग्य प्रधान तथा विचारोत्तेजक मे बांटल जा सकैछ। परंच, हिनक स्तम्भ लेखनक सभ कड़ीमे एकटा विशेषता अछि जे कोनो ने कोनो समाचारसँ उद्‌भूत भए यात्रीक शिल्प कौशल पाबि आकर्षक बनि गेल अछि।

मिथिलांचल मे प्रत्येक साल कोनो ने कोनो प्रकारक विदा अबिते रहल अछि। कोनो साल बाढ़ि तँ कोनो साल अकाल। लोकक स्थिति वदतर होइत गेल अछि। परंच सरकार लेल धनसन। जे किछु खराँत क्षुधार्थी लेल सरकारी गोदामसँ बाहर होइत अछि, लोक धरि पहुँछबा सँ पूर्वहि सोखिलेल जाइछ। जनताक निरीहता आ सरकारी व्यवस्थाक प्रसंग यात्रीजी लिखल अछि 'दरिभङ्गा जिलाक मधुबनी ओ सदर सबडिविजन मे अन्न संकट पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल छइक। बिहार सरकार सहायताक नाम पर ओही प्रकारें अन्न वितरण अभिनय कए रहल अछि जाहि प्रकारें उताहुल पूजेगरी उपेक्षित प्रतिमा पर अक्षत फेंकइ छइ।' [१]

शासन व्यवस्थाक भ्रष्टभेला पर विधि व्यवस्था खराब होइत छैक। जान-माल असुरक्षित भए जाइत अछि। एहिसँ एक दिस विकास कार्य ठमकैत अछि तँ दोसर दिस समाजक प्रतिष्ठित आ गणमान्य व्यक्तिकें अपन आखेट बनाय वातावरण कें हिंसक एवं असुरक्षित बनाकए अपन काज सुतारल जाइछ। विधि व्यवस्थाक एहनहि दुर्गतिकक स्थिति मे पंडित शिरोमणि त्रिलोक नाथ मिश्रक देहान्त भेल छलनि। एहि प्रसंग यात्रीजीक मन्तव्य दृष्टव्य अछि-'पंडित शिरोमणि त्रिलोक नाथ मिश्रक देहवसान सँ (१९००-१९६०) समग्र मिथिलाक सुधी समाज शोकमग्न आ विक्षुब्ध छथि। दरिभङ्गा बरउनीक बीच ट्रेनक प्रथम श्रेणीवला कम्पार्टमेंट मे कोनो आततायी हुनका ठोंठ दवाकें मारि देलकइन। रेलवेक अधिकारी लोकनि तथा बिहारक शासक लोकनि एहि दुर्घटनाक प्रसंग एखन धरि दम सधने छथि। बलिहारी एहि लूरिमुँह कें। मैथिली जनिक मातृभाषा थिकइन ओहि विधायक लोकनिक विवेक भऽ गेल छइन?' [२]

राजनीतिक

सिद्धान्त आ मान्यता पर आधारित राजनीतिक चेतना देशक वहुविधि विकासमे साधक होइछ तँ जाति, वर्ण, धर्म आ सम्प्रजायक प्रति जागल चेतना, विकासक मार्गकें अवरूद्ध करैत अछि। सामूहिक विकासक लक्ष्यकें छोड़ि सभकेओ अपन-अपन जातीय शक्ति आ संतुलनक आधार पर प्रजातांत्रिक व्यवस्थामे प्रतिनिधित्व चाहैछ। एही दृष्टिकोणक कुफल थिक जे कोनो

एक जातिक मंत्री वा विधायकक स्थान खाली होइताई ओही जातिक लोककें वैसाओल जाइत अछि। सम्प्रति स्थिति एक डेग औरो आगू बढ़ि जातिए नहि परिवार धरि सीमित भए गेल अछि। एहि प्रकारक राजनीतिक बंटवाराक प्रसंग यात्री लिखैत छथि-'अनुग्रह बाबू निर्वाण लाभ कएलइन आ तत्काले दीप बाबू फेर मिनिश्टर भऽ गेलाह। बीचमे तीन मास बेचारे कोना खेपने होएताह, जानथि भगवान ! अस्मिन कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव, ओंम् वृतोऽस्मि ओंम् वृतोऽस्मि! एह ! धन्य कही वाधाताक एहि फूर्ती कें ।' [३]

नवजात स्वाधीन राष्ट्क प्रशासन तंत्रकें अपना अधिकार मे रखवा लेल महाशक्ति सभक बीच शीत युद्ध चलल छल। एहि गीत युद्धक परिणामे छोटका-छोटका देश लड़ैत रहल। आ जे नहि पड़ल लोड़फोड़ हत्याक लक्ष्य बनल। कतेको देशक लोकप्रिय नेताक बलि पड़ि गेल। महाशक्ति सभ गुप्तरूपें प्रत्येक देशमे वलिवेदीक निर्माण कए तरहरा खून बबैत रहल। एही विश्वख्यापी षड्यंत्रक चपेटमे एशियाक कतेको नेताक हत्या कएल गेल/हत्याक चलैत राजनीति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करैत यात्री लिखल :-'महाप्राण भंडार नायक कें एक गोट आततायी गोली मारि देलकनि। हत्याकारी कोनो सामान्य व्यक्ति नहि बौद्ध संन्यासी थीक। कहल जाइछ जे श्रीलंकाक बौद्धजनता कें भंडारनायक सँ जतबा आशा रहए, से पूर्ण नहि भेलइ। तकरे प्रतिक्रिया थिक ई दुर्घटना। गाँधी क हत्या, लियाकत अली मारल गेलाह, वर्माक औंग सान सेहो मारल गेलाह। आब श्रीलंकाक प्रधानमंत्री सेहो सरगोली हाट पहुँचओल गेल छथि। एशियाक प्रमुख देशनायक लोकनिक ई बलिपरम्परा कोनो पइछ अनिष्टक सूचना छीक।' [४] एशियाक देशक प्रमुख देशक नायक लोकनिक वलि परम्पराक अन्त नहि भेल अछि। बंगबन्धु आ राष्ट्रपिता मुजिकुर रहमान मारल गेला तथा जुल्फिकार अली भुट्टोकें अपने लोक फांसी दए देलकनि। यात्रीक भविष्यवाणी क प्रायः पचीस वर्षक बाद एशियाक कोन कथा विश्वक सबसँ पँध प्चजातंत्र भारतक प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी अपनहि अंग रक्षकक हाथे भूजा गेलीह। ई क्रम थम्हल नहि अछि भारतक दोसरो जन नेता पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी चुनाव सभाकें संबोधित करबाक क्रममे चिथरा-चिथरा भए गेलाह। लगैछ जेना यात्री आँखि बलिपइंपराक विनाशकारी परिणति कें देखि लेने छल।

आर्थिक

देशक अर्थतंत्रक नियंत्रण भलहि केन्द्राभिमुख हो। परंच ओकर प्रभाव परिधि धरि व्याप्त रहैत अछि। ओहिना देशक कर्जक फल, नीति निर्धारके नहि निर्धन आ साधनहीन सेहो भोगैत अहि। कर्ज पर आश्रित देशक अर्थतंत्र यात्रीजी कें सोचबा लेल विवश करैत अछि। एहन कोनो क्षेत्र नहि जे विना पँच-उधारक चलि सकय। देशक एहि प्रकारक अर्थनीति पर यात्री मन्तव्य बड़ यथार्थ अछिः 'कर्ज.....कर्ज.....कर्ज.....आओर ऋण....आओर पइच.....आओर उधार.....करोड़क करोड़क डालर चाही ! अरब अरब डालर चाही.....पाउन्ड सेहो चाही.....रूवल सेहो.....नेहरूजी दोहाइ सरकार ! आबहुँ तँ भाभट समेटू.....एना कहिया घरि खेपबइ मालिक! अपना देशमे सरिपहुक की कोनो साधन छइहे नई।'[५]

प्रभावक अनुसार स्तम्भ लेखनक प्रकार

यात्रीक स्तम्भ लेखनक विषय जे किछु हो किन्तु आधार कोनो ने कोनो समाचार होइत अछि तथा ओहि समाचार कें अपने विचारक संग जाहि प्रकारें प्रस्तुत करैत छथि, व्यंग्य करैत पाठकक मनके मथम लगैत अछि। देशमे सर्वत्र अभाव अछि आ शासनक असफलता स्पष्ट अछि। परन्तु, ओहि असफलता कें झांपि तेहन रूप ठाढ़ करबाक प्रयास कएल जाइछ ओहि वाक्जाल मे सामान्यजन हेरा जाइछ। नेता लोकनिक एहि वाणी विलास पर यात्री व्यंग्य करैत प्रहार कएल अछि 'महाप्रभु लोकनिक वाणी विलास, ईह वाप्परे ! बप्प !! नेहरू पंत देसाई तँ सहजहि ढ़ाकीक ढ़ाकी नीक बात लोककें परतारक लेल जेतहि रहल छथि-आब संजीव रेड्डी (कांग्रेस प्रेसिडेंट) सएह किये एहि विधि मे पछु आएल रहताह?' [६] "जय प्रकाश नारायण, श्रीकृष्ण सिंह, कृष्णवल्लभ सहाय-तीनू गोटे हालहिमे जनताक समक्ष नेती धोती कएने छथि, मुदा एहि त्वंचाहंच् सँ रउदिएँ झरकइत धनहर बाधकें की ?' [७] नेता लोकनिक बीच कटाउज आ झूठक ढ़ोल पीटबाक प्रवृति पर यात्री व्यंग्य करैत छथि-'दुष्कालक लक्षण एहि वर्ख व्यक्ति-व्यक्ति कें आतंकित कए रहल अछि। इन्फ्लुएंजाक सार्वभौम आक्रमण, अतिवृष्टि, अनावृष्टि अवृष्टिक नग्न नृत्य अन्नक महगी.....कोना अइसाल लोक काल यापन करत? देशक विधाता लोकनि असली हालतिकें वकृव्यक रंगीन रेशमीसँ झांपि-तोपि कहिया धरि एना कृतकुत्य होइत रहताह।' [८] नेता-लोकनिक आपसी कटाउज आ योजनाक असफलताकें झेपबालेल कएल जाइत रंगारंग आयोजन पर व्यंग्य करैत नागार्जुन 'चीलों की चली बरात' शीर्षक कवितामे लिखने छथि-

'फूँकते पेट्रोल नाहक, उड़ रहे फिर व्यर्थ बीस विमान
उन्हीं के हो सलामत उनका धरम-ईमान
सलामत कुर्सी सलामत रहे उनकी जान
हमारे ही बेट पाकर डींग मारें और झाड़ें शान
बाढ़ तो है यहां की खातिर महा वरदान
नेहरूसे पिला अवकी यही अद्भुत ज्ञान !!

यात्रीक स्तम्भ लेखनक टुकड़ी सभ प्रायः घटनाजनित अछि। किन्तु, किछु हुनक आन्तरिक पीड़ाकें व्यक्त करैछ। ई आन्तरिक पीड़ा लोकक दुःस्थिति देखि फूटैत अछि। मैथिलीक अवहेलना पर व्यक्त हुनक टिप्पणी एकटा वैचारिक क्रियाकें जन्म दैत अछि। ओ लिखैत छथि-बिहार राज्यकेर शासन कर्त्ता-धर्त्ता लोकनि एवं शिक्षा नीतिक निर्देशक लोकनि चिरकालसँ मैथिलीक प्रति अवहेलनाक परिचय दइत आएल छथि। जनिक मातृभाषा ओ संस्कार भाषा मैथिली, ओहो लोकनि उच्च पदासीन होइतहि मैथिलीक प्रति दुष्टबुद्धि अथवा जड़ताक शिकार भए जाइत छथि। ने जानि ई कोन तरहक दुर्भाग्य हमरा सबहिकें ग्रसित कएने अछि ! एहि दुर्योगक अंत कहिआ धरि होएत ?

हिन्दीक साम्राज्यवादीक प्रति

यात्री जी सदासँ साम्राज्यवादक खिलाफ रहलाह अहि। चाहे राजनीतिक साम्राज्यवाद हो अथवा बाषायिक साम्राज्यवाद । यात्रीजीकें जहिना अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रति ममता छनि ओहिना राष्ट्र भाषा हिन्दीक प्रति सम्मान। आ तें जखन राष्ट्रभाषा हिन्दीक माध्यमे केओ साम्राज्यवादी लिप्सा लए कए चलैत छथि तए ओहि प्रयाणसँ परिणामकें राष्ट्रभाषा हिन्दीक प्रतिकूल होइत यात्री अनुभव करैत छथि। हिन्दीक प्रचार प्रसार लेल कएल जाइत एहि प्रकारक योजनाक प्रसंग यात्री लिखल अछि-'सेठ गोविन्द दासे सम्प्रति 'हिन्दीक हेतु सर्वाधिक उताहुल महानुभाव' बूझि पड़इ छथि हमरा। संयोग एहन जे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मोलनक (प्रयाग) अध्यक्ष सेहो आइ-काल्हि इएह थिकाह। शीघ्रातिशीघ्र राष्ट्रभाषा हिन्दी अपने पूर्णाधिकार प्राप्त करओ, से हमरा लोकनिक अभीष्ट। परञ्च, से अभीष्ट लाभ, 'हिन्दी सेवक संघ' वा 'हिन्दी सेना'क द्वारा राता राती नहि भए सकइत धइन। सेठजी 'करेंगे या मरेंगे' वला नीतिक अवलम्बनकरबा लए छथि। से वेश मुदा हमरा आशंका होइत अछि जे हिन्दीक हेतु ओ मार्ग 'अति आसुरी' 'अतिवाम मार्ग' प्रमाणित हेतइन।' भाषा अ साहित्य लोकके नजदीक अनैत अछि। समाजमे भ्रातृत्व उत्पन्न करैत अछि लोकक बीच संबंध सूत्रक भाषे सेवाहिका थिक। तखन जँ एक बाषा दोसर भाषाकें उदरस्थ वा अधिकार च्यूत करबाक षड्यंत्र करैछ तँ निश्चितरूपे ई प्रयास द्वेषक कारण बनैत अछि।

यात्रीजीक स्तम्भ लेखनक भाषा आ शिल्प मे सभ विशेषता वर्तमान अछि जे हुनक अन्य रचनाने सुलभ अछि। स्तम्भ लेखनकें आओरो आकर्षक बनेबालेल कोनो कोनो खण्ड मे विविध पात्रक अवतारणा कएने छथि। एक पात्र समाचार पर अथवा घटना पर टिप्पणी करैत अछि तँ दोसर वा तेसर पात्र ओहि चर्चाकें आगू ससारैत अछि। तखन अबैत छथि, चोआ काका। ओ हास्य व्यंग्यक प्रहारकें तीव्र कए दैत छथि। किन्तु तृतीय पुरुष द्वारा कमे ठाम टिपाओल अछि। अधिकांश ठाम प्रतिक्रिया प्रथम पुरुष व्यक्त करैत अछि।

यात्रीजी स्तम्भ लेखन तीनवेर मुदा कम अवधि लेल भेल अछि। किन्तु, ओ एकहिठाम देश-विदेशक राजनीतिक, सामाजिक आ आर्थिक स्थिति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करैत अछि। आ पाठक तात्कालिक परिवेशक हास्य व्यंग्यक माध्यमसँ परिचय पाबि जाइछ। एहि प्रतिक्रियाक क्षेत्र व्यापक अछि। विषय विस्तृत अछि। छोटसँ छोट घटना यात्रीक तेज दृष्टिक सीमा रेखा सँ बाहर नहि रहि पबैत अछि।

कविवर आरसी

मैथिली आ हिन्दी दूनू भाषा-साहित्यमे समान रूपे रचना करैत ख्याति अर्जित कएनिहार साहित्यकार यात्री, आरसी प्रसाद सिंह एवं राजकमलमे आरसी प्रसाद सिंहक (ज. १९११) अपन खास विशेषता छनि। यात्री आ राजकमतल जतय विविध विधामे रचना कएने छथि, ओहिठाम कविवर आरसी मूलरूपें गीत विधाकें अपनओने रहलाह अछि।

मैथिली साहित्य परिषदक मुजफ्फरपुर अधिवेशन (१९३७ ई०) क अवसर पर ओयोजित कवि सम्मेलन मे पठित 'शेफीलिका' कविताक माध्यमसँ कविवर आरसी मैथिली जगतमे ख्याति पाओल। एहि कविता क उत्कुष्टताक अनुभव विद्वत समाज कएलक तथा कविवर आरसी कें रंजत पदक' प्रदान कएल गेल। आ तकर
वाद सँ कविवर निरन्तर मैथिलीक मन्दिरमे अर्चना करैत रहलाह अछि। एखनधरि हिनक तीनटा कवितासंग्रह प्रकाशित अछि ओथिक "माटिक दीप" (१९५८), "पूजाक फूल" (१९६७) तथा 'सूर्यमुखी' (१९८२)। एकर अतिरिक्त कतेको रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिडिआएल अछि। समय-समय पर रेडियो संगीत रूपक तथा एकांकीक रचना सेहो कएल अछि। हिनक संगीतरूपक हमर स्वप्न सार्थक भेल'१ पूर्ण प्रसिद्धि पओलक। 'मेघदूत' क सरल मैथिली अनुवाद सेहो कएने छथि। 'सूर्यमुखी' काव्य कृति पर १९८२ मे कविवर विद्यापति पुरस्कार तथा वर्ष १९८४ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि।

कविवर आरसीक रचनाक मुख्य स्वर अछि राष्ट्रीयता। हिनक रचनामे राष्ट्रीयताक भावना कूटि-कूटि कए भरल अछि। आरसी बाबू सदिखन लोककें जगबैत आ प्रेरित करैत रहैत छथि। जाहिसँ राष्ट्रीय एकता मजगूत होइत रहए। तँ राष्ट्रीय एकताकें कमजोर करबामे लागल राष्ट्रीय तत्वकें निर्मूल करबाक चिन्ता आरसी बाबू रचनाक शब्द-शब्द मे गुंजित अछि। स्वाधीनता, प्रजातंत्रीय मूल्य आ धर्म-निरपेक्षतामे अटूट विश्वास छनि। भारतीय संस्कृतिक समवन्वयतात्मक मूल्यमे आस्था छनि। एही विचारक प्रति ध्वनि थिक जे ओ कोटि-कोटि भारतवासीकें नव जीवन मूल्यक निर्माणमे तत्पर देखैत छथि-

'स्वाधीनता हमर अछि, अधिकार जन्म जाते
के दस्यु ल' सकै अछि, एकरा उधार खाते
हम ऐक्य-सूत्र बान्हल रजल कोटि-कोटि बासी
युग आइरचि रहलछी, नव सर्जना करै छी
हे जन्मभूमि भारत हम बन्दना करै छी।' २

कविवरक राष्ट्रभूमि केवल वन्दना-अर्चना धरि सीमित नहि अछि। ओहिसँ आगू आत्म वलिदानक आवश्यकता लेले तैयार रहबाक हेतु ओ रहबाक हेतु ओ लोकें प्रेरित करैत छथि। स्वतंत्रताक प्राप्ति आ तकर रक्षा आत्मवलिदान चाहि सकैछ वश्वास छनि। विना त्यागक तकर रक्षा नहि भए सकैछ-

'भारत जननी माड़ि रहल छथि,
आइ हमर वलिदान
उठू उठू हे भारत प्रहरी
रजागू भारत भक्त
नहि स्वतंत्रता क्यो पबैत अछि
विना चढ़ौने क'

कविवरक रग रगमे स्वदेशक प्रति अगाध प्रेमसमायल अछि। स्वदेशक कण-कणक प्रति जाग्रत रागात्मकता गीतात्मक भए उठैछ। एहि स्वदेश वर्णनमे मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक प्रति प्रेम आ ओकर हितरक्षाक चिन्ता अभिव्यक्त भेल अछि। मिथिला जनपद मे एकठामहीं विभिन्न मतावलम्बीक सौहार्द्रपूर्ण सह अस्तित्वसँ उत्पन्न वैशिष्ट्य आ दोसर दिस 'हर हर बम-बम' स्वर सँ गुंजित होइत वातावरणक यथार्थ चित्र प्रस्तुत करैत कविवर गबैछ-

'दक्षिण पवन डोलाबय चारि
मंगल गीत सुनाबय सामरि
बम बम करइत भक्तगण विचरय
गंगा जलसँ भरि-भरि कामरि।'

मिथिलाक प्राकृतिक शोभा अध्ययन-अध्यापनक अविच्छि-परिपाटी आ अपन प्रिय कवि विद्यापतिक आह्लादक गानक प्रसंग कविवर आरसी अपन सरल आ सहज गीतात्मक शैलीमे लिखल अछि-

'बाड़ी बाड़ी लतरल थान
पोखरि-पोखरि फुटल मखान
राह बाट मे गुंजित होइछ
विद्यापतिक मनोरम गान
गाम-गाममे धर्म धुरन्धर
पढ़ति-पढ़ावथि मीन ओ मेष
धन्य धन्य ई मिथिला देश' ।
कविवर चन्दा झा धनधान्यसँ परिपूर्ण मिथिलाक वर्ण करैत लिखने छथि-
'नदीमातृक क्षेत्रसुन्दर शस्यसँ सम्पन्न
समय सिरपर होय वर्षा बहुत संचित अन्न ।'

किन्तु, कविवर आरसी नन्दन वन सन सुन्दर मिथिलाकें पसान भेल देखि व्यथित भए गेल छथि। मिथिलाक शोषण आ जन आकांक्षक त्रास अनुभव करैत छथि। किन्तु, शोषित आ उपेक्षित मिथिलाक भीतर धधकैत धधराक धाह अनुभव कएलाक बाद ई विश्वास भए गेलछनि जे लोकक मूँहकें आर अधिक दिनधरि जाबि राखल नहि जी सकैछ। जायज अधिकार सँ अधिक दिनधरि वंचित नहि राखि सकैछ-

'मरघट भेल स्वर्गवन गीदड़
गीध कुकूर कुचरै अछि।
बैसि कण्ठ पर क्यो बलजोरी
स्वर नहि दाबि सकै अछि ।

लेब अपन अधिकार आब हम
अपन महालक पानी
मांगि रहल छी प्रथम आइ हम
अपन मातृ जन वाणी।'

कविवर अनुभव करैछ जे व्यक्तिकें अपन भाषा साहित्य, संस्कृति आ क्षेत्रक विकासक अधिकार छैक। किन्तु, मिथिलावासी ओहि अधिकार सँ वंचित अछि। ओकरा ई अधिकार नहि छैक। भाषा आ साहित्यक विकास क बाट उन्मुक्त करबाक स्थान पर ओकर अवहेलना कएलं जाइछ। शोषणक पात्र बना रखबा लेल सभ प्रकारक ध्योंत कएल जाइछ। त्रासद स्थिति सँ मुक्तिहेतु कविवर युद्धगान करैछ। कविक स्पष्ट धारणा अछि जे कमला, कोशी आ वागमतीक तेजधार जकाँ उमड़ल लोकक बाढ़ि, जे लुप्तकएल जाइत अपन प्रतिष्ठा रक्षा हेतु, आबि रहल अछि, केओ रोकि नहि सकैछ। एहि जन आक्रोशक समस्त कुचक्र धूल धूसरिता भए जाएत तंत्र डगमगा उठत-

'चलि ने सकै अछि आब सवारी हौदा कसि क'
ई अदराक मेघ ने मानत, रहत वरसि क।'

स्वाधीनताक प्राप्तिपर जन जीवनमे नवीन उत्साह उमड़ल। विश्वास छलैक जे स्वतंत्र भारतमे भरिपेट अन्न, भरिदेह वस्त्र आ रौद-तापसँ बचबा लेल कमसँ कम एकचारीक व्वस्था अवश्य भए जएतैक। ओहि उल्लासमय व्यवस्थाकें स्वर कविवर देल-

"नवीन युग नवीन जन
नवीन मुक्ति बालिका
स्वतंत्र देशमे खिलल
नवीनदीप मालिका।'

किन्तु, स्वतन्त्रदेशक नवीनदीपमालिका, लोकक आशा-आकांक्षाक बरल दीप, टेमी-बातीक विना टिमटिमाय लागल। पाँच वर्ष लेल निर्वाचित नेताक किएदानीसँ लोक अचंभित भए उठल। विकास योजनाक राशि नेता, अभियन्ता आ ठीकेदारक अथाह पेटमे निपन्ता होअय लागल। बाढ़िकें रोकबाक नामपर आवंटित राशि त्रिमूर्तिक उदरस्थ होइत गेल। किन्तु, बाढ़िक प्रकोपएसँलोक मुक्त नहि भेल। घर-आड़न, खेत-खरिहान प्रतिवर्ष दाहइत रहल। रोग-शोकसँ लोक तबाह होइत रहल। किन्तु नेता लोकनि बाढ़ि ग्रस्त अपन निर्वाचन क्षेत्रक हवाई सर्वेक्षण दिल्ली आ पटनासँ उड़िउड़ि करैत रहलाह। लोकक त्रासद स्थिति आ नेताक लोकविरोधी अन्यमनस्कता कविवरकें भीतरसँ झकझोरैत रहल। विकल जनकवि आरसी ओहि कोटिक नेता पर व्यंग्यवाण छोड़ैत रहलाह-

'हे ऊधो माधोसँ कहबनि अपने गेलाह विदेश,
हमरा ले द गेलाह एतय ई भूखमरीक कलेश ।

एको बून अखाढ ने वरिसल साओन आयल बाढ़ि
चूल्हिक पूत्ता पानि चढल अछि, माय कन छथि ठाढ़ि ।'

जनप्रतिनिधिकँ मंत्रिमंडलमे स्थान हेतु अपस्याँत भेल देखि कविवर दुखी भए जाइत अछि। मंत्रीत्वक आकांक्षी नेताक रुचि ध्वंसात्मक होमय लागल। एक मंत्रीमंडल कें खसाय दोसरकें उठेबाक प्रवृत्ति बढ़ल। एहि प्रकारक जोड-घटावसँ जनताक प्रति ध्यान मे कमी आएल। भूखल नाङट लोक लेल जीवनक कोनो अर्थ नहि रहल। किन्तु दोसर दिस ओकरहि शोणित पीबि मोकना बनल जाइत लोककें देखलन। एहि कारणें पसरैत विकृतिकँ कविवर चिन्हल। कारण कें शब्दायित कएल। भूखल ति सहानुभूति जगबात, स्थितिक भयंकरताक वर्णन करैत कविवर लिखल-

'जकरा चाही मुँहमे रोटी
आओर कण्ठमे पानि
से त्रिकालमे की दै सकैछ
चन्द्र किरणकें मानि?
ख ने सकै अछि पीबिने जकरा
से बूझत की लोग
नव वसन्त शोभा के देखत
आँखि पेट मे रोग ।'

कुर्सीक रक्षा हेतु नेताक सह पर लठैत लोकनि जनतंत्रीय मूल्यक डाँढ़ तोड़ैत रहल। बूथ पर कब्जा सामान्य बात भए गेल। वोट हँसोथि अपन नेताक पेटीमे खसादेब अप्रत्याशित घटना नहि रहल। एहिसँ सामाजिक आ राजनीतिक अनैतिकता बढल। असामाजिक प्रवृत्तिकें बल भेटलैक। चोर उचक्का प्रश्रय पओलक। एहिसँ मानवीय मूल्यक विघटभेल। विकृति आ बिडम्बना पसरल। एहि देश कविवरक नजरि नहि जाएब असंभव छल-

'पुण्य बनल अछि चोर बजारी
सेठ भेल शठ, चोर जुआड़ी
टीक कटौने भरिसक दमड़ी
झा चामक व्यापार करै छथि ।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।'

मानवीय, सामाजिक अथवा वैयक्तिक मूल्यक सँ सांस्कृतिक कार्यक्रमक अर्थ संकुचित भए गल। सांस्कृतिक शब्द उच्चारणसँ जाहि उदारताक बोध होइत छल, से घृणास्पद भए गेल।

'निष्फल शास्त्र पुरानक चर्चा
नीक नाच रंगक बट खर्चा

लाड़ि-चारि एकहि लड़नासँ
सब किछु बंटाधार करै अछि,
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।

कविवर आरसीक सर्जनात्मक जीवनक प्रारम्भिक कालमे हिन्दी साहित्यमे छायावाद ओ रहस्यवाद अपन उत्कर्ष पर छल। ओ दूनू भाषाक प्रति सतर्क रहि रचना करैत छलाह। छायावाद ओ रहस्यवादक प्रवृत्तिसँ अछूत रहब, युगीन प्रवृत्तिसँ फराक रहब छल। तँ कविवर आरसी छायावादी-रहस्यवादी मूल गीतक रचना सेहो कएल :

'दीप जरैत रहि गेल राति भरि
सगुन उचारैत राति भरि,
हम रहि गेलहुँ आँखिसँ अपने
बाट बोहारैत राति भरि ।'

छायावादी काव्यक प्रवृत्ति स्थूलतासँ सूक्षता दिस आ प्रकृतिक मानवीकरणक अनुरूपहि 'शोफालिका' कवितामे सफलरूपें प्रयुक्त अछि-

'नित्य विहरावलि प्रभातहि
उठि हमर मृदु विरुद गाबय
आबि दक्षिण देशसँ
पावन पवन हमरा जगाबय।
चकित विस्मित चौंकि जहिना
आँखि खुलि जाइछ हमर कल
बांधि किरणक पाशसँ
नूतन तरणि हमरा जगाबय ।

भोर मे पक्षीक कलरवकँ विरुदगान मानव, दक्षिण पवन द्वारा देह डोलाएब सूर्यक किरणरूपी डोरी मे बान्हि जगाएब आदि द्वारा एक सफल ब्म्बक निर्माण कएल अछि। एकहिठाम विभिन्न प्रकारक विम्बकें उपस्थि उपस्थित कएएक सान्द्र बिम्बक निर्माण कविवर आरसीक काव्यक एक खास विशेषता अछि।

विभिन्न घटनाक ओराहक-अवरोह सम्पुंज मनुष्यक एहि जीवनमे रुदन-हास आ आश-निराशाक क्षणक अभिव्यक्ति, कविक रचनामे होएब अस्वाभाविक नहि अछि। आ एही स्वाभाविकताक कराणें हिनक रचनामे नैराश्य बोध सेहो भेटैछ :

'काल स्रोत मे कमल फूल सय जीवन भांसल जाए
रस समुद्रमे यद्यपि डूबल प्राण पियासल जाय ।'

किन्तु, कविवर आरसीक नैराश्य वोध मे एक विशेषता अछि। ओ विशिश्टता थिक नैराश्यक अन्हर-बिहाड़िमे प्रवहमान कोमल भावनामय कविक सौन्दर्य चेतना। इएह कोमल भावना लोककें अपनादिस आकर्षित कए लैतथा पाठक कविक अनुभूतिक संग एकात्म्य भए जाइछ। कविवर आरसीक कविताक ई विलक्षणता थिक। कवि कर्मक सफलता थिक। तरंगावलीक गर्जनक बीच भसिआइत लक्ष्यच्युत जीवनक तीव्रता, अवसाद आ नैराश्यक घटाटोपक अछैतो कविवर जीवनक सुखद क्षणक सफल गीतात्मक अभिव्यक्ति अपन गीत 'मोन हमर शरत् प्रात' मे कएल अछि-

'मोन हमर शरत् प्रात, प्राण हमर हरसिंगार
झड झड झड़ झड़ल सुमन, मह मह मह पसार ।
मन्द मन्द मलय पवन
सुरभित उपवन वन वन
मादक मोहक प्रसार
बाँटि रहल भुवन-भुवन
आंगन आंगन सुवास, बहय सास सुरुचि धार
मोन हमर शरत् प्रात, प्राण हमर सिंगार।[५]

कविवरक एहि गीतमे आदिसँ अन्तधरि कविक तीव्रभावानुभूति प्रवाहित भेल अछि। भावानुभूतिक त्वरित अभिव्यक्तिमे प्रभावक क्षिप्रता अछि। अनुरणात्मक शब्द योजनासँ उत्पन्न गेयधर्मिता, हार्दिकताक भाव भूमि पर तादात्म्य स्थापित करबा लेल विवश कए दैछ। संगहि शिल्पक दृष्टिसँ एहि गीतमे एकहिठाम अनेक काव्य वैशिष्ठ्य विद्यमान अछि। मोन जे अप्रस्तुत अछि तकरा लेल अप्रस्तुति शरत् प्रात तथा अप्रस्तुत प्राण लेल प्रस्तुत हरिसिंगारक योजना कएल अछि। एहि प्रकारें अप्रस्तुत लेल अप्रस्तुत तथा अप्रस्तुत लेल प्रस्तुत योजनाक माध्यमसँ उल्लासमय वातावरणक सृष्टि करबामे कवि सफल भेलाह अछि। एहिगीत मे कविक ऐन्ट्रिक संवेदना सेहो प्रखरतम रूपमे अछि। 'झड़ झड़ झड़ झडब' आ मन्द मन्द मलय पवन' सँ गत्यात्मक चित्र बनैछ। ई चाक्षुष रूपविधानकें सेहो स्पष्ट करैछ। हर सिंगार आ सुमनमे रस आ गंधबंधी, पवनमे स्पर्श संबंधी तथा सुरभिधारमे रस, गंध, नाद संबंधी ऐन्ट्रि य संविदना वर्तमान अछि। सभ मिलाकए गत्यात्मक चित्रविधानक सफल संयोजन एकहिठाम भए गेल अछि। संक्षेपमे आरसी बाबूक कविताक चेतनाक प्रसंग कहल जा सकैछ जे शोफालिकाक चेतनासँ सूप्यमुखीक चेतना दिसबढ़ैत गेलाह अछि।

मै. अ. प. १९८२

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आ हुनक कविता

'मज्जरि रस मदिरा पीबि-पीबि

शाखाक अंक मे लीबि-लीबि
स्वर मे विह्वलता सीबि-सीबि
पिक गाबि रहल अछि मत दुरन्त
आएल बसन्त! आएल बसन्त !¹

छात्र वर्गक प्रिय श्रीरामचन्द्र बाबू पढ़ा रहल छलाह-'आएल बसन्त आएल बसन्त।' जेना पाँती मे छैक तहिना ओहो काव्य रस मदिरा पीबि-लीबि जाइत छलाह। पिक द्वारा स्वर मे विह्वलता सीबाक प्रक्रिया कें हाथ सें देखाकें छात्र वर्गक मन मे नैसर्गिक मद जगबैत छलाह। कण-कण कें उत्फुल्ल आ प्राणामय कए दैत छलाह। गीतक विविध विशेषता क विश्लेषण करैत गीतक रचयिता क नाम उचारैत छलाह 'मोहनजी माने उपेन्द्र ठाकुर मोहन' । आ फेर पढ़बय लगैत छलाह्' आएल वसन्त आएल बसन्त'। शिक्षकक संगे पूरा कक्षा लीबि स्वर मे विह्वलता सीबय लगैत छल।

किछु वर्षक बाद पटना गेला पर 'मिहिर' कार्यालय अधिक काल जएबाक अवसर होअय लागल। एक गोटेकें सदिखन किछु ने किछु लिखैत अथवा मन सँ प्रूफ संशोधन मे रत पबिअनि। आश्चर्य होअय जे गप्प सरक्का सँ अप्रभावित रहि, ओ सदिखन कोना कार्यशील रहि जाइत छथि। जखन नहि रहल गेल तँ हंसराजजी (ज. १९३८) सँ पूछिए देलिअनि। 'मोहनजी' सुनितहि धकसन लागल। 'आएल वसन्त आएल बसन्त वला' मोहन जी? अभूतपूर्व आनन्द सँ आह्लादित भए उठलहुँ। जे रचना गत कतेको वर्ष सँ जीहे पर छल, तकर रचयिता मैथिली साहित्य क एकटा विभूति मोहन जी'क दर्शन पाबि गदगद भए उठलहु। असीम श्रद्धा उभरि पड़ल।

मोहनजी संग परिचय क्रमशः प्रागाढ़ होइत गेल। एही बीच हम 'श्यामानन्द रचनावली' पर काज आरम्भ कए देने छलहुँ। ज्ञात भेल जे 'मोहनजी' कें स्व० श्यामानन्द झा सँ खूब परिचय छलनि। जिज्ञासा कएला पर पहिने पारिवारिक परिचय पूछि जे किछु महत्वपूर्ण सूचना देल से कहबाक क्रम मे देखल जे मोहनजीक आँखि डबडबा गेल छलनि। बम्बइ प्रवासक संस्मरण सुनला सँ दूनू विभूतिक व्यक्तित्व बुझबाक मौका भेटल।

मोहनजी सेवा सँ अवकाश पाबि गेल छलाह। उद्वेग लागल छल। भेंट करबा लेल डेरा पर गेल छहुँ। देखितहिं आनन्द विभोर भए उठलाह आ पत्नी सँ कहलथिन 'रमणजी' छथि, श्यामानन्द बाबूक भातिज, जे हमरा बम्बइ मे जीविका दिऔने छलाह। आ फेर देखल मोहनजी अथीत मे हेरा गेलाह। आँखि डबडबा अएलनि। हम अप्रतिभ भए उठलहुँ। अश्रुपूरित नेत्र देखि ओहि महान कविक महान व्यक्तित्व क ओर-छोर देखबाक हम असफल प्रयास करए लगलहुँ। आश्चर्य लागल छल जे मात्र एक संयोग कें जीवन भरि मोन राखय बला लोक औखन अछि।

कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' क जन्म १९१३ ई० मे ग्राम-पुरुषोत्तमपुर (चतरिया), पो०-शुभंकरपुर, जिला दरभंगा मे भेलनि। हिनक परिवार मे सरस्वतीक चास-वास छल मुदा लक्ष्मीक

नहि। तें बालक 'मोहन' कें ओ सुविधा कहिओ नहि भेटि सकलनि जे सभ एक नेनाक शिक्षा लेल आवश्यक रहैछ छैक। स्थिति तँ एहन त्रासद छल जखन विद्यालय मे नाम लिखाओल गेलनि तँ एकोटा पोथी नहि छलनि।

मोहनजी क परिसर मे एकटा कहबी बड़ प्रचलित छल, 'पढ़ह पूत चण्डी, तखन चढ़तह हंडी।' तात्पर्य जे योग क्षेम लेल गुर्गापाठक पूर्ण अभ्यास आवश्यक रहैत छलैक। परंच, मोहनजी पिता जे स्वयं वैदिक छलाह, पुत्र कें हंडी चढेबाक हेतु चण्डी नहि, तत्वज्ञानक हेतु गीताक अभ्यास पहिने करा देलथिन। एकर फल भेलनि मोहनजी कें परमार्थ चैतन्यक बोध भेलनि, अपन गोटी सुतारबाक प्रोढ़ि नहि। किन्तु जें कि योग क्षेम लेल दुर्गापाठक अभ्यास अत्यावश्यक रहिते छल, तें मोहनजी चण्डीक अभ्यास सँ कोना बाँचल रहितथि?

मध्यमाक छात्र मोहनजी कें एकोटा पोथी नहि। पोथीए नहि तखन पढ़ताह की? एही बीच एकटा घटना घटल। राज दरभंगाक कंकाली मन्दिर पर दुर्गापाठ लेल रामबागक हरि मन्दिर पर दुर्गापाठक परीक्षा लेल जाइत छलैक। ई सुनि गामक एक बूढ़ा ललकारादेल। 'जाहू, दुर्गाक अभ्यास कहिआ काज अओतह।' मोहनजी कें रहल नहि गेल। परीक्षा लेल जूमि गेलाह। हिनका देखि पंडित सभ धुतकारि देल। मोहनजी डटल रहलाह। हतोत्साहित करबाक नियतें दस मिनट धरि विभिन्न स्थल सँ पाठ कराओल गेलनि। किन्तु उच्चारणक शुद्धताक कारणें, परीक्षक मंडली क समक्ष उत्तीर्ण घोषित करबाक अतिरिक्ति आन कोने उपाये नहि रहल। एहि प्रतियोगितामे उतीर्ण भेला पर मध्यमा क पोथी क जोगाड़ तँ लगबे कएलनि, दुर्गा पाठेक बल पर मुजाफ्फरपुर से संस्कृत कॉलेज क छात्रावासो क खर्च जुटबैत रहलाह।

साहित्यक प्रति अभिरुचि आ साहित्य सर्जनाक प्रतिभा वाल्य-कालहि सँ मोहनजीमे छल। ई बुझितो जे साहित्य अर्थकारी नहि थिक, तैयो साहित्ये पढल। पिता सेहो चाहैत छलथिन जे साहित्य पढ़ि कोनो विद्यालय मे हेड पंडित भए जएताह। मुदा सेहो नहि भेलनि। कोनो विद्यालय अथवा अन्ये शिक्षण संस्था मे जीविका पएबाक स्थान पर प्रेसजीबी भए गेलाह। प्रूफ पढ़ैत-पढ़ैत एक प्रतिभासम्पन्न सर्जनाकारक जीवन गुदस्त भए गेल।

मोहनजी प्रारम्भहि सँ एक मोधावी छात्र छलाह। सभ दिन परीक्षाफल उत्तमे होइत रहल। किन्तु तदनुरूप जीविका नहि भेटल। पिताक मनोरथ पूरा नहि भेल। परिवारक स्थिति तेहन नहि छलनि जे घरे बैसि काव्य सर्जना करितथि। स्वयं लिखैत छथि' - शास्त्री, आचार्य, प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण कएलो पर प्रान्त मे कतहुँ जीविका नहि भेटल रहय। आश्रमक दीन-हीन स्थिति, परिवारक लोक उद्विगन। कौचर्य असह्य भेल तँ बाहर जएबा लेल उनमुनयलहुँ, पाँखि फड़फडओलहुँ, गामक परिस्थिति गाम छोड़ि बाहर जयबालेल विवश' कए देलक।' मुदा जएताह कतय? वट खर्चा कतयसँ आओतनि? चिन्ता छलनि। मुदा मित्र लोकनिक सदाशयता सम्बल भेल। गाम सँ विदा भए गेलाह। काशी सँ बड़ौदा पहुँचलाह। राजकीय प्रतियोगिता मे सफल भेलाह। यश आ अर्थ दूनू प्राप्त भेलनि। ओतय सँ सूरत होइत बम्बई पहुँचलाह। अपन पाण्डित्यक विजय पताका फकरबैत, कविते सँ बटखर्चा चलबैत। पूर्व देल आश्वासन आ

सहयोग क अनुरूप मैथिलीक ख्यातनाम साहित्यकार एवं संस्कृतक विष्णात् विद्वान जे० वी० एम० संस्कृत कॉलेज बम्बई क प्रधानचार्य पं० श्यामानन्द झाक सत्यप्रयासे मोहनजी किछु दिन जीविका क लेल ट्यूशन कएल। तदुपरान्त, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण बम्बई मे स्थायी जीविका प्राप्त भेलनि, प्रूफ संशोधन विभाग मे। ओहि दिन क प्रसंग मोहनजी लिखने छथि-'हमर जीवनक ओ प्रथम स्वर्णदिन छल। स्थायी जीविका पाबि आनंदाश्रु झरल छल। श्यामानन्द बाबू अपन कर्त्तव्य-भार समाप्त बूझि चैनक साँस छोड़ैत बाजल छलाह। जीवनक एकटा नीक काज सम्पादित भेल
हमरा सँ। अहाँक सफलता हमर उल्लास थिक। अहाँ अँखिगर पंखिगर नहि छी। आ ने चलतापूर्जा छी, हमरा भार छल, चिन्ता छल।'२

मैथिलक दूर प्रवास सहिता क 'मोहन' जी अपवाद नहि छलाह। गामक उचाट लागि गेलनि। पिता परोक्ष भए गेलथिन। पुनः जखन बम्बई जएबा लेल उनमुनयलाह तँ ओ नौकरी छूटि नौकरी गेल छलनि। किछु वर्ष गाम मे बेकार रहलाह। मुदा एकटा फेर संयोग भेलैक। ओएह पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' (ज. १९११) जे काशी बड़ौदा, सूरत आदि जयबा काल विशेष संबल बनल छलथिन, आर्यावर्त्त' मे प्रवेश हेतु सहायक भेलथिन। १९४९ ई० मे आर्यावर्त्त मे अन्तर्मुक्त कए लेल गेलाह। १९६० ई० मे जखन 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिक प्रकाशन पटना सँ भेल तँ ओकर सम्पादकीय विभाग मे बजा लेल गेलाह, जतय सँ १९७७ ई० मे अवकाश प्राप्त कएल आ। १९७८ ई० मे 'बाजि उठल मुरली' पर साहित्य अकादेमीक पुरस्कार प्राप्त कएल।

मोहनजी 'घटाटोपी' नहि छलाह। तँ सभ दिन ओ कागजी पंडित बनल रहलाह। 'चोखो पंडित' नहि बनि सकलाह। हिनका सँ योग्यता आ क्षमता मे न्यूनो व्यक्ति हिनकर आगूए रहल। बम्बइमे दोसर बेर भगतिया नहि भए सकलाह, जपे करबा लेल सदिखन मनोनीत होइत रहलाह। एहि हेतु जे 'भंगतिया' कँ अधिक दक्षिणा भेटैत छलैक तँ ओकर मनोनयम परिचय एवं पैरवी पर होइत छलैक।

मोहनजी चाटुकार नहि छलाह। ललो-चप्पो नहि करैत छलाह। तँ पटनो मो ओएह 'कागजी पंडित' रहलाह। लिखैत छथि-'कोनो क्षेत्र मे चोकखो पंडित' सिद्ध होएबा लेल ओएह खुशामद-दरबार चाही, नहि तँ 'कागजी पंडित' रहिक सड़ की? मसाला रखलो पर जपे करबाक बाध्यताब 'भगतिया' पंडित ओएह होएत जे खुट्टा कँ सधने रहए। बम्बइए कियेक पटना अएलहुँ तँ ओएह 'कागजी पंडित' ततबे ।'३

मोहनजी स्वाभिमानी छलाह। सवाभिमानक रक्षा सबसँ पहिल काज मानैत छलाह। स्वाभिमान क रक्षार्थे कतेको लाभ छोड़ैत रहलाह। एक बेर कवि सम्मेलन मे किछु व्यक्ति क उकसौला पर कविता पढैत काल हल्ला भेल, जाहि सँ मोहनजीक स्वाभिमान कें धक्का लगनि। मोहन जी पुनः मंच पर नहि गेलाह, जीवन भरि प्रण निवाहल।

उपकार क मोन रखबाक अद्‌भुत गुण 'मोहनजी' मे छल। रजे केओ व्यक्ति जाहि कोनो अवस्था जेना सुमन जी बडौदा जएबा लेल मासूलक व्यवस्था कएलथिन 'आर्यवर्त्त' मे नौकरी हेतु सत्यप्रयास कएलथिन, काशी मे पं० काशीनाथ ठाकुर 'कलेश' (स्व० १९९०) एवं कांची नाथ झा 'किरण' ग्रासवास देलथिन, सूरत मे गुरुकुलक विज्ञान पं० लक्ष्मीकान्त झा ओ पं० श्यामसुन्दर झा सहायक भेलथिन, बम्बइ मे पं० श्यामानन्द झा स्थायी जीविका क व्यवस्था करौलथिन, सभक प्रति मोहनजी कृतज्ञ रहलाह। सुमनजीक प्रसंग लिखैत छथि'-सुमन जी सँ हमरा नीक लग्न-नक्षत्र मे भेंट ओ सदा हमर योग-क्षेम चाहलन। एहिना पं० श्यामानन्द झाक प्रसंग लिखैत छथि-'श्यामानन्द बाबू आइ नहि छथि, मुदा हमर रोम-रोम हुनक स्नेह द्याक प्रति कृतज्ञ अछि। श्री रमानन्द झा 'रमण' कें देखैत देरी हुनक स्मृति सजग भए उडैछ ओएह उदार प्रकृति, ओहने मनीषी आ स्वाभिमानी। ओहने प्रतिभा मेधा, ओहने कुलीनशालीन। मोहन जीक व्यक्तित्व कतेक विशाल छल तकर उदाहरण थिक हुनक आभार-ज्ञापन।

मोहनजी अपादमस्तक कवि छलाह। कविता मे जीवैत छलाह। ओ कहिओ मंचक पाछू नहि दौड़लाह। मानैत छलाह जे नीक कंठ आ घटाटोपी व्यक्ति लेल मंच होइछ। ओ ने तँ घटाटोपी छलाह आने गीते गएबाक लूरि छलनि, तें ओ सदा मंच सँ परहेज कएल। ओ कतेको कवि जकाँ बन्द लिफाफ क पाछू कहिओ ने
गेलाह। मोहनजी इहो मानैत छलाह जे पैघ-पैघ। मंच आ जनसमुदायक बीच कवि सम्मेलन कविताक आस्वादन लेल उपयुक्त स्थान नहि थिक। यद्यपि प्रत्येक कें अपन आ अपन कविता प्रचार-प्रसार क इच्छा रहैछ। मुदा कवि सम्मेलन गंभीर कविताक स्थान नहि थीक। ओतय ओएह कवि प्रशस्ति पाबि सकैत छथि जे अपन स्वर मधुरिमा सँ लोक सँ लोक कें मंत्रमुग्ध कए ठहक्का क हिलकोर उपजा सकय अथवा कोनो वीर भावनाक पद कें तर्जन-गर्जन क संग अनेक मुद्रा देखाकए शौर्यक उद्रेक आनि देअय। रजँ केओ कलाबाजी नहि जानथि तँ अनेरे ओतए स्वयं उपहास्य बनताह। मंचक हेतु कवि भिन्न, स्तरीय कविताक कवि भिन्न। स्तरीय कविताक पाठक स्थान एहन गोष्ठी भए सकैत अछि, जतय चुनल-बीछल निष्णात बौद्ध श्रोता होथि। कवि सम्मेलन मे तँ इहो होइत छैक जे गट्टी बना कए कोनो अपेक्षित कें प्रसंशित आ अनपेक्षित कें निन्दित करा देल जाइत अछि-

'मोहन'जी मैथिलीक बहुविध विकास लेल सदिखन चिन्तित रहैत छलाह। ओ मानैत छलाह जाबत काल धरि मैथिली कें संविधान मे स्थान नहि भेटैछ, बहुविधि विकास मे बाधा अबिते रहतैक। किन्तु, विश्वास भए गेल छलनि, आगि पजरि गेल अछि। पसाही लगेबाक देरी छैक। जे भएं रहलैक अछि ओहि मे आर अभिवृद्धि होइत जेतैक। जा धरि लक्ष्य सिद्ध नहि होइछ, चैन नहि लेल जाय।' ७

मैथिलीक एहि महान साहित्यकार आ हितचिन्तकक देहावसान २४ मई १९८० कें ६७ वर्षक अवस्था मे भए गेलनि। हिनक देहावसान पर मार्कण्डेय प्रवासी (ज. १९४२) धर्मराज क नाम एकटा शोकपत्र लिखैत छथि-धर्मराजा। अहां कें ई स्वीकार करबाक चाही जे श्री उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' कें मारि कए अहाँ ओहने गलती कएलहुँ अछि, जेहन गलती वाल्मीकि,

कालिदास, भारवि, जयदेव, विद्यापति आ चन्दा झा आदि कें मारि कएने छलहुँ। अहाँ सन बुझनुक लोक ई अनुमान कएं सकल जे मोहनजी सन कवि कें मारब अहाँक सामर्थ्य सँ बाहर क विषय अछि। तँ मोन नहि मानैछ जे अहाँक नेनमति एखन धरि गेल नहि अछि आ एही कारणें अहाँ मोहनजी सन अमर कवि व्यक्तित्व कें टोङि लैत छी, जकरा समाज जीवित राखए चाहतैक ओकरा मारि देला सँ स्वयं मृत्युए हास्यास्पद बनैछ। की अहाँ एहि सत्य कें स्वीकार नहि करैत छी?

कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' कें साहित्यक प्रति अभिरुचि आ सर्जनात्मक प्रतिभा बाल्यकालहि सँ छल। जखन ओ प्रथमाहिक छात्र छलाह सर्जनात्मक प्रवृत्ति हुलकी मारैत छल। पाठ्यपुस्तक सँ वेशी साहित्यिक रचनाक स्वाद लीअ लागल छलाह। 'ई रजनी-सजनी हमरा प्रथमा क बादे जकड़ि लेने छल, हम पाठ्य-पुस्तक सँ अधिक कविता, कथा नाटक उपन्यास पढ़ल करी हिन्दी, संस्कृत, आ मैथिलीक। छोटे वयस मे सर्जनात्मक प्रतिभा हुलकए लागल पहिने संस्कृत, फेर हिन्दी आ बाद मे मैथिली धराएल। किछु तेहन कारण भेलैक जे मैथिली केन्द्र विषय भए गेल, आन कौखन-कौखन किछु-किछु।' कविता लिखब अथवा साहित्यक प्रति विशेष अनुराग ओहि समय मेनीक नहि मानल जाइत छल। ओ अर्थकारी नहि छल संगहि अन्यशास्त्र जकाँ साहित्यक विभिन्न उपादानक वा मानदण्डक खास कए श्रृंगार रसक उन्मुक्त व्याख्या विशेष कए गुरु सँ सुनब अधलाह बूझल जाइत छल। प्रायः तें मोहन जी अपन बाल्यकाल क अनुभव कें रजनी-सजनी क मादे व्यक्त कएल छथि। अस्तु। मोहनजी लिखने छथि जे विशेष कारणवश ओ मैथिली मे लिखब आरम्भ कएल। ओ विशेष कारण वा प्रेरक छलाह साहित्यिक गुरु कविशेखर बदरीनाथ झाक (१८९३-१९७४) सानिध्य आ परम स्नेही ओ शुभेच्छुक वन्धु कविवर सुरेन्द्र झा 'सुमन'। प्रेरित करैत सुमन जी कहने छलथिन मैथिलीक सेवा अमूल्य सिद्ध होएत, एकर भंडार भरियौक। एकरा एखन प्रयोजन छैक, संस्कृत हिन्दीक क्षेत्र विशाल, भोतिअयले रहब। सुमनजीक बात मोहनजीकें जँचि गेलनि आ मैथिली लागि गेलाह। तकर वादक स्थितिक प्रसंग लिखैत छथि जहिना शिक्षक नहि भए हम प्रेस जीवी भए गेलहुँ तहिना संस्कृत वा हिन्दी मे लिखबो मन्द पड़ि गेल। मैथिली मे पद-पाँती जोड़ब पवित्र धर्म जकाँ जोर-शोर सँ धरा गेल।

कविगुरु कविशेखर जीक काव्यमय सानिध्य आ मित्र सम्पादक 'सुमनजी' क प्रेरणा सँ मोहनजीक साहित्य धार अनाहत आ अवाधित चलैत रहल। विभिन्न पत्र पत्रिका मे प्रकाशित होइत रचनाक महमही सँ मैथिली क काव्य अस्वादक उत्फुल्ल होइत रहलाह। मोहनजीक प्रसिद्धि आ ख्याति द्विगुणित होइत गेल। 'मिथिला मिहिर' मे अएबा सँ पूर्व मोहनजी मुख्यतः कविता लिखैत रहलाह, किन्तु बाद मे पत्रिकाक आवश्यकताक अनुसारे गद्य रचना दिस सेहो प्रेरित भेलाह। अपन मूल नामे तँ रचना करितहि रहलाह किछु छट्म नामे, यथा-विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक वामनशास्त्री, वामनकाश्यप, श्रीठाकुर आदि रचना करैत रहलाह।

अद्यावधि मोहनजीक तीन संग्रह प्रकाशित अछि। पहिल छनि 'फूल-डाली' दोसर अछि 'बाजि उठल मुरली' आ तेसर अछि 'इति श्री'। फूल डालीक प्रकाशन (मई १९४२) मे भेला

एहिमे फिल्मी भासक गीत अछि। दोसर संग्रह थिक 'बाजि उठल मुरली'। एकर प्रकाशन सितम्बर १९७७ ई० मे भेल तथा १९७८ क 'साहित्य अकादमी'क पुरस्कार प्राप्त कएलक। एहि मे मोहनजी क १०१ गीत कथा काव्य मान्यताक शास्त्रीय उपस्थापन अचि। तेसर संग्रह थिक 'इति श्री' एहि पोथी मे 'बोजि उठल मुरली'क बादक अधिकांश रचना संगृहीत अछि। कविता क अतिरिक्त पोथीक अन्त मे कविक संस्मरण अछि, जे मोहन जीक जीवन यात्राक प्रामाणिक गाथा थिक। किछु संस्कृत रचना सेहो अछि। 'इति श्री' नामकरण करैत काल प्रायः ई धारणा रहल होएतैक जे आब मोहनजी नहि छथि, तें हुनक काव्य प्रणयन के अन्त मानि लेल जाय। मोहनजीक रचनात्मक सक्रियताक हिसाबे 'इति श्री' भएं सकैछ, मुदा जतय धरि पूर्व प्रकाशित गद्य रचनाक संकलन-प्रकाशनक प्रश्न अछि, इतिश्री नहि मानल जयबाक चाही, विभिन्न छद्म नामे प्रकाशित हुनक गद्य आ पद्य रचना सम्प्रति छीड़ि अएले अछि।

मोहनजी आपादमस्तक कवि छलाह। हुनक कविता वा हुनक गीत कवि व्यक्तित्व क एक भास्वर प्रतीक थिक। ओ एक ओहन भास्वर प्रतीक छलाह जे छलाह जे सदिखन मानव कल्याणक अजस्त्र स्रोत प्रवाहित करैत रहलाह। ओ व्यक्ति अथवा, जाति वर्ण वा इलाकाक आधआर पर मनुष्यकें देखबाक अपेक्षा सम्पूर्णता मे देखबाक अभ्यासी भए गेल छलाह। एक कवि व्यक्तित्व समक्ष भेद-भाव नहि मानैत कवि कें परिभाषित करैत लिखल अद्दि-'कवि माने प्रस्फुटित पुष्प, जतय सँ पराग झरय आ मकरन्द बरसय। कवि मानें उदित इन्दु जतय सँ मादक ज्योत्सना पसरय आ आह्लाद बरसय। कवि माने स्वच्छ उच्छल निर्झर। जतय सँ निर्मल सलिल स्रोत बहय आ झहर-झहर संगीत निनादित होइत रहय।

मोहनजी क नजरि मे कविक जे रूप अछि, कवि कें जेना ओ परिभाषित कएल अछि बड उदात्त अछि। मोहन जी इहो मानेत छथि जे कविता लिखब चाहला सँ नहि होइछ। केओ चाहय जे हम कवि बनि किछु पाँति जोड़ि कविक पाँती मे आबि जाइ से नहि भए सकैछ। पाँती जोड़ि ओ अधिक दिन धरि पाठक-श्रोताकें ठकि नहि सकैछ। भंडा फूटबे करतैक। कविता करब ओ एक एहन प्रक्रिया मानैत छथि जे संस्कारगत होइछ। जे प्रतिभा आ मेधाक उपेक्षा रखै। जहिना आग्रह वशीभूत 'कामिनीक संग सहवास तेहने अनुद्रिक्त स्थिति क रचना' मोहनक जीक नजरिमे अछि। कवि व्यक्तित्व आ कविता कें एक दोसरा सँ फूटाओल नहि देखैत छथि। फूटाकए देखला पर ने तँ कविता कें चिन्हल जा सकैछ आने कविक व्यक्तित्वक विश्लेषण सम्भव भए सकतैक। एतनहि मान्यताक स्थिति मे कविताकें परिभाषित करैत छथि-'कविताक माने कविक जीवन जगत क दर्शन रूपी तड़ित पोथी, कविता माने कविक व्यक्तित्व कृतित्व क निचोड़। कविता माने कविक भावना अनुभूतिक क सप्राण प्रतिभा। कविता माने कविक प्रतिभा मेधाक सार पदार्थ-नेनु। कविता माने सृष्टिक समस्त सौन्दर्य राशिक प्राक्कलित संचित केन्द्र बिन्दु।

कविल लेल आवश्यक छैक जे अपन परिवेश मे जीवित रहय। ओकरा लेल अतीत जीवी होएब अवावश्यक छैक। ओ अतीतक ज्ञान राखय अवश्य, किन्तु अतीत मे जीवय नहि। अतीतक जीवन रस जे आजुक परिवेश मे सेहो ओतबे प्रासंगिक अछि, तकरा प्रति साकांक्ष रहब, एक

प्रतिभाशील आ जागृत कवि लेल आवश्यक छैक। जँ ओ आरम्भ सँ अन्त धरि एके राग अलापैत रहि गेल, तँ ओहि कोटिक रचना मे कोनो प्रकारक परिवर्त्तन नहि अबैछ, जे अपन जीवन-जगतक प्रति संवेदनशील नहि छथि, तकरा मोहनजी कारी कम्बल कहल अछि-वज्र लेप धारणो क अनेक कवि छथि, जे ओदि सँ अन्त धरि एके सुर धयने रहि जाइत छथि। ओ कारी कंबल थिकाह, जाहि पर आन कोनो रंग कहिओ नहि चढ़ि सकैत अछि।

कवि आ कविता मोहनजी मानैत छथि स्वच्छ निर्मल धार जकाँ सभक लेल होइछ। जकरा जतेक छाक पीबाक होइक पीबि सकैछ। तें ओ कविकें कोनो धर्म, सम्प्रदाय दर्शनक राजनीतिक बाद सँ असम्पृक्त रहब आवश्यक मानैत छथि। सभक सम्पत्ति कें असम्पृक्त रहब आवश्यक मानैत छथि। जे सभक सम्पत्ति थीक, जे सर्व जन हिताय अपन जीवन कें अर्पित कएने रहैछ, ओकरा लेल कोनो एक संकीर्ण बाट पर चलब 'मोहनजी' अनुचित मानैत छथि। ओ साहित्य कें राजनीति सँ सर्वथा फराक राखय चाहैत छथि। राजनीतिक मूलमंत्र थिक स्वार्थ-नीति, जेना-तेना गद्दी हथिआएब किन्तु साहित्यक लक्ष्य अछि स्वच्छ निर्मल उच्छल निर्झर जकाँ बिना ककरो बारने स्फूर्त्ति प्रदान करब। एहि सन्दर्भ मे मोहनजी स्पष्टतः लिखैत छथि-साहित्य जखन राजनीति कला कौशल सँ छल छद्म दिस अभिमुख भए जाइछ तुँ ओ मूलतः कर्मनाशा (लेरक नदी) भए उठैत अछि।' १४

सम्प्रति प्रचलित विभिन्न राजनीतिक वाद वा मतवादक पक्षपाती होएब कवि लेल मोहनजी पातक तॅ मानिते छलाह, साहित्यक राजनीतिओ कें ओ काव्य नहि मानैत छलाह। आलोचन क क्षेत्र मे व्याप्त दृष्टि, अपनहि 'गट्टी भरि पनवट्टी' कें ओ स्वस्थ विकासक लेल बाधक मानैत छथि। एहि प्रवृत्ति सँ भलहि अपन गट्टीक प्रतिभाहीनो व्यक्ति किछु क्षण लेल चमकि उठय, किन्तु कालान्तर मे कलइ खुजबे करतैक आ खुजबे कएलैक अछि, से मोहनजीक अनुभव आ मान्यता अछि। सही आलोचकक विशेषताक प्रसंग मे लिखल अछि-आलोचक वर्ग कोनो सत्ताक वेतन भोगी दास नहि थिक, कोनो सत्ताक निर्धारित नीतिक भोंपा, लाउडस्पीकर नहि थिक, एकरा सही विवेचक होएबाक चाहियेक कोनो वकील जकाँ अपन सुअक्किलक पक्ष मे वुद्धिक व्यायाम कए, अनुकूल युक्तितर्क जुटायबे एकर गरिमा क साधक कोना भए सकैत छैक? किन्तु भए रहलैक अछी सैह-फल्लाँ कें उठयबाक अछि, तँ तेहने लेयर(कलइ) चढ़ा दियौक जे पितड़ि क वर्त्तनो चानी जकाँ चकमका जाइक। आ खसेबाक अछि तँ चानियो पर कारी लेप पोति दियौक। झाम गुड़थु बाजार मे केयो पुछबो ने करतनि,१५ सर्जनाकार अपन भावावेगक अभिव्यक्ति लेल विभिन्न विधाकें माध्यम मे स्वीकार करैछ। ओहि विधा कें भरैछ, विकसित परिष्कृत करैछ। ओहिना यदि मोहन जीक सर्जनात्मक प्रतिभाक अभिव्यक्तिक माध्यम ताकल जाय तँ ओ जाहि विधाकें अंगीकार कएल ओ होएत काव्य। कतेको सर्जनाकार एकहि संग विविध विधा कें माध्यम बना लैत छथि, मुदा मोहनजीक संग एकटा विचित्रता अछि जेओ कविताकें अपनौलनि। ओहू मे गीतक हुनक सम्पूर्ण सर्जनात्मक प्रतिभाक अभिव्यक्तिक एक मात्र माध्यम रहल अछि।

गीत कें माध्यम रूप मे स्वीकार करबाक कारण अछि गीतनाद कें जीवनक अंग मानब। मोहनजीक स्पष्ट मान्यता छनि जे मन बहटारय लेल सभ क्यो कौखन किछु गबैत अछि, अथवा

दबले स्वर मे गुनगुनाइत अछि। ई नाद ब्रह्मकें जगएबाक प्रक्रिया थिक। ई आत्म ज्योतिकें चिन्तन सँ शब्दक सही बोध आ अर्थ सही परिचय सँ बाध्य होइत अछि। गीतनाद जें कि साधनाक मधुरमार्ग थिक, आनन्दक संग ज्योति जगएबाक लेल लोक एकरा अपनौने रहल अछि। तें लोक जीवनक अत्याज्य अंग भए गेल अछि।' मोहनजी द्वारा गीत विधा कें अपनेबाक एक दोसरो कारण अछि, छन्दक नियम उपनियमक पालन। मोहनजी मानैत छथि जेना एकटा माली
फूलक गाछ कें छोपि, छपटि एक सोझ आ आकार मे रखैछ, जाहि सँ फूलबाड़ीक शोभा बढ़ि जाइछ, तहिना छन्द कविताकें सुदृढ़ आ प्रभावोत्पादक बना दैछ।'

छन्दक सोझ सम्पर्क मनुष्यक रागात्मक वृत्ति सँ छैक। मोहनजीक कवि वर्णतः रागात्मक अछि, जे सभमिलि गीत विधाकें अंगीकार करबालेल विवश कए देने होएतनि। कारण जे कोनो होइक, मुदा ई सार्वकालिक सत्य थिक जे मोहनजी गीत विधाकें अपनौलनि, गीते टा लिखलनि, आ गुनगुनाइत रहलाह।

काव्य रचना प्रक्रियाक संबंध मोहनजीक जे मान्यता अछि तकरो आधार पर इएह प्रमाणित होइछ जे ओ गीतक गुनगुनाहटि मे जीवनक सम्पूर्ण रस पीबि गेल छलाह। कविताक रचना प्रक्रियाकें स्पष्ट करैत लिखल अछि। कविताक उद्‌गम यथार्थतः मिलन, विरह, कुसुम काँट आ अन्धकार-प्रकाशक पृष्ठभूमि वा भाव भूमिक आधार लए कए वेशी प्रखर मुखर होइत अछि। कोनो भावनाप्रण कवि एहने क्षण मे अनमना उठैत अछि, औनाय लगैत अछि, ओकर मन मे किछु हौड़य लगैत छैक, माथ मे किछु घुरघुराय लगैत छैक, कल्पनापरी नाचय-गायब लगैत छैक, शब्द अर्थक घनघटा सँ रिमझिम बुन्द टपकए लगैत छैक, कविताक मोती माला गँथाय लगैत छैक, उन्मादपूर्ण, मधु तरल।'

गीत थिक सुख-दुःख जन्म भावावेशमयी अवस्था विशेषक परिसीमित शब्द मे स्वर साधन उपर्युक्त चित्रण? एहि गीत क पांच टा आवश्यक तत्व अछि-(१) आत्माभिव्यक्ति (२) भावातिरेक (३) एकरूपता (४)संगीतात्मकता (गीत तत्व) एवं (५) संक्षिप्ता। चूँकि मोहनजी क प्रायः सम्पूर्ण रचना गीतात्मक अछि तें ई देखब आवश्यक भए जाइछ मोहनजीक गीत, गीतविधाक नपना मे कतेक फीट करैत अछि।

आत्माभिव्यक्ति-गीतक पहिल आवश्यक तत्व आत्माभिव्यक्ति भेल कविक हृदयक अभिव्यंजना। एहि अभिव्यंजना मे मिलन-विरह कुसुम-काँट आ अन्धकार प्रकाशक अभिव्यक्ति होइछ। कविक संवेदनशील ताक अभिव्यक्ति होइछ। मोहनजी क गीत आत्माभिव्यक्ति थिक। किन्तु ई आत्माभिव्यक्ति ततेक ने तीव्र अछि जे वैयक्तिक नहि रहि, सार्वजनिक भए गेल अछि। ई जाहि स्थितिक वर्णन गीत मे कएल अछि, ओ केवल नहि समान भाव भूमि मे जीवैत जन जीवनक हृदयक धुक-धुकीक अभिव्यक्ति भए गेल अछि। वेदनाक प्रभाव स्थायी छैक से वेदना हिनक गीतक मर्म थीक। ई वेदना विरहजन्य हो अथवा जीवन यात्रा मे प्राप्त अनुभूमिक सघनतर घनीभूतरूप, एक समाने मोहनजीक गीत मे व्यंजित अछि।

'मानल अति कटु आहति पड़लौ
मधुमद तरंग मे नहि भरलौ
वनगिरि रटलें घिघिरी कटलें
उच्छल हिन्दोलन नहि बँटलें
पसरओ प्रकाश, हुलसओ सुवास
कर्पूर जकाँ चों जरइत रह,
निर्झर रे, अविरल बहइत रह ।'

एहिठाम व्यक्त निर्झरक वेदना कविक वेदना थिक। जल-जनक वेदना थिक जे स्वयं आघात सहि-सहि, दोसराक हेतु अपनाकें बिलहि रहल अछि। कविक जीवन मे सामाजिक मंगल कामना कतेक वेशी सक्रिय रहल अछि, निम्न पॉतीमे अभिव्यक्ति भेल अछि-

'अरे फेकल फूल छी हम
भुवन वनमे झरल मुरझल
पद दलित मृदु फूल छी हम
हमर जीवन मे विघाती जग विषम विष घोरि देलक
सरस सुरभित नवल दल कें दाबानलमे बोरि देलक
लोक कण्ठ क वास वंचित
अशिव शिव निर्मात्य छी हम।

भावातिरेक : गीत मे संघनित भावक सहज अभिव्यक्ति होइछ। संघनित भावक आवेश ततेक ने तीव्र भए जाइछ जे ओकरा टारब कठिन। कविक मनमे उमड़ैत-घुमड़ैत भाव घनीभूत होइत रहैछ। एहि प्रक्रिया कें मोहन जी नीक जकाँ फरिछाकए लिखल, जकर चर्चा ऊपर अछि। किन्तु, मोहनजीक गीतक ई विशेषता थिक जे ओ भावातिरेक संयमक बान्ह तोड़ि गीतक पाट कें तेना नहि कए देलक अछि जे ओकर पूँजीभूत प्रभाव लटपटा कए धराशायी भए गेल हो।

"हम किए ठाढ़ि छी मुग्ध जड़ सन एतऽ?
जानि ने बीति गेलै कतै क्षण एतऽ?
पानिलए जाइ घर, आ कि चलि दी ओत' ?
देह अँटकल एत 'प्राण लटकलओत' ?

नटवरक वेणुक ध्वनि पर मातलि नागरिकाक चित्रण पूर्ण कौशल आ यथार्थपरक अछि, किन्तु, भावातिरेकक बान्ह टूटल नहि छैक। जे देह अँटकल एत', प्राण लटकल ओत' से स्पष्ट अछि।

एकरूपता- गीतक सफलता एहि बात पर निर्भर करैछ जे गीतक भाव मे कतेक

एकरूपताक निर्वाह भेल अछि। गीतक सृष्टि अत्याधिक एकान्वित अनुभूतिक स्थिति मे होइछ। एहि लेल चित्तवृत्तिक संयमित आ केन्द्रित होएब परमावश्यक। गीतमे कथा उपन्यास जेकाँ इतिवृतात्मकता अपेक्षित नहि अछि। तें जाहि भावनाक धार फूटल अछि, तकर निर्वाह अन्त घरि होअए से आवश्यक। मोहनजीक गीतमे भावक एकरूपताक निर्वाह सर्वत्र भेल अछि। जे कोनो गीत ली एकही भावक गुम्फन भेल भेटैछ।

गीततत्व-गीत नाद कें मोहनजी मानव जीवनक एक अभिन्न व्यापार मानल अछि। ई अभिन्न व्यापार कविक अन्तरतम सँ फूटल रचनाकें गीतात्मक बना दैछ। जखन संगीतक लय, ताल आदि उपकरणक काव्यक शब्द, अर्थ आदि उपकरणक संग संगमित भए जाइछ तँ बाट घाटो मे गुनगुना उठैछ आ गीत उतारि अबैछ। मोहन जीक अधिकांश रचना गीत थाक जाहि मे गीतात्मकताक निर्वाह पूर्ण सफलतापूर्वक भेल अछि। बाजि उटल मुरली, वंशी ध्वनि, विफल श्रृंगार नहि हमर घनश्याम रे, मोहन, बसुरिया डसि लेलक' (बाजि उठल मुरली) तथा जरब निसॉस,' 'विश्राम-जिज्ञासा' (इतिश्री) आदि मोहन जीक पूर्ण गीत थिक।

संश्रिप्तता-गीत लेल जेना आत्माभिव्यक्ति, भावातिरेक, एकरूपता, गीतात्मकता आदि तत्त्व महत्वपूर्ण अछि, ओहिना इहो महत्वपूर्ण अछि जे उक्त सभ तत्वक सफल समावेश छोटे आकार मे भए जाए। यदि आकार पैघ भए जाएत तँ प्रभावे छितड़ा जएतैक। तें गीतक सफलता लेल अत्यावश्यक छैक जे आकार संक्षिप्त हो। जतए धरि मोहनजीक गीतक प्रश्न अछि ओकर आकार एक सफल गीतक आकारक अनुरूप अछि। हिनक गीत तेहन कस्सल आ गस्सल अछि जे ओहि मे इतिवृतात्मकता वा अलंकारिकताक प्रवेशो नहि भए सकल।
गीतक एक-एक शब्द माँजल-खराजल, नापल-तौलल अछि, ने एक शब्द वेशी ने एक शब्द कम।

मोहनजीक प्रसंग डा० जयकान्त मिश्र लिखल अछि--Upendra Thakur Mohan is essentially a lyric Poet. He knows that our sweetest songs are those that tells saddest thought. His meloncholy is however not very deeps and he has almost abandoned writing in recent years. कोनो कवि अथवा रचनाकार कें संग्रह प्रकाशित नहि रहलाह की घाटा से डा० मिश्रक लेखनी सँ स्पष्ट अछि। 'फूलडाली'क प्रकाशनक करीब चारि दशकक बाद 'बाजि उठल मुरली' प्रकाशित भेल। एहि बीच मोहनजीक लेखनी चलिते रहल, तथापि डा० जयकान्त मिश्र लिख देने छथि जे-He has almost abandoned writing in recent years.

ऊपर जे वर्णन भेल अछि, ओ थिक मोहनजीक प्रिय विधा गीतक प्रसंग। किन्तु जतयधरि मोहनजीक रचनाक कथ्यक संदर्भ अछि ओ बड़ व्यापक अछि। मोहनजीक कविताक कथ्य विस्तार और विविधताक प्रसंग आचार्य रमानाथ झा ५ लिखने छथि-"ई विभिन्न वस्तु विभिन्न विभिन्न भाव लए कविता लिखने छथि। एक दिस यदि सामाजिक वैषम्य, पीड़ित दीनता, विपन्नताक चित्रण कएल तँ दोसर दिस समाज मे नवोद्भूत ओजस्वी चेतनाक सेहो चित्रण

कएल। जाहि-जाहि कवितामे आत्मनुभूतिक व्यापक चित्रण भेल अछि, ताहि-ताहि ठाम मोहनजीक जीवनमे निहित नैराश्य एवं करुणाक चित्रण अछि"। एहिना डा० जयकान्त मिश्र मोहनजीक कविता क प्रसंग लिखल अछि जे--In some of the songs he (Mohan) raises his voice against social evils too. The life of a wage earner is pictures quely, brought before us as well as that of those who waste their time and energy in idling.

डा० श्रीशक मतें मोहनजीक आरम्भिक कविता मे छायावादी छाप पूर्ण छल, किन्तु बाद मे करुणाभावना क प्राधान्य भए गेल-स्व० उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क कविता क मुख्य आकर्षण थिक करुणा- भावनाक चित्रण। आरम्भ मे छायावादी विषादक छाप हिनका मे उत्कट छल, मुदा पश्चात् आबि सांसारिक अनुभव-जन्य विषाद मे दार्शनिकताक मणि-काँचन संयोग देखना जाइछ। 'फूलडाली'क किछु रचना मे मजदूर किसानक सेहो चित्रण कएने छथि। 'युवक वीर' मे युवक क निर्माण लेल क्रान्ति भावना ओ 'नव युग' मे युगीन ओजक बड़ उल्लसवर्द्धक अभिव्यक्ति भेल अछि।'

मोहनजी अपन समय सालक प्रति सर्तक छलाह। अपन परिवेश मे उठैत लहरि कें देखैत छलाह, चीन्हैत छलाह आ आत्मसात करैत ओहि लहरिक प्रभाव कें स्वर दैत छलाह। इएह कारण थिक जे कविवर गीत मे ओहो तत्व मुखर अछि जे राष्ट्रीय आन्दोलनक समय प्रत्येक सचेत कविक चेतनाकें प्रभावित करैत छलैक। एहि हेतु कवि युवक कें मातृभूमिक रक्षाहेतु ललकारैत प्रेरित करैछ-

'सहगामी बन्धु उठू बढ़ाउ उत्थान कार्य नव युग प्रभात
रे पाँक फँसल गायक समान हारल उठान की धयल कात?
देशक अभिलाषाक हमहि केन्द्र करबाक पड़ल अछि कते काज
साहित्य विपद्गत हन्त आइ, पतनोन्मुख अछि दुर्गत समाज ।
रे जन्म-भूमि जननीक नोर
पोछत के हमरा बिना वीर?"
देशक अभिलाषाक हमहि केन्द्र युवक वीकें जिनगीक लक्ष्य कवि बुझबैछ-
'पसरय पजरि पसाही सन जे ज्योतिर्मय, से जिनगी
काल ज्वाल मे जकर भस्म हो, प्रतिरोधी से जिनगी।'

काल ज्वाला मे प्रतिरोधी कें भस्म करबा लेल सक्षम युवक जिनगी मे सम्भव छैक जे एक-विषम स्थिति आबि जाए, एक सँ बढ़ि एक प्रतिरोधी समक्ष आबि जाए, किन्तु अपन प्रण पर डँटल रहब आवश्यक अछि। ओ निर्झर कें उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करैत लिखल अछि-निर्झर रे अविरल बहइत रह'।

कविवर मोहनक व्यवहारे मे नहि कवितो मे नवकें उत्साहित करबाक भाव अछि। नवका पीढ़ीक क्षमता मे हुनका पर्याप्त आस्था छलनि, ओ बढ़य से सदिखन चेष्टा रिनहैछ। एही

विचारक अनुकूल कविवरक 'अठओ नवका ध्वज' गीत अछि। कविकें विश्वास छनि जे झरल झखरल गाछ आ उसरल हाट कें पटऔने वा ओगरने कोनो लाभ नहि छैक-

'गाछ ई जे फेर पल्लव सँ सजत नहि
मदिर मधुमय महमही महिमा भरत नहि
मज्जर क छवि छटा स्वर्णिम नहि उमड़तै
मंडपायित सघन शाखा नहि चतरतै।
वज्रलेपी तुलायल पतझार से, जें
कोकिल कुल उड़ल पाबि उजार

तें अत्यावश्यक अछि जे नव गछुली कें पटाओल जाए, प्रोत्साहन देल जाए, आ फलक कामना कएल जाए-

'ज्योति नव गछुली समृद्धि निधान शीतल
बढ़ि हरओ जनताप, फलसँ भरओ हीतल।'

समाज मे सदिखन किछु एहन व्यक्ति आ वर्ग अछि जे दोसराक उत्थान सँ आहत होइछ। दोसर भरि पेट अन्न पबैछ, ओहि सँ ओकरा दुःख होइछ। ओकरा एहू लेल दुःख होइछ जे सभ दिन शोषित छल, शापित छल आ प्रताड़ित छल से कियेक आइ मूड़ी उठबैत अछि। किन्तु कविवर मोहन प्रगतिशील तत्वक पक्षपाती छथि, जे सभदिनसँ शोषित, प्रताड़ित आ शापित रहल छथि, तकरहु मे चेतना जगैत देखैत छथि। नवयुग कें काल करौट लैत देखैत छथि। लातक धाङल धूलिक कण कें विरड़ो बनि जाइत देखैत छथि। अथबल-अजगर कें गुड़कि ससरि गिरि पर चढ़ैत देखैत छथि। एहि परिवर्त्तन सँ कवि' सामन्तीधाह पतरायल' अनुभव करैत छथि। सुविधा भोगी वर्गक मन से समायल ईर्ष्या आ आतंक कें स्वर दैत कवि गाबि उठैछ-

'उँच महल चढ़ि जे छथि बैसल
हुनकर मन मे डर छनि पैसल
सोर-पोर सँ काछे उखरय
ढ़नमनैल अछि कोठी सैंतल
प्रलंयकार ईबाढ़ि तेहन ने
तुन्दिल जक झुरझुर झखैत अछि,
नव युग काल करौट लैत अछि।'

मोहनजीक जीवन मे संघर्षक क्षण विशेष रहल अछि। एही संघर्षक क्षणक अन्तराल मे अवसाद ओ नैराश्यक तरंग कौखन सेहो उठैत रहल अछि। इएह कारण थिक जे मोहनजीक गीत मे अवसाद ओ नैराश्यक रूप भेटैछ। सक्षम रहैतो कोना अक्षम असहाय बना दैछ तकर प्रमाण थिक मोहनजीक अभिव्यक्ति-

'बहि रहल धार पर निर्जीव तन सन
हाथ पयर पसारि फेंकि शरीर झरल।'

हारल-थाकल आ निर्जीव तन-सन पानिक धार पर भसिआइत जीवन वा आर्द्र इन्धन सब धुएँल जरैत जीवन' कविक नैराश्य बोधक अभिव्यक्ति थिक। सम्पूर्ण जीवन मे व्याप्त नैराश्य आ असफलताक अनुभूति कवि कें होइत रहल अछि, एक सँ बढ़ि एक दारुणा स्थिति कें भोगल अछि, एक सँ बढ़ि एक सुन्दर भविष्यक कल्पना क क्षण त्रासद भए गेलैक अछि। जीवनक विफलताक प्रसंग कविक वाणी फूटि पड़ैछ-

'ढ़हि रहल दिन मलिन रवि किछु क' सकल नहि
रहल लाधल ढांप-तोपक तेहन बेढ़ल।'
तें जीवनक अपराह्न मे कवि गाबि उठैछ-
'नव करब की पुरान फल कोन लहलह,
असह छल लुती, पड़ल अछि आगि धहधह।'

जीवनयात्रा मे प्राप्त वैफल्य बोध ओ अवसादक मार्मिक अभिव्यक्तिक परिणति निराशामूलक नहि अस्था मूलक अछि। 'ज्योति नीड़' शीर्षक गीत मे जीवन संग्राम मे विभिन्न स्थलक चित्रण-

'सर सँ सागर धरि छिछिअयलें
मिथिला मगध सगर बौअयलें
उष्ण शीत आ समरस बनलें
भाग भोग जतबे से अनलें
रटलें खटलें भरि पौलें कह
कन्था, तजि की खाट?
विहग धर ज्योति नीड़ केर बाट।
आ अन्त मे-
'पश्चिम क्षितिजक लाली जगलौ'
माँ पद गहि तम काट।'

कविक आस्था कें व्यक्त करैछ। एहि कविताक वैशिष्ट्यक प्रसंग आचार्य रमानाथ झा (१९०६-१९७१) लिखल अछि जे आत्मानुभूतिमूलक एहि कविता मे जीवनक कटु अनुभव निर्वेद जन्य अभिव्यक्ति अछि। जाहि मे निराशाक भाव संगहि आस्तिकताक आश्वासन कविक व्यक्तिगत वैषिष्ट्यक घोतक थिक।'

मोहनजी ओहि व्यक्ति सभक खूब आलोचना कएल अछि जे मातृभाषाकें महत्व नहि दैछ। हिनका मतें मातृभाषा आ तखन आन कोनो भाषा-

'घरक गोसाउनि झंखथि अन्हारें
मन्दिर बारब दीप?
गाम नोत नहि, नोत बेलाही
जड़ि तजि पकड़ब छीप।'

जड़ितजि छीप पकड़ला सँ एकटा पैध खतरा छैक। ओ खतरा अछि क्रमशः असम्बद्ध होइत जएबाक। जखन घरे ठीक नहि तखन बाहर ठीक करबाक प्रक्रिया कतेक सफल भए सकैछ मोहनजीक प्रश्न अछि।

'जखन मैथिली सूपक भाँटा
भेल संकटापन्न
की राष्ट्रीयता? देश भक्ति की?
के गौरब सम्पन्न?

मैथिली अकादमी पत्रिका-१९८९

शुद्धतावादी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' (ज० १९१७) क अद्यावधि दू टा कथासंग्रह 'विडम्बना' (१९५०) तथा 'भजना भजले'(१९८९) प्रकाशित अछि। कुल सतरहटा कथाक अतेक दीर्घ रचनाकाल (१९४४-१९८९) मे लिखब आ प्रकाशित होएब, गणितीय दृष्टिसँ झुझुआन लगैत अछि। कतहु ने कतहुसँ इहो अनुभव होइत छैक जे व्यासजीक सर्जनात्मक अभिव्यक्तिक मूलविधा कथा नहि थिक। परंच, जँ व्यासजीक रचनात्मक जीवनक सम्पूर्ण उपलब्धिकें एकठाम राखि देखल जाए, तँ ई स्वतः स्पष्ट भए जाइछ जे हुनक रचनात्मक जीवनमे निरंतरता अछि। ओ निरंतरता कथाक अतिरिक्त उपन्यास, कविता, यात्रा-साहित्यक, संगहि अनुवाद साहित्यकें सेहो पुष्ट करैत भेटत। ओहुना लेखकक साहित्यिक उत्कर्षक मानदण्ड मात्रा नहि, रचनामे अन्तर्निहित गुणवत्ता मानल जएबाक चाही। ढाकीक ढ़ाकी लिखेले पर जँ कोनो जीवनमूल्य स्वीकृत नहि भए सकल अथवा रचनाकारक पाँतीमे पृथक व्यक्तित्व नहि झलकैत रहय तँ भरिगर गत्ताक अछैतो जीवन कालहिमे ओ रचनाकार अप्रसांगिक घोषित भए जाइत अछि। व्यासजी मैथिलीक प्रथमहि रचनाकार छथि जे मूल (दू पत्र) अनुवाद ('विप्रदास') उपन्यास-साहित्य लेल साहित्य अकादेमीक पुरस्कार प्राप्त कएने छथि।

व्यासजीक रचनात्मक परिवेशमे कतेको उठा पटक भेल अछि। परिवर्त्तन आएल अछि।

सबसँ पैघ परिवर्त्तन राजनीतिक क्षेत्रमे राजनीतिक दासत्वसँ मुक्ति भेल। संविधानसँ लोक कें मौलिक अधिकार भैटलैक। कर्त्तव्य बूझय लागल। शिक्षाक प्रचार-प्रसार भेल। सामाजिक-सांस्कृतिक केन्द्र मे परिवर्त्तन आएल। युग-युगसँ ग्रामक निर्मल आ स्वच्छ वातावरण मे पोषित मानसिकतावला लोक शहर दिस पड़ाएल। गामक गाम उजड़ैल गेल, शहर पसरैल गेल। शान्त आ स्निग्ध गिरिप्रान्तर मे दन्तार कारखानाक स्थापनासँ निर्मलवायु आच्छादित आकाश धूम्रमय होमए लागल। लोकक जीवन यापन, रहन-सहन मे परिवर्त्तन आएल। विकृति छल-प्रपंच आ दाव, पेंच बढल। परंच व्यासजीक रचनात्मक दृष्टि अपन परिवेशक भौतिक-अभौतिक परिवर्त्तनक प्रति असम्बद्ध रहल। अप्रभावित रहल। स्थान, काल आ पात्रमे यत्किंचित परिवर्त्तनक अछैतो रचनात्मक मूल्य स्थापना आ तकर पल्लवनमे परिवर्त्तन नहि आएल। ओ कथाक परिवेशक निर्माण एहि प्रकारें करैत रहलाह, जाहिसँ कथाकारक परिवेशक छाप, कमसँ पड़ैक। विडम्बना, शैदा आओर हमीदा, मुखियाजी, तथा ममता कथाक परिवेशक निर्माणमे कथाकारक परिवेशक जे किछु चित्र आएल अछि, तकरा अपवादे मानल जा सकैछ। इहो आपवादिक स्थिति स्वाधीनतापूर्वक देशक राजनीतिक चेतना, देश विभाजनक समय, शारणार्थीक
समस्या, आ नरसंहार जन्य मानवीय त्रास अथवा धर्मान्तरणक समस्यासँ संवद्ध मानवीय पीड़ा आ विवशताक अभिव्यक्तिक लेल नहि अछि। अपितु कथाक चरित्रकें उदात्त बनेबा लेल अछि। पद्मकान्त (विडम्बना) क स्वाधीनता आन्दोलनक क्रममे जहल जाएब, अथवा कोर्टमे मैथिली मे बयानदेव गौण अछि। व्यासजीकें पद्मकान्तक चरित्रकें एहि प्रकारें स्थापित करबाक छनि, जे राष्ट्रपिता महात्मागांधीक आह्वान पर अंग्रेजी सरकारक विरोध करैत जहल जाइत अछि, मातृभाषा मैथिलीक प्रति अटूट आस्था छैक, गंगा मे डूबैत मित्रक प्राणरक्षा करैत अछि, वांसुरी बजा कए लोककें मोहि लैत अछि। छात्रवर्गक नेतृत्व करैत अछि। वाद-विवाद प्रतियोगितामे प्रथम अबैत अछि। शिक्षक समुदायक प्रिय पात्र अछि। पिआज, लहसून नहि खाए, भारतीय संस्कृति आ आचार-व्यवहार मे आस्था राखि पाँजिवला लोकसँ विशेष शुद्ध आचरण करैत अछि आदि। ओहिना शैदा आओर हमीदा' मे भारत विभाजन, शरणार्थीक समस्या, साम्प्रदायिक अथवा नरसंहार आदि गौण अछि महत्वपूर्ण अचि सहमूलक स्थापना जाति, धर्म, वर्ण, क्षेत्र आदिक आधार पर मनुष्य-मनुष्यक वीचक विभेद कें मेटाए, मानवीय गुणक प्रतिष्ठा करब। शैदाक चरित्रक माध्यमसँ कथाकार ई स्थापित कएदेल अछि जे मानवीय करुणा आ प्रेम जातिआ-धर्मक बान्हमे नहि अछि। अपन एक पूर्व परिचित आ पड़ोसी हिन्दू युवक कें अपहृत भेल देखि यवनी शैदा जाहि प्रकारें लाहौर मे हुनक प्राणरक्षा करैत अछि, शैदाक चरित्रकें जाति, धर्म सम्प्रदाय आ क्षेत्रक सीमा सँ ऊपर उठादैत छैक। साहुजीक माता पर पिताक आत्याचार (ममता) धरसँ भगादेब, मुसलमानक हाथमे पड़ब, विवाह कए मुसलमानित बानि जाएब स्वाधीनतापूर्वक धर्मान्तरणक समस्याकें प्रकट करैत अछि। परंच, कथाक मूल उद्देश्य अछि, माइक ममताकें स्थापित करब। सर्वप्रकारक बंधनसँ मुक्त देखाएब। ममता, धर्म आ जातिगत गुण नहि, आत्माक गुण धर्म थिक। पुत्र कुपुत्र भए सकैत अछि, परंच माता कुमता भए नहि सकैत अछि। कथाकारक अभिप्रेत इएह थिक।

समाजमे सब तरहक लोक होइत अछि, चोर-उचक्का, दुराचारी-व्यभिचारी सँ लए कए त्यागी, परोपकारी एवं सद्वृत्तिक लोक धरि। परंच, व्यासजी ओहन प्रवृत्ति अथवा प्रकृतिक लोक

कें अपन कथाक चरित्र नहि बनबैत छथि। जाहिसँ सामाजिक जीवन किंवा व्यक्तिगते जीवनमे मूल्यहीनताक स्थिति आबए, ओकर विजय होइक, दुष्टता बढय, कालुष्य लोक-जीवनकें आच्छन्न करए ओहन काज व्यासजीक कथा नायक किन्नहुँ नहि कए सकैत अछि। सामाजिक जीवनक सौमनस्य खण्डित कए व्यक्तिवादक स्थापना एकोटा पात्र नहि कए सकैत अछि। एकोटा चरित्र वा पात्रक सृजन ओहन नहि अछि जे छल, प्रपंच विद्वेषक आश्रय लए उत्कर्ष प्राप्त करैत हो। आ इएह कारण थिक जे व्यासजीक कथाक चरित्र अपन शुद्धतावादी जीवन दृष्टिक खातिर सहजहि चिन्हा जाइत अछि। ओ एहन चिन्हार कथा नायक नायिका अछि जे एक आदर्शक लेल जीवैत अछि, आदर्शक स्थापना करैत अछि। कथाकारक ई आदर्शवादी दृष्टि रमाकान्त एवं पद्मकान्त (विडम्बना) वहीनदाइ, गोविन्द आ देवू (देवू), डिपुटी साहेब आ हुनक परिवारिक सदस्यगण (रक्तदान), बुढ़िया (माता), रमेश बाबू (भजना भजले), शैदा (शैदा आओर हमीदा), भग्गूदा (भग्गूदा) आदि पात्रमे स्पष्ट अछि। वहीनदाइक ममता आ अनाथ देवूक प्रति जागृत सहानुभूति गोविन्दक भ्रातृत्व आ प्रतिष्ठा रक्षाक वोध एवं देवूक त्याग आदर्शक चरमविन्दु थिक। जे पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत सहानुभूतिक प्रवाह उत्पन्न कए दैत अछि। प्रत्यक्षतः हास्यास्पद, व्यंग्यास्पद भग्गूदा भीतरसँ कतेक सहज, उच्च विचारक तथा त्यागक प्रतिमूर्त्ति छथि से स्पष्ट भए जाइत अछि।

वेदव्यासक प्रसंग कहल जाइत अछि, अठारह पुराण मे मूलतः दुइएटा तथ्य लिखल- परोपकार थिक पुण्य आ परपीडन थिक पाप। जीवनक इएह आदर्श कथाकार व्यासहुक कथा नायक नायिकाक जीवनमे परिलक्षित होइत अछि। ई आदर्शवादी आस्थावादी दृष्टि जीवन मूल्यकें सामाजिकता प्रदान करैत अछि। परंच, व्यासजीक आस्थावाद व्यक्ति आधारित नहि अछि, व्यक्ति आत्मबल कें प्रकट नहि करैत अछि। जीवनक आ जीवनक प्रति व्यक्त एहि आस्थाक जड़ि अछि परोक्षपतामे। धर्मनिष्ठ व्यक्तिक प्रत्येक आचारणक परिणति अथवा
कर्मक फलकें ईश्वराधीन मानबालेल प्रतिवद्ध रहैत अछि। ढ़ेपाचेपाक कोनो मर्मस्थल पर नहि लागवकें एकादशीक महात्म्य मानि लेब (एकादशी महात्म्य) अथवा स्वप्नमे फल्गूक कात मे पिण्डदान लले मूड़िआरी दैत पुरुखाक सभक प्रेतात्माक वीच भजना(नौकर) आ भजले (कुकुर) कें देखि पिण्डान करब आ हरिजनभोज कराएब, अथवा पाथर फोड़ि जीविका चलबाए वाली एक सामान्य लोककें ओतेक ऊपर उठा देव, जाहिसँ ओहिमे देवत्वक प्रतिष्ठा भए जाइक कथाकारक ओही दृष्टिक परिणति थिक। लोकमे देवत्वक प्रतिष्ठान अथवा ईश्वरक भरोस पर सभ किछु छोड़ि आस्थावाद आदर्शवाद कें मनुष्येतर जगतमे पहुँचाएव थिक। ओहिठाम पहुँचि मानवीय विशिष्टता निश्चितरुपे न्यून भए जाइत अछि।

व्यासजीक कथामे व्यक्त प्रेमक स्वरूप अशरीरी अछि। देहक आकर्षक सीमाकें टपि हृदयक रसमे सरावोर भए जाइत अछि। भौतिक सुख एवं समृद्धिक आकर्षण लूसी आ बौब (मन कें मनाएब) क बीच उपजल पूर्वराग कें खण्डित नहि करैत अछि। विश्वयुद्धमे अपंगभेल बौद्धिकप्रति लूसीक समर्पणमे किंचिंतो खोर नहिहोइत अछि। अपितु बौबक बिना अपन जीवन कें बेकार मानि लैत अछि। विजयक प्रति संध्याक आकर्षण (रक्तदान) जे दाम्पत्य जीवनक स्वरुप लए सकैत छल, दुर्घटनाग्रस्त विनय बाबूकें का डिपुटी साहेब परिचर्चा आ रक्तदान सहोदर-सहोदराक उत्कर्ष आ उच्चताकें प्राप्त कए लैत अछि। व्यासजीक कथामे व्यक्त प्रेमकभाव मानव

सीमा सँ पशुक सीमा धरि व्याप्त अछि। बकरी ("बकरी") तथा भजले (कुकुर-"भजना आ भजले") क प्रति व्यक्त भाव मनुष्येत्तर जीवोक प्रति प्रेम आ सहानुभूतिक प्रगाढ़ता कें घोषित करैत अछि। उक्त दूनू जीवन प्रति उपजल प्रेम, सहिनुभूति आ दया कथानायक क अचेतन मे तेना भए बैसल अछि जे स्वप्नमे मनुष्यक शरीरमे बकरीक मुँह तथा पुरखाक पौतीमे कतेको वर्षपूर्व सापक प्रहारसँ मालिकक रक्षाक क्रममें आहत भजलेक आकृति गयाकें पिण्डदानक लेल आबि जाइत अछि, शिल्पक दृष्टिसँ दूनू कथामे विलक्षण साम्य अछि कथाकार दूनू कथामे अवचेतनहिक आश्रम लेल अछि।

व्यासजीक कथामे समाजमे व्याप्त विकृति आ रूढ़ि पर प्रहार भेल अछि। आचरणक शुद्धताक संगे विचारक शुद्धता आ उच्चता पर विशेष बल देल अछि। पॉजिवला गोपी बाबूक ओतय पद्मकान्त द्वारा पिआज-लहसून वला तरकारी थुकरी देब तथा अपंजीवद्ध पद्मकान्तसँ अपन कथन्याक विवाह करब गछि लेब, हरिसिंहदेवी व्यवस्था पर व्यंग्य करैत अछि। वुलूकें पश्चिमी वेश भूषा मे देखि भारतीय वस्त्र धारण करबाक विचार देव (विडम्बना) पश्चिमी संस्कृति आ सभ्यताक अंधानुकरण पर कथाकार प्रहार कएल अछि। परंच ठामहि पद्मकान्तक व्यक्तिगत गुण पर आकर्षित वूलू द्वारा विवाहपूर्ण पत्रचार करब परिपाटीक प्रतिकूल होइतहु, वर वरण करबाक स्वतंत्रताक कारणें प्रगतिशीलताक द्योतक मानल जाएत। सामाजिक कुरीति पर प्रहारक सन्दर्भ मे उत्तरदायित्व आ वागदान कथोक नाम लेल जा सकैत अछि।

कथ्यक अतिरिक्त व्यासजीक क कथाक सवसँ पैघ विशेषता थिक रोचकता। ओएह पाठक कें अन्तधरि बान्हि रखैत अछि। रोचकतासँ परिपूर्ण व्यासजीक कथामे उल्लेखनीय अछि 'मिस्टर बटर फलाई, फोटो, भग्गूदा, रुसल जमाए आदि। मिस्टर बटर फलाई मे जीवन मूल्यक सन्दर्भ गौण अछि, परंच रोचकता आ उत्सुकताक प्रभाव अवाधित अछि। मेकाल साहेबक टिकुली पकड़बाक तल्लीनता पकड़ि ओरिआ कए रखबाक विशेषज्ञताक वर्णन मे कथाकारक कुशलता झलकैत चलैत अछि। रोचकता विषयमे तँ रहिते अछि, प्रस्तुति अर्थात कहबाक ढंग' तेहन सुन्दर होइत छनि जे पाठक वान्हल भए जाइत अछि। व्यासजीक कतेको कथाक विषय-वस्तु यद्यपि रोचक नहि अछि, परंच उरोचक विषयहुकें ताहि कुशलताक संग प्रस्तुत करैत छथि ऊ जाहिसँ पाठकक उत्सुकता अन्त-अन्तधरि बनल रहैत अछि। रोयल इंजिनियर मैकॉल साहेबकें फुरसतिक समय तितली पकड़बाक सौख छलनि, ओकर भेद-प्रभेदक अनुसंधानक सौख छलनि, विषय कोनो रुचिगर नहि। परंच, व्यासजीक लेखनी पाबि ओ कथा खूब मनलग्गू बनि गेल अछि। "फोटो" कथाक हास्य यद्यपि एक
विन्दु पर आबि उत्कृष्ट भए गेल अछि। अनका हास्यास्पद-व्यंग्यास्पद बनेबामे नित्यानंद बाबूक पत्नी जे धखाइत नहि छथि, सेस्वयं तेहन हास्यास्पद बनि जाइत छथि जे तीन वर्षक मधुर दाम्पत्य जीवनमे बढ़ैत सन्देहक गेंठक गीरह ठहाकामे खूजैत अछि। तात्पर्यजे कथाक अन्तधरि पहुँचवा लेल जेहन आ कोन बाटक अनुसरण कएल जाए, व्यासजीक कथा लेखनक विशेषता थिक। नव दम्पत्तिक वीच छोट-छोट वात पर ठनि जाएब बड़ स्वाभाविक अछि, परंच जटाधरजी ('रुसल जमाए')क रुसि कए पड़ाएब, निश्चलतापूर्वक अपन हृदयक वात उगिलि देब आ फेर सासुर जाएब मनोरंजक अछि। औहूसँ वेशी मनोरंजक भए जाइछ कतेको वर्षक वाद जटाधरजीक पत्नीक द्वारा कथा वाचक कें ई कहैत उपालंभ देब जे-ओ ई छथि बड़का झगड़ा

लगाओन ककरो बॉसि कें फेरि रुसबो सिखादैत छथीन्ह।"

कथाकें रोचक बनेवालेल व्यासजी सर्वप्रथम वातावरणक निर्माण करैत छथि। पात्रक परिचय करवैत छथि। वातावरण निर्माण लेल प्रकृतिक मनोहारी चित्रण करैत छथि। जाहि कथाक परिवेश छोटानागपुरक अछि, प्रकृतिक चित्रणक कथामे समावेशसँ कथाक प्रभावान्वित द्विगुणित भए गेल अछि। एकादमी महात्म्य, रक्तदान आ अखरी बुढ़ियाक नाम एहि विशेषताक हेतु अनायासहु लेल जा सकैत अछि।

यद्यपि व्यासजीक अधिकांश कथाक प्रारंभ भूमिका आ पात्र परिचयक संग होइत अछि परंच (भजना आ भजले), कथाक शिल्प आन कथासँ किंचित फूट अछि। एहि मे अन्तसँ प्रारम्भ भेल अछि। भरि दिनक झमराल ढ़ोहिआएल रमेश बाबू अपन मित्र श्यामजीकें कहैत छथिन्ह, आइ जकरा ले, ई सभ कएलहुँ अछि, जकरासँ बुझू तँ एक तरहे उऋण भेलहुँ अछि, ओकर नाम छलैक भजना।"

व्यासजीक कथा मनोजगतमे नहि वाह्य जगतमे घटित होइत अछि। एहि कारणें हिनक कथाक काल परिवेश विस्तृत होइत अछि। एकादमी महात्म्य आ रुसल जमाए के अपवाद मानि सकैत छी। "रुसल जमाएक काल परिवेशक मुख्य अंग यद्यपि किछु कालक अछि परंच पूर्ण होइत अछि कतेको वर्षक वाद। जावतधरि वार्तालाप राटनपर अथवा स्टेशन पर चलैत अछि, ताधरिक मनक बात कथाकार उद्घादित करैत जाइत छथि। किन्तु, जखनहि कथाक काल, परिवेश नयचरि जाइत अछि कथाकार स्मृतिक प्रत्याख्यान विविधक अनुसरण करैत छथि। पात्रक मनोजगत अनुद्छादित रहि जाइत अछि।

प्रस्तुतिक दृष्टिएँ व्यासजीक कथा दू कोटिक अछि। पहिल थिक स्वानुभूतिक अभिव्यक्ति आ दोसर थिक सुनल कथाक पुनराख्यान। स्वानुभूतिमूलक कथामे जे प्रथम पुरुषमे वर्णित अछि "एकादशी महात्म्य, रुसल जमाए, फोटो, ममता शैदाआओर हमीदा, आदि तथा मिस्टर बटरफलाइ मनकें मनाएब आदि कथा सूनल अछि। मुदा, दूनू कोटिक कथाकें पुटाएब सुलभ नहि अछि। दूनूक वर्णन आ विकास ततेक कुशलता आ सूक्ष्मतासँ कथाकार सम्पन्न कएल अछि जे आत्मानुभूति आ परानुभूतिक अभिव्यक्त शिल्पगत विशेषताक कारणें आ प्रवाहहीन नहि होइत अछि। स्वानुभूतिए सन लगैत अछि। ओहिना सुस्वादु।

मैथिली कथा साहित्यक विकासमे व्यासजीक कथाक छथि सबसँ फूट अछि सम्कालीन अथवा परवर्तीकालक कथाकारक रचनासँ सर्वथा फूट स्वाद हिनक कथा दैत अछि। व्यासजीक कथा समसामयिक जीवनसँ विशेष प्रभावित नहि होइत अछि आ परिवर्तित होइत युग-जीवन आओर विकृति आ विडम्बना सँ अप्रभावित रहैत अछि। तें, व्यासजीक कथाक स्वाद आ प्रभाव बासितेवासि नहि होएत। टटका बनल रहत। जेना पात्रक निर्दुष्टता आ सच्चरित्रता व्यासजीक कथाक वैशिष्ठ्य थिक, ओहिना भाषाक शुद्धताक रक्षा करैत मनोरंजक शैलीमे अपन बात कहि देव व्यासजीक कथाक आकर्षक विशेषता थिक।

पं० राजेश्वर झा : व्यक्तित्व ओ कृतित्व

साहित्यकारक व्यक्तित्वकें बूझब सर्वप्रथम आवश्यक अछि। विना व्यक्तित्वकें बूझने कृतित्वक तहमे जाएब संभव नहि होइछ। व्यक्तित्वक निर्माण परिवेश सँ होइछ आ तें कृतित्वक माध्यमसँ रचनाकारक परिवेशकें सेहो बूझल जा सकैछ। साहित्यकारक व्यक्तित्व जाहि तरहक रहैछ, ओ जतेक प्रखर रहैछ, जतेक संघर्षशील रहैछ, ओही अनुपातमे ओहि रचनाकारक साहित्य समक्ष अबैछ।

पंडित राजेश्वर झा (ज०-1922) मातृभाषाक सर्वतोमुखी विकासक लेल संघर्षरत सेनानी साहित्यकारक अगिला पाँतीमे विराजमान रहलाह। हिनक एहि सक्रियताक दिशा रचनाकारकें प्रेरित करबाक दिश विशेष छल। लोक कें साहित्य रचनालेल प्रेरणा भेटौक अथवा कोन प्रकारक पोथीक आवश्यकता मैथिली साहित्य लेल वेशी छैक, राजेश्वरबाबू सदिखन प्रयत्नशील रहैत चलाह। एही सक्रियताक प्रतिफल थिक जे राजेश्वरबाबू की रचनात्मक जीवनक अल्प वयमे अनेको पोथीक रचना कए सकलाह। मैथिली पोथी प्रकाशनक जे समस्या अछि से ओ नीक जकाँ अनुभव करैत छलाह। मुदा मातृभाषाक भंडार कें विभिन्न विधाक पोथीसँ भरबाक हुनक लालसाकें राजेश्वरबाबूक आर्थिक विपन्नता नहि रोकि पबैत छल। आ इएह करण थिक जे प्रतिवर्ष जेना-तेना राजेश्वरबाबू कोनो-ने-कोनो पोथी प्रकाशित करिते छलाह। मातृभाषाक वलिवेदी पर अपन अर्थक आहुति चढ़बिते छलाह। 'मिथिलाभारती' सन शोधपत्रिकाक प्रकाशन हो किंवा 'मैथिली साहित्य संस्थानक' साहित्यिक कार्यक्रम हुनकहि सत्प्रयासक प्रतिफल छल। एक युगक सर्जनात्मक अवधिमे दू दर्जनक करीब पोथी? विभिन्न विधामे लिखि प्रकाशित कए लेब सामान्य बात नहि थिक। पुस्तक लेखन-प्रकाशनमे ओ ततेक पकिया छलाह जे घोषित तिथिक अन्दरे बोथी लिखि विमोचन करा लैत छलाह।

राजेश्वर झाक कृतिक विभाजन तीन कोटिमे कएल जा सकैछ। पहिल कोटिमे अबैछ अनुसंधान परक पोथी, दोसर कोटि मे अछि ऐतिहासिक वा पौराणिक कथाक आधार पर लिखित पोथी तथा तेसर कोटिमे अछि सर्जनात्मक। अनुसंधान परक पोथीमे अबैछ-(१) मिथिलाक्षरक उद्‌भव ओ विकास (२) मैथिली साहित्यक आदिकाल (३) अवहट्‌त्वकः उद्‌भव ओ विकास (४) पूर्वाञ्चलक मध्यकालीन वैष्णव साहित्य तथा (५) लोक गाथा विमोचन। पूर्वाञ्चलक मध्यकालीन वैष्णव साहित्य हिनक अन्तिम प्रकाशित कृति थिक। अवट्टष्टक उद्‌भव ओ विकास वर्ष १९७६ मे मरणोपरान्त साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भेल। ऐतिहासिक किंवा पौराणिक कथाक आधार पर लिखित पोथीमे अछि-(१)महाकवि विद्यापति नाटक, (२) शास्त्रार्थ नाटक (३) कन्दर्पी घाट नाटक (४) विद्याधर कथा (५) उर्वशी (६) मेनका (७) धर्मव्याध कथा (८) जट-जटिन एवं (९) श्यामा-चकेवा आदि।

तेसर कोटिक पोथीमे अछि-(१) दुखिया बाबाक खटरास (२) अपरिणीता आदि। एहि प्रकारक पोथी राजेश्वर बाबूक सर्जनात्मक प्रतिभाक द्योतक थिक।

मैथिली साहित्यक इतिहासकें सामान्यतः सिद्धलोकनि द्वारा रचित, विशेषः शरहपादक साहित्यक आधार पर सप्तम अष्ठम शताब्दी धरि लएगेल जाइछ। मुदा राजेश्वर झा एहि स्थापनासँ सहमत नहि छथि। अपन अनुसंधानक आधार पर ओ मैथिली साहित्यक आदिकालक इतिहासकें निम्नप्रकारे विभाजित कएल अछि-(१) १५०० ई० पू० सँ ८०० ई० धरि उद्‌भव एवं अविकसित साहित्य (२) ८०० ई० सँ १२०० ई० धरिक अवधिमे रचित साहित्यकें प्रारम्भिक एवं विकासक साहित्य तथा (३) १२०० ई० से १४०० ई० धरिक अवधिमे रचल
साहित्यकें समृद्ध साहित्य मानल अछि।

साहित्यक काल निर्धारण लेत सर्व प्रथम आवश्यक अछि जे ओहि कालक रचना उपलब्ध हो। सामग्री उपलब्ध भेला पर भाषाक विकासात्मक विवेचन आवश्यक होइछ। यद्यपि राजेश्वर झा मैथिली साहित्यक आदिकालक आरम्भ १५०० ई० पू० सँ मानल अछि। किन्तु तेइस सए वर्षक साहित्य जकरा ओ अविकसित साहित्य कहल अछि, बानगी प्रस्तुत करबामे असमर्थ छथि। ओ वाल्मीकि रामायण सँ गुह्यसमाजतंत्र, ज्ञानसिद्धि साधनमाला, ललित विस्तर आदिमे मैथिली शब्दक प्राचीन प्रयोग पबैत छथि आ प्रमाण स्वरूप दू चारिटा शब्द प्रस्तुत कएल अछि। किन्तु दू चारिटा शब्दक उपस्थितिसँ ओकर प्रयोगक सन्दर्भ तथा तकर एखनधरि कोना भेलैक अछि, से स्पष्ट नहि होइछ। तात्पर्य जे साक्ष्यक आभावमे राजेश्वरबाबूक तर्क कमजोर छनि। भाषाक विकासक रूपरेखा प्रस्तुत करबाक बदलामे ओ ओहिकाल खण्डक राजनीतिक आ सामाजिक इतिवृत्तिमे लेपटा गेल छथि आ तें प्रतिपाद्य छूटि गेल छनि।

अवहट्ट क उद्‌भव ओ विकास मे राजेश्वर बाबू अपन प्रतिपाद्यकें प्रस्तुत करबामे असमर्थ भए जाइत छथि। अवहट्टक प्रसंग लिखने छथि-'पूर्वीय भारतीय भाषाक विकासका जे अवस्था अवहट्टक नामसँ प्रख्यात अछि ओकर प्राचीनरूप अपभ्रष्ट थिक।' आ तकर वाद ओ पदतंजलि, भरत आदिक मत प्रस्तुत करैत छथि। अवहट्टक सीमारेखा कोन ठामसँ अछि सर्वप्रथम कोन ठाम एकर प्रयोग भेल से प्रामाणिक ढंगे कहबामे असमर्थ छथि। अवहट्ट केवल पूर्वीय भारतमे प्रचलित छल से नहि, पश्चिमो भारतमे प्रचलित छल। ओकरो विकास होइत गेलैक अछि। ओहू विकासक वर्गीकरण भेल अछि। किन्तु राजेश्वर झाक जे विवेचन अथवा वर्गीकरण अछि ओहिमे कोनो मौलिकता नहि अछि, जे समक्ष अबैछ ओ थिक चर्वित चर्वण। एकटा आरो फरिछा कए कहल जा सकैछ जे अवहट्टक प्रसंग अनेको विद्वानक मतक अप्रमाणिक संग्रह मैथिलीमे राजेश्वर बाबू कएने छथि। दशम शताब्दीमे अपभ्रष्सकें लौकिक भाषारूपमे प्रचलि पबैत छथि मुदा जखन विवेचना अथवा मत प्रतिपादनक बेर अबैछ तँ १९६० इ० क सर्वानन्द टीका सर्वस्वक लौकिक प्रेहलिका उपस्थित करैत छथि। असम्बद्धताक दोष एहिमे नहि छैक से नहि, कौखन ओहनो सामग्री प्रस्तुत भए गेल अछि जकर विषय सँ कोनो येल नहि छैक।

अनेको असंवद्ध विषयक उल्लेखक बाद अवहट्टक जे विशेषता प्रस्तुत कएल अछि राजेश्वर झाक प्रतिपादनसँ निष्पन्न नहि अछि। अपितु डा० गजानन वासुदेव तगारे आ डा० तेसरीक मतक उल्लेख करैत छथि। अनेक अधीतो विद्वानक मतक उल्लेख करब लेखकक गहन अध्ययनशीलताक तँ परिचय अवश्य दैछ मुदा तदुपरान्त लेखकक जे अपन मान्यता

निष्पन्न होइछ, से नहि भए पबैछ। राजेश्वर झाक आनो शोध संबंधी पोथीमे एहि प्रकारक स्खलन अछि।

ऐतिहासिक किंवा पौराणिक कथाक आधारपर लिखित पोथीक संख्या अधिक छनि। तकर प्रमुख कारण जे राजेश्वर बाबू एक तेहन संस्थान सँ संबद्ध छलाह, जाहिठाम विविध विषयक पौराणिक अथवा ऐतिहासिक पोथीक संख्या विशेष छैक। ओहि पोथी सभक अनवरत अवलोकन राजेश्वरबाबूकें अपन मातृभाषामे ओहि विषयक पोथी लिखबाक प्रेरणा देने होएतनि। आ जँ राजेश्वरबाबूक एहि पोथीसभक मूल्यांकन हुनक मातृभाषा प्रेमकें ध्यान मे राखि करी तँ विशेष लाभकर प्रतीत होएत, ओकर मूल्यांकन नीक जकाँ कएल जा सकैछ।

ऐतिहासिक किंवा पौराणिक कथाक आधार पर लिखित कतेको पोथीक नामक संग राजेश्वरबाबू नाटक जोड़ि देने छथि। एहि पोथीक अवलोकनसँ इएह प्रतीत होइछ जे नाटकक विषय-वस्तु केहन होएबाक चाही, डायलौग केहन होएबाक चाही, स्थान काल आ पात्रमे कोना सामंजस्य कएल जएबाक चाही, राजेश्वर बाबू
ध्यान नहि दैल छलाह। आ प्रायः एही हेतु राजेश्वरबाबूक ओ पोथी जकर नामक संग नाटक शब्द जोड़ल अछि, से ने तँ मंचोपयोगी नाटक थिक आने सुपाठ्य। किन्तु, एहि सभक सबसँ पैघ विशेषता अछि जे ओ मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक प्रति प्रगाढ़ प्रेम जगएबाक भावनासँ ओतप्रोत अछि। जे लेखकक मातृभाषाक प्रति प्रतिवद्धताक द्योतक थिक।

'दुखिया बाबाक खटरास' आ 'अपरिणीता' राजेश्वरबाबूक सर्जनात्मक प्रतिभाक द्योतक थिक। एहि दूनू पोथीमे राजेश्वरबाबू कल्पनाक आधार लेलनि अछि। दुखिया बाबाक खटरास क प्रसंग स्वयं लिखने छथि-'हुनक नामधामसँ कोनो संबंध नहि रहि मात्र हमर कल्पनाक आधार छनि जकर उपकरण कौतुक प्रियता आ चातुर्य थिक। एहिमे सात गोट कथा संगृहीत अछि। सामान्यतया एकरा व्यंग्यपरक कथा कहल जा सकैछ। मुदा केवल व्यंग्ये धरि सीमित नहि राखि प्रभावक तीव्रताकें स्थिर रखबाक बदलामे स्पष्टरूपे भूमिकामे उपदेश देल अछि, जे प्रभावकें छितरा दैछ। मुदा एहि पोथीक बाषा अपन विशेषताक कारणें गद्य साहित्यक नमूना बनि गेल अछि। गामघर मे प्रचलित शब्दक प्रयोग जेना ओ गाँज मे छानि कएने होथि। ई लेखकक भाषा संवेदना, शब्दक परिचय आ प्रयोगकें द्योतित करैछ।

राजेश्वर झाक व्यक्तित्व ओ कृतित्व कें जँ तराजूक पलरा पर राखल जायतँ कृतित्वक अपेक्षा व्यक्तित्व विशेष भरिगर भए जएतनि। किएक तँ राजेश्वरबाबू प्रेरणाक काज बड़ करैत छलाह। लोककें लिखबाक लेल प्रेरित करैत छलाह। कार्यक्रम आयोजित कए लेखक ओ विद्वान लोकनिकें नव-नव विषयपर सोचबाक लेल विवश करैत छलाह। आ एहि काज लेल ओ स्मरणीय रहताह। ओहि महान व्यक्तित्वक निधन २३-४-१९७७ कें पचपन वर्षक वयसमे भए गेल।

-मिहिर : १९७८

ललितक कथामे परिवेशक संक्रान्त जीवन

स्वतंत्रताक पूर्व भारत मे आशाक किरण पसरल छल, आकांक्षाक ज्योति प्रज्वलित छलैक। अपन देशीय शासन व्यवस्थाक उन्मुक्त आकाश मे साँस लेबाक आतुरता छलैक। लोक समान अधिकार आ समान उत्तरदायित्व बोधक भावना सँ अभिभूत छल। शिक्षाक विकास सँ अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी, बैसारीक अन्त, योजनाक सफलताक प्रति आश्वस्त छल। सामन्तवादी साम्प्रदायिकताक पाँक मे फँसल शासन-व्यवस्था मे लोकतंत्रात्मक विधानक उन्मेष सँ जन-हितक विशेष ध्यानक प्रति आस्थावान छल। परंच, स्वतंत्रता प्राप्तिक उपरान्त भेलैक सभ आशाक विपरीते। आशाक किरण निराशा मे बदलि गेलैक। लाबनि टूटि कए खसि पड़लैक। यथार्थक धरातल पर निराशाजनक प्रतीति सँ, असफलताक घनघोर घटा सँ, सदिखन भारतीय आकाश कें आच्छान्न आक्रान्त देखि, एहि ठामक लोकक चेतना आक्रोश कए उठलैक। अनास्था आ अविश्वासक प्रबल वेग मे समस्त मर्यादा आ मान्यताक कड़ी एक्के बेर झनझना कए टूटि गेलैक, अस्त-व्यस्त भए गेलै। प्रथमे निर्वाचन मे धुरफंदी, स्वार्थान्धता, धन आ जातिवादक नग्न नाच देखि, योग्य काजुल समाज सेवी कें अपने धोधरि भरबा लेल आतुर तथाकथिन नेता सँ, प्रतिनिधि सँ, पराजित होइत देखि लोक अपना कें, असहाय अनुभव करय लागल। आशा छलैक जे काजुल अछि, इमानदार अछि, जकरा मे गरीबक दुख-दर्द कें बुझबाक, प्रतिकार करबाक उत्सुकता छैक, जे अशीक्षा आ बैसारीक झंझावात सँ उबारि, भरि पेट भोजनक व्यवस्था करौनिहार नेता होअय, प्रतिनिधि चुनल जाएत। परंच, चुना जाइछ ओ व्यक्ति जकरा केवल अपने
हित-रक्षाक अकुलाहटि छैक। गिरगिट जकाँ रंग-बदलि कए केवल अपने धोधरि कें भरबक बेगरता रहैछ। चुना जाइछ ओ व्यक्ति, जकरा गरीबक रक्त सँ रंजित भरल बटुआ छैक, जे खगल व्यक्तिक क्षेत्र सँ फराक वातानुकूलित अट्टालिका मे खुश-फैल सँ जीवन व्यतीत करैछ। आ एहि नकली नेता द्वारा निर्मित विकास योजनामे गरीबक नाम पर धनीकक हित रक्षाक प्रारूपक अन्तिम परिणति गरीबक गरीबी मे बृद्धि करैत अछि।

प्रतिनिधि चुननिहार मतदाता खगल अछि, दोसर साँझाक बुतातक बेगरता सदिखन रहिते छैक। आर्थिक दुर्व्यवस्थाक पाँक मे फसल अछि। अपन शुभचिन्तक आ अपन उद्धारक, असली नेताकें चिन्हियो कए बिसरि जाइछ, जखन ओकर धीयापूता पेटक भूख सँ अकुला उठैछ, चिचिया उठैछ, आ ओ बिसरि जाइछ अपन नैतिक कर्त्तव्य, अधिकार बोध आ फँसि जाइछ अपने रक्त सँ सराबोर धनीकक बटुआ मे तथा आर्थिक दासत्व असली नेता कें, कार्यकर्त्ता कें ओकरा सँ बलात् अपहृत कए लैछ।

चित्रधर बाबू 'प्रतिनिधि गरीब जनताक चित मे विराजमान छथि। अन्तरसँ समाजसेवी छथि। दिन-रात्रि गरीबक सेवा लेल निःस्वार्थ भावें तत्पर छथि। अपन निःस्वार्थताक कारणें चुनाव मे जीतक प्रति अविश्वासो नहि छनि। परंच, रातिए राति गरीब, बेल्लल मतदाता पुहुकर बाबूक बटुआक समक्ष डोलि जाइछ, नतमस्तक भए जाइछ, अपन दायित्व बोधसँ बलात् विमुख भए जाइछ। मुदा पुहुकर बाबूक विजय अवश्य भक्क तोड़ैत छैक। गरीब तँ पुहुकर बाबूक

ओहिठाम अपन दुःखकें प्रकट करबालेल हुनक पोसुआ कुकूरक डरें पहुँचियो नहि सकैछ। तखन, दुख दूर होएबाक प्रश्ने कहाँ? एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार ललित (6.4.32-14.4.83) वर्तमान राजनीतिक जीवनमे व्याप्त वैमानी, भ्रष्टाचार आ सुविधाक राजनीति पर तीव्र व्यंग्य कएलनि अछि। पुहुकर बाबू आ चित्रधर बाबू दू वर्गक प्रतिनिधित्व करैछ। पुहुकर बाबू ओहि वर्गक प्रतिनिधि छथि जे अपन सुख-सुविधा, स्वार्थ आ पदक लोभें जनताक शोषण करैछ। ओकर स्थिति सुधारबाक बदला मे अपन स्थिति दृढ़ करबा पर तूलि जाइछ।

पाइक बल पर जीतल नेता अथवा उपकृत, सुरक्षित व्यक्ति शोषितक बलपर अपनाकें जीवित रखबा लेल नैतिकता आ मानवीय गुणसँ कात कए लेलक अछि। ओकर समक्ष गरीबक प्रति, भूखलक प्रति सहानुभूति नहि छैक, आर्थिक स्थितिकें जीवन स्तर कें सुधारि भरि पेट अन्न देबाक उत्सुकता नहि छैक। ओ चाहैछ, भूखल, अभावग्रस्त आ पीड़ित कें टरका, शान्तिपूर्वक भौतिक जगतक उपभोग करब। परंच, कतेक दिन धरि? की अनन्त काल धरि घोष बाबू (प्रश्नचिन्ह) भूखलकें पोसुआ नोकरक बलपर फाटक सँ फराक रहताह, लोक जागि गेल अछि, जागि रहल अछि अनन्त काल धरि समाज सुतले नहि रहि सकैछ। जड़ भेल नहि रहि सकैछ। गरीब गुम्हड़ि गेल अछि। लोक नकली नेताक खोलकें फाड़ि फेंकबा लेल तैयार भए रहल अछि। गरीब आ शोषितो क बीच चेतना आबि गेल छैक। ओकरो बीच रामगुलाम (प्रतिनिधि) सन लोक छैक, जे अपन हककें नहि बेचल जएबाक प्रयास करैछ, अधिकार आ कर्त्तव्यक प्रति सतर्क रहबा लेल ललकारि रहल छैक। आँखि पर पड़ल पर्दा कें फाड़ि रहल छैक। रामगुलाम स्पष्टतः घोषित करैछ-"तों अपन हक बेचै छें। जेना चोर कुकुरकें सुखायल रोटीक टुकड़ा खुआ चोरी करै-ए-तहिना तोरा सभकें रोटीक टुकड़ा खुआ-खुआ ई सभ तोरे सभकें लूटै छौक।" एहि घोषणामे यथार्थ व्यंजित अछि। व्यंग्यक माध्यमसँ ललकार सम्प्रेषित अछि।

सुखायल रोटीक टुकड़ा खुआ-खुआ स्वयं मौज कयनिहार व्यक्तिक हाथमे देश आ समाजक नेतृत्व, नैतिकताक ह्रास, रागात्मकताक अभाव, आर्थिक विपन्नता आ ओहि पर सँ व्यर्थक पाँजिक गर्व, आजुक लोककें अत्याधिक संत्रासक तरहरामे धकेलि देने छैक। एहि अन्हार कुप्प तरहारमे लोक औना रहल अछि, छटपटा रहल अछि। एक दिस पेटक ज्वाला कें शान्त करबाक असमर्थता तँ दोसर दिस अपन कुल आ परंपराक प्राचीन मर्यादा क बल पर, ओकरा भजा भजा जीवन खेपबाक, निब-हबाक भावुकता। यद्यपि ओ गौरवमय
परम्परा कें कायम नहि राखि सकल, पाँजिक गर्वपर आँजी सिद्धि नहि सिखलक, तथापि व्यर्थक मोह छैक, गौरव छैक। समाज आ कुटुम्बक हँसारतिक कारणें चपरासीक काज नहि कए सकैछ। घृणाक पात्र बूझल जयबाक भय छैक। आइ० ए० धरि कालेज मे पढ़ि लेने अछि। अंग्रेजीक ए० बी० सी० डी० क अल्प ज्ञान भए गेल छैक। तँ खेत मे खुरपी कोदारियो कोना चलाओत? अंग्रेजी शिक्षा सँ उत्पन्न व्यर्थक व्यामोह मे फँसल अछि। शारीरिक श्रम कयनिहार कें समाज मे अप्रतिष्ठा भेटैछ। ओ एहि ग्रन्थि सँ पीड़ित अछि। तखन ओ एहि व्यर्थताक स्थितिमे चाहैछ जे तानि कमरिया पड़ल रही। अपन कोकनल व्यक्तित्व आ तेलाह परिस्थिति पर टिनोपाल छीटि, बाहरी तड़क-भड़क सँ अपन असली रूपकें नुकयबाक अथक प्रयास करैछ। परंच संत्रास आ व्यर्थता बोधक आत्यान्तिक परिस्थितिमे ओकर मोह-भंग होइछ आ ओ युगक संक्रमणशीलता सँ परिचित होइछ। वर्तमान स्थिति सँ उबारबा लेल शरीरिक परिश्रमक महत्ता

कें स्वीकारैछ। अंगीकार करैछ। शहर सँ बौआढ़ेहना कए अएला पर अनेको ठेस लगला पर आँखि खुजैछ। खेत कें जोति-कोड़ि, बिना ग्रामीणक व्यंग्यक परवाही कयने अपना संग देशक समृद्धिक हेतु तत्पर भए जाइछ। संत्रासक प्रायः सभ कारण (१) असत्य प्रतिष्ठा कें बचयबाक प्रयास मे जीवन मे दारुण दर्द (२) परम्परागत मूल्यक दबाब सँ वास्तविकताकें स्वीकार नहि करबाक असमर्थताजन्य छटपटाहटि। (३) संत्रासक अभिवृद्धि सँ अजीव निरर्थकता बोधक रिक्तता बोध तथा (४) जीवनमे आर्द्रताक अभाव-ललितक कथा 'उड़ान' मे वर्त्तमान अछि, अभिव्यंजित अछि।

देशक गरीबी धर्म निरपेक्ष अछि। धर्म सापेक्षताक स्थान एहि देशमे नहि छैक। तें, एहि लोक निर्मित अभिशाप सँ सभ ग्रस्त अछि। सभ जाति समान रूपें गरीबीक जाँत मे पीसा रहल अछि। रमजानी (रमजानी) सेहो कोना एकर अपवाद भए सकैछ? ओ ने तँ हिन्दू थिक आने मुसलमान। ओ तँ एक गरीब मजदूर थिक। पुस्तैनी टमटम रखने अछि। ओहि सँ अपन परिवारक भरण-पोषण करैछ, परंच, बाप-दादाक अमलक टमटमक प्रति ओकरा आब मोह नहि छैक। ओकर मोह भंग भएगेल छैक, पीच सड़क पर नवनिर्मित परिवेश मे टमटम 'फिट' नहि करैछ। तें रमजानी चाहैछ जे टमटम कें बेचि कए, परम्परावाद कें त्यागि नव निर्माण करी। तें ओ चाहैछ, रिक्सा कीनब, आजुक युगक अनुरूप व्यवसाय करब। अपन टमटम आ परम्परा कें भावुकतासँ नहि, अपितु उपयोगिताक दृष्टिये देखैछ। रमजानी क बाप तँ ओकरा टमटम चलायब सिखौलक परंच ई अपन बेटा कें स्कूल पठयबा लेल व्यग्र अछि, छटपटा रहल अछि। अपन परम्परा आ परिपाटिक जड़ता कें तोड़ि ओकर उपयोगी विकास कोना आजुक परिवेश मे भए रहल अछि, तकर यथार्थ चित्रण रमजानी मे भेटैछ। संघर्षक वाद, अन्धकारमय वर्त्तमान सँ, नव निर्माणक प्रसव-पीड़ा सँ कोना वर्त्तमान परिवेश आक्रान्त अछि, तकर सजीव सत्यपरक चित्र उपस्थित होइछ। मोहभंगक बाद संघर्षशील आ दायित्वबोधक अवस्था मे कोना आजुक लोक मृत्युंजय बनि गेल अछि, तकर अभिव्यंजना भेटैछ।

यद्यपि मृत्युंजय कें मृत्युक भय नहि छनि, परंच मृत्युक दंश सँ पीड़ित अवश्य छथि। जिनगीक अछैतो जिनगीक उपभोग करबाक अवसर नहि छनि। अमृत्यु आ अजीवनक ओभरलोड सँ पिचायल छथि, संत्रस्त छथि। दारोगा दीनानाथ कें रिकत्ताक 'ओभरलोड' (ओभरलोड) पकड़बाक सरकारी आदेश छनि। अलिखित जुर्माना सँ उपरका हाकिमक आदेश पूरा करबाक भार छनि। परंच, हुनका पर जे ओभरलोड छनि। एक अर्जनकर्त्ता पर अनेक व्यक्तिक भार, शिक्षित बेरोजगारक भार, ओकरा के पकड़त? ओकरा पकड़निहार क्यो नहि? बैसारी क मारल दारोगाजी क बेटा आ भाइ सेहो अपन व्यर्थता सँ परिचित अछि। अपन आ घरक मुखियाक मानसिक स्थिति सँ भिज्ञ अछि। वर्तमान महगी आ आर्थिक अस्तव्यस्तताक स्थिति मे प्रत्येक पारिवारक मुखिया, मात्र एक उपार्जन कर्त्ता, परिवारक शेष सदस्य कें रक्त-पिपासु जोंक जकाँ अनुभव करैछ। यद्यपि लोक कें अपनापर, अपना कमाइ पर विश्वास छैक, परंच स्थितिकें सुधारबामे असमर्थ अछि। ओकर सभ प्रयास, सभ व्यग्रथा निरर्थक भए जाइछ। अपन स्थिति कें अओरो बिगड़ैत टुकुर-टुकर देखैत अछि। कामूक कथाकृति 'ला स्ट्रेन्जर'क मृत्युदण्डक फैसला सुनैत कथा नायकक व्यर्थता-बोध, जे आँगा-बढ़ि काफ्काक कथा 'मेटामार्फासिस'-मे आतंकपूर्ण अमानवीय रूप ग्रहण कए लैछ। एहि कथाक सहस्र टाङवला

उनटल झींगुरक निस्सहायता आ छटपटी ओभरलोडक जोंक समान अनियोजित परिवारक सदस्य सँ चुसाइत दीनानाथ मे, भीमकाय सबारीक भार सँ आक्रान्त अबोध रिक्साचालक मे तथा पंचानन बाबू (एक पुष्ठ) मे वर्त्तमान अछि। दीनानाथ, रिकसाचालक अथवा पंचानन बाबूक निस्सहायता, संत्रास, छटपटी आजुक परिवेशक संक्रान्त मनःस्थितिक यथार्थ चित्र उपस्थित करैछ।

वैज्ञानिक रुचि विकासक कारणें आजुक लोक धार्मिक क्रियाकलाप आ आडम्बरक तार्किक व्याख्या कए अंगीकार करैछ। आँखि मूनिकए किछुओ स्वीकार करबालेल तत्पर नहि। एहि प्रकारक वैचारिक क्रान्तिक पाछू वैज्ञानिक आ तार्किक रुचिक अतिरिक्त धर्मक नाम पर धर्माधिकारी द्वारा कयल जा रहल द्वैध आचरण सँ परिचय अछि। धर्मक वाह्याडम्बर पर आस्था नहि छैक। विश्वास कोकनि गेलैक अछि। मन्दिरक पाछू मे धर्मक नाम पर चलि रहल कुकृत्य सँ लोक परिचित भए गेल अछि। मर्यादा पुरुषोत्तम रामक सेवक, धर्मक ठीकेदारक मानसिक द्वैध रूप (दू चित्र), कामिनी आ कंचनक प्रति विमोहन तथा अस्पतालवासी पतिक अतिरिक्त छोट-छोट बच्चाक भरण-पोषण कयनिहारि मंदिरक हता बाटे जाइत मलाहिनिक प्रति धर्मक नाम पर अवाच्य कथाक प्रयाग सँ लोक नीक जकाँ परिचित भए गेल अछि। एहि कथाक माध्यम सँ धार्मिक नेताक द्वैध व्यक्तित्व पर कड़गर व्यंग्य भेल अछि।

अस्तित्ववादी दार्शनिक परम्पराक स्थापना आ नित्से द्वारा 'ईश्वरक मृत्युक घोषणा' सँ पराभूत साहित्य मे परंपरित धर्म, आदर्श, नैतिकता, जे रचना आ विकास लेल, उत्प्रेरकक काज करैत आबि रहल छल, थस्स लए लेलक, एखाएक भरकुस्सा भए गेल। इन्द्रियातीत जगतक पूर्णतः निषेध आ वहिष्कारसँ लोक मूलतः मानव भए गेल अछि। आ ओकर मानवीय आचरण पर, आवश्यकता पर, जैविक विवशता पर नैतिकता, धर्म आ आदर्शक पर्दा नहि रहि पाओल। सामाजिकताक बदलामे वैयक्तिकताक उन्मेष भए गेलैक। काम अथवा सेक्स क प्रति लोकक प्राचीन मान्यता आ धारणामे आमूल परिवर्त्तन आबि गेलैक। एहि परिवर्त्तित विचारधाराक फलस्वरूप कामक भूख, पेटक भूख जकाँ, पानिक पियास जकाँ जैविक विवशताक रूप लए लेलक। त्वचा संवेदन आ जैविक विवशताक तृप्तिक लेल रूद्ध संप्रयोगक स्थान पर रूचि परिवर्त्तनक आवश्यकता महत्त्वपूर्ण भए गेल अछि। स्नायुविक तनाव लेल ओ प्रतिबंध नहि, मुक्ति चाहैछ। स्नायुविक तनाव अथवा टेंसनक स्थिति मे जीवैत अपन समस्त कोशिकाक व्यापार अथवा विचारधारा कें प्रभावित राखब, ओ उचित नहि बूझैछ। मुक्ति क नारी चिररोगी पतिसँ मुक्ति चाहैछ। आ, चिररोगी पति सेहो अपन शारीरिक असमर्थता कें कबूलैत मादाक प्रथम आवश्यकता स्वस्थ नर द्वारा स्नायुविक तनावक तृप्ति, स्वीकारैछ, तृप्तिक अनुभव करैछ। ललितक कथा वाणीक मुक्ति पत्नीक सौन्दर्यकें अनाघ्रान्त, अनस्पर्शित, अक्षुण्ण रखबाक निमित्त पतिक आराध्य भावनासँ उबिआयल अतृप्त पत्नीक मनोग्रंथिक विश्लेषण करैछ। आ एहि प्रकार सँ आजुक परिवेशमे वैचारिक स्तर मे, आचरण मे 'सेक्स' अथवा काम-भूख सेकुलर अछि, धर्मनिरपेक्ष अछि, तकर सूक्ष्म विश्लेषण ललितक कथा मे भेटैछ।

विदेशी चल गेल। जमीन्दारी चल गेल। परंच ओहि स्थितिक सुविधाभोगीक मनोवृत्ति नहि गेलैक। ओ एखनो चाहैछ अपन धन बल पर शासन करैत उपभोग करब। अपन

सामन्तवादी सुविधाभोगी मनोवृत्तिक तृप्ति लेल चुनाव मे धुरफंदी, धर्ममे आडम्बर तथा वासनाक तृप्ति लेल पाइक उपयोग करबा मे नहि चुकैछ। अपन पेटक अतिरिक्त नाङड़ि माइक भार उठौने अबोध कंचनियाँ (कंचनियाँ) कें बालो बाबूक बाघ छाप उठन्नीक बाघ नछोड़ि लैछ, भम्होड़ि लैछ आ ओ असहाय बनि घृणा आ क्रोधक बीच तिलमिलाइत रहैछ। आजुक नकली नेता आ सामाजिक कार्यकर्त्ता अपन स्वार्थक सिद्धि लेल, अपन सुख-सुविधा लेल राष्ट्रीय स्तरक नामे कें भजएबाक हेतु आन्दोलन करैछ, हुनक नाम पर स्मारक बनेबाक हेतु कोष एकत्रित करबा लेल हड़ताल करैछ, आन्दोलन
करैछ, मुदा ई आन्दोलन अपन अपन स्वार्थक आन्दोलन भए जाइछ। ई सत्ताधरी बनबाक आन्दोलन थिक।

अपन देशकें जे लड़ाई लड़बाक अवसर उपस्थित भेलैक अछि से एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र धरि रहल अछि। एहि मे सम्पूर्ण राष्ट्रीय चेतना झनझना उठैछ। एहि प्रकारक स्थितिक मोकाबिला करबाक लेल, एहि झंझनाएल मानसिक स्थितिक देशक खण्डता, एकता आ स्वाधीनताक हेतु नवतूर अपनाकें मातृभूमिक बलि वेदी पर उत्सर्ग करबा लेल आतुर रहैछ। कोनो प्रकारक भय अथवा घबराहटि नहि रहैछ। परंच ओकर माय-बाप लड़ाइक नामे सूनि काँपि उठैछ, विह्वल भए उठैछ। भावुकता सीमा रेखा तोड़ि बहि जाइछ। पराधीन राष्ट्रक मनोवृत्ति मे स्वाधिन राष्ट्रक सीमा रक्षाक महत्व अनालोचित रहैछ। एहि प्रकारक द्वैध मानसिकता दू पीढ़ीक वैचारीक स्तरक दायित्वबोधक अभिव्यक्ति 'लड़ाइपर' कथा मे अछि। राष्ट्रीय स्वाधीनता, एकता, अखण्डताक प्रति साकांक्षताक उद्घाटन भेटैछ। चर्चित कथाक अतिरिक्त कथाकार ललितक अनेको कथा, यथा 'एक्सवाइ ओ (पल्लव-५६) 'जंगल ओ रास्ता (मिहिर), नीलकण्ठ (वैदेही) 'बोले बम' 'नव-पुरान' आदि अछि, जे वर्त्तमान संक्रमणशील युगक, परिवेशक यथार्थकें सम्प्रेषित करैछ।

मिहिर १९७५

धीरेन्द्रक कथाक सामाजिक सन्दर्भ

कथाक सामाजिक सन्दर्भ जीवनक समग्र चित्रसँ प्रकट होइछ। ओहि चित्रक केन्द्र बिन्दु होइछ रचनाकारक अनुभव। ओहि अनुभवमे किछु अपरिहार्य वैचारिक स्थिति होइत अछि जे सामाजिक जीवनकें प्रभावित करैत अछि। रचनाकारक समाजक प्रति दार्शनिक दृष्टि राजनीतिक मान्यता आ आर्थिक स्थिति जीवनक प्रभावक बिन्दु आ प्रेरक भए सकैत अछि। सभ मिलि समाजकें प्रभावित करैत अछि। लोक जीवनक दृष्टिकें प्रभावित करैत अछि। एकहिसंग विभिन्न दिशासँ अनेक प्रकारक दृष्टि अबैत अछि। एहिसँ रचनाकारक दृष्टि क्रमशः संश्लिष्ट भेल जाइछ। संश्लिष्टता अनुभव क्षेत्रकें व्याप्ति प्रदान करैत अछि। रचनाकारक अनुभव क्षेत्र समाजक अनुभवक रूपमें स्वीकृति पाबि जाइछ। तात्पर्य जे रचनाकारक ओएह अनुभव समाजक अनुभव भए पबैत अछि, समाजक दर्पण भए पबैत अछि, जे सौन्दर्यक सृष्टि करैत हो। सौन्दर्यक सृष्टि भेल रचनाक सामाजिकता, सामाजिक सन्दर्भ। सामाजिकता, थिक समाजरूपी

नेहाइ पर पीटि, तैयार रूपाकृति। नेहाइ थिक व्यक्तिमन आ सामाजिक मनक द्वन्द्व। व्यक्तिमन चाहैत अछि लेखकक वैयक्तिक जीवनमे अनुभूत सुख-दुख, आश-निराशा, भूख आ यन्त्रणाक अभिव्यक्ति। एहि प्रसंग लेखक वेसी सँ वेसी कहय चाहैत अछि, लिखय चाहैत अछि। व्यवहारिको जीवनमे एहन किछु व्यक्ति अवश्य भेटताह जे आत्मप्रशंसा करैत अघाइत नहि छथि। परंच श्रोताकें वितृष्णा अवश्य भए जाइत अछि। आत्मप्रशंसी व्यक्तिकें अबैत देखि अथवा कोनोठाम पूर्वहिसँ विराजमान देखि चाहैत अछि कन्नी काटय। कारण स्पष्ट अछि। ओ व्यक्ति अपन मन आ सामाजिक मनक बीचक अन्तरकें बूझि नहि पबैत अछि। कहबाक अभिप्राय जे रचनाकारक वैयक्तिक जीवनमे प्राप्त अनुभूतिक अभिव्यक्ति तखनहि लोकक हृदयमे भाव जागृत कए सकैत अछि, जखन ओहिमे सामाजिक मनक अभिव्यक्ति रहय, ओ सामाजिक सन्दर्भ रखैत हो।

कथाकारक व्यक्तिमनक अभिव्यक्तिमे सामाजिक मनक अभिव्यक्ति अछि अथवा नहि। आ जँ अछिओ तँ कतेक दूर धरि सफल भेल अछि, तकरा कोना नापल जाए। कोन पैली सँ नापि पाठकक लेल प्रस्तुत कएल जाए। ओना सभसँ सुलभ ई विधि अछि जे जँ कोनो रचना पढ़ि अथवा सूनि कथाकारक व्यक्त अनुभूति पाठक
वा श्रोताक सुप्त भावकें स्फुटित कए सकय, शान्त पोखरिमे फेंकल ढ़ेपसँ उत्पन्न हिलकोर सदृश्य वैचारिक जगतकें जे रचना उद्धेलित कए सकय, सएह ओहन रचना थिक जाहिमे सामाजिक मनक अभिव्यक्ति रहैत अछि। ओएह रचना सामाजिक सन्दर्भक द्योतक थिक।

प्रत्येक नवयुवक जे निष्ठापूर्वक श्रम करैत अछि, आकांक्षा रहैत छैक जीवनमे किछु करबाक। जीवनमे किछु बनि देखेबाक। विश्वविद्यालयक डिग्री पबितहि माय-बाप, भाइ-बहीन आ सर कुटुम्बक टकटकी शुरु भए जाइत छैक। किन्तु आशाक ओ दीपक जतय जीविका लेल आवेदन करैत अछि। परोक्ष विधिए ओ रिक्त स्थान भरि देल जाइत अछि। जे सुविधा सम्पन्न रहैत अछि, जकर गतात सूत्र मजगूत रहैत छैक, सभठाम सफल भेल जाइत अछि। मेधा आ उच्चाशिक्षाक अतिरिक्त जकरा लेल आर किछु नहि छैक जकर पारिवारक आर्थिक मेरुदण्ड कमजोर छैक, आने पैरबीक पात्रता छैक, दरबज्जे दरबज्जे निराश आ अपस्याँत होइत रहैत अछि। जतय कतहु जाइत अछि लोक मुँह दूसि दैत छैक। सभ आँखि प्रश्न करैत छैक-'बेकार छी आइ-काल्हि कोनो काज किएक ने धए लैत छी (गीध)। जेना कोनो काज पकड़ि लेब पाठ्यपुस्तक घोंखि लेब हो। अपन हाथक होइक। पढ़ाइक क्रममे पिता द्वारा महाजन सँ लेल कर्ज कम दुखदायी नहि छैक। शिक्षित नवयुवकक मनःस्थिति आ बेकारीक बढ़ैत रोगक स्थितिक वर्णन डा० धीरेन्द्रक (ज०-१७ जुलाई १९३४) कथा मनुक्ख विकाएत आ गीध मे नीक जकाँ व्यक्त भेल अछि।

सत्य हरिश्चन्द्रक जमानामे लोक अपना कें बेचि वचनक पालन करैत छल, किन्तु आजुक युगमे केओ क्रेता नहि अछि, एकटो ग्राहक नहि अछि। ठाम-ठाम 'सत्यमेव जयते' लिखल रहैत अछि। परंच विजय होइत छैक असत्यक। छल आ प्रपंचक। ओना सभ केओ अपनाकें सत्यवादी आ पर हितकारीए बनैत अछि। घोषित करैत अछि। धीरेन्द्रक एक कथा नायक कहैत अछि 'हरिश्चन्द्र ! सुनह ! सुनह ! हम जोरसँ कहि रहल छियह। सुनैत छह हौ

लोकसभ एक गोट मनुक्ख विकाएत 'एक गोट ग्रेजुएट जे तोहर कोनो काज कए देतह। यदि अवसर दहक मनुक्ख बिकाएत।' परंच आधुनिक हरिश्चन्द्र ओकरा बूझि लैत अछि-बताह पाकेटमार। शिक्षित बेरोजगार नवयुवकक ई व्यथा-कथा एक व्यक्तिक नहि रहि पबैत अछि अपितु कथाकारक ई कटु अनुभव देशक लाख-लाख नवयुवकक अनुभव भए जाइत अछि। कठखोधी जकाँ एक गाछसँ दोसर गाछपर बैसबाक विवशता एक व्यक्तिक नहि, सामजिक सन्दर्भकें व्यक्त करैत अछि।

बड़का माछ छोटका माछकें तँ खाइते अछि। एक मनुष्य दोसर मनुष्यक अस्तित्वकें सेहो स्वादैत अछि। एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिक श्रमक फलकें हथिया लैत अछि। अपनहि सामाजक अपनहि वर्गक निर्बल व्यक्तिक आर्थिक, धार्मिक आ सामाजिक शोषण कए अपन स्वार्थसिद्धिक प्रयास चिन्ताक कारण बनैत अछि। ओ सुविधा सम्पन्न वर्ग छल-छद्म आ भेद-बल द्वारा श्रीहीन आ आश्रयहीन वर्गक अधिकारक अपहास सदिखन करबाक चेष्टामे रहैत अछि। ओकर रक्त मज्जाकें चूसि अपन परिधि-विस्तार करबामे पुरुषार्थक बोध करैत अछि। गामक एक गरीबहाक नेनाक वंशीक माछकें गामक मुँहगर विरजू बाबू छीनि, सरकारी डबरो पर अपन अधिकार जना लैत छथि। आ ओ असहाय नेना वंशीक तरैला जकाँ विरजू बाबूक मुँह दिस शून्य दृष्टिएँ तकैत रहि जाइत अछि। विरजू बाबू आन लोककें एक जीवित लहास सँ वेशी नहि मानैत अछि। (गीध)। ओहिना गाम-गामक शिक्षण संस्था ओकर चरौर थिकैक। ओ कौखन नहि चाहैत अहि जे दीन-दुखीक धीयापूता युग-युगसँ शोषित प्रताड़िक लोकवेद शिक्षा पाबय। शिक्षित भए सामाजिक अधिकारसँ परिचित होअए अथवा सामाजिक न्याय पएबालेल मूड़ी उठाबए (पढाइत धूरक आगि)। अपन शोषण चक्रकें अवाधित रखबालेल फगुनियाँ (ओकर फगुआ) सन युवकक जीवन लीला अकालहि समाप्त कए देल जाइत अछि। ओ व्यक्ति बादुर (बादुर) जकाँ सभ गोलमे भिझरा जाइत अछि। लाभ भोगक आकांक्षा रखैत अछि। किन्तु कथाकारक दृष्टि समाजक बादुरी चरित्रक व्यक्तिकें चिन्हा दैत अछि। छद्मवेशी सँ लोककें परिचित करा दैत अछि।
वस्तुस्थितिक यथार्थचित्रणक संग न्याय आ अधिकार पएबाक प्रति सतर्क रहबाक चाँकि आनि दैत अछि। डा० धीरेन्द्रक कथाक ई सामाजिक चाँकि सामान्य विशेषता थिक।

महादेवक विसर्जनक मन्त्रोच्चारणक बीचहिमे आद्याबाबू (धर्मात्मा) कमला महारानीक विनाश लीला तथा मलेरिया क आक्रमण सँ पस्त भेल सुकला द्वारा कर्ज चुकता नहि कएलाक कारणें गारि-पढ़ैत छथि। वज्रसम कठोर आद्याबाबूक ह्दयमे सुकलाक आर्तनाद किंचितो दयाओ सहानुभूतिक मिलियोभरि उत्पन्न नहि कए पबैत अछि। आद्याबाबूके एक वातक पर्याप्त रंज छनि जे सुकलाक आङनवाली जँतबाक हुनक आदेश अनठिया देने छलनि। आ तें मालिकक संकेत पबितहि बचनमा सुकना कें ओधबेध कए दैत अछि। बैसले-बैसल आद्याबाबू पेटीसँ कजरौटी बाहर कए सादा कागज पर चटपट औंठा छाप लए लैत छथि। आ पुनः पढय लगैत छथि 'सहस्त्र शीर्षा पुरुषः' समाजमे ओहि कोटिक लोकक कमी नहि अछि, जे लोकक विवशताक प्रत्येक लाभान्वित होमय चाहैत अछि। धीरेन्द्रक कतेको कथामे सामाजिक जीवनमे व्याप्त एहि प्रकारक विसंगतिक प्रभावक उद्‌घाटन अछि।

धीरेन्द्रक अधिकांश कथाक जन्म समाजक ओहि क्षेत्रक व्यथासँ होइत अछि जे सामाजिक स्तर पर तिरस्कृत अछि। शारीरिक स्तर पर बात-बात पर ततारल जाइत अछि। आर्थिक स्तर पर औंठा बोरबा लेल अभिशप्त अछि। बापे-पूते खटितो रहला पर भविष्यक प्रति सदिखन चिन्ताकातर रहैत अछि। रौदी, दाही, बाढ़ि आ अकालसँ झमारल मनोहरा (घंटी) अपन प्रिय सिलेविया गाइक करिया बाछी नुनुआकें मात्र बीस टाकामे बेचि अपन दस वर्षक बेटा ठिठाराकें कमेबालेल पूब पठा दैत अछि। बपटुग्गर सोनमा प्रत्येक मास बापक कर्जा मनीऑर्डर सँ चुकबैत जाइत अछि। परंच नीत्तू बाबूकें हेरायल बही भेटैत जाइत छनि। इमनदार सोनमा गाममे रहबाक अपन मोहकें त्यागि विदा भए जाइत अछि ('सवाइ')। बंगट मिसरक (फतिंगा) अकारण नालिस करब, गामक कतेको व्यक्तिकें मामिला मोकदमाक पसाहीमे झरका कए मारि दैत अछि। श्वेत मेघक टुकड़ी सन पवित्र विवाहिताक लाहुरे (पति) जखन परदेशसँ नहि अबैत अछि तँ आर्थिक विवशताक कारणें गर्दनिसँ पोतेक छड़ (मंगल सूत्र) डबडबायल आँखिए बाहर कए एक बेरि चूमि, जूमा कए फेकि दैत अछि तथा शेरेचन होटलक प्रौढ़ महिलाक संग विदा भए जाइत अछि। (हिचुकैत बहैत सेती)। दस वर्षक वीरेक जखन खेलेबा धुपेबाक बेर छलैक, माय ओ छोट पैघ बहिनक मोह ममताकें बिसरि असमय प्रोढ़ बनि नोकरीक ताकमे मोगलान (भारत) विदा भए जाइत अछि (पहाड़क फूल)। झोटहूबाबू (गामक ठठरी) अपन बहियाक घर घड़ाड़ी लिखा लैत छथि तँ गाम छोड़बाक अतिरिक्त आन कोनो उपाय नहि रहि जाइत छैक। करजाक फरिछौटमे मालिक पोसियाक गाय आ टूनाकें गोनराक बथान सँ खोलि लए जाइत छथि। ओही सवत्सला गाय पर गोनराक समस्त परिवारक ध्यान केन्द्रित रहैत छलैक। एक धार दूधक प्रत्याशामे बैसल गोनराक नेनाक आशापर तुषारपात सेहो भए जाइत छैक। खूंटापरसँ गाय आ ओकर टून्नाक खोलबाक काल नेनाकसंग परिवारक समस्त सदस्यक मनोदशाक वास्तविक चित्र टूना कथाकें प्राणवान बनादैत छैक। धीरेन्द्रक कथामे समाजक निर्धनवर्गक अनेक विधि शोषणक चित्र भेटैत अछि।

धिरेन्द्रक समकालीन आ परवर्ती कतेको कथाकारक कथामे नारीक चित्रण एक मादाक रूपमे भेल अछि। ओ जैविक विवशताक तृप्ति लेल उच्छामात्रहिसँ कतहु आ कौखन जा सकैत अछि। दूध पीबा नेनकें पेसीया लगा कए निर्भ्रान्त घूमि सकैत अछि। पति-पत्नीक बीच समर्पण आ एकात्म भाव नहि, प्रत्येक भ्रूभंगिमासँ स्वार्थ टपकैत रहैत अछि। किन्तु, धीरेन्द्रक कथा आधुनिक युगक एहि कृत्रिम बन्धन आ विसंगति सँ फराक अछि। ओ नारीकें प्रेम आ त्यागक मूर्तिक रूपमे देखैत अछि। ओकरामे ममता कूटि-कूटि कए भरल अछि। ओ व्यवहारपटु रहैत अछि। स्वयं कष्टसहितो अम्लानमुख रहैत अछि। हृदयक विशालता ओकर विशेष गुण थिकैक। मामीक स्नेह (मामी), वुचनीक ममता, कर्मठता आ दारुण आर्थिक दुःस्थितिसँ लड़ैत रहाबक धैर्य
(मादा काँकोड़) भौजीक सहिष्णुता आ व्यवहार कुशलता (गुम्मा थापड़) आभा आ घनमायाक स्नेह (पहाड़क फूल), गुड़की बुढ़ियाक त्याग (बन्हकी) अगहनियाक भ्रातृत्व (कंठा) आदि उल्लेखनीय अछि। एकर अर्थ ई नहि जे धीरेन्द्रक कथाकार नारीसँ केवल त्याग, दया ममता आ समर्पण-कामना राखि चित्रित करैत छथि। 'विधवा' आ 'देवीजी' नितान्त भिन्न मूल गोत्रक कथा थिक। धन, वस्त्र आ आभूषण सँ नवकनियाँ कें तोपि कें राखि, सभ प्रकारक भौतिक सुख सुविधाक अम्बार रहलो पर ओकर हृदयक भाव कें दवा कए नहि राखल जा सकैछ कथाकार

सेहो अनुभव कएल अछि। अनमेल विवाहसँ होइत अकाल वैधव्यक कारण ओकर माए-बाप, भाए-बहीन आ समाज सेहो समान रूपे दोषी अछि। देवीजी सामाजिक कुरीतिक विरोधमे ठाढ़ होइत छथि तँ परिवारक आनलोक गंजनसँ तर कए दैत छनि। तथापि ओ डेरा कए चुप्प नहि भए जाइत छथि। ओहि तत्वसभक भर्त्सना सँ बाज नहि अबैत छथि। धीरेन्द्रक एहि कोटिक कथामे नारीक शोषण चित्रित अछि। किन्तु शोषितामे अपन आक्रोश व्यक्त करबाक आत्मबल छैक।

धीरेन्द्रक कथाक संवेदना क्षेत्र व्यापक अछि। ओ मनुष्येत्तर प्राणीधरि व्याप्त अछि। मनुष्ये जकाँ पशुओक संग आत्मीयता स्थापित आ व्यंजित अछि। मनुक्ख आ बकरीक एकटा बच्चा, सूगरक बाप, टूना, घंटी आदि एही प्रकारक कथा थिक। पुत्रक स्वास्थ्य कामना निमित्त सुवैया कमला महारानीकें पाठी चढ़ेबाक कबुलातँ कए लैत अछि, किन्तु कोरामे पाठीक मेमिआएब सूनि, हृदय आर्तनाद कए उठैत छैक। तर्क वितर्क चलैत अछि। द्वन्द्व होइत छैक- बलेलहा बचितौ, यदि कमला माइकें कबुला नहि करितहुन्ह? चढ़ा आ जो.....।' किन्तु सुबैया पाठीकें कोरामे कसने जाइत छैक। ओ कबुला बिसरि पाठीक संगे पड़ा जाइत अछि। एहि कथामे धीरेन्द्र मनुष्येतर प्राणीक संग आत्मीयता आ दयाक चित्रणक संग, लोकक धर्मभीरुता पर सेहो प्रहार कएल अछि। मनचनमाक आशाक बिन्दु अछि चारू पाऊर (सुगरक बाप)। ओहिमे सँ दू टा बेचि दुकौड़ियाक माए लेल ललका नूआ कीनत, अपना लेल कलगैयाँ लोटा लेत, दुकौड़िया लेल जामा लेत, आ बसबिट्टी जोकर जमीन कीनत। किन्तु, बेचल पाऊर पड़ाकए जखन रातिमे पुनः खोभारीक कमची तोड़ि प्रवेश कए जाइत छैक तँ गहकी आ समाजक गारि फज्झति सूनिओ कए ओ बेचब नहि गछैत अछि। दाम फिरबैत कहैत छैक-'नइ बेचबौ कतबो देबह तैयौ ने। कहयो ने बेचबै। जखन ओ हमर दुआरि ने छोड़य चाहैत अछि तँ कहियो ने बेचबै।' सूगरक जे बच्चा ओकर आशा-आकांक्षा आ आवश्यकताक पूर्तिक एक मात्र साधन छैक, से ओकर हृदयक अंग बनि जाइत अछि।

धीरेन्द्रक कथाक नायक-नायिका हारैत नहि अछि। ओकरा अपन शक्तिक प्रति आस्था छैक। अपना पर भरोस छैक। जीवनक प्रति विश्वास छैक। प्रतिकूल परिस्थितिमे संघर्ष लेल तत्पर रहैत अछि। सात मानवीय कायाक जननी बुधनी (मादा काँकोड़) भरि दिन रोड़ा फोड़ि सन्तानक प्रतिपाल करैत अछि। ओ मनमे निर्णय कएलैत अछि, काँकोड़ नहि मनुक्खक बेटी छी आ ओकर बच्चा सभ मनुक्खक बच्चा। जकरा नेह छोह छैक।' मायक मुँह देखि जेठका बेटा बुधनी कें कहैत छैक कनिके दिन रहलौए माए ! वेसीसँ वेसी दी वरख। जखन हम जनमे जाए लगबौक तँ तोरा थोड़बे हरान होबए देबौक।' अल्प वेतन भोगी सुन्दर (इजोतक प्रतीक्षा) इजोतक बटाबटीमे अन्हारक कष्टकें बिसरि बैसल अछि। जेठ बालकक बेकारीक दुख सँ आहत चरणदास छोटको बेटाकें पढ़ाइक खर्च देबाक निर्णय कए लैत अछि। 'ओ फेर सिमरक फरक प्रतीक्षा करत। ओ एक गोट सुग्गा थिक जे प्रतीक्षा करबाक हेतु, निराश होएबाक हेतु बनल अछि। के जानय जाहि प्रकारें छिड़िआएल तूर लोकक काज अबैत छैक, तहिना तूर सन ओकरो बेटा सभ धरतीक कोनो काजमे आबि जाइक (सिमरक फर)छ कठखोधीक एक गाछसँ दोसर गाछ पर उड़ि बैसब आ आहार लेल परिश्रम करब जीवनक प्रति आस्था कें व्यक्त करैत अछि। तात्पर्य जे कथा नायक आ नायिका मे जीवनक प्रति आस्था छैक। एकहि संगमे नेका

प्रतिकूल परिस्थितिक आबि जाएब ओकर विश्वासकें तोड़ैत नहि अछि। ओ पराजित नहि होइत अछि (अपराजित)। चरणदासक ई कहब जे छिड़िआएल तूरसन ओकरो बेटा धरनीक कोनो काजमे आबि जाएत,
लेखकक सामाजिक दृष्टि आ संलग्नताक द्योतक थिक।

धीरेन्द्रक कथामे राजनीतिक विसंगतिक चित्रणक अपेक्षा आर्थिक आ सामाजिक शोषणक स्थिति विशेष मुखर आ प्रधान अछि। सोझ शब्दमे कहि सकैत छी, धीरेन्द्रक कथामे राजनीतिक चेतनाक अभाव अछि। परंच, सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक क्षेत्र ततेक संश्लिष्ट आ अन्तरावलम्बित अछि जे एक कें दोसरासँ फूटा कए देखब उचित नहि अछि। चेतना सम्पन्न रचनाकार लेल असम्बद्ध रहब, असंभवो भए गेल अछि। गामक राजनीति ओकर फगुआ मे अछि, तँ देशक राजनीतिक विसंगति मनुक्खा विकाएत आ हड्डीक माय सन कथामे भेटैत अछि। हड्डीक मायक कारुणिक अन्तसँ समाज चिन्तित नहि अछि। चिन्ताक कारण छैक एक खण्ड नूआ आ चारि सेर अल्हुआ व्यर्थ भए गेल, किएक तँ ओ वोट देबासँ पहिने समाप्त भए गेल। (हड्डीक माय) धीरेन्द्रक कथामे ओहि स्थितिक चित्रण विश्वसनीय अछि 'जकर' बीचसँ संघर्षक तेज पुंज निकलबाक चाही। परंचा जे किछु बाहर होइत अछि, तकर धाह ताप उत्पन्न नहि करैत अछि। शोषणक पात्र बनल रहितो कतहु शोषित वर्ग एकठाम होइत नहि भेटैत अछि। घरड़ीसँ बेदखल भए जाइछ, जाल फरेबसँ कर्जक बोझ कहियो समाप्त नहि होइत अछि। फगुनिया सन समर्थ आ काजुल ग्रामीण युवककें मरबा देल जाइत अछि। (ओकर फगुआ) किन्तु ककरो मे कोनो सुगबुगी नहि भेटैत अछि। झालि-मृदंग ठोकैत फगुआ गबैत रहैत अछि। मरबा लेल गाम आएल बूढ़ा (गामक ठठरी) सहयात्रीक प्रश्न-'बाबा। तों झोटहू बाबू सँ तकरार किएने कएलह! घराड़ी छोड़ि किएक चल गेलह? तोरा जखन धरती सँ एतेक मोह छलह, तँ खून भए जएतह ओकरा लेल-सूनि मना करैछ-'एना नहि बाजी'। अगिला जन्ममे लड़बाक निर्णय करब आ एहि जन्ममे शान्तिसँ अपन गामक धरतीपर मरबाक इच्छा राखब-कोनादन लगैत अछि। एहि स्थितिकें देखि कए लगैत अछि जे धीरेन्द्रक कथामे शोषण, उत्पीड़न आ डराएब-धमकाएबाक स्थितिक चित्रण अबैत अछि, तँ कथाकारक व्यक्ति मन पर सामाजिक मन पर सामाजिक मन आरूढ़ रहैत अछि। परंच, जखनहि सम्मिलित प्रयासँ एकटा तेज पुंज फूटबाक बेर अबैत छैक, कथाकारक व्यक्तिमन प्रबल भए उठैत अछि सामाजिक मन गौण। एहिना कथाकारक व्यक्तिमन 'पीराआम' तथा 'कलाकार आ प्रतिमा' मे सेहो प्रबल भए गेल अछि।

धीरेन्द्रक कथामे गामक धरतीक मोहक स्थितिक चित्रणक प्रमुख कारण अछि गामे नहि, देशो छोड़ि, विदेशमे जीविकापन्न होएबाक विवशता। ओ एहन देश जाहिठाम भारत जकाँ लेखककें अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता नहि रहलैक अछि। ई मानसिक पीड़ा कोनहुँ लेखकक लेल दारुण होइत अछि आ ज विशेष संवेदनशील एवं भावुक रहला पर आर अधिक। तें सृजनक स्थितिमे बेर-बेर गामक धरती मोन पड़ैत भेटैत अछि। तें की धरतीक मोहक अभिव्यक्तिकें धीरेन्द्रक व्यक्तिमनक मोहवादी कथा मानि बेरा देल जाए! वस्तुस्थिति ई अछि जे कोनो व्यक्ति गाममे रहैत छथि अथवा गामक धरतीक निकट रहैत छथि गामक धरतीक प्रति आकर्षण कम रहैत छनि, आ जे शहरक कृत्रिम जीवनकें अपन जीवनक नियति मानि लेल अछि, गामक

धरतीक सोह नहि अबैत छनि। महत्वपूर्ण प्रश्न अछि जे धीरेन्द्रक कथामे आ कि आने कथाकारक कथामे कथानायककें गामक सोहनगर धरती छोड़िकें नगर-उपनगक कृत्रिम बसातमे जीवन गुदस्त करबाक विवशता किएक छैक? धीरेन्द्रक कथाक एहि सन्दर्भमे ई विशेषता मानल जाएत जे हिनक एको कथा नायक सामाजिक मर्यादाक उल्लंघन अथवा चोरि-डकैती कए गाम छोड़ि नहि पड़ैत अछि। पारिवारिक कलहो कारण नहि होइत अछि। धीरेन्द्र जाहि क्षेत्रक कथा कहैत छथि आर्थिक दृष्टिसँ नितान्त लसकल अछि। उद्याग धंधा छैक नहि। ओहि परसँ प्रत्येक वर्ष रौदी-दाहीक प्रकोप होइते छैक। जीवनक आधार लेल कृषिकर्मकें छोड़ि आन कोनो साधन नहि छैक। किछु व्यक्तिक मुट्ठीमे गामक सम्पूर्ण धल-सम्पदा बन्द अछि। सम्पत्तीक एहि प्रकारें एकठाम भए जाएब, शोषण आ अत्याचार कें बढ़बैत अछि। जे शिक्षित छथि जीविकाक साधन नहि छैक, जे अशिक्षित अछि प्राकृतिक एवं मानवीय कोपक भाजन बनल रहैत अछि। परिणामतः, आजिज भए गामक धरतीकें छोड़ि बिदा भए जाइत अछि। परंच, गामक धरतीकें छोड़बाक मोह कतहु चैनसँ रहय नहि दैत छैक। इएह कारण थिक जे
बीसवर्ष पूर्व, मालिकक अत्याचारसँ बचबालेल पड़ाएल बूढ़ एहि विश्वासक संग गाम अबैत अछि जे गामक धरतीपर मरलासँ स्वर्ग भेटैत छैक। 'अपन धरतीपर सरग होइत छै ने आ परदेशमे मरबत तँ आतमा बुझलहक ने वउ। परेत भए जाइत छै। हम अपन धरती पर मरब बौआ।' पिताक गरीबीक कारणें गाम छोड़ि बाहर गेल छौड़ा, शहरक सभ सुखसुविधाकें त्यागि गाम घूमि आबैत अछि (गामक बेटा)। तथापि गामक वातावरण पहिने जकाँ निश्छल आ निर्मल नहि रहल। स्वार्थ आ आत्मकेन्द्रित होइत विचार, लोककें समेटने जा रहल अछि। आत्मीयता घटि रहल छैक। दाव-पेंच बढ़ि रहल छैक। गामसँ विवश भए शहर पड़ाएल छल। किन्तु, शहरक कृत्रिम जीवनसँ त्राण पएबा लेल आब कतए जाएत। गाममे जीविका नहि छलैक। परंच किछु दिन आत्मीयजनक संगव्यतीत करबाक सुविधा तँ छलैक। तकरो ग्रहण लागि रहल अछि। गर्मी छुट्टी सान्तिपूर्वक कटबालेल गाम आएल कथानायक भारीमोनसँ सोचैत अछि, रोटीक जोगाड़ धरयबाक लेल विवश भए अपन माटितँ छोड़िए देने अछि, मुदा की एहि माटिक रूप एहन विकृत भए जएतैक जतय आबि मरण काल वितयबाक इच्छा नहि होइक? (बदर) । बापक कर्जकें चुकेबालेल सोनमा गाम अबैत अछि। किन्तु, नित्तू बाबू दोसर चिट्ठा बाहर कए लैत छथि। सभटा कर्ज अदा कए एकदम अन्हरोखे हाथमे टीनक बाकस लटकौने सोझे टीशन बिदा भए जाइत अछि। शहरक कृत्रिम जीवनक प्रति आसक्ति नहि छैक। गामक धरतीक मोह खंडित भए रहल छैक। एहि मनःस्थिति कें धीरेन्द्रक कथामे स्पष्ट स्वर भेटल अछि।

धीरेन्द्रक शिल्पक चर्चाक क्रममे बहुत रास बिन्दु एकहिसंग नाचय लगैत अछि। धीरेन्द्रक प्रायः प्रत्येक कथा गामक धरती पर, गामक खुरूरबट्टी पर, गामक खेत पथारमे आ गामक जन बोनिहारक स्वेदकणसँ जन्म लैत अछि। तें धीरेन्द्रक कथाकें ग्राम्य कथा मानि लेल जाए, आकि आंचलिक कथा कहल जाए। हमरा जनैत दूनू टूटा भिन्न तत्व थिक। ग्राम्य कथाक आधार थिक विषय-वस्तु जखन कि आंचलिकता थिक एकटा शिल्प। कहबाक एकटा ढंग। ग्राम्यकथाक विषय-वस्तु गामेक रहब आवश्यक। परंच आंचलिकता मे गामो आबि सकैछ आ शहर नगरक कोनो एकटा मोहल्ला सेहो, जकर अपन वैशिष्ट्य छैक अपन रंग ढंग छैक। जँ कि हमर प्रतिपाद्य धीरेन्द्रक कथाक शिल्पविधान अछि तें आंचलिकता, जे एक प्रकारक शिल्प थिक, ततहि धरि चर्चा सीमित राखब उचित। कथामे कथाकारकें ओतेक स्वाच्छन्न नहि रहैछ जे

ओ अंचल विशेषक रीति-रेबाज, धर्म, संस्कृति, रुचि आ परंपरा, पावनि-तिहार लोकक उठब-बैसब गप्प-सरक्काक वर्णन विस्तारसँ करए। आंचलिकताक सभगुणकें एकहि कथामे समाहित कए सकय। किन्तु, धीरेन्द्रक कथाक शिल्पक अध्ययन ई अवश्य प्रमाणित करैछ जे ओकर गरहनि आंचलिक छैक। ओहिसँ अंचल विशेषक गुणक महमही निःसृत होइत रहैत अछि।

डा० धीरेन्द्रक कथाक प्रारम्भ कथ्यक परिणतिक अनुरूप वातावरण निर्माणक संग होइत अछि। उदाहरणार्थ सिमरकफड़ (कुहेस आ किरण) शीर्षक कथा देखल जा सकैछ। 'पछबाक तोर पर ढेरी ढाकी सिमरक तूर एम्हर ओम्हर छिरिया गेला टें-टें करैत सुग्गा क झुंड पुबरिया आकाश मे उड़ैत-उड़ैत क्षितिज लग पसरल जमुनियाँ गाछी मे बिला गेल।' सुग्गा क झुंड फलक प्रत्याशा मे सिमरक फड़ पर लोल मारैत अछि, किन्तु चोंच मे आबि जाइत छैक तूर। कथाक चरण दास प्रथम पुत्र रामकिसुन कें शिक्षित करबाक व्रत लैत अछि। शिक्षित रामकिसुन नौकरीक फिराक मे दरबज्जे-दरबज्जे बौआइत अछि। अन्त मे सुग्गा जकाँ ओहो उड़ि जाइत अछि। चरणदास प्रथम पुत्रक असफलता आ जीविकाक तलासमे गाम छोड़बासँ अवश्य आहत होइत अछि। तथापि दोसरो पुत्र पर पुत्रकें मंगल कामनासँ खर्च करब गछि लैत अछि। धीरेन्द्रक प्रायः अधिकांश कथाक प्रारम्भ एही प्रकारें वातावरण निर्माणसँ भेल अछि। कथाक प्रारम्भ अन्तसँ करबाक ई पहिल शिल्प थिक।

समाप्ति सँ कथाकें आरम्भ करबाक शिल्पक दोसर प्रविधिमे कथाक अन्तक सूक्ष्म आ वाक्य विशेषक
यथावत अथवा एनमेन ओहने प्रस्तुति कएल जाइछ। एहिसँ प्रतीत होइछ जेना कथा गोलाकार हो। ई शिल्प शुरुसँ अन्त करबाक अपेक्षा अथवा अन्तक स्थितिसँ कथा प्रारम्भ करबाक शिल्पक अपेक्षा विशेष लूरिक प्रयोजन रखैत अछि। तें वेशी कठिन अछि। ई शैली कथाकारक रचना प्रक्रिया कें सेहो स्पष्ट करैछ। धीरेन्द्रक कथा गुम्मा थापड़ कंठा, धर्मात्मा, आदि एही शिल्पक कथा थिक। 'गुम्मा थापड़क प्रारंभ एहि प्रकारें होइछ-दीपेन कें लागि रहल छलनि मने पश्चिमाकाश सूर्य हुनकर मुँह दूसि रहल होथि। साइकिलक पैडिल पर राखल पयर थरथरा गेल आ ओ साइकिल परसँ उतरि गेलाह।' कथाक अन्त एहि प्रकारें होइछ-'भाउज मोख लगधरि अरिआइत देलथिन। अपन सीमा धरि आ फेर आंगन चल गेलीह आ दीपेन बिदा होइत होइत आकाश दिस देखलथिन तँ बुझना गेलनि माने पश्चिमाकाश सूर्य हुनकर मुँह दूसि रहल होथि।'

धीरेन्द्रक कथाक आकार छोट होइत अछि। छोट आकारक कथामे कथ्यकें विश्लेषित करबाक गुंजाइश नहि रहैत अछि। तखन कथाकार लेल आवश्यक भए जाइछ जे ओ संकेतसँ काज चलाबए। सांकेतिकतासँ भाषा सूक्ष्म आ सर्जनात्मक सेहो होइत अछि। संकेत सूक्ष्म होइतहु प्रभावे व्यापक आ धरगर होइछ। धीरेन्द्रक कथाक सांकेतिता मैथिली कथा साहित्यक उपलब्धि मानल जा सकैछ। 'गुम्मा थापड़ एहि शिल्पक एक विशिष्ट कथा थिक।

गुम्मा थापड़ क सरल सौम्य हृदया भौजीक हास्य विनोद सूनि नवे नव बीडीओ बनल दीपेन बूझि लैत अछि जे, भौजी पचकल गाल आ थकुचल मपत्वाकांक्षाक गोपी भाइसँ संतुष्ट

नहि छथि। भ्रमछनि जे नारी टाकावलाक छैक। दिओरक प्रति व्यक्त हास्य विनोदकें दीपेन भौजीक आमंत्रण मानि, मने मन गूड़ चाउर फंकैत कहैत अछि-'चाह' अहाँतँ जे जे लाएब से लाऊ। सबहक लेल तैयार छी।' पुनः सस्मित आनने भौजी दीपेन दिस तकैत छथि। भौजीक हावभाव आ दृष्टि निक्षेप पर दीपेन मस्त भए गुनगुनाए लगैत अछि। किछु कालक वाद भौजी चाह दैत छथिन आ पटिया पर समक्षहि बैसि एक वर्षक अध जागल नेनाक मुँहमे इतमिनानसँ, आंगीक बटन खोलि, दूधक टुरनी मुँहमे लगबैत कहैत छथिन-'ई पांचो पोथी हुनके लिखल छनि। पाँचम हमरे समर्पित कएने छथि। मुदा अहाँ आब विआह कए लिय। हाकिम होएब दोसर गप्प भेल आ संसार डेबब दोसर। बूझलिएक छोटका बाबू। नीक लागत।' भौजीक ई गुम्मा थापड़ छल। दीपेन कें चटाक दन लगलनि। बूझबामे भाङट नहि भेलनि। हबड़-हबड़ चाह घोंटि चोटे विदा भए गेलाह। ओतेक साहस नहि रहलनि जे गोपी भाइक धूमि अएबाक प्रतीक्षा करितथि। ई थिक कथाक सांकेतिकता। भौजी संकेत सँ सभकिछु कहि दैत छथि हँसी मजाक क माध्यमे। दीपेनक हावभाव पर भौजी तमसा सकैत छलीह। फज्झति कए सकैत छलीह। किन्तु से सब बिना कएने हास्य-विनोदमय वातावरणमे दीपेनकें अपन बहकबसँ परिचित करादेल।

धीरेन्द्रक कतेको कथामे प्रतीकात्मक शिल्पक प्रयोग अछि। ओना संकेत आ प्रतीकमे बड़बेशी अन्तर नहि अछि। अन्तर अछि, अर्थव्याप्तिक। अर्थ विस्तार आ अर्थ संकुचनक कथामे प्रतीकक प्रयोग अनुभूतिकें अर्थ ओ सम्प्रेषण बनेबा लेल कएल जाइछ। नव नव प्रतीक अन्वेषण आ तकर माध्यमसँ कथ्यक सम्प्रेषण रचनाकारक सर्जनात्मकताक द्योतक थिक। एकरा नव माध्यमक अन्वेषण सेहो कहि सकैत छी। धीरेन्द्रक प्रतीकात्मक शिल्पक कथामे प्रमुख अछि बादुर, गीध, 'कठखोधी, भादा कांकोड़, फतिंगा आदि। हिनक प्रतीक परिचित होइत अछि तथा ओकर माध्यमसँ कोनो मनोवैज्ञानिक सत्यक नहि, सामाजिक यथार्थक उद्घाटन कएल जाइछ। बादुर समाजक ओहि वर्गक प्रतीक थिक जकर कोनो सिद्धान्त नहि छैक। जे सदिखान अवसरक ताकमे रहैछ। जाबतधरि गोल बनल रहैत अछि सुतरैत छैक आ भेद-भाव एवं आपसी झंझट समाप्त होइतहि ओ देखार भए जाइत अछि। गीध समाजक महाजन थिक। जे मुइले नहि जीवितो लोकक रक्त मज्जा चूसबा लेल ताकमे रहैत अछि। कठखोधी साधन आ आश्रयहीन व्यक्तिक प्रतीक थिक जे आहारक खोजमे जीवन भरि खट-खट करैत रहि जाइछ अछि। कतहु किछु भेटैत छैक, कतहु परिश्रम व्यर्थ होइत छैक आ
कतहु बैसितहि केओ ढेपा मारि भगादैत छैक। फतिंगा समाजक ओहि वर्गक प्रतीत थिक जे गामक किछु वर्गक अत्याचार सँ आजिज भए दूर देश पड़ा जाइत अछि। बोनि बूतात लेल राति-दिन खटैत अछि, तथापि महाजनक जाल-फरेब सँ उवरि नहि पबैत अछि। आ अन्तमे फतिंगे जकाँ झरकि प्राणान्त भए जाइत छैक। मादा काँकोड़ मातृत्वक प्रतीक थिक। आसन्नप्रसवा वुधनीकें दरवरिया छोड़ि उड़नमा पंछी भए जाइत छैक। किन्तु ओ अपन सन्तानक भरण-पोषणक हेतु देहतोड़ि खटैत अछि, आ ई असत्य घोषित करए चाहैत अछि जे कंकोड़बा वियान कंकोड़बे खाए।' एहि प्रकारें डा० धीरेन्द्र मादा कांकोड़क नवअर्थमे प्रयोग सेहो कएल अछि। ओकर अर्थ विस्तार भेलैक अछि। प्रतीक क एहि नव प्रयोगमे मातृत्व अछि, संघर्षशीलता अछि आ अछि जीवनक प्रति अटूट आस्था।

पत्रात्मक शैलीक किछु कथा सेहो अछि। ओहिमे प्रमुख अचि विधवा आ इजोतक प्रतीक्षा। हिनक प्रायः अधिकांश कथामे एहन स्थिति अबितेटा अछि ने जखन कथाक कोनो कोनो पात्रक आँखि डबडबा नहि जाइत हो। यद्यपि एकर संबंध शिल्पसँ वेशी व्यक्त भावना सँ छैक किन्तु जँ कि आँखिक डबडबाए धीरेन्द्रक कथाक कौमन फैकटर थिक, तें एहि स्थितिकें एकटा शिल्पक रूपमे किछु काल लेल मानि सकैत छी। उपर वर्णित शिल्पक अतिरिक्तो प्रकारक शिल्पक प्रयोग धीरेन्द्र कथामे भेटैत अछि जे कथाकारक शिल्प निर्माणक निपुणता कें द्योतित करैत अछि।

जून १९८८

प्रभासक कथा यात्रा

सभसँ पहिने आवश्यक प्रतीत भए रहल अछि कथाकार प्रभास कुमार चौधरी (ज० १९४१)क पृष्ठभूमिक मूल्यांकन। मैथिली कथाक पृष्ठभूमिक अन्वेषण कएलासँ ओकर प्राचीनरूपक विश्लेषण, प्रभावक तत्व आ दिशाकें निर्धारित करैत काल तीन विभिन्न कोण आ साहित्यसँ प्रभावित अनुप्राणित भेल पबैत छी। ओ तीन विभिन्न साहित्य थिक-संस्कृत, अंग्रेजी आ बंगला।

मैथिलीक प्रारम्भिक कथापर संस्कृत साहित्य कथाक पूर्ण प्रभाव अछि। आरो स्पष्ट होएबा लेल कहल जा सकैछ जे संस्कृत साहित्यक विभिन्न आख्यायिका, उपाख्यान आदिक मैथिली अनुवाद मैथिली कथाक प्रथम चरणक कथाक रूपमे मान्य अछि। मुदा, एखनो ई प्रेरणा-स्त्रोत सुखायल नहि अछि। ई प्रक्रिया दू रूपमे भेटैछ-प्रथम रूप मे संस्कृत कथाक एनमेन अनुवाद तँ दोसर रूपमे संस्कृत साहित्यक विभिन्न पात्रक वर्त्तमान युगक अनुरूप चित्रांकन। तें एक दिस जँ ओहिमे धार्मिक आ पौराणिक कथाक आस्वादक कें विशेष आस्था आ रूचि रहैछ, तँ दोसर रूपमे युगक अनुरूप चित्रांकन, अर्थक सम्प्रेषण सँ युगक स्पन्दन सेहो व्यंजित भेल भेटैछ।

संस्कृतक गह्वर मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार अन्य प्रान्तक अपेक्षापूर्ण विलम्ब सँ भेल। परंच, एक बेर प्रचार-प्रसार भए गेलापर ओकर व्यवहारिक, साहित्यिक मपत्त्व एवं अनिवार्यता कें नहि मानब असंभव छलैक। कारण स्पष्ट छलैक। भारतीय शासन व्यवस्था मे अंग्रेजीक प्रमुखता, अंग्रेजक हाथमे देशक शासनभार। जाहि मिथिला मे सात समुद्रक पारक भाषा कें घृणा सँ देखल जाइत छल, चिनवार धरि से पहँचि गेल। 'गल्पांजलि'क भूमिका स्पष्टतः एहि तथ्यक उद्घाटन करैछ-'किन्तु, समयक प्रभावें हमसभ क्रमिक
विदेशी वस्तु सभक वहिष्कार छोड़ि रहल छी। आइ-काल्हि एहन केओ नहि होएताह जे आलू नहि खाइत होथि, किन्तु बहुत कम गोटेकें ई बुझल छनि जे आलू विदेशी वस्तु थिक। ई तँ कथ्यक प्रसंग भेल। शिल्पक प्रसंगमे स्पष्ट अछि-'विदेशी वस्तु आ विचारक वहिष्कार क कारणें मिथिला मे गल्प रूपी विदेशी वस्तुक पहिने व्यवहार नहि छल। प्रारम्भमे, एहि शताब्दीक दसम

बीसम वर्ष धरि उपाख्यान-अख्यानक वादे स्वतंत्र रूपें कथा लिखबाक परिपाटी आरम्भ होइछ। एहि साक्ष्यक आधार पर ई स्पष्ट भए जाइछ जे मैथिली मे कथा (आधुनिक अर्थ मे) लिखबाक परिपाटी अंग्रेजी साहित्यक अध्ययन अनुशीलनक उपरान्त भेल। एहि संदर्भ मे उमानाथ झाक योगदान स्मरणीय अछि। अपन रेखाचित्रक 'ओहे माहे' मे विदेशी शिल्पक अंगीकार कें मुक्त कण्ठें स्वीकार कएलनि अछि-'बुच्चीदाइ लोकनिक समक्ष उपस्थित भेल छी, परन्तु हुनका अनरसाक हिस्सख, माल-पूआ रुचिकर, ऐहबक, फड़ ओ बगेया सँ परिचय। विस्फुट सएण्डविच, केक, नीक, लगतनि। के कहय? मयदा, आँटा, घी, चीनी, ई सभ वस्तु आना हमर केक आ विस्फुटक नहि। अर्थात् कथाकार उमानाथ झा (ज० १ जून १९२३) पाश्चात्य विधिक अनुसरण कए मानवीय संवेदनाकें शब्द देबाक प्रयास कयलनि। अनरसा आ ऐहबक फड़ तथा विस्फुट आ सएण्डविचमे रचनात्मक भिन्नता छैक संघटनात्मक नहि। अर्थात् दूनूक आधार एक्के छैक। दूनू वस्तु एक्के वस्तुसँ निर्मित अछि। परंच, बनएबाक विधि मे अन्तर। ओहिना, केवल स्थान आ भाषाक भिन्नता सँ जीवन कें देखबाक, ओकर आलोचना करबाक मानवीय संवेदनाक प्रति अथवा मानवीय प्रवृतिक प्रति दृष्टिकोण मे विशेष अन्तरक संभावना नहि छैक। पेटक भूख हो अथवा जैविक विवशता-मिथिलामे स्थानक भिन्नताक कारणें विशेष अन्तर नहि पड़ि सकैछ। ओकरा पूरा करबाक प्रक्रिया ओतेक महत्त्वपूर्ण नहि, जतेक भूखक सर्वजनीनता। एहि प्रकार सँ अंग्रेजी साहित्य मैथिली कथाकें तीन प्रकारें अनुप्राणित कएलक अछि। प्रथमतः कथ्यक चयन अर्थात् कथाक माध्यम सँ जीवनक अभिव्यक्ति, मनःस्थितिक विश्लेषण, सामाजिक आ राजनीतिक जीवन मे भ्रष्टाचार, बइमानी तथा स्वार्थक रणनीति क विरोध मे बाजि सकबाक साहस। एहि प्रसंग डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा (२-६-६४) स्पष्टतः स्वीकार कएने छथि-'मिथिला मे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार भेने कुहेस फाटि गेल तथा मैथिलीक प्रांगण मे नव आलोक पसरए लागल।' एहि आलोकक प्रभावें कथाकार अपन अभिप्रेतकें नीक ढंगसँ कहि सकबाक 'टेकनिक' सेहो प्राप्त कएलनि।

ई निर्विवाद अछि जे मैथिली किंवा अन्य भारतीय भाषाक साहित्यकार अंग्रेजी भाषा-साहित्य सँ प्रेरित-अनुप्राणित भेल छथि। पाश्चात्य दार्शनिक साहित्यकार माकर्स, एंजिल्स, फ्रायड, युंग, नित्शे, काफका, कामू अथवा इलियटक जीवन-दर्शन अथवा सम्प्रेषण-प्रणाली सँ प्रभावित भए लिखबा मे अथवा हिनका लोकनिक नामो लए लेबामे किछू गोटे अपना कें गौरवान्वित बूझैत छथि। भलें, हुनका लोकनिक परिवेश आ मिथिलाक मे साम्य नहि रहय।

आधुनिक वैज्ञानिक युगमे रेडियो, टेलिविजन तथा पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ विश्वक एक कोण सँ दोसर कोण धरि कोनो घटनाक खबरि तुरन्त पहुँछि जाइछ। एक देशक घटनासँ दोसरो देश दलमला उठैछ। वियतनामक युद्ध हो अथवा पश्चिम एशियाक युद्ध, दक्षिण आफ्रिकाक रंग-भेद नीति हो अथवा बंगलादेशक नरमेध, विश्वक प्रत्येक सचेत मानस झनझना उठैछ। अमानवीय आचरण एवं अत्याचार देखि, आत्मा हाहाकार कए उठैछ। परंच, पोखरिमे फेकल गेल ढ़ेपसँ उत्पन्न हिलकोर जकाँ एहि घटनाक प्रभाव क्रमशः क्षीण होइत विलीन भए जाइछ। तें क्रमशः क्षीण होइत घटनाक प्रभावकें पूर्णरूप मे अनुभव करब कलाकारक संवेदनशीलता पर निर्भर करैछ। अर्थात् दोसराक स्थिति कें अपने भोगल जकाँ अनुभव कए अनुभूति पाबि, सम्प्रेषित करबाक प्रक्रिया पर निर्भर करैछ, जे एक सचेत जागरूक आ

संवेदनशील सिद्धहस्त कलाकार लेल संभव अछि।

संस्कृत आ अंग्रेजी साहित्यक अतिरिक्त बंगला साहित्य सेहो मैथिली कथाकार कें प्रभावित कएलक
अछि। पूर्वमे जाहि बलपर मिथिलाक साहित्य बंगला मे ग्राह्य होइत छल, ओ स्रोत सुखा गेल अथवा ओहिमे आब ओहन किछु अंश नहि रहल, जे ओहिठाम ग्राह्य भए सकय। एकर विपरीत, बंगाल मे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार, मुद्रण आदिक सुविधा तथा अनेको औद्योगिक प्रतिष्ठानक स्थापना मैथिलकें विशेष आकर्षित कएलक। बंगला साहित्यक व्यापक प्रभावशीलताक समक्ष मैथिल अपनाकें अप्रभावित नहि राखि सकलाह। एहि मे सभसँ विशेष प्रभाव शरद'क कारुण्य-धाराक अछि। अन्तःसाक्ष्यक लेल मनमोहन झाक (ज. १९२० कथा संग्रह 'अश्रुकण' पर्याप्त अछि। एकर अतिरिक्त सुधांशु 'शेखर' चौधरीक (१९२२-१९९० कथा 'भारती' (गल्पांजलि') सेहो देखल जा सकैछ (राजकमल चौधरी (१९२९-६७) अपना कें अप्रभावित नहि राखि सकलाह। शेखर जीक 'भारती' आ राजकमल चौधरीक 'ललका पाग' मे तत्त्वतः कोनो अन्तर नहि अछि, जे मैथिली कथाक दू पीढ़ी कें प्रभावित कयनिहार शरदक साहित्यक परिणाम थिक। ओना, 'शेखर'जी कतेको बेर अपन प्रारम्भिक साहित्य पर बंगला साहित्यक, मुख्यतः शरदक कारुण्यक धार प्रभाव मुक्तकण्ठे गछलनि अछि।

तात्पर्य, जे मैथिली कथा साहित्यकें समृद्ध होएबाक लेल तीन दिशासँ न्यूनाधिक्य रूपमे प्रेरणा, प्रभाव आ दृष्टि-भेटल अछि। मुदा, पचास धरि अबैत प्रो० उमनाथ झा अपन कथामे जाहि परिवेशक निर्माण कएने छलाह से मिथिलांचलक सुदूर गामो मे व्याप्त भए गेल। अर्थात् अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार-विस्तार, ओकर आहार-व्यवहार, शहरक सीमाकें लाँघि गामो पहुँचि गेल आ आइ स्थिति ई अछि जे जँ कोनो कथाकार महींसवारक कनहामे ट्रांजिस्टर लटकल अथवा हरबाहकें चाह पीबि लागनि पकड़ैत देखैत छथि तँ ओकरा अभारतीय अथवा अमैथिल परिवेशक कोना मानल जाएत? अर्थात् सभ विजातीय अथवा विदेशी प्रवृत्ति कें आत्मसात कए जेना व्यवहारिक जीवनमे आलू आ तमाकू विदेशीमूलक होइतो विदेशी नहि लगैछ, एक स्वतंत्र उद्भावनाक रूपमे मैथिली कथा अबैत अछि।

कथामे जाहि आधुनिकताक अस्पष्ट ज्योति प्रो० उमानाथ झाक 'रेखा-चित्र' मे भेटैछ अथवा जाहि यथार्थक बोध शोखरजीक 'एक सिंघारा एक चाय' मे अथवा कुलानन्द 'नन्दन'क (मृ.जून ८०) धारि आना कैंचा मे होइछ, आगू बढ़ि ललित, राजकमल, सोमदेव, (ज० ५ मार्च १९३४) धीरेन्द्र मायानन्द, इन्द्रानन्द, हँसराज (ज० २२-१०-१९३२) आदिक कथामे आबि पूर्णतः प्रस्फुटित भए जाइछ। पूर्ववर्त्ती कथाकार मे जाहि वस्तुकें व्यक्त करबाक साहस नहि छलनि, समाजमे व्याप्त व्यर्थक आभिजात्य बोध अथवा परम्परावादक जड़ताक विरोधमे किछुओ लिखि सकबाक साहसि नहीं छलनि, नैतिक-अनैतिक पाप-पुण्य, आचार-अनाचारक मान्यता आ दृष्टिकोणमे जनिक कथा फँसि अभिव्यक्ति पएबा लेल छटपटाइत रहैत छल, से बिना कोनो रोक-टोकक अभिव्यक्त होअए लागल। सभसँ बेसी प्रगति तँ कथ्य-चयनक स्वतंत्रता मे भेटैछ। जकर पृष्ठभूमि मे राष्ट्रीय स्वतंत्रता सँ प्राप्त अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता अछि। परंच, स्वतंत्रता पूर्वक

जे आशा छलैक, पूर्णतः स्वाधीन आत्मनिर्भर भारतक कल्पना छलैक, क्रमशः विलीन होमए लागल। ठाम-ठाम बेइमानी, धुरफंदी, स्वार्थ आ जातिवादक नग्न नाच, नेतृत्व वर्ग द्वारा धनीकक रक्षा आ गरीबक दुर्दशा अनुपयोगी शिक्षा व्यवस्था सँ बैसारी मे वृद्धि, जमीन्दारी व्यवस्थाक अन्त सँ एक प्रकारक आर्थिक रिक्तता, अफसरशाही मे बृद्धी, राष्ट्रीय नेता आदिक नामपर धन-जन एकत्रित कए स्वार्थ सिद्धक प्रपंच, आदिसँ भारतीय परिवेश पूर्णतः आक्रान्त भए गेल एहि प्रकारक घिनौन परिवेशक परिणामे गठित मानसिक स्थितिक कथाकार मे, वर्त्तमान व्यवस्थाक विरोध में तीव्र स्वर तथा अजीवन आ अमृत्युक बीच मे काहि कटैत सर्वसाधारणक प्रति विशेष उम्मुक्तता आबि गेल।

एही आधुनिक भाव-बोधक पृष्ठभूमि मे प्रभास कुमार चौधरी अपन प्रथम कथा धरती कुहरि उठल (वैदेही-५६) संग उपस्थिति होइत छथि। हिनकार दोसर कथा प्रतीक्षा (वैदेही-५७) मे प्रकाशित भेल। वैदेहीक 'बालमण्डली'मे स्थान पाबि वाल कथाकार किछु वर्ष चुप्प भेल लगैछ। मुदा, मौन रहब संभव नहि छल। अपन चारूकातक परिस्थिति सँ नीक जकाँ परिचित भए पुनः पाँच वर्षक बाद मार्च १९६१ सँ अपन तेसर कथाक
संग 'मिथिला-मिहिर' मे उपस्थित होइत छथि। हिनक कथा-लेखनक दोसर चरण अक्टूबर १९६५ धरि चलल। एहि अवधिमे धुरझार लिखबाक अतिरिक्त प्रथम कथा संग्रह 'नवघर उठय-पुरान घर खसय' (१९६४) सेहो प्रकाशित भेल। कथा लेखनक तेसर चरण जुलाई (१९६६) सँ चलल जे चलि रहल अछि।

जखन प्रभासकें कथा लिखबा दिस उत्प्रेरित कएनिहार व्यक्तिक तलाश करैत छी तँ परिवारक साहित्यिक वातावरणक अतिरिक्त कथाक माध्यमसँ बिना कोनो लाइ-लेपटाइक जीवनक सूक्ष्म सँ सूक्ष्म स्थितिक, आ व्यक्तिक आन्तरिक संघर्षक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण उपस्थिति कएनिहार कथाकार ललितक नाम पबैत छी। दूनूक कथा पढ़ला पर स्पष्ट भए जाइछ, जे दूनूक दृष्टिकोण आ अभिव्यंजना कौशल मे कतेक साम्य अछि। वहिर्साक्ष्य तँ ई अछि जे प्रभास विद्यालयक शिक्षा ललितो सँ प्राप्त कएने हछथि, ओ प्रभासक सुप्त कथाकारकें प्रेरित-उतप्रेरित कएने छथि तँ एहिमे असंगत की?

प्रभासक कथाक प्रेरणा स्रोत क कथाकारक संवेदनाशीलताक प्रश्न सहजे उठि जाइछ। कथाकार की देखल, की भोगल आ अनुभव कें कोना संप्रेषित कएल तकर प्रश्न अछि। एकर चारि स्थिति संभव अछि- (१) कलाकार अपन अनुभूति कें कला द्वारा अभिव्यक्त करैछ, (२) कलाकारक संवेदना कलाक रूप धारण कए पाठक धरि जाइछ। (३) कलाकार कोनो युग-विशेषक प्रतिनिधि होइछ अथवा युग-विशेष कें अभिव्यक्ति दैछ। (४) साहित्य समाजक दर्पण होइछ। प्रत्येक साहित्यिक कृति तात्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक चेतनाकें मुखरित करैछ। पहिल आ दोसर कारण सँ कलाकार विशेषकर्मक सूचना भेटैछ तँ तेसर आ चारिम सँ युगीन-चेतनाक। अर्थात् युग-चेतनाक 'पोकस' ओतेक तीव्र होइछ जे कथाकारक अन्तस पर पड़ि, अभिव्यक्ति पएबा लेल विवश कए दैछ। एहि दृष्टिसँ प्रेरणा स्रोतक दू अंग भेल। पहिल मे कथाकारक व्यक्तित्व प्रधान अछि तँ दोसर स्थान पर युग-चेतना प्रधान। प्रभासक कथामे दूनू प्रकारक प्रेरणा-स्रोत वर्त्तमान अछि। हिनक कथाक प्रेरणा-स्रोतक प्रसंग डॉ० जयधारी सिंह (ज०

१६-१-१९२९) लिखैत छथि 'प्रभास कुमार चौधरीक कथा-भूमि बड़ उर्वर, व्यापक आ वर्धिष्णु छनि। इएह कारण अछि जे हिनक ध्यान गामक संग जहिना, तहिना नगरक संग, युवकक वा प्रतिष्ठित व्यक्तिक सम्पर्क दिस जा सकल। बाबी, अरगनी, पिनकी, पिता आदि कथाकारक व्यक्तित्वक गम्भीरताक द्योतक थिक तँ 'सुरक्षित' आ ढेप युग चेतनाक।

जैविक विवशता सँ बर्भर भोगवाद धरि

काम भावना आदिम प्रवृत्तिक रूपमे मान्य अछि, स्त्री आ पुरुष मे समान रूपें वर्त्तमान अछि। मुदा, एहि प्रवृत्ति पर परिवेशक अंकुश सेहो रहलैक अछि आ धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, आचार-अनाचारक कठघरा मे बन्द राखि चित्रित होइत आएल अछि। आधुनिक युगमे उद्योगीकरण, वैज्ञानिक रुचि, विकासक कारणें अन्धविश्वासक अन्तसँ, सामाजिक प्रतिबंध मे ह्रात, काम भावनाकें एक सहज विवशताक जैविक आवश्यकताक रूपमे पेटक भूख जकाँ, पानिक पियास जकाँ मान्यता प्रदान कएलक अछि। जे स्वतंत्र, अकुंठित व्यक्तित्वक विकास लेल आवश्यक अछि। खास कए फ्रायडक मान्यता सेक्स मानवक प्रत्येक क्रिया-उपक्रिया कें प्रेरित-प्रभावित करैछ, विशेष प्रभावित भेल प्रतीत होइछ। प्रभासक कथा मे काम भावना कोन रूपक अछि, ओकर उपयुक्तता की छैक, परिस्थितिक तगेदा की छैक, तकर सम्यक विश्लेषण लेल आवश्यक अछि-कोटि-विभाजन पुरुषमे काम भावना आ स्त्री मे काम-भावना।

पुरुष मे काम भावनाः : सामन्तवादी साहित्य आ समजामे पुरुष अपन काम कें तृप्ति देबा लेल स्वतंत्र छल। ओकरा पर शतशः नायिका लटुआएल रहैत छलैक। धीरोदात्तकें स्थायी रखबाक लेल, काम-ज्वर पीड़ित चित्रित करब शास्त्रीय मानस्ताक विरुद्ध छल। परंच, आब एहन कोनो प्रतिबंध नहि छैक। परिस्थितिक
अनुरूप चित्रित करब आधुनिक कथाकारक मुख्य लक्ष्य अछि। प्रभासक दोसर चरणक कतेको कथा-नायक कामज्वर पीड़ित अछि। ओकरा लेखे 'सेक्स' आरोपित छैक, स्वाभाविक भूख नहि छिकैक। कोनो-ने-कोनो प्रकारक उत्तरदायित्व, विवशता, सामाजिकता अथवा पाप-पुण्यक मतें, ओकर व्यक्तित्व कें उन्मुक्त नहि होमए दैछ आ ओ यौन-कुण्ठा सँ पीड़ित प्रभावहीन कथा-नायक प्रमाणित भए जाइछ। टूटल कलम आ लेभरल आखर (अभियान)क 'हम' ममताक समर्पण सँ घरबा उठैछ। ममताक आक्रोश 'एतेक राति कें अकसरि हम कोन विश्वासपर अहाँक कोठली मे आयलि छी, से अहाँके नहि सुझैत अछि? आन्हर छी?, -सुनि कथानायक लोहछि उठैछ। जा जखन ओ अपना कें एहि स्थिति लेल सदाक हेतु तैयार करैछ तँ राष्ट्र-प्रेम ओकर स्वाभाविक भूख कें मारि दैछ। 'गिरगिट (मिहिर १९-४-६४)क उद्धेगहीन, तनावहीन, आदर्शवादी कथा-नायक पौरुषहीनताक कारणें मित्रक काकीक कोपभाजन बनैछ। मित्रक बदिनक गर्म साँस आ गर्म हाथक स्पर्शे सँ किंकर्त्तव्यविमूढ़ भए जाइछ। शीतयुद्ध (मिहिर १८-१०-६८)क कथानायक चरित्र अत्यन्त हास्यास्पद अछि। निशाभाग राति मे आतुर पत्नीकें अपना लग आएलि देखि भयभीत होइत पुछैछ "अहाँ? कोना अएलहुँ? माय जागलि तँ नहि छलि?" लगैछ जेना कोनो बड़का समस्या आबि गेल हो। आतुर पत्नीसँ भयभीत, संत्रस्त कथानायकक स्थइति पर दया होइछ। कथा नायकक मनःस्थिति व्यर्थक मर्यादा मे पड़ि कुंठित भेल लगैछ। प्रकाश (व्यतीत-

मिहिर १४-७-६३) जातीय बंधन सँ मुक्त नहि अछि। ओकरा तोड़बाक साहस नहि छैक। एकर बदला मे अपन प्रेम कें तोड़ि लैछ आ पाप-बोध सँ ग्रस्त भए, कुंठित रहैछ। मुदा, प्रभासक तृतीय चरणक कथा नायक एक कमजोर, आत्मबल-पौरुषहीन नहि अछि। ओकरा मे कामक प्रति दृष्टि मे स्पष्ट परिवर्त्तन अएलैक अछि। जे कथाकारक परिवर्त्तित दृष्टिकोणक परिचायक थिक। एहि चरणक कथानायक लेल 'सेक्स' नैतिक अनैतिक, पाप-पुण्य आचार-अनाचारक समस्या उत्पन्न नहि करैछ आ ने एहि स्थिति मे कोनो प्रकारक बाह्य आरोपित प्रतिबंध स्वीकारैछ। केवल प्रश्न रहैछ, जैविक-विवशताक, त्वचा-संवेदनक। मित्रक बद्दीनक गर्म हाथक स्पर्श सँ डेरायल प्रभासक कथानायक सुख (मिहिर १३-३-७०) मे आबि मित्रक अनुपस्थिति मे मित्र-पत्नीक शारीरिक आवश्यकताक पूर्त्ति करबाक लेल प्रतिबद्ध भए जाइछ। -'अहाँ नीक, सभसँ नीक'क सर्टिफिकेट पाबि, अपन पौरुष पर गर्व अनुभव करैछ। समीकरण (मिहिर २८-३-८१) मे समस्त नारीक समीकरण भए जाइछ। अमिता आ दीवा मे कोनो अन्तर नहि अनुभव करैछ आ एहि दर्शनपर कथाकार आगू बढ़ैछ। परंच उत्तरकाण्ड (मिहिर २१-४-६५) मे पुनः पाप-बोध सँ ग्रस्त भए जाइछ। यथार्थ कें सहबाक साहस नहि रहैछ। मात्र एहि डर सँ कि लाल काका बूझि जएताह, राम गाम छोड़ि बागि जाइछ। सीता मे पतिसँ साफ-साफ कहि देबाक साहस छैक, जकर ओ जीवन भरि फलो भोगैछ। परंच, राम डरे कलकत्तावासी भए जाइछ। कलकत्ता मे यौन कुंठा मुक्त भए जाइछ। ओहिठाम लाल काका नहि छथिह। गामक समाज नहि छनि। एक व्यक्ति एक बोध, आ एक प्रवृति केवल स्थानक भिन्नता कथानायकक चरित्रकें विवादास्पद बना दैछ आ लगैछ जे जाहिठाम सँ प्रभासक कथानायक चलल छल, पुनः ओहि पाप बोध लग धूरि आएल हो।

नारीमे काम भावना--प्रभासक कथा नायिकाक यौन-भावनाक विश्लेषणक लेल यौन-व्यापार दिस प्रेरित होएबाक कारणक वा कथाकारक दृष्टिकोण मे विकासक रेखा कें अंकित करबा लेल आवश्यकता अछि कोटि विभाजन। प्रभासक कथा मे दू प्रकारक नारी वर्ग अछि, अशिक्षिता आ शिक्षिता। अशिक्षिता मे गाम घरक स्त्रीगण छथि तँ शिक्षिता मे शहरक पढ़लि-लिखलि आधुनिका। प्रत्येक वर्ग मे यौन-व्यापारक दू कारण संभव अछि। दू प्रकारक प्रेरक तत्त्व कार्यशील रहैछ। प्रथम स्थान मे नारी पेटक भूखकें शान्त करबा लेल यौनक व्यापार करैछ। अर्थात् विपन्नता नारीकें देह बेचबा लेल विवश कए दैछ। दोसर स्थान पर अबैछ जैविक विवशता। अर्थात् नारी यौन-व्यापरअथवा त्वचा-संवेदन कें पानिक पियास आ पेटक भूखक समान आवश्यक मानैछ। ओ रुचि परिवर्त्तनक लेल निरपेक्ष भए जाइछ। एहि चेतना सँ सम्पन्न आधुनिकाक समक्ष अर्थ उपार्जनक स्थान पर शारीरिक तृप्तिक महत्ता रहैछ। सभ प्रकारक प्रतिबंध सँ मुक्त भए, सभ प्रकारक प्राचीन रूढ़िवादिता कें तोड़ि, जैविक विवशताक तृप्ति ओ चाहैछ।

जखन नारी पेटक ज्वालाकें, अपन आर्थिक आवश्यकता कें पूरा करबा लेल यौन-व्यापार करैछ तँ पाप-बोध सँ ग्रस्त रहैछ। ओकरा मे सामाजिक प्रतिबन्ध कें तोड़बाक साहस नहि रहैछ आ ने कटु सत्य कें सुनबाक धैर्य। तें ओ अपना कें जीवित रखबा लेल पेटक स्थायी व्यवस्था लेल गाम छोड़ि, अपरिचित शहर दिस भागि जाइछ। सुभद्राहरण (मिहिर ५-५-६३) तथा झकझक इजोत (मिहिर १५-९-६३)क सुभदरा आ सकली एही प्रकारक प्रभासक नारी पात्र

छनि। एहि दूनू कथाकें पढ़लापर अनायास राजकमल चौधरीक कथा 'दमयंती हरण' (वैदेही ७-७-५६) स्मरण आबि जाइछ। बाढ़िक विभीषिका सँ उत्पन्न दारुण स्थिति मे गुलबिया मालिकक ओहिठाम जयबा लेल विवश भए जाइछ (आगू मे ठाढ़ एकटा पछिला लोक'-मिहिर-१५.९.७५)। निर्धताक कारणें लांछित प्रताड़ित बाप, समाजक तथाकथित संभ्रांत व्यक्ति, अपन वासनाक पूर्तिक हेतु यौन-व्यापार दिस बलात् उन्मुक्त कए दैछ तथा समाज रुचि लैत टुक्रु-टुक्रु देखैत रहैछ। सुनयना निरीह भए स्वीकारि लैछ। परंच समाजक सम्मुख ओकर विकृति आ प्रपंचकें खोलि राखि देबाक साहसक संग समाजक अस्तित्व पर प्रश्न करैत आक्रोश करैछ-'कने जल्दी जाउ। बेटी-पुतोहु अहूँ सभक घर मे अछि। काल्हि ई तमाशा अहूँक आङन मे भए सकैत अछि (ककरो आङन मे) प्रभासक कथा यात्राक महत्त्वपूर्ण दर्शन कें जगजियार करैत अछि।

सुगिआ मे पेटक भूखकें शान्त करबाक बेगरता नहि छैक। मुदा, मालिकक जिरतिया जखन अपन अनेक संगीक संग ओकरा बेहोश कए दैछ तँ पतिक मनौतीक बादो संबंध करबामे नहि बिलमैछ (संबंध-नव घर उठय पुरान घर खसय)। दाम्पत्य जीवन मे फाटल दरारि, (यात्रा-हेरायल बाट पर-मिहिर २०-७-६९) शारीरिक अवश्यकताकें नहि मारि सकैछ। मुदा बेटी-जमाय द्वारा पकड़ल गोलापर गाम सँ भागि पतिक स्मरण करैत गाड़ी मे कटि आत्म हत्या कए लैछ। यद्यपि सुगिया आ हीरा मे यौन-भावना निरपेक्ष छैक, ओ यथार्थकें सहबामे असमर्थ अछि तथा पाप-पुण्यक मान्यता सँ ग्रस्त अछि। हीरा द्वारा आत्महत्या सँ कोनो प्रकारक ओकर व्यक्तित्वक निर्माण मे विलक्षणता नहि अबैछ, अपितु खण्डित भए जाइछ। सुगिआ जतए परिवेश बदलि जीवए चाहैछ, हीरा जीवनक अन्त श्रेयष्कर मानैछ। परंच, गुलबिया मे यथार्थकें सहन करबाक साहस छैक। ओ परिणाम कें भोगवालेल तत्पर रहैछ। संगहि मुक्त भए पतिक कमजोरी पर प्रहार करबाक साहस छैक। दागलि देहक लहरि कें बिसरि, तमकि, ठाढ़ि भए जाइछ-'ई छोड़ि दौ काका ! आइ एकरा फैसला करए दौ बड़ पुरुख बनैलए आइ। दस दिन सँ दूनू परानी भूखल हली ओइमे मरदानगी नहि रहलै। आइ फुफकार मारे है। बड़ पुरुख रहलैतऽ अनलकै किएक ने कमा.....।" एहि प्रकारसँ सुगिआ, हीरा आ गुलबियाक चरित्रक गुणात्मक भेद कथाकारक दृष्टिकोणक विकासक परिचायक प्रतीत होइछ। किसानक पत्नी (सहमल-विद्रोह-सोनामाटि-जनवरी'७०) अपन पतिक कमजोरी सँ परिचित अछि। खखना अपन पत्नीकें सुरक्षित रखबा लेल की नहि करैछ? की नहि सकैछ, परंच, आमक गाथीक रखवारी करैत पतिक दिनचर्यासँ उबिआयलि पत्नी फटक खोलि कए लिकलिए जाइछ (टुस्सा आ बाँझी-मिहिर-१०-९-७२)।

सुख (मिहिर १३-९-७०) मे पत्नी पतिक अनुपस्थिति अथवा शारीरिक असमर्थताक स्थितिमे अपन शारिरिक आवश्यकताक पूर्त्तिक व्यवस्था करबा मे पाँछा नहि हटैछ। कथाकारक यौन-दर्शन 'समीकरण' (मिहिर २९-३-७१) मे आरो विकसित होइछ। जैविक विवशताक तृप्ति लेल विवाह अनिवार्य नहि मानैछ। अमिता आ दीपा मे कोनो अन्तर नहि रहैछ। दूनू अविवाहित रहि त्वचा संवेदना चाहैछ। दीर्घकालिक शारिरिक सम्पर्क कें स्थायी बन्धन मे बन्हबाक इच्छा सँ आएल वैवाहिक प्रस्ताव कें पूर्णतः अमिता अस्वीकार कए दैछ। जेठ बहीनक बाद दीप सेहो निवेदन करैछ-'खाली हमरा अयबासँ मना नहि करब।'

प्रभासक कथामे यौन-दर्शनक अध्ययन विश्लेषणक उपरान्त स्पष्टतः कहल जा सकैछ जे हिनक

द्वितीय चरणक कथा मे सेक्स असामाजिक आ अनैतिक अछि। तें एकरा बेसी सँ बेसी दबा कए राखब उचित। परंच, तृतीय चरणक कथामे कथाकारक मान्यता मे परिवर्त्तन अबैछ। एहि परिवर्त्तन सँ यौन भूख, स्वाभाविक मानवीय भूखक स्थान लए लैछ। परंच, कथाकार प्रभास स्त्री आ पुरुषक यौन भावना मे, सेक्सक प्रति दृष्टिकोण मे एकात्मकता अनबामे असमर्थ छथि। दूनूक यौन-भावना कें ई दू प्रकारें देखैत छथि। दूनूक लेल दू प्रकारक मान्यता कथाकारक अछि। दू प्रकारक दर्शन छनि। जँ यौन-भूख मनुष्य जातिक एक स्वाभाविक भूखक रूपमे स्वीकारैत छी तँ स्त्रीक लेल भिन्न आ पुरुषक लेल भिन्न, से कोना भए सकैछ? जखन नारीमे यौन भावनाक प्रश्न अबैछ, ओकरा आधुनिक चेतनासँ जोड़ि जैविक विवशताक रूपमे कथाकार चित्रित करैत छथि, जाहि सँ पुरुष कें अधिकसँ अधिक अपना वासना-तृप्तिक अवसर भेटैक। अर्थात् एक पुरुष कें अनेको विवाहित अथवा अविवाहिता स्त्रीक जैविक विवशताक चिन्ता रहैछ। ई आधुनिक चेतनासँ सम्पन्न युग-बोधक अभिव्यक्ति नहि थिक। दोसर दिस, जखन कोनो कथा-नायकक पत्नी कथानायकक अनुपस्थितिमे, (सुख, टुस्सा आ बाँझी) अथवा शारीरिक असमर्थताक कारणें (सुख) अथवा रुचि-परिवर्त्तनक लेल अथवा आर्थिक विपन्नताक कारणें अपन पेटक ज्वाला कें शान्त करबाक लेल यौन-व्यापार करैछ तँ पतिक कोप-भाजन बनैछ। एक दिस जँ प्रभासक कथानायिक छोट डोरीमे खुटेसल गायक स्थिति (शीत-युद्ध) सँ टुस्सा आ बाँझी क उन्मुक्त आकाश धरि पहुँचि जाइछ तँ कथा नायक सामंतवादी मनोवृत्तिक परिचायक प्रमाणित होइछ। प्रभासक कथामे ललितक कथा मुक्ति समान यथार्थ कें, अपन कमजोरी कें वा, अपन शारीरीक असमर्थता कें स्वीकार करबाक साहस नहि छैक। जे हिनक कथानायक के कुंठित आ हीन भावनासँ ग्रस्त बना दैछ। धमकी (मिहिर ४-१-७०) मे भोगवादक बर्बर रूप विस्फोट कए उठैछ जखन बाल-विधवा पुतोहुकें रोगशय्या पर पड़ल ससुर अपना दिस खीचैछ।

एक दिस जँ प्रभासक कथाक नारी अधिकसँ अधिक भोग्या छथि तँ दोसर दिस ओकर वैचारिक स्वतंत्रता सेहो असह्य अछि। नवधर उठय पुरान घर खसय क पत्नी पतिक अत्याचार सहैत सहैत विद्रोह कए उठैछ आ नैहर जा अपन सन्तानक प्रति आशान्वित भए जीवैछ। पति हीनताबोध सँ ग्रस्त रहैछ। एकटा दुखान्त चलचित्र (मिहिर १-६-६३) क आदर्शवादी प्रशान्त स्वतंत्र आचार-व्यवहार आ विचारक सुजाता सँ अपना कें आधुनिक मानैत आ अन्तर मे दयाक भाव पोसैत विवाह कए लैछ। मुदा सामंतवादी मनोवृत्तिक ऊपर सँ ओढ़ल आधुनिकताक चादरि फाटि जाइछ। तें ओ सुजाता कें एकसरि छोड़ि भागि जाइछ। मुदा कथाकार स्वतंत्र विचारक आधुनिकाकें पतिक पछोड़ धरा दैछ। पुनरावृत्ति (मिहिर २१-५-७२)क डाक्टर सेहो अपन आदर्शवादिता पर असोथकित भए झखैत रहैछ। प्रभासक कथामे विभिन्न परिस्थिति मे जीवैत नारीक चित्रण अछि। कोन प्रकारें नारी 'नर्स'क काज करैछ (आयल पानि गेल पानि), कोन कारणें यौन व्यापार दिस आकृष्ट होइछ अथवा ककर प्रेरणासँ सामाजिक जीवन मे प्रवेश करैछ, तकर सम्यक् चित्रण भेटैछ। हँसी (मिहिर) मे नीरू अपन प्रेमी प्रीतम कें एही खातिर छोड़ि, सुनील सँ विवाह कए लैछ जे प्रीतम प्रोफेसरी करैछ तथा ओकरा पर एक विशाल परिवारक भार छैक। सुनील हजार टाका महीना कमाइछ। ओकरा कोनो उत्तरदायित्व नहि छैक। लगैछ

जेना कथाकार नारी-जातिक प्रति न्याय नहि कएने होथि अथवा पुरुषक एकाधिकारक किंचितो हनन स्वीकार नहि हो।

भावुकता सँ यथार्थबोध धरि -

आहतक प्रति दया होएब, अस्वाभाविक नहि। परंच, आहतकें घेरि कनैत रहला सँ शोणित बहब बन्द नहि भए सकैछ। आ ने दर्दे किंवा जानक खतरे टरि सकैछ। अतएव, व्यक्तिक प्राणरक्षा निमित्त आवश्यक रहैछ, उपचार करब, अस्पताल लए जएबाक व्योंत करब। दया, करुणा आ सहानुभूतिक अतिशयताक स्थितिमे आहत व्यक्तिकें घेरि कनैत रहब, नोंर चुबबैत रहब, भावुकता भेल तथा उपचार करबाक ओहिआओन करब
बौद्धिकता। भावुक क्षणमे आँखि बन्द भए जाइछ, आगू देखि डेग उठेबाक विचार नहि जनमैछ, यथार्थकें यथार्थ रूपमे सहन करबाक साहस नहि बटोरल होइछ। अतएव, आहतक प्राणरक्षा निमित्त आवश्यक छैक, सहानुभूतिपूर्ण बौद्धिक आचरण। एकक अनुपस्थिति मे दोसरक स्थिति प्रभावपूर्ण नहि होइछ। केवल विचार-विमर्श करिते रहला पर समयक ध्यान हटि जा सकैछ। संगहि अतिशय बौद्धिक किंवा दार्शनिक भेला पर निर्लिप्तता आबि जाइछ, अमृत्यु आ अजीवनक बीच काहि कटलासँ अस्तित्व रक्षार्थ सामाजिकता नहि आबि पबैछ।

व्यवहारिक जीवने जकाँ साहित्य सर्जना मे भाव आ बुद्धिक समान महत्व छैक। स्वयं भावुक रहि, स्थितिक प्रति सहानुभूतिशील बनल रहब कलाकारक लेल परमावश्यक। मुदा, कलाकृतिक परिवेश कें आ ओकर पात्रकें भावुक बनादेव उचित नहि। भावुक पात्र आ परिवेशक निर्माणसँ पाठकक भावगत संस्कार जागि जाइछ। पाठक भावुकताक प्रबल वेगमे भसिया जाइछ। भसिया गेला सँ किंवा यथार्थक भावभूमि परसँ पएर उखड़ि गेलापर, पाठक नोर पोछैत-पोछैत कलाकृतिक सविधि मूल्यांकन करबाक क्षमता सँ बलात् विमुख भए जाइछ। तात्पर्य ई जे अनावश्यक रूपें भावुक परिवेश आ चरित्रक निर्माण करबाक पाछाँ कलाकारक चिन्तनगन शैथिल्य तँ रहिते छैक, अपन कमजोरीकें नुकेबाक नेत सेहो झलकि उठैछ।

प्रभासक कथा प्रतीक्षा (वैदेही ५७)क वातावरण भावुक अछि। वर्षा, बिजुली आ मेघ, गर्जन सँ निर्मित भावुक परिवेशमे कथाकार कथा नायिकाक हृदय-प्रदेशमे उठैत तरंग कें देखि प्रश्न करैछ युगसँ पियासलि की ई वरखा एकर अवरुद्ध कण्ठ कें सरस कए सकलैक? ओकर हृदयमे प्रज्वलित विरहाग्नि कें ई जल मिझा सकतैक'? परंच, दोसरहि क्षण जखन खखनाक नवयौवना पत्नी तारक प्रसंग मे चिकरि कए गट्टा पकड़ि जिज्ञास करैछ, की छइ? वजइ ने किए छी?" तँ कथानायकघबरा कए-'नीके अछि दशमी छुट्टीमे आओत' कहि अन्हरिया राति मे भीजैत भागि जाइछ। अतिशय भावुक भए किंवा संभावित व्यथाक अनुमान सँ मोटर दुर्घटनामे खखनाक मृत्युक सूचना नहि दए पबैछ आ ओकर पत्नीकें सदाकलेल् अन्हार मे प्रतीक्षा करबाक हेतु छोड़ि दैछ।

प्रभासक द्वितीय चरणक कथा मे यथार्थ सँ परा जएबाक प्रवृत्ति मे तँ कमी अबैछ, मुदा रोमानी आ काल्पनिक उड़ानमे विशेष परिवर्त्तन लक्षित नहि होइछ। फलस्वरूप प्रकाश आ

किरण (व्यतित-मिहिर-१४.७.६३)क भेंटघाट यथार्थपर आदारित नहि रहलाक कारणें स्थायी नहि भए पबैछ। जातीय बन्धन मे गछारल प्रकाश दोसर जातिक किरणक समर्पण कें कोना स्वीकारि सकैछ। दोसर दिस किरणक आँखिक नोर अन्यत्र विवाह भए गेलोपर नहि सुखाइछ। पाँच वर्षक उपरान्त गाड़ी मे पतिक संग जाइत किरण द्वारा ओहि डिब्बा सँ उतरल प्रकाश पर चिट्ठी फेकि कए अग्रिम जन्म मे संग होएबाक कामना करब अनसोहातक स्तर धरि भावुक भए जाइछ। तथापि प्रकाश द्वारा डिब्बा मे वा उतरलो पर उत्तर नहि देबा मे प्रकाशक अभिजात्य-बोध बाधक भए जाइछ? कालान्तर (मिहिर ३१-५-६४) मे बात-बात पर कानल जाइछ। मुदा, प्रभासक कथाक परिवेश एवं चरित्र मे भाविकता क्रमशः कम भेल जाइछ। भावुकताक बदलामे बौद्धिकता वा व्यर्थता बोध अएबाक पर्याप्त कारण अछि-कालेज जीवनक उत्तरदायित्वहीन वातावरण आ ओहि सँ गठित जीवन-दृष्टि जनित कथाकें सर्जना। परंच ई स्थिति अधिक दिन धरि नहि रहैछ। कथाकारके कटु यथार्थ सँ साक्षात्कार होइछ। जीवन आ जगतक तीत अनुभव सँ वस्तुस्थितिक प्रति सजगता बढ़ैछ। दिनचर्या ('दिनचर्या' मिहिर ५-७-६४) मे परिवर्त्तन होइछ। दिनचर्या मे परिवर्त्तन होइतहि कथाकार एक अपराध एक दण्ड फाँक आ चिता एक मुर्दा तीन क भावुक परिवेश एवं काल्पनिक धरातल कें पार कए जाइछ। कथाकारक रोमानी आ उत्तरदायित्वहीन दृष्टि पर अगरनी (मिहिर-२१२६५)क टूटला सँ आघात होइछ। आ ओ सद्यः नवका अरगनीक आवश्यकता अनुभव करैछ। तखन, ओ देखैछ अपना संगे चारूकात विश्वविद्यालयक उपाधि लेने अनजनुआँक
जनमल (मिहिर-१५-११-६४) जकाँ जीविकाक तलाशमे फिफिआइत युवावर्गकें, जातिवादक पांकमे आकण्ठ डूबल व्यवस्थाकें, स्वार्थक जाँतमे पीसाइत असहाय आ निरुपायकें। ओ देखैछ भ्रष्टाचार, घूसखोरी एवं महंगी सँ उत्पन्न सामाजिक व्यवस्थामे काहि कटैत समाजक प्रत्येक व्यक्तिकें। कथाकार देखैछ, टूटैत गाम, शिथिल होइत सामाजिक आ पारिवारिक संबंध स्वार्थक राजनीतिमे ऊपर फांटू (मिहिर-२-२-६४) भेल देशक भविष्यकें।

प्रश्न उठैछ जे कथाकार' चिता एक मुर्दा तीन क सहयोगी छल, दिनचर्यामे सदिखन प्रतीक्षा छलैक, ओकरे बूते निष्क्रियता बोधक भाव-भूमि पर अपन कथाक महल जोड़वा कतयसँ आएल? जकर कथानायक मे जीवट छलैक, सम्पूर्ण परिवारक भार उठेबा लेल अरगनी बनबा हेतु तैयार छल, शिक्षक पिताक', आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया'क भयावह स्थिति सँ परिचित भए (लिफाफ बन्द चिट्ठी खुजल-अभियान-६३) बोझ कम करबा लेल अहुँछिया कटैत छल। ओहि कथाकारक कथानायक एक दशकक बाद 'ढ़ेप' (मिहिर १९-५-७४) मे आबि ओहिना निष्क्रिय भए जाइछ, जेना चरीक लोभ मे घमल अलकतरा कें पार करैत काल फँसल बकरीक निकलबाक प्रत्येक प्रयास, अन्ततः ओकरा निष्क्रिय बना दैछ। सामाजिकताक प्रति प्रतिबद्ध कथानायक (अरगनी, बाबी) कोना समक्षहि मे जरैत चौमहला परसँ प्राण रक्षा निमित्त कूदलि माय आ नवजात शिशुकें आहत होइत देखैत रहैछ। अन्यायक विरोध मे अपन स्वर मुखरित कयनिहार, कोना ब्लेक सँ चीनी, डालडा आ सिनेमा टिकट कीनैत काल मूक रहैछ। ओकर सामाजिक चेतना कतय हेरा जाइछ? प्रभासक कथा यात्राक अध्ययन विश्लेषण पर कथाकारक जीवन-दृष्टि आ चिन्तन-प्रणाली मे परिवर्त्तन अननिहार प्रेरक तत्त्व स्पष्ट भए जाइछ।

स्वार्थवृत्तिक अनवरत परिक्रमा-'निरधन बापुर पूचय ने कोय' औखन ओतबे सत्य अछि जतेक कवि कोकिल विद्यापतिक समयमे छल। आर्थिक विपन्नताक स्थितिमे समाज द्वारा अवहेलना यथार्थ थिक। स्वार्थसिद्धिक समावेश नहि देखि स्वार्थ-वृत्तिक अनवरत परिक्रमा कएनिहार समाजक तथाकथित 'संभ्रान्त जन्तु' मने मन अवसरक तलाशमे रहैछ। कथाकार प्रभासक तेज दृष्टि समाजक एहि जन्तुक कुकृत्यकें देखि लैछ। ओ सुनि लैछ, खगल व्यक्तिकें सोंखबाक प्रवृत्ति कें जन्म आ आश्रयदाता, स्वार्थी समाजक अन्तरक धुकधुकी। बीमारीक अवस्था मे प्राण रक्षा निमित्त अनुनय-विनय पर सए रुपैयाक कर्ज आ श्राद्धक हेतु, ब्रह्मोत्तर कें ध्यान मे राखि पाँच हजारक पोटरी देनिहार समाजक तथाकथित संभ्रान्त ठीकेदारक द्वैध रूपसँ परिचित भए जाइछ (बाबी)। माइक स्थान पर पोसनिहारि लालकाकी चैदह वर्षक बाद घूमल रामूकें देखि आक्रोश करैछ-'ई कहाँ सँ बज्र खसल हमर नेना सभक कपार पर।' बाहर वर्ष मे लोक श्राद्धो कए दैत छैक। अहूँकें ने कहने रही जे करबा दियौक श्राद्ध नहि मानलहुँ, तें ने मुर्दा जीविकए आबि गेल' (उत्तर काण्ड-मिहिर ७-४-७४)। कतेक पैघ विडम्बना अछि, जे लालकाकी रामूकें पोसलथिन, सएह ओकर श्राद्धक कामना अपन पुत्रक हकमे करैछ। मैट्रिकक फीसक बदलामे पितृहीन चन्दर मातृक मे उपेक्षापूर्ण उत्तर सूनि अवाक् भए जाइछ-तो एतहि रहि जो चन्दर। हमरा लोकनि कें एकटा आदमी चाहबोकरी दौड़-धूप करबा लेल। फेर तों तँ अपन लोक छैं (ऊपर फाँटू)। कथाकार देखैछ, समाज आ परिवारक समस्त मानवीय संबंध-सूत्रकें स्वार्थक वेरमे खूस-खूसा कए टुटैत। अपन स्वार्थक खातिर दोसराक अभ्युदयक कामना करबामे असमर्थ अपन गतात कें, दोसराक गरदनि छोपि अपन माथ ऊँच करबामे हेबाल लोककें।

त्याज्य घटनाक मनोनुकूल विस्तार--त्याज्य घटनाक मनोनुकूल विस्तार कए स्वार्थसिद्धिक ओरिआओन करब नितान्त नव टेकनिक थिक (सुरक्षित मिहिर-९-१२-७३)। जाहि घटनाकें घटना स्थले पर निबटाओल जा सकैछ, ओकर मनोनुकूल विस्तार होइछ। नव-नव समस्याकें जन्म दए अपन चालि सुतरबाक प्रवृति आ व्यवस्थाक सह पर प्रतिफल कें अपना पक्ष मे कए लेबाक चक्रचालिसँ कथाकार परिचित भए जाइछ। एकर प्रभाव निष्पक्ष लोक पर पड़ैछ। सत्य पर असत्यक विजय अनसोहांत लगैछ। एहि प्रक्रिया पर प्रतिबंधक बदला
मे विकसित होइत देखि, कथाकारक अन्तश्चेना प्रभावित भेल अछि।

शोषितक प्रति शोषकक नकली सहानुभूति--शोषितक प्रति शोषकक नकली सहानुभूति आ शोषित-प्रताड़ितक स्थिति मे कोनो परिवर्त्तन नहि आएल देखि, कथाकारक मनःस्थिति पर आघात होइछ। कथाकार देखैछ, न्यायक लेल अहूँछिया कटैत शोषित प्रताड़ित खखना कें-'अहूँ तँ बाजू बंकू बाबू। एही निसाफ लेल भोरे बजौने छलौ, नेता बनै छलौं, न्याय आ बरोबरिक गप्प करैत छलहुँ। आइ किएक एना मूड़ी गोतने बैसल छी'। (टुस्सा आ बाँझी-मिहिर १९-९-७२) न्यायक नेता माननिहार बेर पर शोषकक हेंज मे मिल अपन असली रूपकें जगजिआर कए दैछ। प्रगतिशीलता क बाना धयने ('गुण्डपनी', 'चाङुर' कथा अंक) लोकक द्वैंध रूप सँ कथाकार परिचित भए जाइछ।

पांजिक गर्व--जमीनदारी व्यवस्थाक अन्त सँ उच्च वा मध्यम वर्गक आर्थिक स्थिति डगमगा गेल। शान-सौकतक जीवन जीनिहार पेटक भूखक चिन्ता सँ आक्रान्त भए उठल।

पिंजड़ा मे बन्द बटेरक लड़ाइ देखि समय बितबयवला तथाकथिन वर्ग बचल जमीन जायदाद कें पेट पूजाक अतिरिक्त व्यर्थक मर्यादा आ प्रतिष्ठा खातिर वोहाबए लागल, बदलैत युगक अनुरूप अपन चरित्र विकासमे असमर्थ अभिजात वर्गक धनहीन निरक्षर व्यक्ति नौकरीक तकैत आ डंका पीटैत चलैछ जे हमर बाबाक दरबाजा पर हाथी छलनि, घोड़ा छलनि, बखारी छलनि, सगर परोपट्टा मे नाम आ धाख छलनि। हमरा नहि अछि ताहिसँ की, कुलक मर्यादा क प्रतिकूल कोना कोनो काज करब समाज में हँसी होएत। एहि प्रकारक अकाजक आत्म गौरव कतहु स्थिर नहि होमय दैछ। शारीरिक परिश्रम कें कौलिक मर्यादा क प्रतिकूल मानैछ। पैघ लोक छोट लोक (सोना माटि-'जून' ६९) क कथा नायक पांजिक गर्वपर आँजी सिद्धी नहि सिखनिहारि व्यर्थक मर्यादा कें बचेबा लेल अपस्यांत वर्गक प्रतिनिधित्व करैछ। एहन एहन पैघ लोक कें अल्हुओतर ने गुदानैत छिऐक हम, कहलकैक जे किदन, बड़-बड़ गेलाह तें मोछ वला अलाह (पिनकी)। व्यामोह ग्रस्त मनःस्थिति क उद्घाटन प्रभावक ढ़ंग सँ करैछ। संगहि बदलल परिस्थिति मे धन आ समाजिक मर्यादाक केन्द्रक प्रति उठल उजाहि(उजाहि-'मिथिला दर्शन-दिसम्बर ७३) देखि अभिशप्त (अभिशप्त-आखर) सेहो भए जाइछ।

स्थापित मूल्य क विघटन- एक निश्चित काल खण्ड क राजनीतिक, समाजिक, आर्थिक आ धार्मिक मान्यता संवेदनशील कलाकारक मनःस्थिति कें कोनो-ने-कोनो प्रकारें प्रभावित करिते अछि। मनुष्य क मनोजैविक विकास क संग जीवन मूल्य क अविच्छिन्न संबंध रहैछा प्रचलित नैतिक व्यवस्था आ वर्जितोन्मुखी अन्तश्चेतनाक निरन्तर द्वन्द्व, प्रत्येक युगक मूल्य दृष्टिक अपन युगक आदर्श प्रति समर्पण आ वैचारीक जगत मे मनुष्यक नवोन्वेषणप्रियता क निरन्तर प्रयास सँ स्थापित मूल्य क विघटनाक वा नव निर्माणक प्रक्रिया कें अवरुद्ध नहि कएल जा सकैछ। ई सत्य जे कथाकार कोनो पूर्व निर्धारित जीवन दृष्टि क खाँका पर मनुष्य जीवन कें नहि अंकैछ। ओ जे देखैछ, अनुभव करैछ, ओकरहि आधार पर मानवीय संबंधक विश्लेषण करबाक प्रयास करैछ। कथाकार प्रभास देश क विभिन्न स्थिति मे परिवर्त्तन सँ भेल जीवन-मूल्यक विघटन कें देखल अछि। एक दिसजँ हिनक कथा मे पारंपरिक मूल्य क विघटनजन्य उपस्थित स्थिति क प्रति संवेदनात्मक अभिव्यक्ति भेटैछ, तँ, दोसर दिस नव मूल्य क निर्माण प्रक्रिया मे छटपटाइत धुकधुकी।

शहर क एक छोट भाड़ा क कोठली मे गुजर करबा लेल विवश गाम क पैघ परिवार सँ छिटकल एक लघु परिवार क समक्ष गाम क सामाजिकता क बदला मे शहर क कृत्रिम आत्मीयता क मेघ छैक। कृत्रिम आत्मीयता क घटाटोपसँ आच्छन्न पुत्रक मनः स्थिति क प्रति सामाजिकता क सरस परिवेश क अभ्यासी पिता निरपेक्ष रहैछ। फलतः शहर क आसन्न खतराक प्रति साकांक्ष रहितो पुत्र मानसिक स्तर पर अरगनी बनबासँ अपना कें कात नहि कए सकैछ। अनचिन्हार (मिहिर-१४-९-६९) आबि कथाकार अपन परिवार आ पिता क
परिवार क अस्तित्व कें अनुभव करैछ। दू स्थान दू परिवारक प्रति उत्तरदायित्व बेध कें पिता दुख (मिहिर ५-४-७४) मे आबि अनुभव करैछ। पिता आ पुत्र क उत्तरदायित्व मे समानता आबि जाइछ। पिता अपन गामक परिवार क लेल बेहाल तँ पुत्र शहर क कृत्रिम जीवन जीवा मे अपस्यांत। परंच 'ढेप मे दू परिवारक उत्तरदायित्व बेध सँ पूर्णतः मुक्ति अछि।

पति-पत्नी--नारी शिक्षा क विकास एवं संविधान प्रदन समान अधिकार एवं उत्तरदायित्व क बोध कएबाक प्रयास सँ पारंपरिक किंवा स्थापित पति-पत्नी क मानसिकता मे परिवर्त्तन आबि गेल अछि। पति-पत्नी एक चारी मे रहितो अपन पृथक व्यक्तित्व कें प्रक्षेपित करबा लेल तत्पर अछि। एहि प्रयत्न क समक्ष राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र मे प्रवेश कें नारी निषिद्ध नहि मानैछ। परंच सामंतीय परंपराक जड़िआयल पुरुष क मनोवृत्ति नारी मुक्ति आन्दोलन क अगुआ अपना कें देखबितो नहि बदलि सकल के अछि। मानसिक स्तर पर एहि यथार्थ कें स्वीकार बा मे असौकर्य होइछ (पुनरावृति)।

कामभूख कें जैविक विवशता क रूप मे स्वीकारि त्वचा संवेदन क रूचि परिवर्त्तन कें अपना वेर मे आचार-अनाचार, पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक फेरा सँ बाहर रखैछ। परंच, पत्नी क रूचि-परिवर्त्तन वा पति क अस्वस्थता क स्थिति मे सांमतीय मनः स्थिति क ऊपर ओढ़ाओल आधुनिकता क तौनी उड़िया जाइछ (सुख)-। पति आ पत्नी क मन आ शरीर दू भिन्न स्थान पर समर्पित रहला सँ पति-पत्नी क पारंपरिक संबंध मे विघटित भए गेल अछि।

पिता-पुत्र, पति-पत्नी एवं परिवारिक मूल्य क विघटन क संग कथाकार सामाजिक मूल्य क विघटन अनुभव करैछ। समाज मे आत्मीयता क स्थान पर दाब पेंच क फंदा गेल देखैछ (पिता-)। वैज्ञानिक रूचि विकास किंवा प्रत्येक पारंपरिक मान्यता कें उपादेयता क आधार पर जाँचि अनुसरण करबाक प्रवृत्ति, धार्मिक अंध विश्वासक खण्डन कए देलक अछि। धर्मक नाम पर चलि रहल अधर्मक प्रसार, भ्रष्टाचारक विस्तार सँ उत्पन्न विकृति आ विडम्बना सँ परिचित लोक आँखि मूनि अनुकरण नहि करैछ। जाहि सँ अनेक पारंपरिक मानय्ता विधटित भए गेल अछि।

संत्रास-युग क संक्रमण शीलता अनस्थिरता आ तीव्र गति क परिवर्त्तन धर्मिता सँ अनिश्चयक वातावरण मे जीवैत लोक संत्रस्त अछि। कखन की भए जाएत? कोन स्थिति मे फँसि जाएब तकर पूर्वज्ञान नहि भए पबैछ। स्वतंत्रता सँ पूर्वक कंडिशन्ड परिवेशक अभ्यस्त, स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक क्रान्ति सँ आच्छन्न अछि। पारंपरिक मर्यादा किंवा प्रतिष्ठा अथवा धन सम्पदा क मोह सँ ग्रस्त मध्यवर्गीय लोक नव सामाजिक परिवेश मे अपना कें फिट करबा मे, असमर्थ अछि। असमर्थता जन्य क्लेशसँ सीदित अछि। शिक्षित किंवा अशिक्षित युवा वर्ग मे बैसारी आ ऊपर सँ परिवार क उत्तरदायित्वक बोध एवं अनिश्चित भविष्यक अछैतो क्षमता छैक, मनमे उत्साह छैक, धैर्य छैक तथापि क्षमता, उत्साह आ धैर्यक उपयोग करबाक क्षेत्र सँ बंचित अछि। कलुआ (आगू मे ठाढ़ एकटा पछिला लोक-) अपन चारू कात क धरती कें जलमग्न देखैछ। यथार्थ क धरती आंखिक सीमा सँ बाहर छैक, अदम्य उत्साह, धैर्य आ लगनशीलताक अछैतो बाट तकबा मे असमर्थ, घृणित परंपरावादक जड़ता सँ उबिआएल कलुआ अनिश्चयक प्रबल वेग मे भसिया जाइछ।

भावुकता सँ ब्रथता बोध धरिक यात्रामे प्रभास क कथा दू दशकक समय लैछ। एहि दू दशक क अन्तराल मे प्रभास क कलाकार विभिन्न परिस्थिति मे जीवि, अपन परिवेश कें आत्मसात कए, ओकर प्रत्येक स्थिति क आरोह-अवरोह कें व्यंजित करैछ। कतय आबि

कथाकार क मान्यता, जीवन दृष्टि आ वैचारिक स्तर अथवा कथा-संवेदना मे परिवर्त्तन भेल अछि, कथा-यात्रा कें देखला पर स्पष्ट भए जाइछ। प्रायः अधिकांश
कथा अपना सँ अथवा अपन घर सँ चलैछ, गाम मे घुमैछ, घर सँ अथवा गाम सँ चलबा मे कथाकार क जे संवेदना काज करैत छलैक, ओहि परिवेश क परिभ्रमण करितो भावगत निर्लिप्तता क स्थिति धरि पहुँछि क्रमशः निष्क्रियता बोधक भए जाइछ।

मि.मि. १८८६

संदर्भ संकेत

मैथिलीक पहिल कथाकार पं० श्री कृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्र प्रभा'

1. Dr. J.K. Mishra-History of Maithili Literature vol.II
2. प्रो० आनन्द मिश्र-मैथिलीक आरम्भिक कथा (सं० रमानन्द झा रमण)

मैथिलीक प्रथम उपन्यासकार पं० जीबछ मिश्र आ 'रामेश्वर'

1. G.A. Grierson-The Journal of the Royal Asiatic society of Great Britain & Ireland

for 1919, page no. 235

2-4 जीबछ मिश्र-मिथिला मोद (अंकुर-सं० हरिष्चन्द्र मिश्र)

रास बिहारी लाल दास आ उपन्यास 'सुमति'

1. Dr. J.K. Mishra-History of Maithili Literature vol.II. p.no. 35-36
2. मिथिला मिहिर, दरभंगा- 29 जनवरी 1916

3-5-सुमति (भूमिका)

6. Dr. J.K. Mishra
7. Prof. R.K. Chaudhary-A survey of Maithili Literature P.No.229
8. डॉ दुगिनाथ झा श्रीश-मैथिली साहित्यक इतिहास पृ० सं० 144
9. जीवछ मिश्र मिथिला मोद (अंकुर-सं० हरिश्चन्द्र मिश्र)

जनार्दन झा 'जनसीदन' आ 'निर्दयी सासु'

1. प्रो० हरिमोहन झा-मिथिला भारती, अंक-१ मैथिली अकादमी
2. प्रो० हरिमोहन झा-प्रो० गंगा पति सिंह - प्रवेशिका मैथिली गद्य पद्य संग्रह
3. मिथिला मिहिर, दरभंगा 29 दिसम्बर 1916
4. जनसीदन-नीति पद्यावली, पुस्तक भंडार

पं० जनार्दन झा एक बिसरल साहित्य सेवी

1-3-मिथिला मोद् उद्गार 45/47-1910-11 ई०

पं० त्रिलोचन झा (बेतिया) बिसरल मातृ भाषानुरागी

1. आदित्य सामबेदी-साहित्य तपस्वी पं० त्रिलोचन झा, मैथिली अकादमी पत्रिका
2. Dr. J.K. Misshra--History of Maithili Literature vol.II
3. प्रो० गंगापति सिंह-मैथिली भाषाक साहित्य-मि० मोद 1914 ई०
4. यदुवर-मैथिली साहित्य दिग्दर्शन--मि० मोद 1914 ई०

5.-9. मिथिला मोद/मिथिला गीताञ्जलि

10. आदित्य सामवेदी--मैथिली अकादमी पत्रिका

राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'

1. ललितेश मिश्र मि० मिहिर 11/1989
2. रमानन्द झा रमण-नवीन मैथिली कविता
3. परमेश-मिथिला गीताञ्जलि (सं० यदुवर)
4. पं० हीरा लाल झा 'हेम' - मिथिला भारती, मैथिली अकादमी

कवि सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'

1. डॉ० मनोरंजन झा-छेदी झा द्विजवर आ हिनक रचना-अप्रकाशित शोध प्रबंध, पटना वि० वि०
2. मिथिला मोद, उद्गार-93, 1321 साल
   145/अखियासाल

3.-4. मिथिला मिहिर, दरंभंगा 18 नवम्बर 1916 ई०

5. नरसिंह पद्यावली, मिथिला मोद, उद्गार -91, 13 21 साल
6. चरखा चौमासा-मिथिला अंक-11

कुमार गंगानन्द सिंहक कथा संवेदना

1. कुमार गंगा नन्द सिंह-मैथिली गद्य कुसुम माला (सं० म० म० उमेश मिश्र)

कवीश्वरी हरिलताक वैष्णवता

श्री मती अरुन्धती देवी, विदुषी महिला, सम्वत् 1933

कविवर श्यामानन्द झाक काव्य वस्तु

1. श्यामानन्द रचनावली-सं० डॉ० रमानन्द झा 'रमण'
2. पं० कमल नाथ चौधरी-मिथिला मोद-उद्गार-100, 1322 साल
3. पं० गणेश्वर झा गणेश-प्रवेशिका मैथिली गद्य पद्य संग्रह-सं० प्रो० हरि मोहन झा/गंगा पति सिंह

बाबू लक्ष्मी पति सिंह आ मैथिली पत्रकारिता

1. लक्ष्मी पति सिंह-मैथिली पत्रकारिताक विकास-मैथिली साहित्यक रूप रेखा चेतना समिति

कवि चूडामणि मधुपक गीति साहित्य

1.. उपेन्द्र ठाकुर मोहन-बाजि उठल मुरली
2. मैथिली सन्देश (सं० श्यामानन्द झा)

3. मधुप--- चौकि चुप्पे
4. मधुप--झाङ्कार
5. मधुप कोवरगीत
6. मधुप-शतदल
7. कविता कुसुम स० रामानाथ झा

भट्टि काव्यक परम्परा आ मधुपजी

1. मधुप-कोवर गीत
2. मधुप-प्रेरणा पुञ्ज

मैथिली उपन्यासक आलोक मे चन्द्र ग्रहण कं नारी पात्र

1.--2. चन्द्र ग्रहण प्रसंग किरण जीसॅ भेंट-भेटकर्ता-रमानन्द झा 'रमण'-मिथिला मिहिर अगस्त 1988 ई०

प्रो० हरिमोहन झा एवं हुनक-चर्चरी

1. सुधांशु 'शेखर' चोधरी-संदर्भ
2. प्रो० श्रीकृष्ण मिश्र-प्रो० हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रंथ
3. प्र० आनन्द मिश्र-मि० नि० 10.4 1977
4. प्रो० जयदेव मिश्र-विवेचना-सं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी
5. डॉ० जयकान्त मिश्र हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, साहित्य अकादमी
6. कुलनन्द मिश्र प्रो० हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रंथ
7. डॉ० वासुकी नाथ झा-ओएह
8. प्रो० निगमानन्द कुमार-अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन, रचना संग्रह भाग-चारि, वैदेही समिति, दरभंगा

कविवर यात्रीक स्तम्भ लेखन

1.. वैदेही जुलाई 1960
2. वैदेही मार्च 1960
3. वैदेही अगस्त 1957
4. मिथिला दर्शन अक्टूबर 1957
5. वैदेही अगस्त 1957
6. मिथिला दर्शन मई 1960
7. वैदेही
8 मिथिला दर्शन-जनवरी फरवरी 1961

कविवर आरसी

1. मिथिला मिहिर-6 जनवरी 1974
2. आरसी-पूजाक फूल
3. आरसी-माटिक दीप

4. देसकोस, कलकत्ता-मई 1981

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आ० हुनक कविता

1. मोहन-बाजि उठल मुरली
2. मोहन-इतित्री
3. मार्कण्डेय प्रवासी--मिथिला मिहिर, मई 1980
4. डॉ० जे० के० मिश्र-हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर
5. कविता कुसुम-सं० रमानाथ झा
6. दुर्गानाथ झा श्री मैथिली साहित्यक इतिहास
7. कविता कुसुम--सं० रमानाथ झा